চোখের বালি

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चोखेर बालि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh



कर्बुरित (mottled) संगमरमर की शिला पर
अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के चित्रांकन की प्रतिकृति।
मूल चित्र रंगों में है।
(रवीन्द्र सदन, शान्तिनिकेतन के सौजन्य से)

चोखेर बालि

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

लिप्यन्तर

श्रीमती मनोरमा वाजपेयी

साहित्य अकादेमी

नई दिल्ली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Chokher Bali by Rabindranath Tagore. Transliterated into Devanagari by Shrimati Manorama Bajpai. Frontispiece by Abanindranath Tagore. Sahitya Akademi, New Delhi (1961). Price : *de luxe* edition, Rs. 8.50; ordinary, Rs. 6.50.

विश्वभारती प्रकाशन विभाग के सौजन्य से
प्रस्तुत संस्करण का प्रकाशन

मुद्रक
व्रजरत्न मूँधड़ा
बिनानी प्रिंटर्स, प्राइवेट लिमिटेड
३८, स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता–१

मूल्य
विशेष संस्करण रु० ८.५०
सामान्य संस्करण रु० ६.५०

सूचना

आमार साहित्येर पथयात्रा पूर्वापर अनुसरण करे देखले धरा पड़बे ये 'चोखेर बालि' उपन्यासटा आकस्मिक, केवल आमार मध्ये नय, सेदिनकार बांला साहित्यक्षेत्रे। बाइरे थेके कोन् इशारा एसेछिल आमार मने, से प्रश्नटा दुरुह। सबचेये सहज जवाब हच्छे धारावाहिक लम्बा गल्पेर उपर मासिक पत्रेर चिरकेले दावि निये। वंगदर्शनेर नवपर्याय बेर करलेन श्रीशचन्द्र। आमार नाम योजना करा हल, ताते आमार प्रसन्न मनेर समर्थन छिल ना। कोनो पूर्वतन ख्यातिर उत्तराधिकार ग्रहण करा संकटेर अवस्था, आमार मने ए सम्बन्धे यथेष्ट संकोच छिल। किन्तु आमार मने उपरोध-अनुरोधेर द्वन्द येखानेइ घटेछे सेखाने प्रायइ आमि जयलाभ करते पारिनि, एबारओ ताइ हल।

आमरा एकदा वंगदर्शने विषवृक्ष उपन्यासेर रस सम्भोग करेछि। तखनकार दिने से रस छिल नतुन। परे सेइ वंगदर्शनके नव पर्याये टेने आना येते पारे किन्तु सेइ प्रथम पालार पुनरावृत्ति हते पारे ना। सेदिनेर आसर भेङे गेछे, नतुन सम्पादकके रास्तार मोड़ फेरातेइ हबे। सह-सम्पादक शैलेशेर विश्वास छिल, आमि एइ मासिकेर वर्षव्यापी भोजे गल्पेर पुरो परिमाण जोगान दिते पारि। अतएव कोमर बाँधते हबे आमाके। ए येन मासिकेर देओयानि आइन-अनुसारे सम्पादकेर काछ थेके उपयुक्त खोरपोशेर दावि करा। वस्तुत फरमाश एसेछिल बाइरे थेके। एर पूर्वे महाकाय गल्प सृष्टिते हाथ दिइनि। छोट गल्पेर उल्कावृष्टि करेछि। ठिक करते हल, एबारकार गल्प बानाते हबे ए-युगेर कारखाना-घरे। शयतानेर हाते विषवृक्षेर चाष तखनओ हत एखनओ हय, तबे किना तार क्षेत्र आलादा, अन्तत गल्पेर एलाकार मध्ये। एखनकार छवि खुब स्पष्ट, साजसज्जाय अलंकारे ताके आच्छन्न करले ताके झापसा करे देओया हय, तार आधुनिक स्वभाव हय नष्ट। ताइ गल्पेर आबदार यखन एड़ाते पारलुम ना तखन नामते हल मनेर संसारेर सेइ कारखाना-घरे येखाने आगुनेर ज्वलुनि हातुड़िर पिटुनि थेके दृढ़ धातुर मूर्ति जेगे उठते थाके। मानवविधातार एइ निर्मम सृष्टिप्रक्रियार विवरण तार पूर्वे गल्प अवलम्बन करे बाँला भाषाय आर प्रकाश पायनि। तार परे ओइ पर्दार बाइरेकार सदर रास्तातेइ क्रमे क्रमे

देखा दियेछे गोरा, घरे-बाइरे, चतुरङ्ग। शुधु ताइ नय, छोटो गल्पेर परिकल्पनाय आमार लेखनी संसारेर रुढ़ स्पर्श एड़िये यायनि। नष्टनीड़ वा शास्ति एरा निर्मम साहित्येर पर्यायेइ पड़बे। तार परे पलातकार कविता-गुलिर मध्येओ संसारेर सङ्गे सेइ मोकाबिलार आलाप चलेछे। वंगदर्शनेर नवपर्याय एक दिके तखन आमार मनके राष्ट्रनैतिक समाजनैतिक चिन्तार आवर्ते टेने एनेछिल, आर-एक दिके एनेछिल गल्पे एमन-कि काव्येओ मानवचरित्रेर कठिन संस्पर्शे। अल्पे अल्पे एर शुरू हयेछिल साधनार युगेइ, तार परे सबूजपत्र पसरा जमियेछिल। चोखेर बालिर गल्पके भितर थेके धाक्का दिये दारूण करे तुलेछे मायेर ईर्षा। एइ ईर्षा महेन्द्रेर सेइ रिपुके कुत्सित अवकाश दियेछे या सहज अवस्थाय एमन करे दाँत-नख बेर करत ना। येन पशुशालार दरजा खुले देओया हल, बेरिये पड़ल हिंस्र घटनागुलो असंयत हये। साहित्येर नवपर्यायेर पद्धति हच्छे घटनापरम्परार विवरण देओया नय, विश्लेषण करे तादेर आँतेर कथा बेर करे देखानो। सेइ पद्धितिइ देखा दिल चोखेर बालिते।

१

विनोदिनीर माता हरिमति महेन्द्रेर माता राजलक्ष्मीर काछे आसिया धन्ना दिया पड़िल। दुइ जनेइ एक ग्रामेर मेये, बाल्यकाले एकत्रे खेला करियाछेन।

राजलक्ष्मी महेन्द्रके धरिया पड़िलेन, "बाबा महिन, गरिबेर मेयेटिके उद्धार करिते हइबे। शुनियाछि मेयेटि बड़ो सुन्दरी, आबार मेमेर काछे पड़ाशुनाओ करियाछे—तोदेर आजकालकार पछन्दर सङ्गे मिलिबे।"

महेन्द्र कहिल, "मा, आजकालकार छेले तो आमि छाड़ाओ आरो ढेर आछे।"

राजलक्ष्मी। महिन, ओइ तोर दोष, तोर काछे बियेर कथाटि पाड़िबार जो नाइ।

महेन्द्र। मा, ओ कथाटा बाद दियाओ संसारे कथार अभाव हय ना। अतएव ओटा मारात्मक दोष नय।

महेन्द्र शैशवेइ पितृहीन। मा-सम्बन्धे ताहार व्यवहार साधारण लोकेर मतो छिल ना। वयस प्राय बाइश हइल, एम. ए. पास करिया डाक्तारि पड़िते आरम्भ करियाछे; तबु माके लइया ताहार प्रतिदिन मान-अभिमान आदर-आबदारेर अन्त छिल ना। काङारु-शावकेर मतो मातृगर्भ हइते भूमिष्ठ हइयाओ मातार बहिर्गर्भेर थलिटिर मध्ये आवृत थाकाइ ताहार अभ्यास हइया गियाछिल। मार साहाय्य व्यतीत ताहार आहार-विहार आराम-विराम किछुइ सम्पन्न हइबार जो छिल ना।

एबारे मा यखन विनोदिनीर जन्य ताहाके अत्यन्त धरिया पड़िलेन, तखन महेन्द्र बलिल, "आच्छा, कन्याटि एक बार देखिया आसि।"

देखिते याइबार दिन बलिल, "देखिया आर की हइबे। तोमाके खुशि करिबार जन्य विवाह करितेछि, भालोमन्द विचार करा मिथ्या।"

कथाटार मध्ये एकटु रागेर उत्ताप छिल; किन्तु मा भाबिलेन, शुभदृष्टिर समय ताँहार पछन्दर सहित यखन पुत्रेर पछन्दर निश्चय मिल हइबे तखन महेन्द्रेर कड़िसुर कोमल हइया आसिबे।

राजलक्ष्मी निश्चिन्तचित्ते विवाहेर दिन स्थिर करिलेन। दिन यत निकटे आसिते लागिल, महेन्द्रेर मन ततइ उत्कंठित हइया उठिल—अवशेषे दुइ-चार दिन आगे से बलिया बसिल, "ना मा, आमि किछुतेइ पारिब ना।"

बाल्यकाल हइते महेन्द्र देवता ओ मानवेर काछे सर्वप्रकारे प्रश्रय पाइयाछे, एइजन्य ताहार इच्छार वेग उच्छृङ्खल। परेर इच्छार चाप से सहिते पारे ना। ताहाके निजेर प्रतिज्ञा एवं परेर अनुरोध एकान्त बाध्य करिया तुलियाछे बलियाइ विवाह-प्रस्तावेर प्रति ताहार अकारण वितृष्णा अत्यन्त बाड़िया उठिल एवं आसन्नकाले से एकेबारेइ विमुख हइया बसिल।

महेन्द्रेर परम बन्धु छिल बिहारी; से महेन्द्रके दादा एवं महेन्द्रेर माके मा बलित। मा ताहाके स्टीमबोटेर पश्चाते आबद्ध गाधाबोटेर मतो महेन्द्रेर एकटि आवश्यक भारवह आसबाबेर स्वरूप देखितेन ओ सेइ हिसाबे ममताओ करितेन। राजलक्ष्मी ताहाके बलिलेन, "बाबा, ए काज तो तोमाकेइ करिते हय, नहिले गरिबेर मेये—"

बिहारी जोड़हात करिया कहिल, "मा, ओइटे पारिब ना। ये-मेठाइ तोमार महेन्द्र भालो लागिल ना बलिया राखिया देय, से-मेठाइ तोमार अनुरोधे पड़िया आमि अनेक खाइयाछि, किन्तु कन्यार बेला सेटा सहिबे ना।"

राजलक्ष्मी भाबिलेन, 'बिहारी आबार बिये करिबे! ओ केवल महिनके लइयाइ आछे, बउ आनिबार कथा मनेओ स्थान देय ना।'

एइ भाबिया बिहारीर प्रति ताँहार कृपामिश्रित ममता आर-एकटुखानि बाड़िल।

विनोदिनीर बाप विशेष धनी छिल ना, किन्तु ताहार एकमात्र कन्याके से मिशनारि मेम राखिया बहुयत्ने पड़ाशुना ओ कारुकार्य शिखाइयाछिल। कन्यार विवाहेर वयस क्रमेइ बहिया याइतेछिल, तबु ताहार हुँश छिल ना। अवशेषे ताहार मृत्युर परे विधवा माता पात्र खुँजिया अस्थिर हइया पड़ियाछे। टाकाकड़िओ नाइ, कन्यार वयसओ अधिक।

तखन राजलक्ष्मी ताँहार जन्मभूमि बाराशतेर ग्रामसम्पर्कीय एक भ्रातुष्पुत्रेर सहित उक्त कन्या विनोदिनीर विवाह देओयाइलेन।

अनतिकाल परे कन्या विधवा हइल। महेन्द्र हासिया कहिल, "भाग्ये विवाह करि नाइ, स्त्री विधवा हइले तो एक दण्डओ टिकिते पारिताम ना।"

बछर-तिनेक परे आर-एक दिन मातापुत्रे कथा हइतेछिल।

"बाबा, लोके ये आमाकेइ निन्दा करे।"

"केन मा, लोकेर तुमि की सर्वनाश करियाछ ?"

"पाछे बउ आसिले छेले पर हइया याय, एइ भये तोर विवाह दितेछि ना, लोके एइरूप बलाबलि करे।"

महेन्द्र कहिल, "भय तो हओयाइ उचित। आमि मा हइले प्राण धरिया छेलेर विवाह दिते पारिताम ना। लोकेर निन्दा माथा पातिया लइताम।"

मा हासिया कहिलेन, "शोनो एकबार छेलेर कथा शोनो।"

महेन्द्र कहिल, "बउ आसिया तो छेलेके जुड़िया बसेइ। तखन एत कष्टेर एत स्नेहेर मा कोथाय सरिया याय, ए यदि-वा तोमार भालो लागे, आमार भालो लागे ना।"

राजलक्ष्मी मने मने पुलकित हइया ताँहार सद्यसमागता विधवा जाके सम्बोधन करिया बलिलेन, "शोनो भाइ मेजबउ, महिन की बले शोनो। बउ पाछे माके छाड़ाइया उठे, एइ भये ओ बिये करिते चाय ना। एमन सृष्टिछाड़ा कथा कखनो शुनियाछ ?"

काकी कहिलेन, "ए तोमार, बाछा, बाड़ाबाड़ि। यखनकार या तखन ताइ शोभा पाय। एखन मार आँचल छाड़िया बउ लइया घर-कन्ना करिबार समय आसियाछे, एखन छोटो छेलेटिर मतो व्यवहार देखिले लज्जा बोध हय।"

ए कथा राजलक्ष्मीर ठिक मधुर लागिल ना एवं एइ प्रसङ्गे तिनि ये-कटि कथा बलिलेन, ताहा सरल हइते पारे, किन्तु मधुमाखा नहे। कहिलेन, "आमार छेले यदि अन्येर छेलेदेर चेये माके बेशि भालोबासे, तोमार ताते लज्जा करे केन मेजबउ। छेले थाकिले छेलेर मर्म बुझिते।"

राजलक्ष्मी मने करिलेन, पुत्रसौभाग्यवतीके पुत्रहीना ईर्षा करितेछे।

मेजबउ कहिलेन, "तुमिइ बउ आनिबार कथा पाड़िले बलिया कथाटा उठिल, नहिले आमार अधिकार की।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "आमार छेले यदि बउ ना आने, तोमार बुके ताते शेल बेंधे केन। बेश तो, एतदिन यदि छेलेके मानुष करिया आसिते पारि, एखनो उहाके देखिते शुनिते पारिब, आर काहारो दरकार हइबे ना।"

मेजबउ अश्रुपात करिया नीरवे चलिया गेलेन। महेन्द्र मने मने आघात पाइल एवं कालेज हइते सकाल-सकाल फिरियाइ ताहार काकीर घरे उपस्थित हइल।

काकी ताहाके याहा बलियाछेन, ताहार मध्ये स्नेह छाड़ा आर किछुइ छिल ना, इहा से निश्चय जानित। एवं इहाओ ताहार जाना छिल, काकीर एकटि पितृमातृहीना बोनझि आछे, एवं महेन्द्रर सहित ताहार विवाह दिया सन्तानहीना विधवा कोनो सूत्रे आपनार भगिनीर मेयेटिके काछे आनिया सुखी देखिते चान। यदिच विवाहे से नाराज, तबु काकीर एइ मनोगत इच्छाटि ताहार काछे स्वाभाविक एवं अत्यन्त करुणावह बलिया मने हइत।

महेन्द्र ताँहार घरे यखन गेल, तखन बेला आर बड़ो बाकि नाइ। काकी अन्नपूर्णा ताँहार घरेर काटा जानालार गरादेर उपर माथा राखिया शुष्कविमर्षमुखे बसियाछिलेन। पाशेर घरे भात ढाका पड़िया आछे, एखनो स्पर्श करेन नाइ।

अल्प कारणेइ महेन्द्रेर चोखे जल आसित। काकीके देखिया ताहार चोख छलछल करिया उठिल। काछे आसिया स्निग्धस्वरे डाकिल, "काकीमा।"

अन्नपूर्णा हासिबार चेष्टा करिया कहिलेन, "आय महिन, बोस।"

महेन्द्र कहिल, "भारि क्षुधा पाइयाछे, प्रसाद खाइते चाइ।"

अन्नपूर्णा महेन्द्रेर कौशल बुझिया उच्छ्वसित अश्रु कष्टे संवरण करिलेन एवं निजे खाइया महेन्द्रके खाओयाइलेन।

महेन्द्रेर हृदय तखन करुणाय आर्द्र छिल। काकीके सान्त्वना दिबार जन्य आहारान्ते हठात् मनेर झोंके बलिया बसिल, "काकी, तोमार सेइ ये बोनझिर कथा बलियाछिले, ताहाके एक बार देखाइबे ना?"

कथाटा उच्चारण करियाइ से भीत हइया पड़िल।

अन्नपूर्णा हासिया कहिलेन, "तोर आबार विवाहे मन गेल नाकि, महिन।"

महेन्द्र ताड़ाताड़ि कहिल, "ना, आमार जन्य नय काकी, आमि बिहारी-के राजि करियाछि। तुमि देखिबार दिन ठिक करिया दाओ।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "आहा, ताहार कि एमन भाग्य हइबे। बिहारीर मतो छेले कि ताहार कपाले आछे।"

काकीर घर हइते बाहिर हइया महेन्द्र द्वारेर काछे आसितेइ मार सङ्गे देखा हइल। राजलक्ष्मी जिज्ञासा करिलेन, "की महेन्द्र, एतक्षण तोदेर की परामर्श हइतेछिल।"

महेन्द्र कहिल, "परामर्श किछुइ ना, पान लइते आसियाछि।"

मा कहिलेन, "तोर पान तो आमार घरे साजा आछे।"

महेन्द्र उत्तर ना करिया चलिया गेल।

राजलक्ष्मी घरे ढुकिया अन्नपूर्णार रोदनस्फीत चक्षु देखिबामात्र अनेक कथा कल्पना करिया लइलेन। फोंस करिया बलिया उठिलेन, "की गो मेजठाकरुन, छेलेर काछे लागालागि करितेछिले बुझि।"

बलिया उत्तरमात्र ना शुनिया द्रुतवेगे चलिया गेलेन।

२

मेये देखिबार कथा महेन्द्र प्राय भुलियाछिल, अन्नपूर्णा भोलेन नाइ। तिनि श्यामबाजारे मेयेर अभिभावक जेंठार बाड़िते पत्र लिखिया देखिते याइबार दिन स्थिर करिया पाठाइलेन।

दिन स्थिर हइयाछे शुनियाइ महेन्द्र कहिल, "एत ताड़ाताड़ि काजटा करिले केन काकी। एखनो बिहारीके बलाइ हय नाइ।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "से कि हय महिम। एखन ना देखिते गेले ताहारा की मने करिबे।"

महेन्द्र बिहारीके डाकिया सकल कथा बलिल। कहिल, "चलो तो, पछन्द ना हइले तो तोमार उपर जोर चलिबे ना।"

बिहारी कहिल, "से-कथा बलिते पारि ना। काकीर बोनझिके देखिते गिया पछन्द हइल ना बला आमार मुख दिया आसिबे ना।"

महेन्द्र कहिल, "से तो उत्तम कथा।"

बिहारी कहिल, "किन्तु तोमार पक्षे अन्याय काज हइयाछे महिनदा। निजेके हालका राखिया परेर स्कन्धे एरूप भार चापानो तोमार उचित हय नाइ। एखन काकीर मने आघात देओया आमार पक्षे बड़ोइ कठिन हइबे।"

महेन्द्र एकटु लज्जित ओ रुष्ट हइया कहिल, "तबे की करिते चाओ।"

बिहारी कहिल, "यखन तुमि आमार नाम करिया ताँहाके आशा दियाछ, तखन आमि विवाह करिब—देखिते याइबार भड़ं करिबार दरकार नाइ।"

अन्नपूर्णाके बिहारी देवीर मतो भक्ति करित।

अवशेषे अन्नपूर्णा बिहारीके निजे डाकिया कहिलेन, "से कि हय बाछा। ना देखिया विवाह करिबे, से किछुतेइ हइबे ना। यदि पछन्द ना हय, तबे विवाहे सम्मति दिते पारिबे ना, एइ आमार शपथ रहिल।"

निर्धारित दिने महेन्द्र कलेज हइते फिरिया आसिया माके कहिल, "आमार सेइ रेशमेर जामा एवं ढाकाइ धुतिटा बाहिर करिया दाओ।"

मा कहिलेन, "केन, कोथाय याबि।"

महेन्द्र कहिल, "दरकार आछे मा, तुमि दाओ ना, आमि परे बलिब।"

महेन्द्र एकटु साज ना करिया थाकिते पारिल ना। परेर जन्य हइलेओ कन्या देखिबार प्रसङ्गमात्रेइ यौवनधर्म आपनि चुलटा एकटु फिराइया लय, चादरे किछु गन्ध ढाले।

दुइ बन्धु कन्या देखिते बाहिर हइल।

कन्यार जेठा श्यामबाजारेर अनुकूलबाबु—निजेर उपार्जित धनेर द्वाराय ताँहार बागानसमेत तिनतला बाड़िटाके पाड़ार माथार उपर तुलियाछेन।

दरिद्र भ्रातार मृत्युर पर पितृमातृहीना भ्रातुष्पुत्रीके तिनि निजेर बाड़िते आनिया राखियाछेन। मासि अन्नपूर्णा बलियाछिलेन, "आमार काछे थाक्।" ताहाते व्ययलाघवेर सुविधा छिल बटे, किन्तु गौरवलाघवेर भये अनुकूल राजि हइलेन ना। एमन-कि, देखासाक्षात् करिबार जन्यओ कन्याके कखनो मासिर बाड़ि पाठाइतेन ना, निजेदेर मर्यादा सम्बन्धे तिनि एतइ कड़ा छिलेन।

कन्याटिर विवाह-भावनार समय आसिल किन्तु आज्‌कालकार दिने कन्यार विवाह सम्बन्धे 'यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी' कथाटा खाटे ना। भावनार सङ्गे खरचओ चाइ। किन्तु पणेर कथा उठिलेइ अनुकूल बलेन, "आमार तो निजेर मेये आछे, आमि एका आर कत पारिया उठिब।" एमनि करिया दिन बहिया याइतेछिल। एमन समय साजिया-गुजिया गन्ध माखिया रङ्गभूमिते बन्धुके लइया महेन्द्र प्रवेश करिलेन।

तखन चैत्र मासेर दिवसान्ते सूर्य अस्तोन्मुख। दोतलार दक्षिणबारान्दाय चित्रित चिक्कण चीनेर टालि गाँथा; ताहारइ प्रान्ते दुइ अभ्यागतेर जन्य रुपार रेकाबि फलमूलमिष्टान्ने शोभमान एवं बरफजलपूर्ण रुपार ग्लास शीतल शिशिरविन्दुजाले मण्डित। महेन्द्र बिहारीके लइया आलज्जितभावे खाइते बसियाछेन। नीचे बागाने माली तखन झारिते करिया गाछे गाछे जल दितेछिल; सेइ सिक्त मृत्तिकार स्निग्ध गन्ध वहन करिया चैत्रेर दक्षिण वातास महेन्द्रेर शुभ्र कुञ्चित सुवासित चादरेर प्रान्तके दुर्दाम करिया तुलिते-छिल। आशपाशेर द्वार-जानालार छिद्रान्तराल हइते एकटु-आधटु चापा हासि, फिसफिस कथा, दुटा-एकटा गहनार टुंटां येन शुना याय।

आहारेर पर अनुकूलबाबु भितरेर दिके चाहिया कहिलेन, "चुनि, पान निये आय तो रे।"

किछुक्षण परे संकोचेर भावे पश्चातेर एकटा दरजा खुलिया गेल एवं एकटि बालिका कोथा हइते सर्वाङ्गे राज्येर लज्जा जड़ाइया आनिया पानेर बाटा हाते अनुकूलबाबुर काछे आसिया दाँड़ाइल। तिनि कहिलेन, "लज्जा की मा। बाटा ओइ ओंदेर सामने राखो।"

बालिका नत हइया कम्पितहस्ते पानेर बाटा अतिथिदेर आसन-पार्श्वे भूमिते राखिया दिल। बारान्दार पश्चिम-प्रान्त हइते सूर्यास्त-आभा ताहार लज्जित मुखके मण्डित करिया गेल। सेइ अवकाशे महेन्द्र सेइ कम्पान्विता बालिकार करुण मुखच्छवि देखिया लइल।

बालिका तखनि चलिया याइते उद्यत हइले अनुकूलबाबु कहिलेन, "एकटु दाँड़ा चुनि। बिहारीबाबु, एइटि आमार छोटो भाइ अपूर्वर कन्या। से तो चलिया गेछे, एखन आमि छाड़ा इहार आर केह नाइ।" बलिया तिनि दीर्घनिश्वास फेलिलेन।

महेन्द्रेर हृदये दयार आघात लागिल। अनाथार दिके आर एकबार चाहिया देखिल।

केह ताहार वयस स्पष्ट करिया बलित ना। आत्मीयेरा बलित, "एइ बारो-तेरो हइबे।" अर्थात् चौद्द-पनेरो हओयार सम्भावनाइ अधिक। किन्तु अनुग्रहपालित बलिया एकटि कुण्ठित भीरु भावे ताहार नवयौवनारम्भके संयत संवृत करिया राखियाछे।

आर्द्रचित्त महेन्द्र जिज्ञासा करिल, "तोमार नाम की।" अनुकूलबाबु उत्साह दिया कहिलेन, "बलो मा, तोमार नाम बलो।" बालिका ताहार अभ्यस्त आदेशपालनेर भावे नतमुखे बलिल, "आमार नाम आशालता।"

आशा! महेन्द्रेर मने हइल नामटि बड़ो करुण एवं कण्ठटि बड़ो कोमल। अनाथा आशा!

दुइ बन्धु पथे बाहिर हइया आसिया गाड़ि छाड़िया दिल। महेन्द्र कहिल, "बिहारी, ए मेयेटिके तुमि छाड़ियो ना।"

बिहारी ताहार स्पष्ट उत्तर ना करिया कहिल, "मेयेटिके देखिया उहार मासिमाके मने पड़े; बोध हय अमनि लक्ष्मी हइबे।"

महेन्द्र कहिल, "तोमार स्कन्धे ये बोझा चापाइलाम, एखन बोध हय ताहार भार तत गुरुतर बोध हइतेछे ना।"

बिहारी कहिल, "ना, बोध हय सह्य करिते पारिब।"

महेन्द्र कहिल, "काज की एत कष्ट करिया। तोमार बोझा ना हय आमिइ स्कन्धे तुलिया लइ। की बल।"

बिहारी गम्भीरभावे महेन्द्रेर मुखेर दिके चाहिल। कहिल, "महिनदा, सत्य बलितेछ? एखनो ठिक करिया बलो। तुमि विवाह करिले काकी ढेर बेशि खुशि हइबेन--ताहा हइले तिनि मेयेटिके सर्वदाइ काछे राखिते पारिबेन।"

महेन्द्र कहिल, "तुमि पागल हइयाछ? से हइले अनेक काल आगे हइया याइत।"

बिहारी अधिक आपत्ति ना करिया चलिया गेल, महेन्द्रओ सोजा पथ छाड़िया दीर्घ पथ धरिया बहुविलम्बे धीरे धीरे बाड़ि गिया पौंछिल।

मा तखन लुचिभाजा-व्यापारे व्यस्त छिलेन, काकी तखनो ताँहार बोनझिर निकट हइते फेरेन नाइ।

महेन्द्र एका निर्जन छादेर उपर गिया मादुर पातिया शुइल। कलिकातार हर्म्यशिखरपुञ्जेर उपर शुक्लसप्तमीर अर्धचन्द्र निःशब्दे आपन अपरूप मायामन्त्र विकीर्ण करितेछिल। मा यखन खाबार खबर दिलेन, महेन्द्र अलसस्वरे कहिल, "बेश आछि, एखन आर उठिते पारि ना।"

मा कहिलेन, "एइखानेइ आनिया दिइ ना?"

महेन्द्र कहिल, "आज आर खाइब ना, आमि खाइया आसियाछि।"

मा जिज्ञासा करिलेन, "कोथाय खाइते गियाछिलि।"

महेन्द्र कहिल, "से अनेक कथा, परे बलिब।"

महेन्द्रेर एइ अभूतपूर्व व्यवहारे अभिमानिनी माता कोनो उत्तर ना करिया चलिया याइते उद्यत हइलेन।

तखन मुहूर्तेर मध्ये आत्मसंवरण करिया अनुतप्त महेन्द्र कहिल, "मा, आमार खाबार एइखानेइ आनो।"

मा कहिलेन, "क्षुधा ना थाके तो दरकार की?"

एइ लइया छेलेते मायेते कियत्क्षण मान-अभिमानेर पर महेन्द्रके पुनश्च आहारे बसिते हइल।

३

रात्रे महेन्द्रेर भालो निद्रा हइल ना। प्रत्युषेइ से बिहारीर बासाय आसिया उपस्थित। कहिल, "भाइ, भाबिया देखिलाम, काकीमार मनोगत इच्छा आमिइ ताँहार बोनझिके विवाह करि।"

बिहारी कहिल, "सेजन्ये तो हठात् नूतन करिया भाबिबार कोनो दरकार छिल ना। तिनि तो इच्छा नानाप्रकारेइ व्यक्त करियाछेन।"

महेन्द्र कहिल, "ताइ बलितेछि, आमार मने हय, आशाके आमि विवाह ना करिले ताँहार मने एकटा खेद थाकिया याइबे।"

बिहारी कहिल, "सम्भव बटे।"

महेन्द्र कहिल, "आमार मने हय, सेटा आमार पक्षे नितान्त अन्याय हइबे।"

बिहारी किञ्चित् अस्वाभाविक उत्साहेर सहित कहिल, "बेश कथा, से तो भालो कथा, तुमि राजि हइले तो आर कोनो कथाइ थाके ना। ए कर्तव्यबुद्धि काल तोमार माथाय आसिलेइ तो भालो हइत।"

महेन्द्र। एकदिन देरिते आसिया की एमन क्षति हइल।

येइ विवाहेर प्रस्तावे महेन्द्र मनके लागाम छाड़िया दिल, सेइ ताहार पक्षे धैर्य रक्षा करा दुःसाध्य हइया उठिल। ताहार मने हइते लागिल, 'आर अधिक कथावार्ता ना हइया काजटा सम्पन्न हइया गेलेइ भालो हय।'

माके गिया कहिल, "आच्छा मा, तोमार अनुरोध राखिब। विवाह करिते राजि हइलाम।"

मा मने मने कहिलेन, "बुझियाछि, सेदिन मेजबउ केन हठात् ताहार बोनझिके देखिते चलिया गेल एवं महेन्द्र साजिया बाहिर हइल।"

ताँहार बारंबार अनुरोध अपेक्षा अन्नपूर्णार चक्रान्त ये सफल हइल, इहाते तिनि समस्त विश्वविधानेर उपर असन्तुष्ट हइया उठिलेन। बलिलेन, "एकटि भालो मेये सन्धान करितेछि।"

महेन्द्र आशार उल्लेख करिया कहिल, "कन्या तो पाओया गेछे।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "से-कन्या हइबे ना बाछा, ताहा आमि बलिया राखितेछि।"

महेन्द्र यथेष्ट संयत भाषाय कहिल, "केन मा, मेयेटि तो मन्द नय।"

राजलक्ष्मी। ताहार तिन कुले केह नाइ, ताहार सहित विवाह दिया आमार कुटुम्बेर सुख की हइबे।

महेन्द्र। कुटुम्बेर सुख ना हइलेओ आमि दुःखित हइब ना, किन्तु मेयेटिके आमार बेश पछन्द हइयाछे मा।

छेलेर जेद देखिया राजलक्ष्मीर चित्त आरो कठिन हइया उठिल। अन्नपूर्णाके गिया कहिलेन, "बाप-मा-मरा अलक्षणा कन्यार सहित आमार एक छेलेर विवाह दिया तुमि आमार छेलेके आमार काछ हइते भाङाइया लइते चाओ? एतबड़ो शयतानि!"

अन्नपूर्णा काँदिया कहिलेन, "महिनेर सङ्गे विवाहेर कोनो कथाइ हय नाइ, से आपन इच्छामत तोमाके की बलियाछे आमिओ जानि ना।"

महेन्द्रेर मा से-कथा किछुमात्र विश्वास करिलेन ना। तखन अन्नपूर्णा बिहारीके डाकाइया साश्रुनेत्रे कहिलेन, "तोमार सङ्गेइ तो सब ठिक हइया छिल, आबार केन उल्टाइया दिले। आबार तोमाकेइ मत दिते हइबे। तुमि उद्धार ना करिले आमाके बड़ो लज्जाय पड़िते हइबे। मेयेटि बड़ो लक्ष्मी, तोमार अयोग्य हइबे ना।"

बिहारी कहिल, "काकीमा, से-कथा आमाके बला बाहुल्य। तोमार बोनझि यखन, तखन आमार अमतेर कोनो कथाइ नाइ। किन्तु महेन्द्र—"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "ना बाछा, महेन्द्रेर सङ्गे ताहार कोनोमतेइ विवाह हइबार नय। आमि तोमाके सत्य कथाइ बलितेछि, तोमार सङ्गे विवाह हइलेइ आमि सब चेये निश्चिन्त हइ। महिनेर सङ्गे सम्बन्धे आमार मत नाइ।"

बिहारी कहिल, "काकी, तोमार यदि मत ना थाके, ताहा हइले कोनो कथाइ नाइ।"

एइ बलिया से राजलक्ष्मीर निकटे गिया कहिल, "मा, काकीर बोनझिर सङ्गे आमार विवाह स्थिर हइया गेछे, आत्मीय स्त्रीलोक केह काछे नाइ—काजेइ लज्जार माथा खाइया निजेर खबरटा दिते हइल।"

राजलक्ष्मी। बलिस की बिहारी। बड़ो खुशी हइलाम। मेयेटि लक्ष्मी मेये, तोर उपयुक्त। ए मेये किछुतेइ हातछाड़ा करिसने।

बिहारी। हातछाड़ा केन हइबे। महिनदा निजे पछन्द करिया आमार सङ्गे सम्बन्ध करिया दियाछेन।

एइ सकल बाधाविघ्ने महेन्द्र द्विगुण उत्तेजित हइया उठिल। से मा ओ काकीर उपर राग करिया एकटा दीनहीन छात्रावासे गिया आश्रय लइल।

राजलक्ष्मी काँदिया अन्नपूर्णार घरे उपस्थित हइलेन; कहिलेन, "मेजबउ, आमार छेले बुझि उदास हइया घर छाड़िल, ताहाके रक्षा करो।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "दिदि, एकटु धैर्य धरिया थाको, दु-दिन बादेइ ताहार राग पड़िया याइबे।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "तुमि ताहाके जान ना। से याहा चाय, ना पाइले याहा-खुशि करिते पारे। तोमार बोनझिर सङ्गे येमन करिया हउक, तार—"

अन्नपूर्णा। दिदि, से की करिया हय—बिहारीर सङ्गे कथावार्ता एकप्रकार पाका हइयाछे।

राजलक्ष्मी कहिलेन, "से भाङ्गिते कतक्षण।" बलिया बिहारीके डाकिया कहिलेन, "बाबा, तोमार जन्य भालो पात्री देखिया दितेछि, एइ कन्याटि छाड़िया दिते हइबे, ए तोमार योग्यइ नय।"

बिहारी कहिल, "ना मा, से हय ना। से समस्तइ ठिक हइया गेछे।"

तखन राजलक्ष्मी अन्नपूर्णाके गिया कहिलेन, "आमार माथा खाओ मेजबउ, तोमार पाये धरि, तुमि बिहारीके बलिलेइ सब ठिक हइबे।"

अन्नपूर्णा बिहारीके कहिलेन, "बिहारी, तोमाके बलिते आमार मुख सरितेछे ना, किन्तु की करि बलो। आशा तोमार हाते पड़िलेइ आमि बड़ो निश्चिन्त हइताम, किन्तु सब तो जानितेछइ—"

बिहारी। बुझियाछि काकी। तुमि येमन आदेश करिबे, ताहाइ हइबे। किन्तु आमाके आर कखनो काहारो सङ्गे विवाहेर जन्य अनुरोध करियो ना।

बलिया बिहारी चलिया गेल। अन्नपूर्णार चक्षु जले भरिया उठिल, महेन्द्रेर अकल्याण-आशंकाय मुछिया फेलिलेन। बार बार मनके बुझाइलेन—याहा हइल, ताहा भालोइ हइल।

एइरूपे राजलक्ष्मी अन्नपूर्णा एवं महेन्द्रेर मध्ये निष्ठुर निगूढ़ नीरव घात प्रतिघात चलिते चलिते विवाहेर दिन समागत हइल। बाति उज्ज्वल हइया ज्वलिल, शानाइ मधुर हइया बाजिल, मिष्टान्ने मिष्टेर भाग लेशमात्र कम पड़िल ना।

आशा सज्जितसुन्दरदेहे लज्जितमुग्धमुखे आपन नूतन संसारे प्रथम पदार्पण करिल; ताहार एइ कुलायेर मध्ये कोथाओ ये कोनो कण्टक आछे, ताहा ताहार कम्पित-कोमल हृदय अनुभव करिल ना; वरञ्च जगते ताहार एकमात्र मातृस्थानीया अन्नपूर्णार काछे आसितेछे बलिया आश्वासे ओ आनन्दे ताहार सर्वप्रकार भय संशय दूर हइया गेल।

विवाहेर पर राजलक्ष्मी महेन्द्रके डाकिया कहिलेन, "आमि बलि, एखन बउमा किछुदिन ताँर जेठार बाड़ि गियाइ थाकुन।"

महेन्द्र जिज्ञासा करिल, "केन मा।"

मा कहिलेन, "एबारे तोमार एकजामिन आछे, पड़ाशुनार व्याघात हइते पारे।"

महेन्द्र। आमि कि छेलेमानुष। निजेर भालोमन्द बुझे चलिते पारि ना?

राजलक्ष्मी। ता होक ना बापु, आर-एकटा वत्सर बइ तो नय।

महेन्द्र कहिल, "बउयेर बाप-मा यदि केह थाकितेन, ताहादेर काछे पाठाइते आपत्ति छिल ना—किन्तु जेठार बाड़िते आमि उहाके राखिते पारिब ना।"

राजलक्ष्मी। (आत्मगत) ओरे बास् रे! उनिइ कर्ता, शाशुड़ी केह नय! काल बिये करिया आजइ एत दरद! कर्तारा तो आमादेरओ एकदिन विवाह करियाछिलेन, किन्तु एमन स्त्रैणता, एमन बेहायापना तो तखन छिल ना!

महेन्द्र खुब जोरेर सहित कहिल, "किछु भाबियो ना मा। एकजामिनेर कोनो क्षति हइबे ना।"

४

राजलक्ष्मी तखन हठात् अपरिमित उत्साहे वधूके घरकन्नार काज शिखाइते प्रवृत्त हइलेन। भाँड़ार-घर रान्नाघर ठाकुरघरेइ आशार दिनगुलि काटिल, रात्रे राजलक्ष्मी ताहाके निजेर बिछानाय शोयाइया ताहार आत्मीयविच्छेदेर क्षतिपूरण करिते लागिलेन।

अन्नपूर्णा अनेक विवेचना करिया बोनझिर निकट हइते दूरेइ थाकितेन।

यखन कोनो प्रबल अभिभावक एकटा इक्षुदण्डेर समस्त रस प्राय निःशेष-पूर्वक चर्वण करिते थाके तखन हताश्वास लुब्ध बालकेर क्षोभ उत्तरोत्तर येमन असह्य बाड़िया उठे, महेन्द्रेर सेइ दशा हइल। ठिक ताहार चोखेर सम्मुखेइ नवयौवना नववधूर समस्त मिष्टरस ये केवल घरकन्नार द्वारा पिष्ट हइते थाकिबे, इहा कि सह्य हय।

महेन्द्र अन्नपूर्णाके गिया कहिल, "काकी, मा बउके येरूप खाटाइया मारितेछेन, आमि तो ताहा देखिते पारि ना।"

अन्नपूर्णा जानितेन राजलक्ष्मी बाड़ाबाड़ि करितेछेन, किन्तु बलिलेन, "केन महिन, बउके घरेर काज शेखानो हइतेछे, भालोइ हइतेछे। एखनकार मेयेदेर मतो नभेल पड़िया, कार्पेट बुनिया, बाबु हइया थाका कि भालो।"

महेन्द्र उत्तेजित हइया बलिल, "एखनकार मेये एखनकार मेयेर मतोइ हइबे, ता भालोइ हउक आर मन्दइ हउक। आमार स्त्री यदि आमारइ मतो नभेल पड़िया रस ग्रहण करिते पारे, तबे ताहाते परिताप वा परिहासेर विषय किछुइ देखि ना।"

अन्नपूर्णार घरे पुत्रेर कण्ठस्वर शुनिते पाइया राजलक्ष्मी सब कर्म फेलिया चलिया आसिलेन। तीव्रकण्ठे जिज्ञासा करिलेन, "की! तोमादेर किसेर परामर्श चलितेछे।"

महेन्द्र उत्तेजितभावेइ बलिल, "परामर्श किछु नय मा, बउके घरेर काजे आमि दासीर मतो खाटिते दिते पारिब ना।"

मा ताँहार उद्दीप्त ज्वाला दमन करिया अत्यन्त तीक्ष्ण धीर भावे कहिलेन, "ताँहाके लइया की करिते हइबे !"

महेन्द्र कहिल, "ताहाके आमि लेखापड़ा शिखाइब ।"

राजलक्ष्मी किछु ना कहिया द्रुतपदे चलिया गेलेन ओ मुहूर्तपरे वधूर हात धरिया टानिया लइया महेन्द्रेर सम्मुखे स्थापित करिया कहिलेन, "एइ लओ, तोमार वधूके तुमि लेखापड़ा शेखाओ ।"

एइ बलिया अन्नपूर्णार दिके फिरिया गलवस्त्र-जोड़करे कहिलेन, "माप करो मेजगिन्नि, माप करो । तोमार बोनझिर मर्यादा आमि बुझिते पारि नाइ; उँहार कोमल हाते आमि हलुदेर दाग लागाइयाछि, एखन तुमि उँहाके धुइया मुछिया बिबि साजाइया महिनेर हाते दाओ—उनि पायेर उपर पा दिया लेखापड़ा शिखुन, दासीवृत्ति आमि करिब ।"

एइ बलिया राजलक्ष्मी निजेर घरेर मध्ये ढुकिया सशब्दे अर्गल बन्ध करिलेन ।

अन्नपूर्णा क्षोभे माटिर उपर बसिया पड़िलेन । आशा एइ आकस्मिक गृहविप्लवेर कोनो तात्पर्य ना बुझिया लज्जाय भये दुःख विवर्ण हइया गेल । महेन्द्र अत्यन्त रागिया मने मने कहिल, "आर नय, निजेर स्त्रीर भार निजेर हाते लइतेइ हइबे, नहिले अन्याय हइबे ।"

इच्छार सहित कर्तव्यबुद्धि मिलित हइतेइ हाओयार सङ्गे आगुन लागिया गेल । कोथाय गेल कालेज, एक्‌जामिन, बन्धुकृत्य, सामाजिकता; स्त्रीर उन्नति साधन करिते महेन्द्र ताहाके लइया घरे ढुकिल—काजेर प्रति दृक्‌पात वा लोकेर प्रति भ्रूक्षेपमात्रओ करिल ना ।

अभिमानिनी राजलक्ष्मी मने मने कहिलेन, 'महेन्द्र यदि एखन तार बउके लइया आमार द्वारे हत्या दिया पड़े, तबु आमि ताकाइब ना, देखि से तार मा के बाद दिया स्त्रीके लइया केमन करिया काटाय ।'

दिन याय—द्वारेर काछे कोनो अनुतप्तेर पदशब्द शुना गेल ना ।

राजलक्ष्मी स्थिर करिलेन, क्षमा चाहिते आसिले क्षमा करिबेन, नहिले महेन्द्रके अत्यन्त व्यथा देओया हइबे ।

क्षमार आवेदन आसिया पौँछिल ना । तखन राजलक्ष्मी स्थिर करिलेन, तिनि निजे गियाइ क्षमा करिया आसिबेन । छेले अभिमान करिया आछे बलिया कि माओ अभिमान करिया थाकिबे ।

तेतलार छादेर एक कोणे एकटि क्षुद्र गृहे महेन्द्रेर शयन एवं अध्ययनेर स्थान । ए कयदिन मा ताहार कापड़ गोछानो, बिछाना तैरि, घरदुयार

परिष्कार कराय सम्पूर्ण अवहेला करियाछिलेन। कयदिन मातृस्नेहेर चिराभ्यस्त कर्तव्यगुलि पालन ना करिया ताँहार हृदय स्तन्यभारातुर स्तनेर न्याय अन्तरे अन्तरे व्यथित हइया उठियाछिल। सेदिन द्विप्रहरे भाबिलेन, 'महेन्द्र एतक्षणे कालेज गेछे, एइ अवकाशे ताहार घर ठिक करिया आसि, कालेज हइते फिरिया आसिलेइ से अविलम्बे बुझिते पारिबे ताहार घरे मातृहस्त पड़ियाछे।'

राजलक्ष्मी सिँड़ि बाहिया उपरे उठिलेन। महेन्द्रेर शयनगृहेर एकटा द्वार खोला छिल, ताहार सम्मुखे आसितेइ येन हठात् काँटा बिंधिल, चमकिया दाँड़ाइलेन। देखिलेन, नीचेर बिछानाय महेन्द्र निद्रित एवं द्वारेर दिके पश्चात् करिया वधू धीरे धीरे ताहार पाये हात बुलाइया दितेछे। मध्याह्नेर प्रखर आलोके उन्मुक्त द्वारे दाम्पत्यलीलार एइ अभिनय देखिया राजलक्ष्मी लज्जाय धिक्कारे संकुचित हइया निःशब्दे नीचे नामिया आसिलेन।

५

किछुकाल अनावृष्टिते ये शस्यदल शुष्क पीतवर्ण हइया आसे, वृष्टि पाइबामात्र से आर विलम्ब करे ना; हठात् बाड़िया उठिया दीर्घकालेर उपवासदैन्य दूर करिया देय, दुर्बल नत भाव त्याग करिया शस्यक्षेत्रेर मध्ये असंकोचे असंशये आपनार अधिकार उन्नत ओ उज्ज्वल करिया तोले, आशार सेइरूप हइल। येखाने ताहार रक्तेर सम्बन्ध छिल, सेखाने कखनो आत्मीयतार दाबि करिते पाय नाइ; आज परेर घरे आसिया से यखन बिना प्रार्थनाय एक निकटतम सम्बन्ध एवं निःसन्दिग्ध अधिकार प्राप्त हइल, यखन सेइ अयत्नलालिता अनाथार मस्तके स्वामी स्वहस्ते लक्ष्मीर मुकुट पराइया दिलेन, तखन से आपन गौरवपद ग्रहण करिते लेशमात्र विलम्ब करिल ना, नववधूयोग्य लज्जाभय दूर करिया दिया सौभाग्यवती स्त्रीर महिमाय मुहूर्तेर मध्येइ स्वामीर पदप्रान्ते असंकोचे आपन सिंहासन अधिकार करिल।

राजलक्ष्मी सेदिन मध्याह्ने सेइ सिंहासने एइ नूतन-आगत परेर मेयेके एमन चिराभ्यस्तवत् स्पर्धार सहित बसिया थाकिते देखिया दुःसह विस्मये नीचे नामिया आसिलेन। निजेर चित्तदाहे अन्नपूर्णाके दग्ध करिते गेलेन। कहिलेन, "ओगो, देखो गे, तोमार नवाबेर पुत्री नवाबेर घर हइते की शिक्षा लइया आसियाछेन। कर्तारा थाकिले आज—"

अन्नपूर्णा कातर हइया कहिलेन, "दिदि, तोमार बउके तुमि शिक्षा दिबे, शासन करिबे, आमाके केन बलितेछ।"

राजलक्ष्मी धनुष्टंकारेरमतो बाजिया उठिलेन, "आमार बउ? तुमि मन्त्री थाकिते से आमाके ग्राह्य करिबे!"

तखन अन्नपूर्णा सशब्दपदक्षेपे दम्पतिके सचकित सचेतन करिया महेन्द्रेर शयनगृहे उपस्थित हइलेन। आशाके कहिलेन, "तुइ एमनि करिया आमार माथा हेंट करिबि पोड़ारमुखी? लज्जा नाइ, शरम नाइ, समय नाइ, असमय नाइ, वृद्धा शाशुड़ीर उपर समस्त घरकन्ना चापाइया तुमि एखाने आराम करितेछ? आमार पोड़ाकपाल, आमि तोमाके एइ घरे आनियाछिलाम!"

बलिते बलिते ताँहार चोख दिया जल झरिया पड़िल, आशाओ नतमुखे वस्त्राञ्चल खुँटिते खुँटिते निःशब्दे दाँड़ाइया काँदिते लागिल।

महेन्द्र कहिल, "काकी, तुमि बउके केन अन्याय भर्त्सना करितेछ। आमिइ तो उहाके धरिया राखियाछि।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "से कि भालो काज करियाछ? ओ बालिका, अनाथा, मार काछ हइते कोनोदिन कोनो शिक्षा पाय नाइ, ओ भालोमन्दर की जाने। तुमि उहाके की शिक्षा दितेछ?"

महेन्द्र कहिल, "एइ देखो, उहार जन्ये स्लेट खाता बइ किनिया आनियाछि। आमि बउके लेखापड़ा शिखाइब, ता लोके निन्दाइ करुक आर तोमरा रागइ कर।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "ताइ कि समस्त दिनइ शिखाइते हइबे। सन्ध्यार पर एक-आध घण्टा पड़ाइलेइ तो ढेर हय।"

महेन्द्र। अत सहज नय काकी, पड़ाशुनाय एकटु समयेर दरकार हय।

अन्नपूर्णा विरक्त हइया घर हइते बाहिर हइया गेलेन। आशाओ धीरे धीरे ताँहार अनुसरणेर उपक्रम करिल—महेन्द्र द्वार रोध करिया दाँड़ाइल, आशार करुण सजल नेत्रेर कातर अनुनय मानिल ना। कहिल, "रोसो, घुमाइया समय नष्ट करियाछि, सेटा पोषाइया लइते हइबे।"

एमन गम्भीरप्रकृति श्रद्धेय मूढ़ थाकितेओ पारेन यिनि मने करिबेन, महेन्द्र निद्रावेशे पड़ाइबार समय नष्ट करियाछे; विशेषरूपे ताँहादेर अवगतिर जन्य बला आवश्यक ये, महेन्द्रेर तत्त्वावधाने अध्यापनकार्य येरूपे निर्वाह हय, कोनो स्कुलेर इन्स्पेक्टर ताहार अनुमोदन करिबेन ना।

आशा ताहार स्वामीके विश्वास करिया छिल; से वस्तुतइ मने करियाछिल लेखापड़ा शेखा ताहार पक्षे नाना कारणे सहज नहे बटे, किन्तु स्वामीर आदेशवशत नितान्तइ कर्तव्य। एइजन्य से प्राणपणे अशान्त विक्षिप्त मनके संयत करिया आनित, शयनगृहेर मेझेर उपर ढाला बिछानार एक पार्श्वे

अत्यन्त गम्भीर हइया बसित एवं पुथिपत्रेर दिके एकेबारे झुंकिया पड़िया माथा दुलाइया मुखस्थ करिते आरम्भ करित। शयनगृहेर अपर प्रान्ते छोटो टेबिलेर उपर डाक्तारि बइ खुलिया मास्टरमशाय चौकिते बसिया आछेन, माझे माझे कटाक्षपाते छात्रीर मनोयोग लक्ष्य करिया देखितेछेन। देखिते देखिते हठात् डाक्तारि बइ बन्ध करिया महेन्द्र आशार डाक-नाम धरिया डाकिल, "चुनि।" चकित आशा मुख तुलिया चाहिल। महेन्द्र कहिल, "बइटा आनो देखि, देखि कोन्‌खानटा पड़ितेछ।"

आशार भय उपस्थित हइल, पाछे महेन्द्र परीक्षा करे। परीक्षाय उत्तीर्ण हइबार आशा अल्पइ छिल। कारण, चारुपाठेर चारुत्व-प्रलोभने ताहार अबाध्य मन किछुतेइ वश माने ना ; वल्मीक सम्बन्धे से यतइ ज्ञान-लाभेर चेष्टा करे, अक्षरगुला ततइ ताहार दृष्टिपथेर उपर दिया कालो पिपी-लिकार मतो सार बाँधिया चलिया याय।

परीक्षकेर डाक शुनिया अपराधीर मतो आशा भये भये बइखानि लइया महेन्द्रेर चौकिर पाशे आसिया उपस्थित हय। महेन्द्र एक हाते कटिदेश वेष्टनपूर्वक ताहाके दृढ़रूपे बन्दी करिया अपर हाते बइ धरिया कहे, "आज कतटा पड़िले देखि।" आशा यतगुला लाइने चोख बुलाइयाछिल, देखाइया देय। महेन्द्र क्षुण्णस्वरे बले, "उ: ! एतटा पड़िते पारियाछ ? आमि कतटा पड़ियाछि देखिबे ?" बलिया ताहार डाक्तारि बइयेर कोनो-एकटा अध्यायेर शिरोनामाटुकु मात्र देखाइया देय। आशा विस्मये चोखदुटा डागर करिया बले, "तबे एतक्षण की करितेछिले।" महेन्द्र ताहार चिबुक धरिया बले, "आमि एक जनेर कथा भाबितेछिलाम, किन्तु याहार कथा भाबितेछिलाम सेइ निष्ठुर तखन चारुपाठे उइपोकार अत्यन्त मनोहर विवरण लइया भुलियाछिल।" आशा एइ अमूलक अभियोगेर विरुद्धे उपयुक्त जवाब दिते पारित—किन्तु हाय, केवलमात्र लज्जार खातिरे प्रेमेर प्रतियोगिताय अन्याय पराभव नीरवे मानिया लइते हय।

इहा हइते स्पष्ट प्रमाण हइबे, महेन्द्रेर एइ पाठशालाटि सरकारि वा बेसरकारि कोनो विद्यालयेर कोनो नियम मानिया चले ना।

हयतो एक दिन महेन्द्र उपस्थित नाइ—सेइ सुयोगे आशा पाठे मन दिबार चेष्टा करितेछे, एमन समय कोथा हइते महेन्द्र आसिया ताहार चोख टिपिया धरिल, परे ताहार बइ काड़िया लइल, कहिल, "निष्ठुर, आमि ना थाकिले तुमि आमार कथा भाब ना, पड़ा लइया थाक ?"

आशा कहिल, "तुमि आमाके मूर्ख करिया राखिबे ?"

महेन्द्र कहिल, "तोमार कल्याणे आमारइ वा विद्या एमनइ की अग्रसर हइतेछे।"

कथाटा आशाके हठात् बाजिल; तत्क्षणात् चलिया याइबार उपक्रम करिया कहिल, "आमि तोमार पड़ाय की बाधा दियाछि।"

महेन्द्र ताहार हात धरिया कहिल, "तुमि ताहार की बुझिबे। आमाके छाड़िया तुमि यत सहजे पड़ा करिते पार, तोमाके छाड़िया तत सहजे आमि आमार पड़ा करिते पारि ना।"

गुरुतर दोषारोप। इहार परे स्वभावतइ शरतेर एक पसलार मतो एक दफा कान्नार सृष्टि हय एवं अनतिकालमध्येइ केवल एकटि सजल उज्ज्वलता राखिया सोहागेर सूर्यालोके ताहा विलीन हइया याय।

शिक्षक यदि शिक्षार सर्वप्रधान अन्तराय हन, तबे अबला छात्रीर साध्य की विद्यारण्येर मध्ये पथ करिया चले। माझे माझे मासीमार तीव्र भर्त्सना मने पड़िया चित्त विचलित हय—बुझिते पारे, लेखापड़ा एकटा छुता मात्र; शाशुड़ीके देखिले लज्जाय मरिया याय। किन्तु शाशुड़ी ताहाके कोनोकाज करिते बलेन ना, कोनो उपदेश देन ना; अनादिष्ट हइया आशा शाशुड़ीर गृहकार्ये साहाय्य करिते गेले तिनि व्यस्तसमस्त हइया बलेन, "कर की, कर की, शोबार घरे याओ, तोमार पड़ा कामाइ याइतेछे।"

अवशेषे अन्नपूर्णा आशाके कहिलेन, "तोर या शिक्षा हइतेछे से तो देखितेछि, एखन महिनकेओ कि डाक्तारि दिते दिबि ना।"

शुनिया आशा मनके खुब शक्त करिल, महेन्द्रके बलिल, "तोमार एक्जामिनेर पड़ा हइतेछे ना, आज हइते आमि नीचे मासिमार घरे गिया थाकिब।"

ए वयसे एतबड़ो कठिन संन्यासव्रत! शयनालय हइते एकेबारे मासिमार घरे आत्मनिर्वासन! एइ कठोर प्रतिज्ञा उच्चारण करिते ताहार चोखेर प्रान्ते जल आसिया पड़िल, ताहार अबाध्य क्षुद्र अधर काँपिया उठिल एवं कण्ठस्वर रुद्धप्राय हइया आसिल।

महेन्द्र कहिल, "तबे ताइ चलो, काकीर घरेइ याओया याक—किन्तु ताहा हइले ताँहाके उपरे आमादेर घरे आसिते हइबे।"

आशा एतबड़ो उदार गम्भीर प्रस्तावे परिहास प्राप्त हइया राग करिल। महेन्द्र कहिल, "तार चेये तुमि स्वयं दिनरात्रि आमाके चोखे चोखे राखिया पाहारा दाओ, देखो आमि एक्जामिनेर पड़ा मुखस्थ करि कि ना।"

अति सहजेइ सेइ कथा स्थिर हइल। चोखे चोखे पाहारार कार्य

2

किरूप भावे निर्वाह हइत ताहार विस्तारित विवरण देओया अनावश्यक, केवल एइटुकु बलिलेइ यथेष्ट हइबे ये, से वत्सर महेन्द्र परीक्षाय फेल करिल एवं चारुपाठेर विस्तारित वर्णना सत्वेओ पुरुभुज सम्बन्धे आशार अनभिज्ञता दूर हइल ना।

एइरूप अपूर्व पठन-पाठन-व्यापार ये सम्पूर्ण निर्विघ्ने सम्पन्न हइया छिल ताहा बलिते पारि ना। बिहारी माझे माझे आसिया अत्यन्त गोल बाधाइया दित। "महिनदा महिनदा" करिया से पाड़ा माथाय करिया तुलित। महेन्द्रके ताहार शयनगृहेर विवर हइते टानिया ना बाहिर करिया से कोनो-मतेइ छाड़ित ना। पड़ाय शैथिल्य करितेछे बलिया से महेन्द्रके विस्तर भर्त्सना करित। आशा के बलित, "बउठान, गिलिया खाइले हजम हयना, चिबाइया खाइते हय। एखन समस्त अन्न एकग्रासे गिलितेछ, इहार परे हजमि गुलि खुंजिया पाइबे ना।"

महेन्द्र बलित, "चुनि, ओ-कथा शुनियो ना—बिहारी आमादेर सुखे हिंसा करितेछे।"

बिहारी बलित, "सुख यखन तोमार हातेइ आछे, तखन एमन करिया भोग करो याहाते परेर हिंसा ना हय।"

महेन्द्र उत्तर करित, "परेर हिंसा पाइते ये सुख आछे। चुनि, आर एकटु हइलेइ आमि गर्दभेर मतो तोमाके बिहारीर हाते समर्पण करितेछिलाम।"

बिहारी रक्तवर्ण हइया बलिया उठित, "चुप!"

एइ सकल व्यापारे आशा मने मने बिहारीर उपरे भारि विरक्त हइत। एक समय ताहार सहित बिहारीर विवाह-प्रस्ताव हइयाछिल बलियाइ बिहारीर प्रति ताहार एक प्रकार विमुख भाव छिल, बिहारी ताहा बुझित एवं महेन्द्र ताहा लइया आमोद करित।

राजलक्ष्मी बिहारीके डाकिया दुःख करितेन। बिहारी कहित, "मा, पोका यखन गुटि बाँधे तखन तत बेशि भय नय, किन्तु यखन काटिया उड़िया याय तखन फेरानो शक्त। के मने करियाछिल, ओ तोमार बन्धन एमन करिया काटिबे।"

महेन्द्रेर फेल-करा संवादे राजलक्ष्मी ग्रीष्मकालेर आकस्मिक अग्निकाण्डेर मतो दाउ दाउ करिया ज्वलिया उठिलेन, किन्तु ताहार गर्जन एवं दाहनटा सम्पूर्ण भोग करिलेन अन्नपूर्णा। ताँहार आहारनिद्रा दूर हइल।

६

एकदिन नववर्षार वर्षणमुखरित मेघाच्छन्न सायाह्ने गाये एकखानि सुवासित फुरफुरे चादर एवं गलाय एकगाछि जुँइफुलेर गोड़े माला परिया महेन्द्र आनन्दमने शयनगृहे प्रवेश करिल। हठात् आशाके विस्मयचकित करिबे बलिया जुतार शब्द करिल ना। घरे उँकि दिया देखिल, पुबदिकेर खोला जानला दिया प्रबल वातास वृष्टिर छाँट लइया घरेर मध्ये प्रवेश करितेछे, वातासे दीप निबिया गेछे एवं आशा नीचेर बिछानार उपरे पड़िया अव्यक्तकण्ठे काँदितेछे।

महेन्द्र द्रुतपदे काछे आसिया जिज्ञासा करिल, "की हइयाछे।"

बालिका द्विगुण आवेगे काँदिया उठिल। अनेकक्षण परे महेन्द्र क्रमश उत्तर पाइल ये, मासिमा आर सह्य करिते ना पारिया ताँहार पिसतुत भाइयेर बासाय चलिया गेछेन।

महेन्द्र रागिया मने करिल, "गेलेन यदि, एमन बादलार सन्ध्याटा माटि करिया गेलेन!"

शेषकाले समस्त राग मातार उपरे पड़िल। तिनिइ तो सकल अशान्तिर मूल।

महेन्द्र कहिल, "काकी येखाने गेछेन, आमराओ सेइखाने याइब, देखि, मा काहाके लइया झगड़ा करेन।"

बलिया अनावश्यक शोरगोल करिया जिनिसपत्र बाँधाबाँधि मुटे-डाका-डाकि शुरु करिया दिल।

राजलक्ष्मी समस्त व्यापारटा बुझिलेन। धीरे धीरे महेन्द्रेर काछे आसिया शान्तस्वरे जिज्ञासा करिलेन, "कोथाय याइतेछिस।"

महेन्द्र प्रथमे कोनो उत्तर करिल ना। दुइ-तिन बार प्रश्नेर पर उत्तर करिल, "काकीर काछे याइब।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "तोदेर कोथाओ याइते हइबे ना, आमिइ तोर काकीके आनिया दितेछि।"

बलिया तत्क्षणात् पालकि चड़िया अन्नपूर्णार बासाय गेलेन। गलाय कापड़ दिया जोड़हात करिया कहिलेन, "प्रसन्न हओ मेजबउ, माप करो।"

अन्नपूर्णा शशव्यस्त हइया राजलक्ष्मीर पायेर धुला लइया कातरस्वरे कहिलेन, "दिदि, केन आमाके अपराधी करितेछ। तुमि येमन आज्ञा करिबे ताइ करिब।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "तुमि चलिया आसियाछ बलिया आमार छेले बउ घर छाड़िया आसितेछे।" बलिते बलिते अभिमाने क्रोधे धिक्कारे तिनि काँदिया फेलिलेन।

दुइ जा बाड़ि फिरिया आसिलेन। तखनो वृष्टि पड़ितेछे। अन्नपूर्णा महेन्द्रेर घरे यखन गेलेन तखन आशार रोदन शान्त हइयाछे एवं महेन्द्र नाना कथार छले ताहाके हासाइबार चेष्टा करितेछे। लक्षण देखिया बोध हय, बादलार सन्ध्याटा सम्पूर्ण व्यर्थ ना याइतेओ पारे।

अन्नपूर्णा कहिलेन, "चुनि, तुइ आमाके घरेओ थाकिते दिबि ना, अन्य कोथाओ गेलेओ सङ्गे लागिबि? आमार कि कोथाओ शान्ति नाइ?"

आशा अकस्मात् विद्ध मृगीर मतो चकित हइया उठिल।

महेन्द्र एकान्त विरक्त हइया कहिल, "केन काकी, चुनि तोमार की करियाछे।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "बउ-मानुषेर एत बेहायापना देखिते पारि ना बलियाइ चलिया गिया छिलाम, आबार शाशुड़ीके काँदाइया केन आमाके धरिया आनिल पोड़ारमुखी।"

जीवनेर कवित्व-अध्याये मा खुड़ी ये एमन विघ्न, ताहा महेन्द्र जानित ना।

परदिन राजलक्ष्मी बिहारीके डाकाइया कहिलेन, "बाछा, तुमि एकबार महिनके बलो, अनेक दिन देशे याइ नाइ, आमि बाराशते याइते चाइ।"

बिहारी कहिल, "अनेक दिनइ यखन यान नाइ तखन आर नाइ गेलेन। आच्छा, आमि महिनदाके बलिया देखि, किन्तु से ये किछुतेइ राजि हइबे ता बोध हय ना।"

महेन्द्र कहिल, "ता, जन्मस्थान देखिते इच्छा हय बटे। किन्तु बेशि दिन मार सेखाने ना थाकाइ भालो—वर्षार समय जायगाटा भालो नय।"

महेन्द्र सहजेइ सम्मति दिल देखिया बिहारी विरक्त हइल। कहिल, "मा एकला याइबेन, के ताँहाके देखिबे। बोठानकेओ सङ्गे पाठाइया दाओ ना!" बलिया एकटु हासिल।

बिहारीर गूढ़ भर्त्सनाय महेन्द्र कुण्ठित हइया कहिल, "ता बुझि आर पारि ना!"

किन्तु कथाटा इहार अधिक आर अग्रसर हइल ना।

एमनि करियाइ बिहारी आशार चित्त विमुख करिया देय, एवं आशा

ताहार उपरे विरक्त हइतेछे मने करिया से येन एक प्रकार शुष्क आमोद अनुभव करे।

बला बाहुल्य, राजलक्ष्मी जन्मस्थान देखिबार जन्य अत्यन्त उत्सुक छिलेन ना। ग्रीष्मे नदी यखन कमिया आसे तखन माझि येमन पदे पदे लगि फेलिया देखे कोथाय कत जल, राजलक्ष्मीओ तेमनि भावान्तरेर समय माता-पुत्रेर सम्पर्केर मध्ये लगि फेलिया देखितेछिलेन। ताँहार बाराशते याओयार प्रस्ताव ये एत शीघ्र एत सहजेइ तल पाइबे, ताहा तिनि आशा करेन नाइ। मने मने कहिलेन, 'अन्नपूर्णार गृहत्यागे एवं आमार गृहत्यागे प्रभेद आछे––से हइल मंत्र-जाना डाइनी आर आमि हइलाम शुद्धमात्र मा, आमार याओयाइ भालो।'

अन्नपूर्णा भितरकार कथाटा बुझिलेन, तिनि महेन्द्रके बलिलेन, "दिदि गेले आमिओ थाकिते पारिब ना।"

महेन्द्र राजलक्ष्मीके कहिल, "शुनितेछ मा? तुमि गेले काकीओ याइबेन, ताहा हइले आमादेर घरेर काज चलिबे की करिया।"

राजलक्ष्मी विद्वेषविषे जर्जरित हइया कहिलेन, "तुमि याइबे मेजबउ? एओ कि कखनो हय। तुमि गेले चलिबे की करिया। तोमार थाका चाइ-इ।"

राजलक्ष्मीर आर विलम्ब सहिल ना। परदिन मध्याह्नेइ तिनि देशे याइबार जन्य प्रस्तुत। महेन्द्रइ ये ताँहाके देशे राखिया आसिबे, ए विषये बिहारीर वा आर-काहारो सन्देह छिल ना। किन्तु समयकाले देखा गेल, महेन्द्र मार सङ्गे एक जन सरकार ओ दरोयान पाठाइबार व्यवस्था करियाछे।

बिहारी कहिल, "महिनदा, तुमि ये एखनो तैरि हओ नाइ?"

महेन्द्र लज्जित हइया कहिल, "आमार आबार कालेजेर––"

बिहारी कहिल, "आच्छा तुमि थाको, माके आमि पौंछाइया दिया आसिब।"

महेन्द्र मने मने रागिल। विरले आशाके कहिल, "वास्तविक, बिहारी बाड़ाबाड़ि आरम्भ करियाछे। ओ देखाइते चाय, येन ओ आमार चेये मार कथा बेशि भाबे।"

अन्नपूर्णाके थाकिते हइल, किन्तु तिनि लज्जाय क्षोभे ओ विरक्तिते संकुचित हइया रहिलेन। खुड़ीर एइरूप दूरभाव देखिया महेन्द्र राग करिल एवं आशाओ अभिमान करिया रहिल।

७

राजलक्ष्मी जन्मभूमिते पौँछिलेन। बिहारी ताँहाके पौँछाइया चलिया आसिबे एरूप कथा छिल; किन्तु सेखानकार अवस्था देखिया, से फिरिल ना।

राजलक्ष्मीर पैतृक बाटिते दुइ-एकटि अतिवृद्धा विधवा बाँचिया छिलेन मात्र। चारि दिके घन जङ्गल ओ बाँशवन, पुष्करिणीर जल सबुजवर्ण, दिने-दुपुरे शेयालेर डाके राजलक्ष्मीर चित्त उद्भ्रान्त हइया उठे।

बिहारी कहिल, "मा, जन्मभूमि बटे, किन्तु 'स्वर्गादपि गरीयसी' कोनोमतेइ बलिते पारि ना। कलिकाताय चलो। एखाने तोमाके परित्याग करिया गेले आमार अधर्म हइबे।"

राजलक्ष्मीरओ प्राण हाँपाइया उठियाछिल। एमन समय विनोदिनी आसिया ताँहाके आश्रय दिल एवं आश्रय करिल।

विनोदिनीर परिचय प्रथमेइ देओया हइयाछे। एक समये महेन्द्र एवं तदभावे बिहारीर सहित ताहार विवाहेर प्रस्ताव हइयाछिल। विधिनिर्बन्धे याहार सहित ताहार शुभविवाह हय, से लोकटिर समस्त अन्तरिन्द्रियेर मध्ये प्लीहाइ छिलो सर्वापेक्षा प्रबल। सेइ प्लीहार अतिभारेइ से दीर्घकाल जीवनधारण करिते पारिल ना।

ताहार मृत्युर पर हइते विनोदिनी, जङ्गलेर मध्ये एकटिमात्र उद्यानलतार मतो, निरानन्द पल्लीर मध्ये मुह्यमान भावे जीवनयापन करितेछिल। अद्य सेइ अनाथा आसिया ताहार राजलक्ष्मी पिस्शाशठाकरुनके भक्तिभरे प्रणाम करिल एवं ताँहार सेवाय आत्मसमर्पण करिया दिल।

सेवा इहाकेइ बले। मुहूर्तेर जन्य आलस्य नाइ। केमन परिपाटि काज, केमन सुन्दर रान्ना, केमन सुमिष्ट कथावार्ता।

राजलक्ष्मी बलेन, "बेला हइल मा, तुमि दुटि खाओ गे याओ।"

से कि शोने? पाखा करिया पिसिमाके घुम ना पाड़ाइया से उठें ना।

राजलक्ष्मी बलेन, "एमन करिले ये तोमार असुख करिबे मा।"

विनोदिनी निजेर प्रति निरतिशय ताच्छिल्य प्रकाश करिया बले, "आमादेर दुःखेर शरीरे असुख करे ना पिसिमा। आहा, कतदिन परे जन्मभूमिते आसियाछ, एखाने की आछे, की दिया तोमाके आदर करिब।"

बिहारी दुइ दिने पाड़ार कर्ता हइया उठिल। केह तार काछे रोगेर औषध केह वा मोकद्दमार परामर्श लइते आसे, केह वा निजेर छेलेके बड़ो आपिसे काज जुटाइया दिबार जन्य ताहाके धरे, केह वा ताहार काछे दरखास्त

लिखाइया लय। वृद्धदेर तासपाशार बैठक हइते बागदिदेर ताड़िपानसभा पर्यन्त सर्वत्र से ताहार सकौतुक कौतूहल एवं स्वाभाविक हृद्यता लइया याता-यात करित—केह ताहाके दूर मने करित ना, अथच सकलेइ ताहाके सम्मान करित।

विनोदिनी एइ अस्थाने पतित कलिकातार छेलेटिर निर्वासनदण्डओ यथासाध्य लघु करिबार जन्य अन्त:पुरेर अन्तराल हइते चेष्टा करित। बिहारी प्रत्येक बार पाड़ा पर्यटन करिया आसिया देखित, के ताहार घरटिके प्रत्येकबार परिपाटि परिच्छन्न करिया राखियाछे, एकटि काँसार ग्लासे दु-चारटि फुल एवं पातार तोड़ा साजाइयाछे एवं ताहार गदिर एक धारे बङ्किम ओ दीन-बन्धुर ग्रन्थावली गुछाइया राखियाछे। ग्रन्थेर भीतरेर मलाटे मेयेलि अथच पाका अक्षरे विनोदिनीर नाम लेखा।

पल्लीग्रामेर प्रचलित आतिथ्येर सहित इहार एकटु प्रभेद छिल। बिहारी ताहारइ उल्लेख करिया प्रशंसावाद करिले राजलक्ष्मी कहितेन, "एइ मेयेके कि ना तोरा अग्राह्य करिलि।"

बिहारी हासिया कहित, "भालो करि नाइ मा, ठकियाछि। किन्तु विवाह ना करिया ठका भालो, विवाह करिया ठकिलेइ मुश्किल।"

राजलक्ष्मी केवलइ मने करिते लागिलेन, "आहा, एइ मेयेइ तो आमार वधू हइते पारित। केन हइल ना।"

राजलक्ष्मी कलिकाताय फिरिबार प्रसङ्गमात्र उत्थापन करिले विनोदि-नीर चोख छलछल करिया उठित। से बलित, "पिसिमा, तुमि दु-दिनेर जन्ये केन एले! यखन तोमाके जानिताम ना, दिन तो एक रकम करिया काटित। एखन तोमाके छाड़िया केमन करिया थाकिब।"

राजलक्ष्मी मनेर आवेगे बलिया फेलितेन, "मा, तुइ आमार घरेर बउ हलिने केन, ता हइले तोके बुकेर मध्ये करिया राखिताम।"

से कथा शुनिया विनोदिनी कोनो छुताय लज्जाय सेखान हइते उठिया याइत।

राजलक्ष्मी कलिकाता हइते एकटा कातर अनुनयपत्रेर अपेक्षाय छिलेन। ताँहार महिन जन्मावधि कखनो एतदिन माके छाड़िया थाके नाइ—निश्चय एतदिने मार विच्छेद ताहाके अधीर करिया तुलितेछे। राजलक्ष्मी ताँहार छेलेर अभिमान एवं आबदारेर सेइ चिठिखानिर जन्य तृषित हइया छिलेन।

बिहारी महेन्द्रेर चिठि पाइल। महेन्द्र लिखियाछे, "मा बोध हय अनेक दिन परे जन्मभूमिते गिया बेश सुखे आछेन।"

राजलक्ष्मी भाबिलेन, "आहा, महेन्द्र अभिमान करिया लिखियाछे। सुखे आछेन! हतभागिनी मा नाकि महेन्द्रके छाड़िया कोथाओ सुखे थाकिते पारे।"

"ओ बिहारी, तार परे महिन की लिखियाछे, पड़िया शोना ना बाछा।"

बिहारी कहिल, "तार परे किछुइ ना मा।" बलिया चिठिखाना मुठार मध्ये दलित करिया एकटा बहिर मध्ये पुरिया घरेर एक कोणे धप करिया फेलिया दिल।

राजलक्ष्मी कि आर स्थिर थाकिते पारेन। निश्चयइ महिन मार उपर एमन राग करिया लिखियाछे ये, बिहारी ताँहाके पड़िया शोनाइल ना।

बाछुर येमन गाभीर स्तने आघात करिया दुग्ध एवं वात्सल्येर सञ्चार करे, महेन्द्रेर राग तेमनि राजलक्ष्मीके आघात करिया ताँहार अवरुद्ध वात्सल्यके उत्सारित करिया दिल। तिनि महेन्द्रके क्षमा करिलेन। कहिलेन, 'आहा, बउ लइया महिन सुखे आछे, सुखे थाक्—येमन करिया होक से सुखी होक। बउके लइया आमि ताहाके आर कोनो कष्ट दिब ना। आहा, ये मा कखनो ताहाके एक दण्ड छाड़िया थाकिते पारे ना से मा चलिया आसियाछे बलिया महिन मार 'परे राग करियाछे!' बार बार ताँर चोख दिया जल उछलिया उठिते लागिल।

सेदिन राजलक्ष्मी बिहारीके बार बार आसिया बलिलेन, "याओ बाबा, तुमि स्नान करो गे याओ। एखाने तोमार बड़ो अनियम हइतेछे।"

बिहारीरओ से दिन स्नानाहारे येन प्रवृत्ति छिल ना; से कहिल, "मा, आमार मतो लक्ष्मीछाड़ारा अनियमेइ भालो थाके।"

राजलक्ष्मी पीड़ापीड़ि करिया कहिलेन, "ना बाछा, तुमि स्नान करिते याओ।"

बिहारी सहस्र बार अनुरुद्ध हइया नाहिते गेल। से घरेर बाहिर हइबामात्रइ राजलक्ष्मी बहिर भीतर हइते ताड़ाताड़ि सेइ कुञ्चितदलित चिठिखानि बाहिर करिया लइलेन।

विनोदिनीर हाते चिठि दिया कहिलेन, "देखो तो मा, महिन बिहारीके की लिखियाछे।"

विनोदिनी पड़िया शुनाइते लागिल। महेन्द्र प्रथमटा मार कथा लिखियाछे; किन्तु से अति अल्पइ, बिहारी यतटुकु शुनाइयाछिल ताहार अधिक नहे।

तार परेइ आशार कथा। महेन्द्र रङ्गे रहस्ये आनन्दे येन माताल हइया लिखियाछे।

विनोदिनी एकटुखानि पड़िया शुनाइयाइ लज्जित हइया थामिया कहिल, "पिसिमा, ओ आर की शुनिबे।"

राजलक्ष्मीर स्नेहव्यग्र मुखेर भाव एक मुहूर्तेर मध्येइ पाथरेर मतो शक्त हइया येन जमिया गेल। राजलक्ष्मी एकटुखानि चुप करिया रहिलेन, तार परे बलिलेन, "थाक्।" बलिया चिठि फेरत ना लइयाइ चलिया गेलेन।

विनोदिनी सेइ चिठिखाना लइया घरे ढुकिल। भितर हइते द्वार बन्ध करिया बिछानार उपर बसिया पड़िते लागिल।

चिठिर मध्ये विनोदिनी की रस पाइल, ताहा विनोदिनीइ जाने। किन्तु ताहा कौतुकरस नहे। बार बार करिया पड़िते पड़िते ताहार दुइ चक्षु मध्याह्नेर बालुकार मतो ज्वलिते लागिल, ताहार निश्वास मरुभूमिर वातासेर मतो उत्तप्त हइया उठिल।

महेन्द्र केमन, आशा केमन, महेन्द्र–आशार प्रणय केमन, इहाइ ताहार मनेर मध्ये केवलइ पाक खाइते लागिल। चिठिखाना कोलेर उपर चापिया धरिया पा छाड़ाइया देयालेर उपर हेलान दिया अनेकक्षण सम्मुखे चाहिया बसिया रहिल।

महेन्द्रेर से चिठि बिहारी आर खुँजिया पाइल ना।

सेइदिन मध्याह्ने हठात् अन्नपूर्णा आसिया उपस्थित। दुःसंवादेर आशा करिया राजलक्ष्मीर बुकटा हठात् काँपिया उठिल—कोनो प्रश्न करिते तिनि साहस करिलेन ना, अन्नपूर्णार दिके पांशुवर्ण मुखे चाहिया रहिलेन।

अन्नपूर्णा कहिलेन, "दिदि, कलिकातार खबर सब भालो।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "तबे तुमि एखाने ये।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "दिदि, तोमार घरकन्नार भार तुमि लओ'से। आमार आर संसारे मन नाइ। आमि काशी याइब बलिया यात्रा करिया बाहिर हइयाछि। ताइ तोमाके प्रणाम करिते आसिलाम। ज्ञाने अज्ञाने अनेक अपराध करियाछि, माप करियो। आर तोमार बउ, (बलिते बलिते चोख भरिया उठिया जल पड़िते लागिल) से छेलेमानुष, तार मा नाइ, से दोषी होक निर्दोष होक से तोमार।" आर बलिते पारिलेन ना।

राजलक्ष्मी व्यस्त हइया ताँहार स्नानाहारेर व्यवस्था करिते गेलेन। बिहारी खबर पाइया गदाइ घोषेर चण्डीमण्डप हइते छुटिया आसिल। अन्नपूर्णाके प्रणाम करिया कहिल, "काकीमा, से की हय? आमादेर तुमि निर्मम हइया फेलिया याइबे?"

अन्नपूर्णा अश्रु दमन करिया कहिलेन, "आमाके आर फिराइबार चेष्टा करिसने, बेहारि—तोरा सब सुखे थाक्, आमार जन्ये किछुइ आटकाइबे ना।"

बिहारी किछुक्षण चुप करिया बसिया रहिल। तार परे कहिल, "महेन्द्रेर भाग्य मन्द, तोमाके से विदाय करिया दिल।"

अन्नपूर्णा चकित हइया कहिलेन, "अमन कथा बलिसने। आमि महिनेर उपर किछुइ राग करि नाइ। आमि ना गेले संसारेर मङ्गल हइबे ना।"

बिहारी दूरेर दिके चाहिया नीरवे बसिया रहिल। अन्नपूर्णा अञ्चल हइते एक जोड़ा मोटा सोनार बाला खुलिया कहिलेन, "बाबा, एइ बाला-जोड़ा तुमि राखो—बउमा यखन आसिबेन, आमार आशीर्वाद दिया ताँहाके पराइया दियो।"

बिहारी बालाजोड़ा माथाय ठेकाइया अश्रु संवरण करिते पाशेर घरे चलिया गेल।

विदायकाले अन्नपूर्णा कहिलेन, "बेहारि, आमार महिनके आर आमार आशाके देखिस।" राजलक्ष्मीर हस्ते एकखानि कागज दिया बलिलेन, "श्वशुरेर सम्पत्तिते आमार ये अंश आछे, ताहा एइ दानपत्रे महेन्द्रके लिखिया दिलाम। आमाके केवल मासे मासे पनेरोटि करिया टाका पाठाइया दियो।"

बलिया भूतले पड़िया राजलक्ष्मीर पदधूलि माथाय तुलिया लइलेन एवं विदाय हइया तीर्थोद्देशे यात्रा करिलेन।

८

आशा केमन भय पाइया गेल। ए की हइल। मा चलिया यान, मासिमा चलिया यान। ताहादेर सुख येन सकलकेइ ताड़ाइतेछे, एबार येन ताहाकेइ ताड़ाइबार पाला। परित्यक्त शून्य गृहस्थालिर माझखाने दाम्पत्येर नूतन प्रेमलीला ताहार काछे केमन असंगत ठेकिते लागिल।

संसारेर कठिन कर्त्तव्य हइते प्रेमके फुलेर मतो छिँड़िया स्वतन्त्र करिया लइले, ताहा केवल आपनार रसे आपनाके सजीव राखिते पारे ना, ताहा क्रमेइ विमर्ष ओ विकृत हइया आसे। आशाओ मने मने देखिते लागिल, ताहादेर अविश्राम मिलनेर मध्ये एकटा श्रान्ति ओ दुर्बलता आछे। से मिलन येन थाकिया थाकिया केवलइ मुषड़िया पड़े—संसारेर दृढ़ ओ प्रशस्त आश्रयेर अभावे ताहाके टानिया खाड़ा राखाइ कठिन हय। काजेर मध्येइ प्रेमेर मूल ना थाकिले, भोगेर विकाश परिपूर्ण एवं स्थायी हय ना।

महेन्द्रओ आपनार विमुख संसारेर विरुद्धे विद्रोह करिया आपन प्रेमोत्सवेर सकल बातिगुलाइ एकसङ्गे ज्वालाइया खुब समारोहेर सहित शून्यगृहेर अकल्याणेर मध्ये मिलनेर आनन्द समाधा करिते चेष्टा करिल। आशार मने से एकटुखानि खोंचा दियाइ कहिल, "चुनि, तोमार आजकाल की हइयाछे बलो देखि। मासि गेछेन, ता लइया अमन मन भार करिया आछ केन। आमादेर दु-जनार भालोबासातेइ कि सकल भालोबासार अवसान नय?"

आशा दुःखित हइया भाबित, "तबे तो आमार भालोबासाय एकटा की असम्पूर्णता आछे। आमि तो मासिर कथा प्रायइ भाबि; शाशुड़ी चलिया गेछेन बलिया तो आमार भय हय।" तखन से प्राणपणे एइ सकल प्रेमेर अपराध क्षालन करिते चेष्टा करे।

एखन गृहकर्म भालो करिया चले ना—चाकरबाकरेरा फाँकि दिते आरम्भ करियाछे। एकदिन झि असुख करियाछे बलिया आसिल ना, बामुनठाकुर मद खाइया निरुद्देश हइया रहिल। महेन्द्र आशाके कहिल, "बेश मजा हइयाछे, आज आमरा निजेरा रन्धनेर काज सारिया लइब।"

महेन्द्र गाड़ि करिया निउ मार्केटे बाजार करिते गेल। कोन् जिनिसटा की परिमाणे दरकार, ताहा ताहार किछुमात्र जाना छिल ना—कतकगुला बोझा लइया आनन्दे घरे फिरिया आसिल। सेगुला लइया ये की करिते हइबे, आशाओ ताहा भालोरूप जाने ना। परीक्षाय बेला दुटा-तिनटा हइया गेल एवं नानाविध अभूतपूर्व अखाद्य उद्भावन करिया महेन्द्र अत्यन्त आमोद बोध करिल। आशा महेन्द्रेर आमोदे योग दिते पारिल ना, आपन अज्ञता ओ अक्षमताय मने मने अत्यन्त लज्जा ओ क्षोभ पाइल।

घरे घरे जिनिसपत्रेर एमनि विशृङ्खला घटियाछे ये, आवश्यकेर समये कोनो जिनिस खुँजिया पाओयाइ कठिन। महेन्द्रेर चिकित्सार अस्त्र एकदिन तरकारि कुटिबार कार्ये नियुक्त हइया आवर्जनार मध्ये अज्ञातवास ग्रहण करिल एवं ताहार नोटेर खाता हातपाखार अ्याकटिनि करिया रान्नाघरेर भस्मशय्याय विश्राम करिते लागिल।

एइ सकल अभावनीय व्यवस्थाविपर्यये महेन्द्रेर कौतुकेर सीमा रहिल ना, किन्तु आशा व्यथित हइते थाकिल। उच्छृङ्खल यथेच्छाचारेर स्रोते समस्त घरकन्ना भासाइया हास्यमुखे भासिया चला बालिकार काछे विभीषिकाजनक बलिया बोध हइते लागिल।

एकदिन सन्ध्यार समय दुइ जने ढाका-बारान्दाय बिछाना करिया बसियाछे। सम्मुखे खोला छाद। वृष्टिर परे कलिकातार दिगन्तव्यापी

सौधशिखरश्रेणी ज्योत्स्नाय प्लावित। बागान हइते राशीकृत भिजा बकुल संग्रह करिया आशा नतशिरे माला गाँथितेछे। महेन्द्र ताहा लइया टानाटानि करिया, बाधा घटाइया, प्रतिकूल समालोचना करिया, अनर्थक एकटा कलह सृष्टि करिबार उद्योग करितेछिल। आशा एइ सकल अकारण उत्पीड़न लइया ताहाके भर्त्सना करिबार उपक्रम करिबामात्र महेन्द्र कोनो एकटि कृत्रिम उपाये आशार मुख बन्ध करिया शासन-वाक्य अंकुरेइ विनाश करितेछिल।

एमन समय प्रतिवेशीर बाड़िर पिञ्जरेर मध्य हइते पोषा कोकिल कुहु कुहु करिया डाकिया उठिल। तखनइ महेन्द्र एवं आशा ताहादेर माथार उपरे दोदुल्यमान खाँचार दिके दृष्टिपात करिल। ताहादेर कोकिल प्रतिवेशी कोकिलेर कुहुध्वनि कखनो नीरवे सह्य करे नाइ, आज से जवाब देय ना केन?

आशा उत्कण्ठित हइया कहिल, "पाखिर आज की हइल।"

महेन्द्र कहिल, "तोमार कण्ठ शुनिया लज्जाबोध करितेछे।"

आशा सानुनयस्वरे कहिल, "ना, ठाट्टा नय, देखो ना उहार की हइयाछे।"

महेन्द्र तखन खाँचा पाड़िया नामाइल। खाँचार आवरण खुलिया देखिल, पाखि मरिया गेछे। अन्नपूर्णार याओयार पर बेहारा छुटि लइया गियाछिल, पाखिके केह देखे नाइ।

देखिते देखिते आशार मुख म्लान हइया गेल। ताहार आंगुल चलिल ना—फुल पड़िया रहिल। महेन्द्रेर मने आघात लागिलेओ, अकाले रसभङ्गेर आशङ्काय व्यापारटा से हासिया उड़ाइबार चेष्टा करिल। कहिल, "भालोइ हइयाछे; आमि डाक्तारि करिते याइताम, आर ओटा कुहुस्वरे तोमाके ज्वालाइया मारित।" एइ बलिया महेन्द्र आशाके बाहुपाशे वेष्टन करिया काछे टानिया लइबार चेष्टा करिल।

आशा आस्ते आस्ते आपनाके छाड़ाइया लइया आँचल शून्य करिया बकुलगुला फेलिया दिल। कहिल, "आर केन। छि छि। तुमि शीघ्र याओ, माके फिराइया आनो गे।"

९

एमन समय दोतला हइते, "महिनदा महिनदा" रव उठिल। "आरे के हे, एस एस" बलिया महेन्द्र जवाब दिल। बिहारीर साड़ा पाइया महेन्द्रेर चित्त उत्फुल्ल हइया उठिल। विवाहेर पर विहारी माझे माझे ताहादेर

सुखेर बाधास्वरूप आसियाछे—आज सेइ बाधाइ सुखेर पक्षे एकान्त प्रयोजनीय बलिया बोध हइल।

आशाओ बिहारीर आगमने आराम बोध करिल। माथाय कापड़ दिया से ताड़ाताड़ि उठिया पड़िल देखिया महेन्द्र कहिल, "याओ कोथाय। आर तो केह नय, बिहारी आसितेछे।"

आशा कहिल, "ठाकुरपोर जलखाबारेर बन्दोबस्त करिया दिइ गे।"

एकटा किछु कर्म करिबार उपलक्ष्य आसिया उपस्थित हओयाते आशार अवसाद कतकटा लघु हइया गेल।

आशा शाशुड़िर संवाद जानिबार जन्य माथाय कापड़ दिया दाँड़ाइया रहिल। बिहारीर सहित एखनो से कथा कय ना।

बिहारी प्रवेश करियाइ कहिल, "आ सर्वनाश। की कवित्वेर माझ-खानेइ पा फेलिलाम। भय नाइ बोठान, तुमि बसो, आमि पालाइ।"

आशा महेन्द्रेर मुखे चाहिल। महेन्द्र जिज्ञासा करिल, "बिहारी, मार की खबर।"

बिहारी कहिल, "मा-खुड़ीर कथा आज केन भाइ। से ढेर समय आछे। such a night was not made for sleep, nor for mothers and aunts !"

बलिया बिहारी फिरिते उद्यत हइले, महेन्द्र ताहाके जोर करिया टानिया आनिया बसाइल। बिहारी कहिल, "बोठान, देखो आमार अपराध नाइ—आमाके जोर करिया आनिल—पाप करिल महिनदा, ताहार अभिशापटा आमार उपरे येन ना पड़े।"

कोनो जवाब दिते पारे ना बलियाइ एइ सब कथाय आशा अत्यन्त विरक्त हय। बिहारी इच्छा करिया ताहाके ज्वालातन करे।

बिहारी कहिल, "बाड़िर श्री तो देखितेछि—माके एखनो आनाइबार कि समय हय नाइ।"

महेन्द्र कहिल, "विलक्षण; आमरा तो ताँर जन्यइ अपेक्षा करिया आछि।"

बिहारी कहिल, "सेइ कथाटि ताँहाके जानाइया पत्र लिखिते तोमार अल्प समय लागिबे, किन्तु ताँहार सुखेर सीमा थाकिबे ना। बोठान, महिनदाके सेइ दु-मिनिट छुटि दिते हइबे, तोमार काछे आमार एइ आवेदन।"

आशा रागिया चलिया गेल—ताहार चोख दिया जल पड़िते लागिल।

महेन्द्र कहिल, "की शुभ क्षणेइ ये तोमादेर देखा हइयाछिल। किछुतेइ सन्धि हइल ना—केवलइ ठुकठाक चलितेछे।"

बिहारी कहिल, "तोमाके तोमार मा तो नष्ट करियाछेन, आबार स्त्रीओ नष्ट करिते बसियाछे। सेइटे देखिते पारि ना बलिया समय पाइले दुइ-एक कथा बलि।"

महेन्द्र। ताहाते फल की हय।

बिहारी। फल तोमार सम्बन्धे विशेष किछुइ हय ना, आमार सम्बन्धे किञ्चित हय।

१०

बिहारी निजे बसिया महेन्द्रके दिया चिठि लिखाइया लइल एवं से-चिठि लइया परदिनइ राजलक्ष्मीके आनिते गेल। राजलक्ष्मी बुझिलेन, ए चिठि बिहारीइ लिखाइयाछे—किन्तु तबु आर थाकिते पारिलेन ना। सङ्गे विनोदिनी आसिल।

गृहिणी फिरिया आसिया गृहेर येरूप दुरवस्था देखिलेन—समस्त अमार्जित, मलिन, विपर्यस्त—ताहाते वधूर प्रति ताँहार मन आरो येन वक्र हइया उठिल।

किन्तु वधूर ए की परिवर्तन। से ये छायार मतो ताँहार अनुसरण करे। आदेश ना पाइलेओ ताँहार कर्मे सहायता करिते अग्रसर हय। तिनि शशव्यस्त हइया बलिया उठेन, "राखो, राखो, ओ तुमि नष्ट करिया फेलिबे। जान ना ये-काज से काजे केन हात देओया।"

राजलक्ष्मी स्थिर करिलेन, अन्नपूर्णा चलिया याओयातेइ वधूर एत उन्नति हइयाछे। किन्तु तिनि भाबिलेन, 'महेन्द्र मने करिबे, खुड़ी यखन छिल, तखन वधूके लइया आमि बेश निष्कण्टके सुखे छिलाम—आर मा आसितेइ आमार विरहदुःख आरम्भ हइल। इहाते अन्नपूर्णा ये ताहार हितैषी एवं मा ये ताहार सुखेर अन्तराय, इहाइ प्रमाण हइबे। काज की।'

आजकाल दिनेर वेला महेन्द्र डाकिया पाठाइले, वधू याइते इतस्ततः करित—किन्तु राजलक्ष्मी भर्त्सना करिया बलितेन, "महिन डाकितेछे, से बुझि आर काने तुलिते नाइ। बेशि आदर पाइले शेषकाले एमनइ घटिया थाके। याओ, तोमार आर तरकारिते हात दिते हइबे ना।"

आबार सेइ श्लेट-पेनसिल-चारुपाठ लइया मिथ्या खेला। भालोबासार अमूलक अभियोग लइया परस्परके अपराधी करा। उभयेर मध्ये काहार प्रेमेर ओजन बेशि, ताहा लइया बिना-युक्तिमूले तुमुल तर्कवितर्क। वर्षार

दिनके रात्रि करा एवं ज्योत्स्नारात्रिके दिन करिया तोला। श्रान्ति एवं अवसादके गायेर जोरे दूर करिया देओया। परस्परके एमनि करिया अभ्यास करा ये, सङ्ग यखन असाड़ चित्ते आनन्द दितेछे ना तखनो क्षणकालेर जन्य मिलनपाश हइते मुक्ति भयावह मने हय—सम्भोगसुख भस्माच्छन्न, अथच कर्मान्तरे याइतेओ पा ओठे ना। भोगसुखेर एइ भयंकर अभिशाप ये, सुख अधिक दिन थाके ना, किन्तु बन्धन दुश्छेद्य हइया उठे।

एमन समय विनोदिनी एक दिन आसिया आशार गला जड़ाइया धरिया कहिल, "भाइ, तोमार सौभाग्य चिरकाल अक्षय होक, किन्तु आमि दुःखिनी बलिया कि आमार दिके एकबार ताकाइते नाइ।"

आत्मीयगृहे बाल्यकाल हइते परेर मतो लालित हइयाछिल बलिया, लोकसाधारणेर निकट आशार एक प्रकार आन्तरिक कुण्ठितभाव छिल। भय हइत, पाछे केह प्रत्याख्यान करे। विनोदिनी यखन ताहार जोड़ा भुरु ओ तीक्ष्ण दृष्टि, ताहार निखुँत मुख ओ निटोल यौवन लइया उपस्थित हइल, तखन आशा अग्रसर हइया ताहार परिचय लइते साहस करिल ना।

आशा देखिल, शाशुड़ी राजलक्ष्मीर निकट विनोदिनीर कोनोप्रकार संकोच नाइ। राजलक्ष्मीओ येन आशाके विशेष करिया देखाइया देखाइया विनोदिनीके बहुमान दितेछेन, समये-असमये आशाके विशेष करिया शुनाइया शुनाइया विनोदिनीर प्रशंसावाक्ये उच्छ्वसित हइया उठितेछेन। आशा देखिल, विनोदिनी सर्वप्रकार गृहकर्मे सुनिपुण—प्रभुत्व येन ताहार पक्षे नितान्त सहज स्वभावसिद्ध—दासदासीदिगके कर्मे नियोग करिते, भर्त्सना करिते ओ आदेश करिते से लेशमात्र कुण्ठित नहे। एइ समस्त देखिया आशा विनोदिनीर काछे निजेके नितान्त क्षुद्र मने करिल।

सेइ सर्वगुणशालिनी विनोदिनी यखन अग्रसर हइया आशार प्रणय प्रार्थना करिल, तखन संकोचेर बाधाय ठेकियाइ बालिकार आनन्द आरो चार गुण उच्छलिया पड़िल। जादुकरेर मायातरुर मतो ताहादेर प्रणयबीज एक दिनेइ अंकुरित पल्लवित ओ पुष्पित हइया उठिल।

आशा कहिल, "एस भाइ, तोमार सङ्गे एकटा किछु पाताइ।"

विनोदिनी हासिया कहिल, "की पाताइबे।"

आशा गङ्गाजल बकुलफुल प्रभृति अनेकगुलि भालो-भालो जिनिसेर नाम करिल।

विनोदिनी कहिल, "ओ-सब पुरानो हइया गेछे; आदरेर नामेर आर आदर नाइ!"

आशा कहिल, "तोमार कोनटा पछन्द।"

विनोदिनी हासिया कहिल, "चोखेर बालि।"

श्रुतिमधुर नामेर दिकेइ आशार झोंक छिल, किन्तु विनोदिनीर परामर्शे आदरेर गालिटिइ ग्रहण करिल। विनोदिनीर गला धरिया बलिल, "चोखेर बालि।" बलिया हासिया लुटाइया पड़िल।

११

आशार पक्षे सङ्गिनीर बड़ो दरकार हइयाछिल। भालोबासार उत्सवओ केवलमात्र दुटि लोकेर द्वारा सम्पन्न हय ना—सुखालापेर मिष्टान्न वितरणेर जन्य बाजे लोकेर दरकार हय।

क्षुधितहृदया विनोदिनीओ नववधूर नवप्रेमेर इतिहास मातालेर ज्वालामय मदेर मतो कान पातिया पान करिते लागिल। ताहार मस्तिष्क मातिया शरीरेर रक्त ज्वलिया उठिल।

निस्तब्ध मध्याह्ने मा यखन घुमाइतेछेन, दासदासीरा एकतलार विश्रामशालाय अदृश्य, महेन्द्र बिहारीर ताड़नाय क्षणकालेर जन्य कालेजे गेछे एवं रौद्रतप्त नीलिमार शेष प्रान्त हइते चिलेर तीव्र कण्ठ अतिक्षीण स्वरे कदाचित् शुना याइतेछे, तखन निर्जन शयनगृहे नीचेर बिछानार बालिशेर उपर आशा ताहार खोला चुल छड़ाइया शुइत एवं विनोदिनी बुकेर नीचे बालिश टानिया उपुड़ हइया शुइया गुन गुन-गुञ्जरित काहिनीर मध्ये आविष्ट हइया रहित, ताहार कर्णमूल आरक्त हइया उठित, निश्वास वेगे प्रवाहित हइते थाकित।

विनोदिनी प्रश्न करिया करिया तुच्छतम कथाटि पर्यन्त बाहिर करित, एक कथा बार बार करिया शुनित, घटना निःशेष हइया गेले कल्पनार अवतारणा करित—कहित, 'आच्छा भाइ, यदि एमन हइत तो की हइत, यदि अमन हइत तो की करिते।' सेइ सकल असम्भावित कल्पनार पथे सुखालोचनाके सुदीर्घ करिया टानिया लइया चलिते आशारओ भालो लागित।

विनोदिनी कहित, "आच्छा भाइ चोखेर बालि, तोर सङ्गे यदि बिहारीबाबुर विवाह हइत।"

आशा। ना भाइ, ओ-कथा तुमि बलियो ना—छि छि, आमार बड़ो लज्जा करे। किन्तु तोमार सङ्गे हइले बेश हइत, तोमार सङ्गेओ तो कथा हइयाछिल।

विनोदिनी। आमार सङ्गे तो ढेर लोकेर ढेर कथा हइयाछिल। ना हइयाछे, बेश हइयाछे—आमि या आछि, बेश आछि।

आशा ताहार प्रतिवाद करे। विनोदिनीर अवस्था ये ताहार अवस्थार चेये भालो, ए-कथा से केमन करिया स्वीकार करिबे। "एकबार मने करिया देखो देखि भाइ बालि, यदि आमार स्वामीर सङ्गे तोमार विवाह हइया याइत। आर एकटु हलेइ तो हइत।"

ता तो हइतइ। ना हइल केन। आशार एइ बिछाना, एइ खाट तो एक दिन ताहारइ जन्य अपेक्षा करिया छिल। विनोदिनी एइ सुसज्जित शयन घरेर दिके चाय, आर से-कथा किछुतेइ भुलिते पारे ना। ए-घरे आज से अतिथिमात्र—आज स्थान पाइयाछे, काल आबार उठिया याइते हइबे।

अपराह्णे विनोदिनी निजे उद्योगी हइया अपरूप नैपुण्येर सहित आशार चुल बाँधिया साजाइया ताहाके स्वामिसम्मिलने पाठाइया दित। ताहार कल्पना येन अवगुण्ठिता हइया एइ सज्जिता वधूर पश्चात् पश्चात् मुग्ध युवकेर अभिसारे जनहीन कक्षे गमन करित। आबार एक-एक दिन किछुतेइ आशाके छाड़िया दित ना। बलित, "आः, आर एकटु बसोइ ना। तोमार स्वामी तो पालाइतेछेन ना। तिनि तो वनेर मायामृग नन, तिनि अञ्चलेर पोषा हरिण।" एइ बलिया नाना छले धरिया राखिया देरि कराइबार चेष्टा करित।

महेन्द्र अत्यन्त राग करिया बलित, "तोमार सखी ये नड़िबार नाम करेन ना—तिनि बाड़ि फिरिबेन कबे।"

आशा व्यग्र हइया बलित, "ना तुमि आमार चोखेर बालिर उपर राग करियो ना। तुमि जान ना, से तोमार कथा शुनिते कत भालोबासे—कत यत्न करिया साजाइया आमाके तोमार काछे पाठाइया देय।"

राजलक्ष्मी आशाके काज करिते दितेन ना। विनोदिनी वधूर पक्ष लइया ताहाके काजे प्रवृत्त कराइल। प्राय समस्त दिनइ विनोदिनीर काजे आलस्य नाइ, सेइ सङ्गे आशाकेओ से आर छुटि दिते चाय ना। विनोदिनी परे-परे एमनि काजेर शृङ्खल बानाइतेछिल ये, ताहार मध्ये फाँक पाओया आशार पक्षे भारि कठिन हइया उठिल। आशार स्वामी छादेर उपरकार शून्य घरेर कोणे बसिया आक्रोशे छटफट करितेछे, इहा कल्पना करिया विनो-दिनी मने मने तीव्र कठिन हासि हासित। आशा उद्विग्न हइया बलित, "एबार याइ भाइ चोखेर बालि, तिनि आबार राग करिबेन।"

विनोदिनी ताड़ाताड़ि बलित, "रोसो, एइटुकु शेष करिया याओ। आर बेशि देरी हइबे ना।"

खानिक बादे आशा आबार छटपट करिया बलिया उठित, "ना भाइ, एबार तिनि सत्यसत्यइ राग करिबेन—आमाके छाड़ो, आमि याइ।"

विनोदिनी बलित, "आहा, एकटु राग करिलइ वा। सोहागेर सङ्गे राग ना मिशिले भालोबासार स्वाद थाके ना—तरकारिते लङ्कामरिचेर मतो।"

किन्तु लङ्कामरिचेर स्वादटा ये की, ताहा विनोदिनीइ बुझितेछिल—केवल सङ्गे ताहार तरकारि छिल ना। ताहार शिराय शिराय येन आगुन धरिया गेल। से ये दिके चाय, ताहार चोखे येन स्फुलिङ्ग वर्षण हइते थाके। 'एमन सुखेर घरकन्ना—एमन सोहागेर स्वामी। ए-घरके ये आमि राजार राजत्व, ए-स्वामीके ये आमि पायेर दास करिया राखिते पारिताम। तखन कि ए-घरेर एइ दशा, ए-मानुषेर एइ छिरि थाकित। आमार जायगाय कि ना एइ कचि खुकि, एइ खेलार पुतुल।' (आशार गला जड़ाइया) "भाइ चोखेर बालि, बलो ना भाइ, काल तोमादेर की कथा हइल भाइ। आमि तोमाके याहा शिखाइया दियाछिलाम ताहा बलियाछिले? तोमादेर भालोबासार कथा शुनिले आमार क्षुधातृष्णा थाके ना भाइ।"

१२

महेन्द्र एक दिन विरक्त हइया ताहार माके डाकिया कहिल, "ए कि भालो हइतेछे? परेर घरेर युवती विधवाके आनिया एकटा दाय घाड़े करिबार दरकार की। आमार तो इहाते मत नाइ—की जानि कखन की संकट घटिते पारे।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "ओ ये आमादेर विपिनेर बउ, उहाके आमि तो पर मने करि ना।"

महेन्द्र कहिल, "ना मा, भालो हइतेछे ना। आमार मते उहाके राखा उचित हय ना।"

राजलक्ष्मी बेश जानितेन, महेन्द्रेर मत अग्राह्य करा सहज नहे। तिनि बिहारीके डाकिया कहिलेन, "ओ बेहारि, तुइ एकबार महिनके बुझाइया बल्। बिपिनेर बउ आछे बलियाइ एइ वृद्धवयसे आमि एकटु विश्राम करिते पाइ। पर हउक, या हउक, आपन लोकेर काछ हइते एमन सेवा तो कखनो पाइ नाइ।"

बिहारी राजलक्ष्मीके कोनो उत्तर ना करिया महेन्द्रेर काछे गेल—कहिल, "महिनदा, विनोदिनीर कथा किछु भाबितेछ?"

महेन्द्र हासिया कहिल, "भाबिया रात्रे घुम हय ना। तोमार बोठानके जिज्ञासा करो ना, आजकाल विनोदिनीर ध्याने आमार आर-सकल ध्यानइ भङ्ग हइयाछे।"

आशा घोमटार भितर हइते महेन्द्रके नीरवे तर्जन करिल।

बिहारी कहिल, "बल की। द्वितीय विषवृक्ष।"

महेन्द्र। ठिक ताइ। एखन उहाके विदाय करिबार जन्य चुनि छटफट करितेछे।

घोमटार भितर हइते आशार दुइ चक्षु आबार भर्त्सना वर्षण करिल।

बिहारी कहिल, "विदाय करिलेओ फिरिते कतक्षण। विधवार विवाह दिया दाओ—विषदाँत एकेबारे भाङ्गिबे।"

महेन्द्र। कुन्दरओ तो विवाह् देओया हइयाछिल।

बिहारी कहिल, "थाक्, ओ उपमाटा एखन राखो। विनोदिनीर कथा आमि माझे माझे भावि। तोमार एखाने उनि तो चिरदिन थाकिते पारेन ना। ताहार परे, ये वन देखिया आसियाछि सेखाने उँहाके यावज्जीवन वनवासे पाठानो, सेओ बड़ो कठिन दण्ड।"

महेन्द्रेर सम्मुखे ए पर्यन्त विनोदिनी बाहिर हय नाइ, किन्तु बिहारी ताहाके देखियाछे। बिहारी एटुकु बुझियाछे, ए नारी जङ्गले फेलिया राखिबार नहे। किन्तु शिखा एक भावे घरेर प्रदीपरूपे ज्वले, आर-एक भावे घरे आगुन धराइया देय—से आशङ्काओ बिहारीर मने छिल।

महेन्द्र बिहारीके एइ कथा लइया अनेक परिहास करिल। बिहारीओ ताहार जवाब दिल। किन्तु ताहार मन बुझियाछिल, ए-नारी खेला करिबार नहे, इहाके उपेक्षा कराओ याय ना।

राजलक्ष्मी विनोदिनीके सावधान करिया दिलेन। कहिलेन, "देखो बाछा, बउके लइया तुमि अत टानाटानि करियो ना। तुमि पाड़ागाँयेर गृहस्थ-घरे छिले—आजकालकार चालचलन जान ना। तुमि बुद्धिमती, भालो करिया बुझिया चलियो।"

इहार पर विनोदिनी अत्यन्त आड़म्बरपूर्वक आशाके दूरे दूरे राखिल। कहिल, "आमि भाइ के। आमार मतो अवस्थार लोक आपन मान बाँचाइया चलिते ना जानिले, कोन दिन कि घटे बला याय कि।"

आशा साधासाधि कान्नाकाटि करिया मरे—विनोदिनी दृढ़प्रतिज्ञ। मनेर कथाय आशा आकण्ठ परिपूर्ण हइया उठिल, किन्तु विनोदिनी आमल दिल नां।

एदिके महेन्द्रेर बाहुपाश शिथिल एवं ताहार मुग्धदृष्टि येन क्लान्तिते आवृत हइया आसियाछे। पूर्वे ये-सकल अनियम-उच्छृङ्खला ताहार काछे कौतुकजनक बोध हइत, एखन ताहा अल्पे अल्पे ताहाके पीड़न करिते आरम्भ करियाछे। आशार सांसारिक अपटुताय से क्षणे क्षणे विरक्त हय, किन्तु प्रकाश करिया बले ना। प्रकाश ना करिलेओ आशा अन्तरे अन्तरे अनुभव करियाछे, निरवच्छिन्न मिलने प्रेमेर मर्यादा म्लान हइया याइतेछे। महेन्द्रेर सोहागेर मध्ये बेसुर लागितेछिल—कतकटा मिथ्या बाड़ाबाड़ि, कतकटा आत्मप्रतारणा।

ए समये पलायन छाड़ा परित्राण नाइ, विच्छेद छाड़ा औषध नाइ। स्त्रीलोकेर स्वभावसिद्ध संस्कारवशे आशा आजकाल महेन्द्रके फेलिया याइबार चेष्टा करित। किन्तु विनोदिनी छाड़ा ताहार याइबार स्थान कोथाय।

महेन्द्र प्रणयेर उत्तप्त वासरशय्यार मध्ये चक्षु उन्मीलन करिया धीरे धीरे संसारेर काजकर्म पड़ाशुनार प्रति एकटु सजाग हइया पाश फिरिल। डाक्तारि बइगुलोके नाना असम्भव स्थान हइते उद्धार करिया धुला झाड़िते लागिल एवं चापकान-प्यान्टलुन-कयटा रौद्रे दिबार उपक्रम करिल।

१३

विनोदिनी यखन नितान्तइ धरा दिल ना तखन आशार माथाय एकटा फन्दि आसिल। से विनोदिनीके कहिल, "भाइ बालि, तुमि आमार स्वामीर सम्मुखे बाहिर हओ ना केन। पलाइया बेड़ाओ की जन्य।"

विनोदिनी अति संक्षेपे एवं सतेजे उत्तर करिल, "छि छि।"

आशा कहिल, "केन। मार काछे शुनियाछि, तुमि तो आमादेर पर नओ।"

विनोदिनी गम्भीर मुखे कहिल, "संसारे आपन-पर केहइ नाइ। ये आपन मने करे सेइ आपन—ये पर बलिया जाने, से आपन हइलेओ पर।"

आशा मने मने भाबिल, ए-कथार आर उत्तर नाइ। वास्तविकइ ताहार स्वामी विनोदिनीर प्रति अन्याय करेन, वास्तविकइ ताहाके पर भावेन एवं ताहार प्रति अकारणे विरक्त हन।

सेदिन सन्ध्यावेलाय आशा स्वामीके अत्यन्त आवदार करिया धरिल, "आमार चोखेर बालिर सङ्गे तोमाके आलाप करिते हइबे।"

महेन्द्र हासिया कहिल, "तोमार साहस तो कम नय।"

आशा जिज्ञासा करिल, "केन, भय किसेर।"

महेन्द्र। तोमार सखीर ये-रकम रूपेर वर्णना कर, से तो बड़ो निरापद जायगा नय!

आशा कहिल, "आच्छा, से आमि सामलाइते पारिब। तुमि ठाट्टा राखिया दाओ—तार सङ्गे आलाप करिबे कि ना बलो।"

विनोदिनीके देखिबे बलिया महेन्द्रेर ये कौतूहल छिल ना, ताहा नहे। एमन कि आजकाल ताहाके देखिबार जन्य माझे माझे आग्रहओ जन्मे। सेइ अनावश्यक आग्रहटा ताहार निजेर काछे उचित बलिया ठेके नाइ।

हृदयेर सम्पर्क सम्बन्धे महेन्द्रेर उचित-अनुचितेर आदर्श साधारणेर अपेक्षा किछु कड़ा। पाछे मातार अधिकार लेशमात्र क्षुण्ण हय, एइजन्य इतिपूर्वे से विवाहेर प्रसङ्गमात्र काने आनित ना। आजकाल, आशार सहित सम्बन्धके से एमनभावे रक्षा करिते चाय ये, अन्य स्त्रीलोकेर प्रति सामान्य कौतूहलकेओ से मने स्थान दिते चाय ना। प्रेमेर विषये से ये बड़ो खुँतखुँते एवं अत्यन्त खाँटि, एइ लइया ताहार मने एकटा गर्व छिल। एमन की बिहारीके से बन्धु बलित बलिया अन्य काहाकेओ बन्धु बलिया स्वीकार करितेइ चाहित ना। अन्य केह यदि ताहार निकट आकृष्ट हइया आसित, तबे महेन्द्र येन ताहाके गाये पड़िया उपेक्षा देखाइत, एवं बिहारीर निकटे सेइ हतभाग्य सम्बन्धे उपहासतीव्र अवज्ञा प्रकाश करिया इतरसाधारणेर प्रति निजेर एकान्त औदासीन्य घोषणा करित। बिहारी इहाते आपत्ति करिले महेन्द्र बलित, "तुमि पार बिहारी, येखाने याओ तोमार बन्धुर अभाव हय ना; आमि किन्तु याकेताके बन्धु बलिया टानाटानि करिते पारि ना।"

सेइ महेन्द्रेर मन आजकाल यखन माझे माझे अनिवार्य व्यग्रता ओ कौतूहलेर सहित एइ अपरिचितार प्रति आपनि धावित हइते थाकित तखन से निजेर आदर्शेर काछे येन खाटो हइया पड़ित। अवशेषे विरक्त हइया विनोदिनीके बाटि हइते विदाय करिया दिबार जन्य से ताहार माके पीड़ापीड़ि करिते आरम्भ करिल।

महेन्द्र कहिल, "थाक् चुनि। तोमार चोखेर बालिर सङ्गे आलाप करिबार समय कइ। पड़िबार समय डाक्तारि बइ पड़िब, अवकाशेर समय तुमि आछ, इहार मध्ये सखीके कोथाय आनिबे।"

आशा कहिल, "आच्छा, तोमार डाक्तारिते भाग बसाइब ना, आमारइ अंश आमि बालिके दिब।"

महेन्द्र कहिल, "तुमि तो दिबे, आमि दिते दिब केन।"

आशा ये विनोदिनीके भालोबासिते पारे, महेन्द्र बले, इहाते ताहार स्वामीर प्रति प्रेमेर खर्वता प्रतिपन्न हय। महेन्द्र अहंकार करिया बलित, "आमार मतो अनन्यनिष्ठ प्रेम तोमार नहे।" आशा ताहा किछुतेइ मानित ना-इहा लइया झगड़ा करित, काँदित, किन्तु तर्के जितिते पारित ना।

महेन्द्र ताहादेर दु-जनेर माझखाने विनोदिनीके सूच्यग्र स्थान छाड़िया दिते चाय ना, इहाइ ताहार गर्वेर विषय हइया उठिल। महेन्द्रेर एइ गर्व आशार सह्य हइत ना, किन्तु आज से पराभव स्वीकार करिया कहिल, "आच्छा बेश, आमार खातिरेइ तुमि आमार बालिर सङ्गे आलाप करो।"

आशार निकट महेन्द्र निजेर भालोबासार दृढ़ता ओ श्रेष्ठता प्रमाण करिया अवशेषे विनोदिनीर सङ्गे आलाप करिबार जन्य अनुग्रहपूर्वक राजि हइल। बलिया राखिल, "किन्तु ताइ बलिया यखन-तखन उत्पात करिले बाँचिब ना।"

परदिन प्रत्युषे विनोदिनीके आशा ताहार बिछानाय गिया जड़ाइया धरिल। विनोदिनी कहिल, "ए की आश्चर्य। चकोरी ये आज चाँदके छाड़िया मेघेर दरबारे।"

आशा कहिल, "तोमादेर ओ-सब कवितार कथा आमार आसे ना भाइ, केन बेनावने मुक्ता छड़ानो। ये तोमार कथार जवाब दिते पारिबे, एकबार ताहार काछे कथा शोनाओ'से।"

विनोदिनी कहिल, "से रसिक लोकटि के।"

आशा कहिल, "तोमार देवर, आमार स्वामी। ना भाइ, ठाट्टा नय— तिनि तोमार सङ्गे आलाप करिबार जन्य पीड़ापीड़ि करितेछेन।"

विनोदिनी मने मने कहिल, 'स्त्रीर हुकुमे आमार प्रति तलब पड़ियाछे, आमि अमनि छुटिया याइब, आमाके तेमन पाओ नाइ।'

विनोदिनी कोनोमतेइ राजि हइल ना। आशा तखन स्वामीर काछे बड़ो अप्रतिभ हइल।

महेन्द्र मने मने बड़ो राग करिल। ताहार काछे बाहिर हइते आपत्ति! ताहाके अन्य साधारण पुरुषेर मतो ज्ञान करा! आर केह हइले तो एतदिने अग्रसर हइया नाना कौशले विनोदिनीर सङ्गे देखासाक्षात् आलाप-परिचय करित। महेन्द्र ये ताहार चेष्टामात्रओ करे नाइ, इहातेइ कि विनोदिनी ताहार परिचय पाय नाइ। विनोदिनी यदि एकबार भालो करिया जाने, तबे अन्य पुरुष एवं महेन्द्रेर प्रभेद बुझिते पारे।

विनोदिनीओ दु-दिन पूर्वे आक्रोशेर सहित मने मने बलिया छिल, 'एत-

काल बाड़िते आछि, महेन्द्र ये एकबार आमाके देखिबार चेष्टाओ करे ना। यखन पिसिमार घरे थाकि तखन कोनो छुता करियाओ ये मार घरे आसे ना। एत औदासीन्य किसेर। आमि कि जड़पदार्थ। आमि कि मानुष ना। आमि कि स्त्रीलोक नइ। एकबार यदि आमार परिचय पाइत, तबे आदरेर चुनिर सङ्गे विनोदिनीर प्रभेद बुझिते पारित।'

आशा स्वामीर काछे प्रस्ताव करिल, "तुमि कालेजे गेछ बलिया चोखेर बालिके आमादेर घरे आनिब, ताहार परे बाहिर हइते तुमि हठात् आसिया पड़िबे—ता हइलेइ से जब्द हइबे।"

महेन्द्र कहिल, "की अपराधे ताहाके एतबड़ो कठिन शासनेर आयोजन।"

आशा कहिल, "ना, सत्यइ आमार भारि राग हइयाछे। तोमार सङ्गे देखा करितेओ तार आपत्ति! प्रतिज्ञा भाङिब तबे छाड़िब।"

महेन्द्र कहिल, "तोमार प्रियसखीर दर्शनाभावे आमि मरिया याइतेछि ना। आमि अमन चुरि करिया देखा करिते चाइ ना।"

आशा सानुनये महेन्द्रेर हात धरिया कहिल, "माथा खाओ, एकटि बार तोमाके ए काज करितेइ हइबे। एकवार ये करिया होक ताहार गुमर भाङिते चाइ, तार पर तोमादेर येमन इच्छा ताइ करियो।"

महेन्द्र निरुत्तर हइया रहिल। आशा कहिल, "लक्ष्मीटि, आमार अनुरोध राखो।"

महेन्द्रेर आग्रह प्रबल हइया उठितेछिल—सेइ जन्य अतिरिक्त मात्राय औदासीन्य प्रकाश करिया सम्मति दिल।

शरत्कालेर स्वच्छ निस्तब्ध मध्याह्ने विनोदिनी महेन्द्रेर निर्जन शयनगृहे बसिया आशाके कार्पेटेर जुता बुनिते शिखाइतेछिल। आशा अन्यमनस्क हइया घन घन द्वारेर दिके चाहिया गणनाय भुल करिया विनोदिनीर निकट निजेर असाध्य अपटुत्व प्रकाश करितेछिल।

अवशेषे विनोदिनी विरक्त हइया ताहार हात हइते कार्पेट टान मारिया फेलिया दिया कहिल, "ओ तोमार हइबे ना, आमार काज आछे आमि याइ।"

आशा कहिल, "आर एकटु बसो, एबार देखो, आमि भुल करिब ना।" बलिया आबार सेलाइ लइया पड़िल।

इतिमध्ये निःशब्दपदे विनोदिनीर पश्चाते द्वारेर निकट महेन्द्र आसिया दाँड़ाइल। आशा सेलाइ हइते मुख ना तुलिया आस्ते आस्ते हासिते लागिल।

विनोदिनी कहिल, "हठात् हासिर कथा की मने पड़िल।" आशा आर थाकिते पारिल ना। उच्चकण्ठे हासिया उठिया कार्पेट विनोदिनीर गायेर

उपरे फेलिया दिया कहिल, "ना भाइ, ठिक बलियाछ—ओ आमार हइबे ना"—बलिया विनोदिनीर गला जड़ाइया द्विगुण हासिते लागिल।

प्रथम हइतेइ विनोदिनी सब बुझियाछिल। आशार चाञ्चल्ये एवं भावभङ्गिते ताहार निकट किछुइ गोपन छिल ना! कखन महेन्द्र पश्चाते आसिया दाँड़ाइयाछे ताहाओ से बेश जानिते पारियाछिल। नितान्त सरल निरीहेर मतो से आशार एइ अत्यन्त क्षीण फाँदेर मध्ये धरा दिल।

महेन्द्र घरे ढुकिया कहिल, "हासिर कारण हइते आमि हतभाग्य केन वञ्चित हइ।"

विनोदिनी चमकिया माथाय कापड़ टानिया उठिबार उपक्रम करिल। आशा ताहार हात चापिया धरिल।

महेन्द्र हासिया कहिल, "हय आपनि बसुन आमि याइ, नय आपनिओ बसुन आमिओ बसि।"

विनोदिनी साधारण मेयेर मतो आशार सहित हात काड़ाकाड़ि करिया महाकोलाहले लज्जार धुम बाधाइया दिल ना। सहज सुरेइ बलिल, "केवल आपनार अनुरोधेइ बसिलाम, किन्तु मने मने अभिशाप दिबेन ना!"

महेन्द्र कहिल, "एइ बलिया अभिशाप दिब, आपनार येन अनेकक्षण चलत्शक्ति ना थाके।"

विनोदिनी कहिल, "से अभिशापके आमि भय करि ना। केनना, आपनार अनेक क्षण खुब बेशी क्षण हइबे ना। बोध हय, समय उत्तीर्ण हइया आसिल।"

बलिया से आबार उठिबार चेष्टा करिल। आशा ताहार हात चापिया धरिया बलिल, "माथा खाओ, आर एकटु बसो।"

१४

आशा जिज्ञासा करिल, "सत्य करिया बलो, आमार चोखेर बालिके केमन लागिल।"

महेन्द्र कहिल, "मन्द नय।"

आशा अत्यन्त क्षुण्ण हइया कहिल, "तोमार काउके आर पछन्दइ हय ना।"

महेन्द्र। केवल एकटि लोक छाड़ा।

आशा कहिल, "आच्छा, ओर सङ्गे आर एकटु भालो करिया आलाप हउक, तार परे बुझिब, पछन्द हय कि ना।"

महेन्द्र कहिल, "आबार आलाप। एखन बुझि बराबरइ एमनि चलिबे।"

आशा कहिल, "भद्रतार खातिरेओ तो मानुषेर सङ्गे आलाप करिते हय। एक दिन परिचयेर परेइ यदि देखाशुना बन्ध कर, तबे चोखेर बालि की मने करिबे बलो देखि। तोमार किन्तु सकलइ आश्चर्य। आर केउ हइले अमन मेयेर सङ्गे आलाप करिबार जन्य साधिया बेड़ाइत, तोमार येन एकटा मस्त विपद उपस्थित हइल।"

अन्य लोकेर सङ्गे ताहार एइ प्रभेदेर कथा शुनिया महेन्द्र भारि खुशि हइल। कहिल, "आच्छा, बेश तो। व्यस्त हइबार दरकार की। आमार तो पालाइबार स्थान नाइ, तोमार सखीरओ पालाइबार ताड़ा देखिना—सुतरां देखा माझे माझे हइबेइ, एवं देखा हइले भद्रता रक्षा करिबे, तोमार स्वामीर सेटुकु शिक्षा आछे।"

महेन्द्र मने स्थिर करिया राखिया छिल, विनोदिनी एखन हइते कोनो-ना-कोनो छुताय देखा दिबेइ। भुल बुझियाछिल। विनोदिनी काछ दियाओ याय ना—दैवात् यातायातेर पथेओ देखा हय ना।

पाछे किछुमात्र व्यग्रता प्रकाश हय बलिया महेन्द्र विनोदिनीर प्रसङ्ग स्त्रीर काछे उत्थापन करिते पारे ना। माझे माझे विनोदिनीर सङ्गलाभेर जन्य स्वाभाविक सामान्य इच्छाकेओ गोपन ओ दमन करिते गिया महेन्द्रेर व्यग्रता आरो येन बाड़िया उठिते थाके। ताहार परे विनोदिनीर औदास्ये ताहाके आरो उत्तेजित करिते थाकिल।

विनोदिनीर सङ्गे देखा हइबार परदिने महेन्द्र नितान्तइ येन प्रसङ्गक्रमे हास्यच्छले आशाके जिज्ञासा करिल, "आच्छा, तोमार अयोग्य एइ स्वामीटिके चोखेर बालिर केमन लागिल।"

प्रश्न करिबार पूर्वेइ आशार काछ हइते ए-सम्बन्धे उच्छ्वासपूर्ण विस्तारित रिपोर्ट पाइबे, महेन्द्रेर एरूप दृढ़ प्रत्याशा छिल। किन्तु सेजन्य सबुर करिया यखन फल पाइल ना, तखन लीलाच्छले प्रश्नटा उत्थापन करिल।

आशा मुश्किले पड़िल। चोखेर बालि कोनो कथाइ बले नाइ। ताहाते आशा सखीर उपर अत्यन्त असन्तुष्ट हइयाछिल।

स्वामीके बलिल, "रोसो, दु-चारि दिन आगे आलाप हउक, तार परे तो बलिबे। काल कतक्षणेरइ वा देखा, कटा कथाइ वा हइयाछिल।"

इहातेओ महेन्द्र किछु निराश हइल एवं विनोदिनी सम्बन्धे निश्चेष्टता देखानो ताहार पक्षे आरो दुरूह हइल।

एइ सकल आलोचनार मध्ये बिहारी आसिया जिज्ञासा करिल, "की महिनदा, आज तोमादेर तर्कटा की लइया।"

महेन्द्र कहिल, "देखो तो भाइ, कुमुदिनी ना प्रमोदिनी ना कार सङ्गे तोमार बोठान चुलेर दड़ि ना माछेर काँटा ना की एकटा पाताइयाछेन, किन्तु आमाकेओ ताइ बलिया तार सङ्गे चुरोटेर छाइ किंवा देशालाइयेर काठि पाताइते हइबे, ए हइले तो बाँचा याय ना।"

आशार घोमटार मध्ये नीरवे तुमुल कलह घनाइया उठिल। बिहारी क्षणकाल निरुत्तरे महेन्द्रेर मुखेर दिके चाहिया हासिल—कहिल, "बोठान, लक्षण भालो नय। ए-सब भोलाइबार कथा। तोमार चोखेर बालिके आमि देखियाछि। आरो यदि घन घन देखिते पाइ, तबे सेटाके दुर्घटना बलिया मने करिब ना, से आमि शपथ करिया बलिते पारि। किन्तु महिनदा यखन एत करिया बेकबुल याइतेछेन तखन बड़ो सन्देहेर कथा।"

महेन्द्रेर सङ्गे बिहारीर ये अनेक प्रभेद, आशा ताहार आर-एकटि प्रमाण पाइल।

हठात् महेन्द्रेर फोटोग्राफ-अभ्यासेर शख चापिल। पूर्वे से एकबार फोटोग्राफि शिखिते आरम्भ करिया छाड़िया दियाछिल। एखन आबार क्यामेरा मेरामत करिया आरक किनिया छबि तुलिते शुरू करिल। बाड़िर चाकर-बेहारादेर पर्यन्त छबि तुलिते लागिल।

आशा धरिया पड़िल, चोखेर बालिर एकटा छबि लइतेइ हइबे।

महेन्द्र अत्यन्त संक्षेपे बलिल, "आच्छा।"

चोखेर बालि तदपेक्षा संक्षेपे बलिल, "ना।"

आशाके आबार एकटा कौशल करिते हइल एवं से कौशल गोड़ा हइतेइ विनोदिनीर अगोचर रहिल ना।

मतलब एइ हइल, मध्याह्ने आशा ताहाके निजेर शोबार घरे आनिया कोनोमते घुम पाड़ाइबे एवं महेन्द्र सेइ अवस्थाय छबि तुलिया अबाध्य सखीके उपयुक्तरूप जब्द करिबे।

आश्चर्य एइ, विनोदिनी कोनोदिन दिनेर वेलाय घुमाय ना। किन्तु आशार घरे आसिया से दिन ताहार चोख ढुलिया पड़िल। गाये एकखानि लाल शाल दिया खोला जानलार दिके मुख करिया हाते माथा राखिया एमनइ सुन्दर भङ्गिते घुमाइया पड़िल ये महेन्द्र कहिल, "ठिक मने हइतेछे, येन छबि लइबार जन्य इच्छा करियाइ प्रस्तुत हइयाछे।"

महेन्द्र पा टिपिया टिपिया क्यामेरा आनिल। कोन् दिक हइते छबि

लइले भालो हइबे, ताहा स्थिर करिबार जन्य विनोदिनीके अनेक क्षण धरिया नानादिक हइते बेश करिया देखिया लइते हइल। एमन कि, आर्टेर खातिरे अति सन्तर्पणे शियरेर काछे ताहार खोला चुल एक जायगाय एकटु सराइया दिते हइल—पछन्द ना हओयाय पुनराय ताहा संशोधन करिया लइते हइल। आशाके काने काने कहिल, "पायेर काछे शालटा एकटुखानि बाँ-दिके सराइया दाओ।"

अपटु आशा काने काने कहिल, "आमि ठिक पारिब ना, घुम भाङाइया दिब—तुमि सराइया दाओ।"

महेन्द्र सराइया दिल।

अवशेषे येइ छबि लइबार जन्य क्यामेरार मध्ये काच पुरिया दिल, अमनि येन किसेर शब्दे विनोदिनी नड़िया दीर्घनिश्वास फेलिया धड़फड़ करिया उठिया बसिल। आशा उच्चैःस्वरे हासिया उठिल। विनोदिनी बड़ोइ राग करिल—ताहार ज्योतिर्मय चक्षु दुइटि हइते महेन्द्रेर प्रति अग्निबाण वर्षण करिया कहिल, "भारि अन्याय।"

महेन्द्र कहिल, "अन्याय, ताहार आर सन्देह नाइ। किन्तु चुरिओ करिलाम अथच चोराइ माल घरे आसिल ना, इहाते ये आमार इहकाल परकाल दुइ गेल। अन्यायटाके शेष करिते दिया ताहार परे दण्ड दिबेन।"

आशाओ विनोदिनीके अत्यन्त धरिया पड़िल। छबि लओया हइल। किन्तु प्रथम छबिटा खाराप हइया गेल। सुतरां परेर दिन आर एकटा छबि ना लइया चित्रकर छाड़िल ना। तार परे आबार दुइ सखीके एकत्र करिया बन्धुत्वेर चिरनिदर्शनस्वरूप एकखानि छबि तोलार प्रस्तावे विनोदिनी 'ना' बलिते पारिल ना। कहिल, "किन्तु एइटेइ शेष छबि।"

शुनिया महेन्द्र से छबिटाके नष्ट करिया फेलिल। एमनि करिया छबि तुलिते तुलिते आलाप-परिचय वहुदूर अग्रसर हइया गेल।

१५

बाहिर हइते नाड़ा पाइले छाइ-चापा आगुन आबार ज्वलिया उठे। नवदम्पतिर प्रेमेर उत्साह येटुकु म्लान हइतेछिल, तृतीयपक्षेर घा खाइया सेटुकु आबार जागिया उठिल।

आशार हास्यालाप करिबार शक्ति छिल ना, किन्तु विनोदिनी ताहा अजस्र जोगाइते पारित; एइजन्य विनोदिनीर अन्तराले आशा भारि एकटा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आश्रय पाइल। महेन्द्रके सर्वदाइ आमोदेर उत्तेजनाय राखिते ताहाके आर असाध्यसाधन करिते हइत ना।

विवाहेर अल्पकालेर मध्येइ महेन्द्र एवं आशा परस्परेर काछे निजेके निःशेष करिबार उपक्रम करियाछिल—प्रेमेर संगीत एकेबारेइ तारस्वरेर निखाद हइतेइ शुरू हइयाछिल। सुद भाङिया ना खाइया ताहारा एकेबारे मूलधन उजाड़ करिबार चेष्टाय छिल। एइ खेपामिर वन्याके ताहारा प्रात्यहिक संसारेर सहज स्रोते केमन करिया परिणत करिबे। नेशार परेइ माझखाने ये अवसाद आसे, सेटा दूर करिते मानुष आबार ये नेशा चाय से-नेशा आशा कोथा हइते जोगाइबे। एमन समय विनोदिनी नवीन रङिन पात्र भरिया आशार हाते आनिया दिल। आशा स्वामीके प्रफुल्ल देखिया आराम पाइल।

एखन आर ताहार निजेर चेष्टा रहिल ना। महेन्द्र-विनोदिनी यखन उपहास-परिहास करित, तखन से केवल प्राण खुलिया हासिते योग दित। तासखेलाय महेन्द्र यखन आशाके अन्याय फाँकि दित तखन से विनोदिनीके विचारक मानिया सकरुण अभियोगेर अवतारणा करित। महेन्द्र ताहाके ठाट्टा करिले वा कोनो असंगत कथा बलिले से प्रत्याशा करित, विनोदिनी ताहार हइया उपयुक्त जवाब दिया दिबे। एइरूपे तिनजनेर सभा जमिया उठिल।

किन्तु ताइ बलिया विनोदिनीर काजे शैथिल्य छिल ना। राँधावाड़ा, घरकन्ना देखा, राजलक्ष्मीर सेवा करा, समस्त से निःशेषपूर्वक समाधा करिया तबे आमोदे योग दित। महेन्द्र अस्थिर हइया बलित, "चाकरदासीगुलाके ना काज करिते दिया तुमि माटि करिबे देखितेछि।" विनोदिनी बलित, "निजे काज ना करिया माटि हओयार चेये से भालो। याओ, तुमि कालेजे याओ।"

महेन्द्र। आज बादलार दिनटाते—

विनोदिनी। ना से हइबे ना—तोमार गाड़ि तैरि हइया आछे—कालेजे याइते हइबे।

महेन्द्र। आमि तो गाड़ि वारण करिया दियाछिलाम।

विनोदिनी। आमि बलिया दियाछि।—बलिया महेन्द्रेर कालेजे याइबार कापड़ आनिया सम्मुखे उपस्थित करिल।

महेन्द्र। तोमार राजपुतेर घरे जन्मानो उचित छिल, युद्धकाले आत्मीयके वर्म पराइया दिते।

आमोदेर प्रलोभने छुटि लओया, पड़ा फाँकि देओया, विनोदिनी कोनोमतेइ प्रश्रय दित ना। ताहार कठिन शासने दिने दुपुरे अनियत आमोद एकेबारे उठिया गेल, एवं एइरूपे सायाह्नेर अवकाश महेन्द्रेर काछे अत्यन्त रमणीय लोभनीय हइया उठिल। ताहार दिनटा निजेर अवसानेर जन्य येन प्रतीक्षा करिया थाकित।

पूर्वे माझे माझे ठिक समयमत आहार प्रस्तुत हइत ना एवं सेइ छुता करिया महेन्द्र आनन्दे कालेज कामाइ करित। एखन विनोदिनी स्वयं बन्दोबस्त करिया महेन्द्रेर कालेजेर खाओया सकाल-सकाल ठिक करिया देय एवं खाओया हइलेइ महेन्द्र खबर पाय—गाड़ि तैयार। पूर्वे कापड़गुलि प्रतिदिन एमन भाँजकरा परिपाटि अवस्थाय पाओया दूरे थाक्, धोपार बाड़ि गेछे कि आलमारिर कोनो-एकटा अनिर्देश्य स्थाने अगोचरे पड़िया आछे, तार दीर्घकाल सन्धान व्यतीत जाना याइत ना।

प्रथम-प्रथम विनोदिनी एइ सकल विशृङ्खला लइया महेन्द्रेर सम्मुखे आशाके सहास्य भर्त्सना करित—महेन्द्रओ आशार निरुपाय नैपुण्यहीनताय सस्नेहे हासित। अवशेषे सखिवात्सल्यवशे आशार हात हइते ताहार कर्तव्य-भार विनोदिनी निजेर हाते काड़िया लइल। घरेर श्री फिरिया गेल।

चापकानेर बोताम छिँड़िया गेछे, आशा आशु ताहार कोनो उपाय करिते पारितेछे ना—विनोदिनी द्रुत आसिया हतबुद्धि आशार हात हइते चापकान काड़िया लइया चटपट सेलाइ करिया देय। एकदिन महेन्द्रेर प्रस्तुत अन्ने बिड़ाले मुख दिल—आशा भाबिया अस्थिर; विनोदिनी तखनि रान्नाघरे गिया कोथा हइते की संग्रह करिया गुछाइया काज चालाइया दिल; आशा आश्चर्य हइया गेल।

महेन्द्र एइरूपे आहारे ओ आच्छादने, कर्मे ओ विश्रामे, सर्वत्रइ नाना आकारे विनोदिनीर सेवाहस्त अनुभव करिते लागिल। विनोदिनीर रचित पशमेर जुता ताहार पाये एवं विनोदिनीर बोना पशमेर गलाबन्ध ताहार कण्ठदेशे एकटा येन कोमल मानसिक संस्पर्शेर मतो वेष्टन करिल। आशा आजकाल सखिरहस्तेर प्रसाधने परिपाटि-परिछन्न हइया सुन्दरवेशे सुगन्ध माखिया महेन्द्रेर निकट उपस्थित हय, ताहार मध्ये येन कतकटा आशार निजेर कतकटा आर-एकजनेर—ताहार साजसज्जा-सौन्दर्ये आनन्दे से येन गङ्गायमुनार मतो ताहार सखीर सङ्गे मिलिया गेछे।

बिहारीर आजकाल पूर्वेर मतो आदर नाइ—ताहार डाक पड़े ना। बिहारी महेन्द्रके लिखिया पाठाइयाछिल, काल रविवार आछे, दुपुरवेला

आसिया से महेन्द्रेर मार रान्ना खाइबे। महेन्द्र देखिल रविवारटा नितान्त माटि हय, ताड़াताड़ि लिखिया पाठाइल, रविवारे विशेष काजे ताहाके बाहिरे याइते हइबे।

तबु बिहारी आहारान्ते एकबार महेन्द्रेर बाड़ि खोँज लइते आसिल। बेहरार काछे शुनिल, महेन्द्र बाड़ि हइते बाहिरे याय नाइ। "महिनदा" बलिया सिँड़ि हइते हाँकिया बिहारी महेन्द्रेर घरे गेल। महेन्द्र अप्रस्तुत हइया कहिल, "भारि माथा धरियाछे।" बलिया ताकियाय ठेस दिया पड़िल। आशा से-कथा शुनिया एवं महेन्द्रेर मुखेर भाव देखिया शशव्यस्त हइया उठिल—की करा कर्तव्य, स्थिर करिबार जन्य विनोदिनीर मुखेर दिके चाहिल। विनोदिनी बेश जानित व्यापारटा गुरुतर नहे, तबु अत्यन्त उद्विग्न-भावे कहिल, "अनेकक्षण बसिया आछ, एकटुखानि शोओ। आमि ओडिक-लोन आनिया दिइ।"

महेन्द्र बलिल, "थाक्, दरकार नाइ।"

विनोदिनी शुनिल ना, द्रुतपदे ओडिकलोन बरफजले भिशाइया उपस्थित करिल। आशार हाते भिजा रुमाल दिया कहिल, "महेन्द्रबाबुर माथाय बाँधिया दाओ।"

महेन्द्र बार बार बलिते लागिल, "थाक् ना।" बिहारी अवरुद्धहास्ये नीरवे अभिनय देखिते लागिल। महेन्द्र सगर्वे भाबिल, "बिहारीटा देखुक आमार कत आदर।"

आशा बिहारीर सम्मुखे लज्जाकम्पित हस्ते भालो करिया बाँधिते पारिल ना—फोंटाखानेक ओडिकलोन गड़ाइया महेन्द्रेर चोखे पड़िल। विनोदिनी आशार हात हइते रुमाल लइया सुनिपुण करिया बाँधिल एवं आर-एकटि वस्त्रखण्डे ओडिकलोन भिजाइया अल्प-अल्प करिया निंड़ाइया दिल—आशा माथाय घोमटा टानिया पाखा करिते लागिल।

विनोदिनी स्निग्धस्वरे जिज्ञासा करिल, "महेन्द्रबाबु, आराम पाच्छेन कि।"

एइरूपे कण्ठस्वरे मधु ढालिया दिया विनोदिनी द्रुतकटाक्षे एकबार बिहारीर मुखेर दिके चाहिया लइल। देखिल, बिहारीर चक्षु कौतुके हासितेछे। समस्त व्यापारटा ताहार काछे प्रहसन। विनोदिनी बुझिया लइल, ए लोकटिके भोलानो सहज व्यापार नहे—किछुइ इहार नजर एड़ाय ना।

बिहारी हासिया कहिल, "विनोद-बोठान, एमनतरो शुश्रुषा पाइले रोग सारिबे ना, बाड़िया याइबे।"

विनोदिनी। ता केमन करिया जानिब, आमरा मूर्ख मेयेमानुष। आपनादेर डाक्तारिशास्त्रे बुझि एइमतो लेखा आछे।

बिहारी। आछेइ तो। सेवा देखिया आमारओ कपाल धरिया उठितेछे। किन्तु पोड़ाकपालके बिना-चिकित्सातेइ चटपट सारिया उठिते हय। महिनदार कपालेर जोर बेशि।

विनोदिनी भिजा वस्त्रखण्ड राखिया दिया कहिल, "काज नाइ, बन्धुर चिकित्सा बन्धुतेइ करुन।"

बिहारी समस्त व्यापार देखिया भितरे-भितरे विरक्त हइया उठियाछिल। ए कय दिन से अध्ययने व्यस्त छिल, इतिमध्ये महेन्द्र विनोदिनी ओ आशाय मिलिया आपना आपनि ये एतखानि ताल पाकाइया तुलियाछे ताहा से जानित ना। आज से विनोदिनीके विशेष करिया देखिल, विनोदिनीओ ताहाके देखिया लइल।

बिहारी किछु तीक्ष्णस्वरे कहिल, "ठिक कथा। बन्धुर चिकित्सा बन्धुइ करिबे। आमिइ माथाधरा आनियाछिलाम, आमिइ ताहा सङ्गे लइया चलिलाम। ओडिकलोन आर बाजे खरच करिबेन ना।" आशार दिके चाहिया कहिल, "बोठान, चिकित्सा करिया रोग सारानोर चेये रोग ना हइते देओयाइ भालो।"

१६

बिहारी भाबिल, "आर दूरे थाकिले चलिबे ना, येमन करिया हउक, इहादेर माझखाने आमाकेओ एकटा स्थान लइते हइबे। इहादेर केहइ आमाके चाहिबे ना, तबु आमाके थाकिते हइबे।"

बिहारी आह्वान-अभ्यर्थनार अपेक्षा ना राखियाइ महेन्द्रेर व्यूहेर मध्ये प्रवेश करिते लागिल। विनोदिनीके कहिल, "विनोद-बोठान, एइ छेलेटिके इहार मा माटि करियाछे, बन्धु माटि करियाछे, स्त्री माटि करितेछे—तुमिओ सेइ दले ना भिड़िया एकटा नूतन पथ देखाओ—दोहाइ तोमार।"

महेन्द्र। अर्थात्—

बिहारी। अर्थात् आमार मतो लोक, याहाके केह कोनोकाले पोंछे ना—

महेन्द्र। ताहाके माटि करो। माटि हइबार उमेदारि सहज नय हे बिहारी, दरखास्त पेश करिलेइ हय ना।

विनोदिनी हासिया कहिल, "माटि हइबार क्षमता थाका चाइ, बिहारी-बाबु।"

बिहारी कहिल, "निजगुण ना थाकिलेओ हातेर गुणे हइते पारे। एक-बार प्रश्रय दिया देखोइ ना।"

विनोदिनी। आगे हइते प्रस्तुत हइया आसिले किछु हय ना, असावधान थाकिते हय। की बल, भाइ चोखेर बालि। तोमार एइ देओरेर भार तुमिइ लओ ना, भाइ।

आशा ताहाके दुइ अंगुलि दिया ठेलिया दिल। बिहारीओ ए ठाट्टाय योग दिल ना।

आशार सम्बन्धे बिहारीर कोनो ठाट्टा सहिबे ना, एटुकु विनोदिनीर काछे एड़ाइते पारे नाइ। बिहारी आशाके श्रद्धा करे एवं विनोदिनीके हालका करिते चाय, इहा विनोदिनीके बिंधिल।

से पुनराय आशाके कहिल, "तोमार एइ भिक्षुक देओरटि आमाके उप-लक्ष्य करिया तोमारइ काछे आदर भिक्षा करिते आसियाछे—किछु दे, भाइ।"

आशा अत्यन्त विरक्त हइल। क्षणकालेर जन्य बिहारीर मुख लाल हइल, परक्षणेइ हासिया कहिल, "आमार वेलातेइ कि परेर उपर बरात चालाइबे, आर महिनदार सङ्गेइ नगद कारबार।"

बिहारी समस्त माटि करिते आसियाछे, विनोदिनीर इहा बुझिते बाकि रहिल ना। बुझिल, बिहारीर सम्मुखे सशस्त्रे थाकिते हइबे।

महेन्द्र विरक्त हइल। खोलसा कथाय कवित्वेर माधुर्य नष्ट हय। से ईषत् तीव्र स्वरेइ कहिल, "बिहारी, तोमार महिनदा कोनो कारबारे यान ना—हाते या आछे, तातेइ तिनि सन्तुष्ट।"

बिहारी। तिनि ना येते पारेन, किन्तु भाग्ये लेखा थाकिले कारबारेर ढेउ बाहिर हइते आसियाओ लागे।

विनोदिनी। आपनार उपस्थित हाते किछुइ नाइ, किन्तु आपनार ढेउटा कोन् दिक हइते आसितेछे!—बलिया से सकटाक्षहास्ये आशाके टिपिल। आशा विरक्त हइया उठिया गेल। बिहारी पराभूत हइया क्रोधे नीरव हइल; उठिबार उपक्रम करितेइ विनोदिनी कहिल, "हताश हइया याबेन ना, बिहारीबाबु। आमि चोखेर बालिके पाठाइया दितेछि।"

विनोदिनी चलिया याइतेइ सभाभङ्गे महेन्द्र मने-मने रागिल। महेन्द्रेर अप्रसन्न मुख देखिया बिहारीर रुद्ध आवेग उच्छ्वसित हइया उठिल। कहिल,

"महिनदा, निजेर सर्वनाश करिते चाओ, करो—बराबर तोमार सेइ अभ्यास हइया आसियाछे। किन्तु ये सरलहृदया साध्वी तोमाके एकान्त-विश्वासे आश्रय करिया आछे, ताहार सर्वनाश करियो ना। एखनो बलितेछि, ताहार सर्वनाश करियो ना।"

बलिते बलिते बिहारीर कण्ठ रुद्ध हइया आसिल।

महेन्द्र रुद्धरोषे कहिल, "बिहारी, तोमार कथा आमि किछुइ बुझिते पारितेछि ना। हेँयालि छाड़िया स्पष्ट कथा कओ।"

बिहारी कहिल, "स्पष्टइ कहिब। विनोदिनी तोमाके इच्छा करिया अधर्मेर दिके टानितेछे एवं तुमि ना जानिया मूढ़ेर मतो अपथे पा बाड़ा-इतेछ।"

महेन्द्र गर्जन करिया उठिया कहिल, "मिथ्या कथा। तुमि यदि भद्र-लोकेर मेयेके एमन अन्याय सन्देहेर चोखे देख, तबे अन्तःपुरे तोमार आसा उचित नय।"

एमन समय एकटि थालाय मिष्टान्न साजाइया विनोदिनी हास्यमुखे ताहा बिहारीर सम्मुखे राखिल। बिहारी कहिल, "ए की व्यापार। आमार तो क्षुधा नाइ।"

विनोदिनी कहिल, "से कि हय। एकटु मिष्टमुख करिया आपनाके याइतेइ हइबे।"

बिहारी हासिया कहिल, "आमार दरखास्त मन्जुर हइल बुझि। समा-दर आरम्भ हइल।"

विनोदिनी अत्यन्त टिपिया हासिल; कहिल, "आपनि यखन देओर तखन सम्पर्केर ये जोर आछे। येखाने दाबि करा चले सेखाने भिक्षा करा केन। आदर ये काड़िया लइते पारेन। की बलेन, महेन्द्रबाबु।"

महेन्द्रबाबुर तखन वाक्यस्फूर्ति हइतेछिल ना।

विनोदिनी। बिहारीबाबु, लज्जा करिया खाइतेछेन ना, ना राग करिया? आरकाहाकेओ डाकिया आनिते हइबे?

बिहारी। कोनो दरकार नाइ। याहा पाइलाम ताहाइ प्रचुर।

विनोदिनी। ठाट्टा? आपनार सङ्गे पारिबार जो नाइ। मिष्टान्न दिलेओ मुख बन्ध हय ना।

रात्रे आशा महेन्द्रेर निकटे बिहारी सम्बन्धे राग प्रकाश करिल—महेन्द्र अन्य दिनेर मतो हासिया उड़ाइया दिल ना—सम्पूर्ण योग दिल।

प्रातःकाले उठियाइ महेन्द्र बिहारीर बाड़ि गेल। कहिल, "बिहारी,

4

विनोदिनी हाजार हउक ठिक बाड़िर मेये नय---तुमि सामने आसिले से येन किछु विरक्त हय।"

बिहारी कहिल, "ताइ ना कि। तबे तो काजटा भालो हय ना। तिनि यदि आपत्ति करेन, ताँर सामने नाइ गेलाम।"

महेन्द्र निश्चिन्त हइल। एत सहजे एइ अप्रिय कार्य शेष हइबे, ताहा से मने करे नाइ। बिहारीके महेन्द्र भय करे।

सेइ दिनइ बिहारी महेन्द्रेर अन्त:पुरे गिया कहिल, "विनोद-बोठान, माप करिते हइबे।"

विनोदिनी। केन, बिहारीबाबु।

बिहारी। महेन्द्रेर काछे शुनिलाम, आमि अन्त:पुरे आपनार सामने बाहिर हइ बलिया आपनि विरक्त हइयाछेन। ताइ क्षमा चाहिया विदाय हइब।

विनोदिनी। से कि हय, बिहारीबाबु। आमि आज आछि काल नाइ, आपनि आमार जन्य केन याइबेन। एत गोल हइबे जानिले आमि एखाने आसिताम ना।

एइ बलिया विनोदिनी मुख म्लान करिया येन अश्रुसंवरण करिते द्रुतपदे चलिया गेल।

बिहारी क्षणकालेर जन्य मने करिल, "मिथ्या सन्देह करिया आमि विनोदिनीके अन्याय आघात करियाछि।"

से दिन सन्ध्यावेलाय राजलक्ष्मी विपन्नभावे आसिया कहिलेन, "महिन, विपिनेर बउ ये बाड़ि याइबे बलिया धरिया बसियाछे।"

महेन्द्र कहिल, "केन मा, एखाने ताँर कि असुविधा हइतेछे।"

राजलक्ष्मी। असुविधा ना। बउ बलितेछे, ताहार मतो समर्थवयसेर विधवा मेये परेर बाड़ि बेशि दिन थाकिले लोके निन्दा करिबे।

महेन्द्र क्षुब्धभावे कहिल, "ए बुझि परेर बाड़ि हइल।"

बिहारी वसिया छिल---महेन्द्र ताहार प्रति भर्त्सनादृष्टि निक्षेप करिल।

अनुतप्त बिहारी भाविल, "काल आमार कथावार्ताय एकटु येन निन्दार आभास छिल; विनोदिनी बोध हय ताहातेइ वेदना पाइयाछे।"

स्वामी स्त्री उभये मिलिया विनोदिनीर उपर अभिमान करिया बसिल।

इनि बलिलेन, "आमादेर पर मने कर, भाइ!" उनि बलिलेन, "एत-दिन परे आमरा पर हइलाम!"

विनोदिनी कहिल, "आमाके कि तोमरा चिरकाल धरिया राखिबे, भाइ।"

महेन्द्र कहिल, "एत कि आमादेर स्पर्धा।"

आशा कहिल, "तबे केन एमन करिया आमादेर मन काड़िया लइले।"

सेदिन किछुइ स्थिर हइल ना। विनोदिनी कहिल, "ना भाइ, काज नाइ, दु दिनेर जन्य माया ना बाड़ानोइ भालो।" बलिया व्याकुलचक्षे एकबार महेन्द्रेर मुखेर दिके चाहिल।

परदिन बिहारी आसिया कहिल, "विनोद-बोठान, याबार कथा केन बलितेछेन। किछु दोष करियाछि कि—ताहारइ शास्ति?"

विनोदिनी एकटु मुख फिराइया कहिल, "दोष आपनि केन करिबेन, आमार अदृष्टेर दोष।"

बिहारी। आपनि यदि चलिया यान तो आमार केवलि मने हइबे, आमारइ उपर राग करिया गेलेन।

विनोदिनी करुणचक्षे मिनति प्रकाश करिया बिहारीर मुखेर दिके चाहिल—कहिल, "आमार कि थाका उचित हय, आपनिइ बलुन ना।"

बिहारी मुश्किले पड़िल। थाका उचित, ए कथा से केमन करिया बलिबे। कहिल, "अवश्य आपनाके तो याइतेइ हइबे, ना-हय आर दु-चार दिन थाकिया गेलेन, ताहाते क्षति की।"

विनोदिनी दुइ चक्षु नत करिया कहिल, "आपनारा सकलेइ आमाके थाकिबार जन्य अनुरोध करितेछेन—आपनादेर कथा एड़ाइया याओया आमार पक्षे कठिन—किन्तु आपनारा बड़ो अन्याय करितेछेन।"

बलिते बलिते ताहार घनदीर्घ चक्षुपल्लवेर मध्य दिया मोटा मोटा अश्रुर फोँटा द्रुतवेगे गड़ाइया पड़िते लागिल।

बिहारी एइ नीरव अजस्र अश्रुजले व्याकुल हइया बलिया उठिल, "कय-दिनमात्र आसिया आपनार गुणे आपनि सकलके वश करिया लइयाछेन, सेइजन्यइ आपनाके केह छाड़िते चान ना—किछु मने करिबेन ना विनोद-बोठान, एमन लक्ष्मीके के इच्छा करिया विदाय देय!"

आशा एक कोणे घोमटा दिया बसिया छिल, से आँचल तुलिया घनघन चोख मुछिते लागिल।

इहार परे विनोदिनी आर याइबार कथा उत्थापन करिल ना।

१७

माझखानेर एइ गोलमालटा एकेबारे मुछिया फेलिबार जन्य महेन्द्र प्रस्ताव करिल, "आसछे रविवारे दमदमेर बागाने चड़िभाति करिया आसा याक।"

आशा अत्यन्त उत्साहित हइया उठिल। विनोदिनी किछुतेइ राजि हइल ना। महेन्द्र ओ आशा विनोदिनीर आपत्तिते भारि मुषड़िया गेल। ताहारा मने करिल, आजकाल विनोदिनी केमन येन दूरे सरिया याइबार उपक्रम करितेछे।

विकालवेलाय बिहारी आसिबामात्र विनोदिनी कहिल, "देखुन तो बिहारी-बाबु, महिनबाबु दमदमेर बागाने चड़िभाति करिते याइबेन, आमि सङ्गे याइते चाइ नाइ बलिया आज सकाल हइते दुइजने मिलिया राग करिया बसियाछेन।"

बिहारी कहिल, "अन्याय राग करेन नाइ। आपनि ना गेले इँहादेर चड़िभातिते ये काण्डटा हइबे, अतिबड़ो शत्रुरओ येन तेमन ना हय।"

विनोदिनी। चलुन ना, बिहारीबाबु। आपनि यदि यान, तबे आमि याइते राजि आछि।

बिहारी। उत्तम कथा। किन्तु कर्तार इच्छाय कर्म, कर्ता की बलेन।

बिहारीर प्रति विनोदिनीर एइ विशेष पक्षपाते कर्ता गृहिणी उभयेइ मने मने क्षुण्ण हइल। बिहारी के सङ्गे लइबार प्रस्तावे महेन्द्रेर अर्धेक उत्साह उड़िया गेल। बिहारीर उपस्थिति विनोदिनीर पक्षे सकल समयेइ अप्रिय, एइ कथाटाइ बन्धुर मने मुद्रित करिया दिबार जन्य महेन्द्र व्यस्त किन्तु अतःपर बिहारीके आटक करिया राखा असाध्य हइबे।

महेन्द्र कहिल, "ता बेश तो, भालोइ तो। किन्तु बिहारी, तुमि येखाने याओ एकटा हाङ्गामा ना करिया छाड़ ना। हयतो सेखाने पाड़ा हइते राज्येर छेले जोटाइया बसिबे, नय तो कोन् गोरार सङ्गे मारामारिइ बाधाइया दिबे—किछु बला याय ना।"

बिहारी महेन्द्रेर आन्तरिक अनिच्छा बुझिया मने मने हासिल—कहिल, "सेइ तो संसारेर मजा, किसे की हय, कोथाय की फेसाद घटे, आगे हइते किछुइ बलिबार जो नाइ। विनोद-बोठान, भोरेर वेलाय छाड़िते हइबे, आमि ठिक समये आसिया हाजिर हइब।"

रविवार भोरे जिनिसपत्र ओ चाकरदेर जन्य एकखानि थार्ड क्लास ओ मनिबदेर जन्य एकखानि सेकेन्ड क्लास गाड़ि भाड़ा करिया आना हइयाछे। बिहारी मस्त-एकटा प्याकबाक्स सङ्गे करिया यथासमये आसिया उपस्थित। महेन्द्र कहिल, "ओटा आबार की आनिले। चाकरदेर गाड़िते तो आर धरिबे ना।"

बिहारी कहिल, "व्यस्त हइयो ना दादा, समस्त ठिक करिया दितेछि।"

विनोदिनी ओ आशा गाड़िते प्रवेश करिल। बिहारीके लइया की

करिबे, महेन्द्र ताइ भाबिया एकटु इतस्तत करिते लागिल। बिहारी बोझाटा गाड़िर माथाय तुलिया दिया चट करिया कोचबाक्से चड़िया बसिल।

महेन्द्र हाँफ छाड़िया बाँचिल। से भाबितेछिल, "बिहारी भितरेइ बसे कि की करे, ताहार ठिक नाइ।" विनोदिनी व्यस्त हइया बलिते लागिल, "बिहारीबाबु, पड़िया याबेन ना तो।"

बिहारी शुनिते पाइया कहिल, "भय करिबेन ना, पतन ओ मूर्छा—ओटा आमार पार्टेर मध्ये नाइ।"

गाड़ि चलितेइ महेन्द्र कहिल, "आमिइ ना-हय उपरे गिया बसि, बिहारीके भितरे पाठाइया दिइ।"

आशा व्यस्त हइया ताहार चादर चापिया कहिल, "ना, तुमि याइते पारिबे ना।"

विनोदिनी कहिल, "आपनार अभ्यास नाइ, काज की यदि पड़िया यान।"

महेन्द्र उत्तेजित हइया कहिल, "पड़िया याब? कखनो ना।" बलिया तखनइ बाहिर हइते उद्यत हइल।

विनोदिनी कहिल, "आपनि बिहारीबाबुके दोष देन, किन्तु आपनिइ तो हाङ्गामा बाधाइते अद्वितीय।"

महेन्द्र मुखभार करिया कहिल, "आच्छा, एक काज करा याक। आमि एकटा आलादा गाड़ि भाड़ा करिया याइ, बिहारी भितरे आसिया बसुक।"

आशा कहिल, "ता यदि हय, तबे आमिओ तोमार सङ्गे याइब।"

विनोदिनी कहिल, "आर आमि बुझि गाड़ि हइते लाफाइया पड़िब।" एमनि गोलमाल करिया कथाटा थामिया गेल।

महेन्द्र समस्त पथ मुख अत्यन्त गम्भीर करिया रहिल।

दमदमेर बागाने गाड़ि पौँछिल। चाकरदेर गाड़ि अनेक आगे छाड़िया छिल, किन्तु एखनो ताहार खोँज नाइ।

शरत्कालेर प्रातःकाल अति मधुर। रौद्र उठिया शिशिर मरिया गेछे, किन्तु गाछपाला निर्मल आलोके झलमल करितेछे। प्राचीरेर गाये शेफालि-गाछेर सारि रहियाछे, तलदेश फूले आच्छन्न एवं गन्धे आमोदित।

आशा कलिकातार इष्टकबन्धन हइते बागानेर मध्ये छाड़ा पाइया वन्य-मृगीर मतो उल्लसित हइया उठिल। से विनोदिनीके लइया राशीकृत फुल कुड़ाइल, गाछ हइते पाका आता पाड़िया आतागाछेर तलाय बसिया खाइल, दुइ सखीते दिघिर जले पड़िया दीर्घकाल धरिया स्नान करिल।

एइ दुइ नारीते मिलिया एकटि निरर्थक आनन्दे—गाछेर छाया एवं शाखाच्युत आलोक, दिघिर जल एवं निकुञ्जेर पुष्पपल्लवके पुलकित सचेतन करिया तुलिल।

स्नानेर पर दुइ सखी आसिया देखिल, चाकरदेर गाड़ी तखनो आसिया पौँछे नाइ। महेन्द्र बाड़िर बारान्दाय चौकि लइया अत्यन्त शुष्कमुखे एकटा विलाति दोकानेर विज्ञापन पड़ितेछे।

विनोदिनी जिज्ञासा करिल, "बिहारीबाबु कोथाय!"

महेन्द्र संक्षेपे उत्तर करिल, "जानि ना।"

विनोदिनी। चलुन ताँहाके खुँजिया बाहिर करिगे।

महेन्द्र। ताहाके केह चुरि करिया लइबे, एमन आशङ्का नाइ। ना खुँजिलेओ पाओया याइबे।

विनोदिनी। किन्तु तिनि हयतो आपनार जन्य भाबिया मरितेछेन, पाछे दुर्लभ रत्न खोओया याय। ताँहाके सान्त्वना दिया आसा याक।

जलाशयेर धारे प्रकाण्ड एकटा बाँधानो बटगाछ आछे, सेइखाने बिहारी ताहार प्याकबाक्स खुलिया एकटि केरोसिन-चुला बाहिर करिया जल गरम करितेछे। सकले आसिबामात्र आतिथ्य करिया बाँधा वेदिर उपर बसाइया एक एक पेयाला गरम चा एवं छोटो रेकाबिते दुइ एकटि मिष्टान्न धरिया दिल। विनोदिनी बार बार बलिते लागिल, "भाग्ये बिहारीबाबु समस्त उद्योग करिया आनियाछिलेन, ताइ तो रक्षा, नहिले चा ना पाइले महेन्द्रबाबुर की दशा हइत।"

चा पाइया महेन्द्र बाँचिया गेल, तबु बलिल, "बिहारीर समस्त बाड़ाबाड़ि। चड़िभाति करिते आसियाछि, एखानेओ समस्त दस्तुरमत आयोजन करिया आसियाछे। इहाते मजा थाके ना।"

बिहारी कहिल, "तबे दाओ भाइ तोमार चायेर पेयाला, तुमि ना खाइया मजा करोगे—बाधा दिब ना।"

वेला हय, चाकररा आसिल ना। बिहारीर बाक्स हइते आहारादिर सर्वप्रकार सरञ्जाम बाहिर हइते लागिल। चाल-डाल, तरि-तरकारि एवं छोटो छोटो बोतले पेषा मशला आविष्कृत हइल। विनोदिनी आश्चर्य हइया बलिते लागिल, "बिहारीबाबु, आपनि ये आमादेरओ छाड़ाइयाछेन। घरे तो गृहिणी नाइ, तबे शिखिलेन कोथा हइते।"

बिहारी कहिल, "प्राणेर दाये शिखियाछि, निजेर यत्न निजेकेइ करिते हय।"

बिहारी नितान्त परिहास करिया कहिल, किन्तु विनोदिनी गम्भीर हइया बिहारीर मुखे करुणचक्षेर कृपा वर्षण करिल।

बिहारी ओ विनोदिनीते मिलिया राँधाबाड़ाय प्रवृत्त हइल। आशा क्षीण संकुचित भावे हस्तक्षेप करिते आसिले, बिहारी ताहाते बाधा दिल। अपटु महेन्द्र साहाय्य करिबार कोनो चेष्टाओ करिल ना। से गुँड़िर उपरे हेलान दिया एकटा पायेर उपरे आर एकटा पा तुलिया कम्पित वटपत्रेर उपरे रौद्र-किरणेर नृत्य देखिते लागिल।

रन्धन प्राय शेष हइले पर विनोदिनी कहिल, "महिनबाबु, आपनि ऐ वटेर पाता गनिया शेष करिते पारिबेन ना, एबारे स्नान करिते यान।"

भृत्येर दल एतक्षणे जिनिस पत्र लइया उपस्थित हइल। ताहादेर गाड़ि पथेर मध्ये भाङिया गियाछिल। तखन वेला दुपुर हइया गेछे।

आहारान्ते सेइ वटगाछेर तलाय तास खेलिबार प्रस्ताव हइल महेन्द्र कोनोमतेइ गा दिल ना एवं देखिते देखिते छायातले घुमाइया पड़िल। आशा बाड़िर मध्ये गिया द्वार रुद्ध करिया विश्रामेर उद्योग करिल।

विनोदिनी माथार उपरे एकटुखानि कापड़ तुलिया दिया कहिल, "आमि तबे घरे याइ।"

बिहारी कहिल, "कोथाय याइबेन, एकटु गल्प करुन। आपनादेर देशेर कथा बलुन।"

क्षणे क्षणे उष्ण मध्याह्नेर वातास तरुपल्लव मर्मरित करिया चलिया गेल, क्षणे क्षणे दिघिर पाड़े जामगाछेर घनपत्रेर मध्य हइते कोकिल डाकिया उठिल। विनोदिनी ताहार छेलेवेलाकार कथा बलिते लागिल, ताहार बापमायेर कथा, ताहार बाल्यसाथिर कथा। बलिते बलिते ताहार माथा हइते कापड़टुकु खसिया पड़िल; विनोदिनीर मुखे खरयौवनेर ये एकटि दीप्ति सर्वदाइ विराज करित, बाल्यस्मृतिर छाया आसिया ताहाके स्निग्ध करिया दिल। विनोदिनीर चक्षे ये कौतुकतीव्र कटाक्ष देखिया तीक्ष्णदृष्टि बिहारीर मने ए-पर्यन्त नानाप्रकार संशय उपस्थित हइयाछिल, सेइ उज्ज्वल-कृष्ण ज्योति यखन एकटि शान्तसजल रेखाय म्लान हइया आसिल तखन बिहारी येन आर-एकटि मानुष देखिते पाइल। एइ दीप्तिमण्डलेर केन्द्रस्थले कोमल हृदयटुकु एखनो सुधाधाराय सरस हइया आछे, अपरितृप्त रङ्गरस कौतुकविलासेर दहनज्वालाय एखनो नारीप्रकृति शुष्क हइया याय नाइ। विनोदिनी सलज्ज सतीस्त्रीभावे एकान्त-भक्तिभरे पतिसेवा करितेछे, कल्याण-परिपूर्णा जननीर मतो सन्तानके कोले धरिया आछे, ए छबि इतिपूर्वे मुहूर्तेर

जन्येओ बिहारीर मने उदित हय नाइ—आज येन रङ्गमञ्चेर पटखाना क्षणकालेर जन्य उड़िया गिया घरेर भितरकार एकटि मङ्गलदृश्य ताहार चोखे पड़िल। बिहारी भाबिल, "विनोदिनी बाहिरे विलासिनी युवती बटे, किन्तु ताहार अन्तरे एकटि पूजारता नारी निरशने तपस्या करितेछे।"

बिहारी दीर्घनिश्वास फेलिया मने मने कहिल, "प्रकृत-आपनाके मानुष आपनिओ जानिते पारे ना, अन्तर्यामीइ जानेन; अवस्थाविपाके येटा बाहिरे गड़िया उठे संसारेर काछे सेइटेइ सत्य।" बिहारी कथाटाके थामिते दिल ना,—प्रश्न करिया करिया जागाइया राखिते लागिल; विनोदिनी ए-सकल कथा ए-पर्यन्त एमन करिया शोनाइबार लोक पाय नाइ—विशेषत, कोनो पुरुषेर काछे से एमन आत्मविस्मृत स्वाभाविक भावे कथा कहे नाइ—आज अजस्र कलकण्ठे नितान्त सहज हृदयेर कथा बलिया ताहार समस्त प्रकृति येन नववारिधाराय स्नात, स्निग्ध एवं परितृप्त हइया गेल।

भोरे उठिबार उपद्रवे क्लान्त, महेन्द्रेर पाँचटार समय घुम भाङिल। विरक्त हइया कहिल, "एबार फिरिबार उद्योग करा याक।"

विनोदिनी कहिल, "आर-एकटु सन्ध्या करिया गेले कि क्षति आछे।"

महेन्द्र कहिल, "ना, शेषकाले माताल गोरार हाते पड़िते हइबे?"

जिनिसपत्र गुछाइया तुलिते अन्धकार हइया आसिल। एमन समय चाकर आसिया खबर दिल, "ठिका गाड़ि कोथाय गेछे, खुँजिया पाओया याइतेछे ना। गाड़ि बागानेर बाहिरे अपेक्षा करितेछिल, दुइ जन गोरा गाड़ोयानेर प्रति बल प्रकाश करिया स्टेशने लइया गेछे।"

आर-एकटा गाड़ि भाड़ा करिते चाकरके पाठाइया देओया हइल। विरक्त महेन्द्र केवलइ मने मने कहिते लागिल, "आज दिनटा मिथ्या माटि हइयाछे।" अधैर्य से आर किछुतेइ गोपन करिते पारे ना, एमनि हइल।

शुक्लपक्षेर चाँद क्रमे शाखाजालजड़ित दिक्प्रान्त हइते मुक्त आकाश आरोहण करिल। निस्तब्ध निष्कम्प बागान छायालोके खचित हइया उठिल। आज एइ मायामण्डित पृथिवीर मध्ये विनोदिनी आपनाके की एकटा अपूर्व-भावे अनुभव करिल। आज से यखन तरु-वीथिकार मध्ये आशाके जड़ाइया धरिल, ताहार मध्ये प्रणयेर कृत्रिमता किछुइ छिल ना। आशा देखिल, विनोदिनीर दुइ चक्षु दिया जल झरिया पड़ितेछे। आशा व्यथित हइया जिज्ञासा करिल, "की भाइ चोखेर बालि, तुमि काँदितेछ केन?"

विनोदिनी कहिल, "किछुइ नय भाइ, आमि बेश आछि। आज दिनटा आमार बड़ो भालो लागिल।"

आशा जिज्ञासा करिल, "किसे तोमार एत भालो लागिल, भाइ।"

विनोदिनी कहिल, "आमार मने हइतेछ, आमि येन मरिया गेछि, येन परलोके आसियाछि, एखाने येन आमार समस्तइ मिलिते पारे।"

विस्मित आशा ए-सब कथा किछुइ बुझिते पारिल ना। से मृत्युर कथा शुनिया दुःखित हइया कहिल, "छि भाइ चोखेर बालि, अमन कथा बलिते नाइ।"

गाड़ि पाओया गेल। बिहारी पुनराय कोचबाक्से चड़िया बसिल। विनोदिनी कोनो कथा ना बलिया बाहिरेर दिके चाहिया रहिल, ज्योत्स्नाय स्तम्भित तरुश्रेणी धावमान निविड़ छायास्रोतेर मतो ताहार चोखेर उपर दिया चलिया याइते लागिल। आशा गाड़िर कोणे घुमाइया पड़िल। महेन्द्र सुदीर्घ पथ नितान्त विमर्ष हइया बसिया थाकिल।

१८

चड़िभातिर दुर्दिनेर परे महेन्द्र विनोदिनीके आर-एक बार भालो करिया आयत्त करिया लइते उत्सुक छिल। किन्तु ताहार परदिनेइ राजलक्ष्मी इनफ्लुयेञ्जा-ज्वरे पड़िलेन। रोग गुरुतर नहे, तबु ताहार असुख ओ दुर्बलता यथेष्ट। विनोदिनी दिनरात्रि ताँहार सेवाय नियुक्त हइल।

महेन्द्र कहिल, "दिनरात एमन करिया खाटिले शेषकाले तुमिइ ये असुखे पड़िबे। मार सेवार जन्ये आमि लोक ठिक करिया दितेछि।"

बिहारी कहिल, "महिनदा, तुमि अत व्यस्त हइयो ना। उनि सेवा करितेछेन, करिते दाओ। एमन करिया कि आर केह करिते पारिबे।"

महेन्द्र रोगीर घरे घन घन यातायात आरम्भ करिल। एकटा लोक कोनो काज करितेछे ना, अथच काजेर समय सर्वदाइ सङ्गे लागिया आछे, इहा कर्मिष्ठा विनोदिनीर पक्षे असह्य। से विरक्त हइया दुइ-तिनबार कहिल, "महिनबाबु, आपनि एखाने बसिया थाकिया की सुविधा करितेछेन। आपनि यान—अनर्थक कालेज कामाइ करिबेन ना।"

महेन्द्र ताहाके अनुसरण करे, इहाते विनोदिनीर गर्व एवं सुख छिल, किन्तु ताइ बलिया एमनतरो काङालपना, रुग्णा मातार शय्यापार्श्वेओ लुब्धहृदये बसिया थाका—इहाते ताहार धैर्य थाकित ना, घृणाबोध हइत। कोनो काज यखन विनोदिनीर उपर निर्भर करे, तखन से आर-किछुइ मने राखे ना। यतक्षण खाओयानो-दाओयानो, रोगीर सेवा, घरेर काज

प्रयोजन, ततक्षण विनोदिनीके केह अनवधान देखे नाइ—सेओ प्रयोजनेर समय कोनोप्रकार अप्रयोजनीय व्यापार देखिते पारे ना।

बिहारी अल्पक्षणेर जन्य माझे माझे राजलक्ष्मीर संवाद लइते आसे। घरे ढुकियाइ की दरकार, ताहा से तखनइ बुझिते पारे—कोथाय एकटा किछुर अभाव आछे, ताहा ताहार चोखे पड़े—मुहूर्तेर मध्ये समस्त ठिक करिया दिया से बाहिर हइया याय। विनोदिनी मने बुझिते पारित, बिहारी ताहार शुश्रूषाके श्रद्धार चक्षे देखितेछे। सेइजन्य बिहारीर आगमने से येन विशेष पुरस्कार लाभ करित।

महेन्द्र नितान्त धिक्कारवेगे अत्यन्त कड़ा नियमे कालेजे बाहिर हइते लागिल। एके ताहार मेजाज अत्यन्त रुक्ष हइया रहिल, ताहार परे ए की परिवर्तन। खाबार ठिक समये हय ना, सइसटा निरुद्देश हय, मोजाजोड़ार छिद्र क्रमेइ अग्रसर हइते थाके। एखन एइ समस्त विश्रृङ्खलाय महेन्द्रेर पूर्वेर न्याय आमोद बोध हय ना। यखन येटि दरकार, तखनि सेटि हातेर काछे सुसज्जित पाइबार आराम काहाके बले, ताहा से कयदिन जानिते पारियाछे। एक्षणे ताहार अभावे, आशार अशिक्षित अपटुताय महेन्द्रेर आर कौतुकबोध हय ना।—

"चुनि, आमि तोमाके कतदिन बलियाछि, स्नानेर आगेइ आमार जामाय बोताम पराइया प्रस्तुत राखिबे, आर आमार चापकान-प्यान्टलुन ठिक करिया राखिया दिबे—एकदिनओ ताहा हय ना। स्नानेर पर बोताम पराइते आर कापड़ खुंजिया बेड़ाइते आमार दु-घण्टा याय।"

अनुतप्त आशा लज्जाय म्लान हइया बले, "आमि बेहाराके बलिया दियाछिलाम।"

"बेहाराके बलिया दियाछिले! निजेर हाते करिते दोष की। तोमार द्वारा यदि कोनो काज पाओया याय!"

इहा आशार पक्षे वज्राघात। एमन भर्त्सना से कखनो पाय नाइ। ए जवाब ताहार मुखे वा मने आसिल ना ये, "तुमिइ तो आमार कर्मशिक्षार व्याघात करियाछ।" एइ धारणाइ ताहार छिल ना ये, गृहकर्मशिक्षा नियत अभ्यास ओ अभिज्ञतासापेक्ष। से मने करित, "आमार स्वाभाविक अक्षमता ओ निर्बुद्धिता-वशतइ कोनो काज ठिक मतो करिया उठिते पारि ना।" महेन्द्र यखन आत्मविस्मृत हइया विनोदिनीर सहित तुलना दिया आशाके धिक्कार दियाछे, तखन से ताहा विनये ओ बिना विद्वेषे ग्रहण करियाछे।

आशा एक-एकबार ताहार रुग्णा शाशुड़ीर घरेर आशेपाशे घुरिया बेड़ाय—

एक-एकबार लज्जितभावे घरेर द्वारेर काछे आसिया दाँड़ाय। से निजेके संसारेर पक्षे आवश्यक करिया तुलिते इच्छा करे, से काज देखाइते चाय, किन्तु केह ताहार काज चाहे ना। से जाने ना केमन करिया काजेर मध्ये प्रवेश करा याय, केमन करिया संसारेर मध्ये स्थान करिया लइते हय। से निजेर अक्षमतार संकोचे बाहिरे बाहिरे फिरे। ताहार की-एकटा मनो-वेदनार कथा अन्तरे प्रतिदिन बाड़ितेछे, किन्तु ताहार सेइ अपरिस्फुट वेदना, सेइ अव्यक्त आशङ्काके से स्पष्ट करिया बुझिते पारे ना। से अनुभव करे, ताहार चारिदिकेर समस्तइ से येन नष्ट करितेछे—किन्तु केमन करियाइ ये ताहा गड़िया उठियाछिल, एवं केमन करियाइ ये ताहा नष्ट हइतेछे, एवं केमन करिले ये ताहार प्रतिकार हइते पारे, ताहा से जाने ना। थाकिया थाकिया केवल गला छाड़िया काँदिया बलिते इच्छा करे, "आमि अत्यन्त अयोग्य, नितान्त अक्षम, आमार मूढ़तार कोथाओ तुलना नाइ।"

पूर्वे तो आशा ओ महेन्द्र सुदीर्घकाल दुइ जने एक गृहकोणे बसिया कखनो कथा कहिया, कखनो कथा ना कहिया, परिपूर्ण सुखे समय काटाइयाछे। आजकाल विनोदिनीर अभावे आशार सङ्गे एकला बसिया महेन्द्रेर मुखे किछुतेइ येन सहजे कथा जोगाय ना—एवं किछु ना कहिया चुप करिया थाकितेओ ताहार बाधो-बाधो ठेके।

महेन्द्र बेहाराके जिज्ञासा करिल, "ओ चिठि काहार।"

"बिहारीबाबुर।"

"के दिल।"

"बहु-ठाकुरानी।" (विनोदिनी)

"देखि" बलिया चिठिखाना लइल। इच्छा हइल छिँड़िया पड़े। दु-चारिबार उल्टापाल्टा करिया नाड़िया-चाड़िया बेहारार हाते छुँड़िया फेलिया दिल। यदि चिठि खुलित, तबे देखित, ताहाते लेखा आछे, "पिसिमा कोनोमतेइ सागु-बार्लि खाइते चान ना, आज कि ताँहाके डालेर झोल खाइते देओया हइबे।" औषध-पथ्य लइया विनोदिनी महेन्द्रके कखनो कोनो कथा जिज्ञासा करित ना, से-सम्बन्धे बिहारीर प्रतिइ ताहार निर्भर।

महेन्द्र बारान्दाय खानिकक्षण पायचारि करिया घरे ढुकिया देखिल, देयाले टाङानो एकटा छबिर दड़ि छिन्नप्राय हओयाते छबिटा बाँका हइया आछे। आशाके अत्यन्त धमक दिया कहिल, "तोमार चोखे किछुइ पड़े ना, एमनि करिया समस्त जिनिस नष्ट हइया याय।" दमदमेर बागान हइते फुल संग्रह करिया ये-तोड़ा विनोदिनी पितलेर फुलदानिते साजाइया राखिया-

छिल, आजओ ताहा शुष्क अवस्थाय तेमनिभावे आछे ; अन्यदिन महेन्द्र ए-समस्त लक्ष्यइ करे ना—आज ताहा चोखे पड़िल। कहिल, "विनोदिनी आसिया ना फेलिया दिले, ओ आर फेलाइ हइबे ना।" बलिया फुलसुद्ध फुलदानि बाहिरे छुंड़िया फेलिल, ताहा ठंठं शब्दे सिँड़ि दिया गड़ाइया चलिल। "केन आशा आमार मनेर मतो हइतेछे ना, केन से आमार मनेर मतो काज करितेछे ना, केन ताहार स्वभावगत शैथिल्य ओ दुर्बलताय से आमाके दाम्पत्येर पथे दृढ़भावे धरिया राखितेछे ना, सर्वदा आमाके विक्षिप्त करिया दितेछे।" एइ कथा महेन्द्र मने-मने आन्दोलन करिते करिते हठात् देखिल, आशार मुख पांशुवर्ण हइया गेछे, से खाटेर थाम धरिया आछे, ताहार ठोँट-दुटि काँपितेछे—काँपिते काँपिते से हठात् वेगे पाशेर घर दिया चलिया गेल।

महेन्द्र तखन धीरे धीरे गिया फुलदानिटा कुड़ाइया आनिया राखिल। घरेर कोणे ताहार पड़िबार टेबिल छिल—चौकिते बसिया सेइ टेबिलटार उपर हातेर मध्ये माथा राखिया अनेकक्षण पड़िया रहिल।

सन्ध्यार पर घरे आलो दिया गेल, किन्तु, आशा आसिल ना। महेन्द्र द्रुतपदे छादेर उपर पायचारि करिया बेड़ाइते लागिल। रात्रि नटा बाजिल, महेन्द्रेर लोकविरल गृह रात-दुपुरेर मतो निस्तब्ध हइया गेल—तबु आशा आसिल ना। महेन्द्र ताहाके डाकिया पाठाइल। आशा संकुचितपदे आसिया छादेर प्रवेशद्वारेर काछे दाँड़ाइया रहिल। महेन्द्र काछे आसिया ताहाके बुके टानिया लइल—मुहूर्तेर मध्ये स्वामीर बुकेर उपर आशार कान्ना फाटिया पड़िल—से आर थामिते पारे ना, ताहार चोखेर जल आर फुराय ना, कान्नार शब्द गला छाड़िया बाहिर हइते चाय, से आर चापा थाके ना। महेन्द्र ताहाके वक्षे बद्ध करिया केशचुम्बन करिल—निःशब्द आकाशे तारागुलि निस्तब्ध हइया चाहिया रहिल।

रात्रे बिछानाय बसिया महेन्द्र कहिल, "कालेजे आमादेर नाइट-डिउटी अधिक पड़ियाछे, अतएव एखन किछुकाल आमाके कालेजेर काछेइ बासा करिया थाकिते हइबे।"

आशा भाबिल, "एखनो कि राग आछे। आमार उपर विरक्त हइया चलिया याइतेछेन? निजेर निर्गुणताय आमि स्वामीके घर हइते विदाय करिया दिलाम? आमार तो मरा भालो छिल।"

किन्तु महेन्द्रेर व्यवहारे रागेर लक्षण किछुइ देखा गेल ना। से अनेकक्षण किछु ना बलिया आशार मुख बुकेर उपर राखिल एवं बारंबार अङ्गुलि दिया

ताहार चुल चिरिते चिरिते ताहार खोँपा शिथिल करिया दिल। पूर्वे आदरेर दिने महेन्द्र एमन करिया आशार बाँधा चुल खुलिया दित—आशा ताहाते आपत्ति करित। आज आर से ताहाते कोनो आपत्ति ना करिया पुलके विह्वल हइया चुप करिया रहिल। हठात् एक समय ताहार ललाटेर उपर अश्रुविन्दु पड़िल, एवं महेन्द्र ताहार मुख तुलिया धरिया स्नेहरुद्ध स्वरे डाकिल, "चुनि।" आशा कथाय ताहार कोनो उत्तर ना दिया दुइ कोमल हस्ते महेन्द्रके चापिया धरिल। महेन्द्र कहिल, "अपराध करियाछि, आमाके माप करो।"

आशा ताहार कुसुम-सुकुमार करपल्लव महेन्द्रेर मुखेर उपर चापा दिया कहिल, "ना, ना, अमन कथा बलियो ना। तुमि कोनो अपराध कर नाइ। सकल दोष आमार। आमाके तोमार दासीर मतो शासन करो। आमाके तोमार चरणाश्रयेर योग्य करिया लओ।"

विदायेर प्रभाते शय्यात्याग करिबार समय महेन्द्र कहिल, "चुनि, आमार रत्न, तोमाके आमार हृदये सकलेर उपरे धारण करिया राखिब, सेखाने केह तोमाके छाड़ाइया याइते पारिबे ना।"

तखन आशा दृढ़चित्ते सर्वप्रकार त्यागस्वीकारे प्रस्तुत हइया स्वामीर निकट निजेर एकटिमात्र क्षुद्र दावि दाखिल करिल। कहिल, "तुमि आमाके रोज एकखानि करिया चिठि दिबे?"

महेन्द्र कहिल, "तुमिओ दिबे?"

आशा कहिल, "आमि कि लिखिते जानि।"

महेन्द्र ताहार कानेर काछे अलकगुच्छ टानिया दिया कहिल, "तुमि अक्षयकुमार दत्तेर चेये भालो लिखिते पार—चारुपाठ याहाके बले।"

आशा कहिल, "याओ, आमाके आर ठाट्टा करियो ना।"

याइबार पूर्वे आशा यथासाध्य निजेर हाते महेन्द्रेर पोर्टम्याण्टो साजाइते बसिल। महेन्द्रेर मोटा मोटा शीतेर कापड़ ठिक मतो भाँज करा कठिन, बाक्से धरानो शक्त—उभये मिलिया कोनोमते चापाचापि ठासाठुसि करिया, याहा एक बाक्से धरित, ताहाते दुइ बाक्स बोझाइ करिया तुलिल। तबु याहा भुलक्रमे बाकि रहिल, ताहाते आरो अनेकगुलि स्वतन्त्र पुंटुलिर सृष्टि हइल। इहा लइया आशा यदिओ बार बार लज्जाबोध करिल, तबु ताहादेर काड़ाकाड़ि, कौतुक ओ परस्परेर प्रति सहास्य दोषारोपे पूर्वेकार आनन्देर दिन फिरिया आसिल। ए ये विदायेर आयोजन हइतेछे, ताहा आशा क्षणकालेर जन्य भुलिया गेल। सहिस दशबार गाड़ि तैयारिर कथा

महेन्द्रके स्मरण कराइया दिल, महेन्द्र काने तुलिल ना—अवशेषे विरक्त हइया बलिल, "घोड़ा खुलिया दाओ।"

सकाल क्रमे विकाल हइया गेल, विकाल सन्ध्या हय। तखन स्वास्थ्य-पालन करिते परस्परके सतर्क करिया दिया एवं नियमित चिठिलेखा सम्बन्धे बारंबार प्रतिश्रुत कराइया लइया भाराक्रान्त हृदये परस्परेर विच्छेद हइल।

राजलक्ष्मी आज दुइ दिन हइल उठिया बसियाछेन। सन्ध्यावेलाय गाये मोटा कापड़ मुड़ि दिया विनोदिनीर सङ्गे तास खेलितेछेन। आज ताँहार शरीरे कोनो ग्लानि नाइ। महेन्द्र घरे प्रवेश करिया विनोदिनीर दिके एकेबारेइ चाहिल ना—माके कहिल, "मा, कालेजे आमार रात्रेर काज पड़ियाछे, एखाने थाकिया सुविधा हय ना—कालेजेर काछे बासा लइयाछि। सेखाने आज हइते थाकिब।"

राजलक्ष्मी मने मने अभिमान करिया कहिलेन, "ता याओ। पड़ार क्षति हइले केमन करिया थाकिबे।"

यदिओ ताँहार रोग सारियाछे, तबु महेन्द्र याइबे शुनिया तखनि तिनि निजेके अत्यन्त रुग्ण ओ दुर्बल बलिया कल्पना करिलेन; विनोदिनीके बलिलेन, "दाओ तो बाछा, बालिशटा आगाइया दाओ।" बलिया बालिश अवलम्बन करिया शुइलेन, विनोदिनी आस्ते आस्ते ताँहार गाये हात बुलाइया दिते लागिल।

महेन्द्र एकबार मार कपाले हात दिया देखिल, ताँहार नाड़ी परीक्षा करिल। राजलक्ष्मी हात छाड़ाइया लइया कहिलेन, "नाड़ी देखिया तो भारि बोझा जाय। तोर आर भाबिते हइबे ना, आमि बेश आछि।" बलिया अत्यन्त दुर्बलभावे पाश फिरिया शुइलेन।

महेन्द्र विनोदिनीके कोनो प्रकार विदायसम्भाषण ना करिया राजलक्ष्मीके प्रणाम करिया चलिया गेल।

१९

विनोदिनी मने मने भाबिते लागिल, "व्यापारखाना की। अभिमान, ना राग, ना भय? आमाके देखाइते चान, आमाके केयार करेन ना? बासाय गिया थाकिबेन? देखि कत दिन थाकिते पारेन?"

किन्तु विनोदिनीरओ मने मने एकटा अशान्त भाव उपस्थित हइल। महेन्द्रके से प्रतिदिन नाना पाश बद्ध ओ नाना बाणे विद्ध करितेछिल,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से-काज गिया विनोदिनी येन ए-पाश ओ-पाश करिते लागिल। बाड़ि हइते ताहार समस्त नेशा चलिया गेल। महेन्द्रवर्जित आशा ताहार काछे नितान्तइ स्वादहीन। आशार प्रति महेन्द्रेर सोहाग-यत्न विनोदिनीर प्रणयवञ्चित चित्तके सर्वदाइ आलोड़ित करिया तुलित—ताहाते विनोदिनीर विरहिणी कल्पनाके ये-वेदनाय जागरूक करिया राखित ताहार मध्ये उग्र उत्तेजना छिल। ये-महेन्द्र ताहाके ताहार समस्त जीवनेर सार्थकता हइते भ्रष्ट करियाछे, ये-महेन्द्र ताहार मतो स्त्रीरत्नके उपेक्षा करिया आशार मतो क्षीण-बुद्धि दीनप्रकृति बालिकाके वरण करियाछे, ताहाके विनोदिनी भालोबासे कि विद्वेष करे, ताहाके कठिन शास्ति दिबे ना ताहाके हृदयसमर्पण करिबे, ताहा विनोदिनी ठिक करिया बुझिते पारे नाइ। एकटा ज्वाला महेन्द्र ताहार अन्तरे ज्वालाइयाछे, ताहा हिंसार ना प्रेमेर, ना दुयेरइ मिश्रण, विनोदिनी ताहा भाविया पाय ना; मने मने तीव्र हासि हासिया बले, "कोनो नारीर कि आमार मतो एमन दशा हइयाछे। आमि मरिते चाइ कि मारिते चाइ, ताहा बुझितेइ पारिलाम ना।" किन्तु ये कारणेइ बल, दग्ध हइतेइ हउक वा दग्ध करितेइ हउक, महेन्द्रके ताहार एकान्त प्रयोजन। से ताहार विषदिग्ध अग्निबाण जगते कोथाय मोचन करिबे। घन निश्वास फेलिते फेलिते विनोदिनी कहिल, "से याइबे कोथाय। से फिरिबेइ। से आमार।"

आशा घर परिष्कार करिबार छुता करिया सन्ध्यार समय महेन्द्रेर बाहिरेर घरे, मायार-तेले-दाग-पड़ा महेन्द्रेर बसिबार केदारा, कागजपत्र-छड़ानो डेस्क, ताहार बइ, ताहार छबि प्रभृति जिनिसपत्र बारबार नाड़ाचाड़ा एवं अञ्चल दिया झाड़पोँच करितेछिल। एइरूपे महेन्द्रेर सकल जिनिस नाना रूपे स्पर्श करिया, एकबार राखिया, एकबार तुलिया, आशार विरह सन्ध्या काटितेछिल। विनोदिनी धीरे धीरे ताहार काछे आसिया दाँड़ाइल; आशा ईषत् लज्जित हइया ताहार नाड़ाचाड़ार काज राखिया दिया, की येन खुँजितेछे एमनितरो भान करिल। विनोदिनी गम्भीरमुखे जिज्ञासा करिल, "की हच्छे तोर, भाइ!"

आशा मुखे एकटुखानि हासि जागाइया कहिल, "किछुइ ना, भाइ।"

विनोदिनी तखन आशार गला जड़ाइया कहिल, "केन भाइ बालि, ठाकुरपो एमन करिया चलिया गेलेन केन!"

आशा विनोदिनीर एइ प्रश्नमात्रेइ संशयान्वित सशङ्कित हइया उत्तर करिल, "तुमि तो जानइ, भाइ—कलेजे ताँहार विशेष काज पड़ियाछे बलिया गेछेन।"

विनोदिनी डान हाते आशार चिबुक तुलिया धरिया येन करुणाय विगलित हइया स्तब्ध भावे एकबार ताहार मुख निरीक्षण करिया देखिल एवं दीर्घ-निश्वास फेलिल।

आशार बुक दमिया गेल। निजेके से निर्बोध एवं विनोदिनीके बुद्धिमती बलिया जानित। विनोदिनीर भावखाना देखिया हठात् ताहार विश्वसंसार अन्धकार हइया उठिल। से विनोदिनीके स्पष्ट करिया कोनो प्रश्न जिज्ञासा करिते साहस करिल ना। देयालेर काछ एकटा सोफार उपरे बसिल। विनोदिनीओ ताहार पाशे बसिया दृढ़ बाहु दिया आशाके बुकेर काछे बाँधिया धरिल। सखीर सेइ आलिङ्गने आशा आर आत्मसंवरण करिते पारिल ना, ताहार दुइ चक्षु दिया जल झड़िया पड़िते लागिल। द्वारेर काछे अन्ध भिखारि खञ्जनी बाजाइया गाहितेछिल, 'चरणतरणी दे मा, तारिणी तारा।'

बिहारी महेन्द्रेर सन्धाने आसिया द्वारेर काछे पौँछितेइ देखिल—आशा काँदितेछे, एवं विनोदिनी ताहाके बुके जड़ाइया धरिया धीरे धीरे ताहार चोख मुछाइया दितेछे। देखियाइ बिहारी सेखान हइते सरिया दाँड़ाइल। पाशेर शून्य घरे गिया अन्धकारे बसिल। दुइ करतले माथा चापिया धरिया भाबिते लागिल, आशा केन काँदिबे। ये मेये स्वभावतइ काहारओ काछे लेशमात्र अपराध करिते अक्षम, ताहाकेओ काँदाइते पारे एमन पाषण्ड जगते के आछे! तार परे विनोदिनी येमन करिया सान्त्वना करितेछिल, ताहा मने आनिया मने मने कहिल, 'विनोदिनीके भारि भुल बुझियाछिलाम। सेवाय सान्त्वनाय, निःस्वार्थ सखीप्रेमे से मर्तवासिनी देवी।'

बिहारी अनेकक्षण अन्धकारे बसिया रहिल। अन्धेर गान थामिया गेले बिहारी सशब्दे पा फेलिया, काशिया, महेन्द्रेर घरेर दिके चलिल। द्वारेर काछे ना जाइतेइ घोमटा टानिया आशा द्रुत पदे अन्तःपुरेर दिके छुटिया गेल।

घरे ढुकितेइ विनोदिनी बलिया उठिल, "ए की बिहारीबाबु! आपनार कि असुख करियाछ।"

बिहारी। किछु ना।

विनोदिनी। चोख दुटा अमन लाल केन।

बिहारी ताहार उत्तर ना दिया कहिल, "विनोद-बोठान, महेन्द्र कोथाय गेल।"

विनोदिनी मुख गम्भीर करिया कहिल, "शुनिलाम, हासपाताले ताँहार काज पड़ियाछे बलिया कलेजेर काछे तिनि बासा करिया आछेन। बिहारी-बाबु एकटु सरुन, आमि तबे आसि।"

अन्यमनस्क बिहारी द्वारेर काछे विनोदिनीर पथरोध करिया दाँड़ाइया-

छिल। चकित हइया ताड़াताड़ि पथ छाड़िया दिल। सन्ध्यार समय एकला बाहिरेर घरे विनोदिनीर सङ्गे कथावार्ता लोकेर चक्षे सुदृश्य नय, से कथा हठात् मने पड़िल। विनोदिनी चलिया याइबार समय बिहारी ताड़ा-ताड़ि बलिया लइल, "विनोद-बोठान, आशाके तुमि देखियो। से सरला, काहाकेओ आघात करितेओ जाने ना, निजेके आघात हइते बाँचाइतेओ पारे ना।"

बिहारी अन्धकारे विनोदिनीर मुख देखिते पाइल ना, से मुखे हिंसार विद्युत् खेलित लागिल। आज बिहारीके देखियाइ से बुझियाछिल ये, आशार जन्य करुणाय ताहार हृदय व्यथित। विनोदिनी निजे केहइ नहे! आशा-के ढाकिया राखिबार जन्य, आशार पथेर काँटा तुलिया दिबार जन्य, आशार समस्त सुख सम्पूर्ण करिबार जन्यइ ताहार जन्म। श्रीयुक्त महेन्द्रबाबु आशाके विवाह करिबेन, सेइजन्य अदृष्टेर ताड़नाय विनोदिनीके बारासतेर बर्बर बानरेर सहित वनवासिनी हइते हइबे। श्रीयुक्त बिहारीबाबु सरला आशार चोखेर जल देखिते पारेन ना, सेइजन्य विनोदिनीके ताहार आँचलेर प्रान्त तुलिया सर्वदा प्रस्तुत हइया थाकिते हइबे। एकबार एइ महेन्द्रके, एइ बिहारीके, विनोदिनी ताहार पश्चातेर छायार सहित धुलाय लुण्ठित करिया बुझाइते चाय, आशाइ वा के आर विनोदिनीइ वा के! दुजनेर मध्ये कत प्रभेद! प्रतिकूल भाग्य-वशत विनोदिनी आपन प्रतिभाके कोनो पुरुषेर चित्तक्षेत्रे अव्याहत भावे जयी करिते ना पारिया ज्वलन्त शक्तिशेल उद्यत करिया संहार मूर्ति धरिल।

अत्यन्त मिष्टस्वरे विनोदिनी बिहारीके बलिया गेल, "आपनि निश्चिन्त थाकिबेन, बिहारीबाबु। आमार चोखेर बालिर जन्य भाबिया भाबिया निजेके बेशि कष्ट दिबेन ना।"

२०

अनतिकाल परेइ महेन्द्र ताहार छात्रावासे चेना हातेर अक्षरे एकखानि चिठि पाइल। दिनेर वेला गोलमालेर मध्ये खुलिल ना—बुकेर काछे पकेटेर मध्ये पुरिया राखिल। कालेजे लेक्चार शुनिते शुनिते, हासपाताल घुरिते घुरिते, हठात् एक-एकबार मन हइते लागिल, भालोबासार एकटा पाखि ताहार बुकेर नीड़े बासा करिया घुमाइया आछे। ताहाके जागाइया तुलिलेइ ताहार समस्त कोमल कूजन काने ध्वनित हइया उठिबे।

सन्ध्याय एक समय महेन्द्र निर्जन घरे ल्याम्पेर आलोके चौकिते बेश

करिया हेलान दिया आराम करिया बसिल। पकेट हइते ताहार देहतापतप्त चिठिखानि बाहिर करिया लइल। अनेकक्षण चिठि ना खुलिया लेफाफार उपरकार शिरोनामा निरीक्षण करिया देखिते लागिल। महेन्द्र जानित, चिठिर मध्ये बेशि किछु कथा नाइ। आशा निजेर मनेर भाव ठिकमतो व्यक्त करिया लिखिते पारिबे, एमन सम्भावना छिल ना। केवल ताहार काँचा अक्षरे बाँका लाइने ताहार मनेर कोमल कथागुलि कल्पना करिया लइते हइबे। आशार काँचा हाते बहुयत्ने लेखा निजेर नामटि पड़िया महेन्द्र निजेर नामेर सङ्गे येन एकटा रागिणी शुनिते पाइल—ताहा साध्वी नारी-हृदयेर अति निभृत वैकुण्ठलोक हइते एकटि निर्मल प्रेमेर संगीत।

एइ दुइ-एकदिनेर विच्छेदे महेन्द्रेर मन हइते दीर्घ-मिलनेर समस्त अवसाद दुर हइया सरल वधूर नवप्रेमेर उद्भासित सुखस्मृति आबार उज्ज्वल हइया उठियाछे। शेषाशेषि प्रात्यहिक घरकन्नार खुँटिनाटि असुविधा ताहाके उत्यक्त करिते आरम्भ करियाछिल, से-समस्त अपसारित हइया केवलमात्र कर्महीन कारणहीन एकटि विशुद्ध प्रेमानन्देर आलोके आशार मानसी मूर्ति ताहार मनेर मध्ये प्राण पाइया उठियाछे।

महेन्द्र अति धीरे धीरे लेफाफा छिँड़िया चिठिखाना बाहिर करिया निजेर ललाटे कपोले बुलाइया लइल। एक दिन महेन्द्र ये-एसेन्स आशाके उपहार दियाछिल, सेइ एसेन्सेर गन्ध चिठिर कागज हइते उतला दीर्घनिश्वासेर मतो महेन्द्रेर हृदयेर मध्ये प्रवेश करिल।

भाँज खुलिया महेन्द्र चिठि पड़िल। किन्तु ए की। येमन बाँकाचोरा लाइन, तेमन सादासिधा भाषा नय तो। काँचा-काँचा अक्षर, किन्तु कथागुलि तो ताहार सङ्गे मिलिल ना। लेखा आछे—

'प्रियतम, याहाके भुलिबार जन्य चलिया गेछ, ए लेखाय ताहाके स्मरण कराइया दिब केन। ये लताके छिँड़िया माटिते फेलिया दिले, से आबार कोन लज्जाय जड़ाइया उपरे उठिते चेष्टा करे। से केन माटिर सङ्गे माटि हइया मिशिया गेल ना।

'किन्तु एटुकुते तोमार की क्षति हइबे, नाथ। ना हय क्षणकालेर जन्य मने पड़िलइ वा। मने ताहाते कतटुकुइ वा बाजिबे। आर, तोमार अवहेला ये काँटार मतो आमार पाँजरेर भितरे प्रवेश करिया रहिल। सकल दिन, सकल रात, सकल काज, सकल चिन्तार मध्ये येदिके फिरि, सेइ दिकेइ ये आमाके बिँधिते लागिल। तुमि येमन करिया भुलिले, आमाके तेमनि करिया भुलिबार एकटा उपाय बलिया दाओ।

'नाथ, तुमि ये आमाके भालोबासियाछिले, से कि आमारइ अपराध। आमि कि स्वप्नेओ एत सौभाग्य प्रत्याशा करियाछिलाम। आमि कोथा हइते आसिलाम, आमाके के जानित। आमाके यदि ना चाहिया देखिते, आमाके यदि तोमार घरे बिना-वेतनेर दासी हइया थाकिते हइत, आमि कि तोमाके कोनो दोष दिते पारिताम। तुमि निजेइ आमार कोन् गुणे भुलिले प्रियतम, की देखिया आमार एत आदर बाड़ाइले। आर, आज बिना-मेघे यदि वज्रपातइ हइल, तबे से वज्र केवल दग्ध करिल केन। एकेबारे देहमन केन छाइ करिया दिल ना।

'एइ दुटो दिने अनेक सह्य करिलाम, अनेक भाबिलाम, किन्तु, एकटा कथा बुझिते पारिलाम ना—घरे थाकियाओ कि तुमि आमाके फेलिते पारिते ना। आमार जन्यओ कि तोमार घर छाड़िया याओयार कोनो प्रयोजन छिल। आमि कि तोमार एतखानि जुड़िया आछि। आमाके तोमार घरेर कोणे, तोमार द्वारेर बाहिरे फेलिया राखिलेओ कि आमि तोमार चोखे पड़िताम। ताइ यदि हय, तुमि केन गेले, आमार कि कोथाओ याइबार पथ छिल ना। भासिया आसियाछि, भासिया याइताम।'

ए की चिठि। ए भाषा काहार, ताहा महेन्द्रेर बुझिते बाकि रहिल ना। अकस्मात् आहत मूर्छितेर मतो महेन्द्र से-चिठिखानि लइया स्तम्भित हइया रहिल। ये-लाइने रेलगाड़िर मतो ताहार मन पूर्णवेगे छुटियाछिल, सेइ लाइनेइ विपरीत दिक हइते एकटा धाक्का खाइया लाइनेर बाहिरे ताहार मनटा येन उलटापालटा स्तूपाकार विकल हइया पड़िया थाकिल।

अनेकक्षण चिन्ता करिया आबार से दुइबार तिनबार करिया पड़िल। किछुकाल याहा सुदूर आभासेर मतो छिल, आज ताहा येन फुटिया उठिते लागिल। ताहार जीवनाकाशेर एक कोणे ये धूमकेतुटा छायार मतो देखा-इतेछिल, आज ताहार उद्यत विशाल पुच्छ अग्निरेखाय दीप्यमान हइया देखा दिल।

ए चिठि विनोदिनीरइ। सरला आशा निजेर मने करिया ताहा लिखियाछे। पूर्वे ये-कथा से कखनो भावे नाइ, विनोदिनीर रचनामत चिठि लिखिते गिया सेइ सब कथा ताहार मने जागिया उठिते लागिल। नकल-करा कथा बाहिर हइते बद्धमूल हइया ताहार आन्तरिक हइया गेल; ये-नूतन वेदनार सृष्टि हइल, एमन सुन्दर करिया ताहा व्यक्त करिते आशा कखनोइ पारित ना। से भाबिते लागिल, "सखी आमार मनेर कथा एमन ठिकटि बुझिल की करिया। केमन करिया एमन ठिकटि प्रकाश करिया बलिल।"

अन्तरङ्ग सखीके आशा आरो येन बेशि आग्रहेर सङ्गे आश्रय करिया धरिल, कारण, ये-व्यथाटा ताहार मनेर मध्ये, ताहार भाषाटि ताहार सखीर काछे—से एतइ निरुपाय।

महेन्द्र चौकि छाड़िया उठिया भ्रू कुञ्चित करिया विनोदिनीर उपर राग करिते अनेक चेष्टा करिल, माझे थेके राग हइल आशार उपर। "देखो देखि, आशार ए की मूढ़ता, स्वामीर प्रति ए की अत्याचार।" बलिया चौकिते बसिया पड़िया प्रमाणस्वरूप चिठिखाना आबार पड़िल। पड़िया भितरे-भितरे एकटा हर्षसञ्चार हइते लागिल। चिठिखानाके से आशारइ चिठि मने करिया पड़िबार अनेक चेष्टा करिल। किन्तु ए-भाषाय कोनोमतेइ सरला आशाके मने कराइया देय ना। दु-चार लाइन पड़िबामात्र एकटा सुखोन्मादकर सन्देह फेनिल मदेर मतो मनके चारिदिके छापाइया उठिते थाके। एइ प्रच्छन्न अथच व्यक्त, निषिद्ध अथच निकटागत, विषाक्त अथच मधुर, एकइ काले उपहृत अथच प्रत्याहृत प्रेमेर आभास महेन्द्रके माताल करिया तुलिल। ताहार इच्छा करिते लागिल, निजेर हाते-पाये कोथाओ एक जायगाय छुरि बसाइया वा आर-किछु करिया नेशा छुटाइया मनटाके आर-कोनो दिके विक्षिप्त करिया देय। टेबिले सजोरे मुष्टि बसाइया चौकि हइते लाफाइया उठिया कहिल, "दूर करो, चिठिखाना पुड़ाइया फेलि।" बलिया चिठिखानि ल्याम्पेर काछाकाछि लइया गेल। पुड़ाइल ना, आर-एकबार पड़िया फेलिल। परदिन भृत्य टेबिल हइते कागजपोड़ा छाइ अनेक झाड़िया फेलियाछिल। किन्तु ताहा आशार चिठिर छाइ नहे, चिठिर उत्तर दिबार अनेकगुला असम्पूर्ण चेष्टाके महेन्द्र पुड़ाइया छाइ करियाछे।

२१

इतिमध्ये आरो एक चिठि आसिया उपस्थित हइल।—

'तुमि आमार चिठिर उत्तर दिले ना? भालोइ करियाछ। ठिक कथा तो लेखा याय ना; तोमार या जवाब, से आमि मने मने बुझिया लइलाम। भक्त यखन ताहार देवताके डाके, तिनि कि मुखेर कथाय ताहार उत्तर देन। दुखिनीर बिल्वपत्रखानि चरणतले बोध करि स्थान पाइयाछे!

'किन्तु भक्तेर पूजा लइते गिया शिवेर यदि तपोभङ्ग हय, तबे ताहाते राग करियो ना, हृदयदेव। तुमि वर दाओ वा ना दाओ, चोख मेलिया चाओ वा ना चाओ, जानिते पार वा ना पार, पूजा ना दिया भक्तेर आर

गति नाइ। ताइ आजिओ एइ दु-छत्र चिठि लिखिलाम—हे आमार पाषाण-ठाकुर तुमि अविचलित हइया थाको।'—

महेन्द्र आवार चिठिर उत्तर लिखिते प्रवृत्त हइल। किन्तु आशाके लिखिते गिया विनोदिनीर उत्तर कलमेर मुखे आपनि आसिया पड़े। ढाकिया लुकाइया कौशल करिया लिखिते पारे ना। अनेकगुलि छिंड़िया रात्रेर अनेक प्रहर काटाइया एकटा यदि वा लिखिल, सेटा लेफाफाय पुरिया उपरे आशार नाम लिखिबार समय हठात् ताहार पिठे येन काहार चाबुक पड़िल—के येन बलिल, "पाषण्ड, विश्वस्त बालिकार प्रति एमनि करिया प्रतारणा?" चिठि महेन्द्र सहस्र टुकरा करिया छिंड़िया फेलिल, एवं बाकि रातटा टेबिलेर उपर दुइ हाथेर मध्ये मुख ढाकिया निजेके येन निजेर दृष्टि हइते लुकाइबार चेष्टा करिल।

तृतीय-पत्र—'ये एकेबारेइ अभिमान करिते जाने ना, से कि भालोबासे। निजेर भालोबासाके यदि अनादर-अपमान हइते बाँचाइया राखिते ना पारि, तबे से भालोबासा तोमाके दिब केमन करिया।

'तोमार मन हय तो ठिक बुझि नाइ, ताइ एत साहस करियाछि। ताइ यखन त्याग करिया गेले, तखनो निजे अग्रसर हइया चिठि लिखियाछि; यखन चुप करिया छिले, तखनो मनेर कथा बलिया फेलियाछि। किन्तु तोमाके यदि भुल करिया थाकि, से कि आमारइ दोष। एकबार शुरु हइते शेष पर्यन्त सब कथा मने करिया देखो देखि, याहा बुझियाछिलाम, से कि तुमिइ बोझाओ नाइ।

'से याइ होक, भुल होक सत्य होक, याहा लिखियाछि से आर मुछिबे ना, याहा दियाछि से आर फिराइते पारिब ना, एइ आक्षेप। छि छि, एमन लज्जाओ नारीर भाग्ये घटे। किन्तु ताइ बलिया मने करियो ना, भालो ये बासे से निजेर भालोबासाके बराबर अपदस्थ करिते पारे। यदि आमार चिठि ना चाओ तो थाक, यदि उत्तर ना लिखिबे तबे एइ पर्यन्त—'

इहार पर महेन्द्र आर थाकिते पारिल ना। मने करिल, "अत्यन्त राग करियाइ घरे फिरिया याइतेछि। विनोदिनी मने करे, ताहाके भुलिबार जन्यइ घर छाड़िया पालाइयाछि!" विनोदिनीर सेइ स्पर्धाके हाते-हाते अप्रमाण करिबार जन्यइ तखनि महेन्द्र घरे फिरिबार संकल्प करिल।

एमन समय बिहारी घरे प्रवेश करिल। बिहारीके देखिबामात्र महेन्द्रेर भितरेर पुलक येन द्विगुण बाड़िया उठिल। इतिपूर्वे नाना सन्देहे भितरे भितरे बिहारीर प्रति ताहार ईर्षा जन्मितेछिल, उभयेर बन्धुत्व क्लिष्ट

हइया उठितेछिल। पत्रपाठेर पर आज समस्त ईर्षाभाव विसर्जन दिया बिहारीके से अतिरिक्त आवेगेर सहित आह्वान करिया लइल। चौकि हइते उठिया, बिहारीर पिठे चापड़ मारिया, ताहार हात धरिया, ताहाके एकटा केदारार उपरे टानिया बसाइया दिल।

किन्तु बिहारीर मुख आज विमर्ष। महेन्द्र भाबिल, बेचारा निश्चय इतिमध्ये विनोदिनीर सङ्गे साक्षात् करियाछे एवं सेखान हइते धाक्का खाइया आसियाछे। महेन्द्र जिज्ञासा करिल, "बिहारी, एर मध्ये आमादेर ओखाने गियाछिले?"

बिहारी गम्भीरमुखे कहिल, "एखनि सेखान हइते आसितेछि।"

महेन्द्र बिहारीर वेदना कल्पना करिया मने मने एकटु कौतुकबोध करिल। मने मने कहिल, "हतभाग्य बिहारी। स्त्रीलोकेर भालोबासा हइते बेचारा एकेबारे वञ्चित।" बलिया निजेर बुकेर पकेटेर काछटाय एक बार हात दिया चाप दिल—भितर हइते तिनटे चिठि खड़खड़ करिया उठिल।

महेन्द्र जिज्ञासा करिल, "सबाइके केमन देखिले?"

बिहारी ताहार उत्तर ना करिया कहिल, "बाड़ि छाड़िया तुमि ये एखाने?"

महेन्द्र कहिल, "आजकाल प्राय नाइट-डिउटि पड़े—बाड़िते असुविधा हय।"

बिहारी कहिल, "एर आगेओ तो नाइट-डिउटि पड़ियाछे, किन्तु तोमाके तो बाड़ि छाड़िते देखि नाइ।"

महेन्द्र हासिया कहिल, "मने कोनो सन्देह जन्मियाछे ना कि।"

बिहारी कहिल, "ना, ठाट्टा नय, एखनि बाड़ि चलो।"

महेन्द्र बाड़ि फिरिबार जन्य उद्यत हइयाइ छिल; बिहारीर अनुरोध शुनिया से हठात् निजेके भुलाइल, येन बाड़ि याइबार जन्य ताहार किछुमात्र आग्रह नाइ। कहिल, "से कि हय, बिहारी। ताहले आमार वत्सरटाइ नष्ट हइबे।"

बिहारी कहिल, "देखो महिनदा, तोमाके आमि एतटुकु वयस हइते देखितेछि, आमाके भुलाइबार चेष्टा करियो ना। तुमि अन्याय करितेछ।"

महेन्द्र। कार 'परे अन्याय करितेछि, जजसाहेब।

बिहारी राग करिया बलिल, "तुमि ये चिरकाल हृदयेर बड़ाइ करिया आसियाछ, तोमार हृदय गेल कोयाय महिनदा।"

महेन्द्र। सम्प्रति कालेजेर हासपाताले।

बिहारी। थामो महिनदा, थामो। तुमि एखाने आमार सङ्गे हासिया ठाट्टा करिया कथा कहितेछ, सेखाने आशा तोमार बाहिरेर घरे, अन्दरेर घरे काँदिया काँदिया बेड़ाइतेछे।

आशार कान्नार कथा शुनिया हठात् महेन्द्रेर मन एकटा प्रतिघात पाइल। जगते आर ये काहारो सुखदुःख आछे, से-कथा ताहार नूतन नेशार काछे स्थान पाय नाइ। हठात् चमक लागिल, जिज्ञासा करिल, "आशा काँदितेछे की जन्य।"

बिहारी विरक्त हइया कहिल, "से-कथा तुमि जान ना, आमि जानि?"

महेन्द्र। तोमार महिनदा सर्वज्ञ नय बलिया यदि राग करितेइ हय तो महिनदार सृष्टिकर्तार उपर राग करो।

तखन बिहारी याहा देखियाछिल, ताहा आगागोड़ा बलिल। बलिते बलिते विनोदिनीर वक्षोलग्न आशार सेइ अश्रुसिक्त मुखखानि मने पड़िया बिहारीर प्राय कण्ठरोध हइया आसिल।

बिहारीर एइ प्रबल आवेग देखिया महेन्द्र आश्चर्य हइया गेल। महेन्द्र जानित बिहारीर हृदयेर बालाइ नाइ—ए उपसर्ग कबे जुटिल। येदिन कुमारी आशाके देखिते गियाछिल, सेइ दिन हइते नाकि। बेचारा बिहारी। महेन्द्र मने मने ताहाके बेचारा बलिल बटे, किन्तु दुःखबोध ना करिया वरञ्च एकटु आमोद पाइल। आशार मनटि एकान्तभावे ये कोन् दिके, ताहा महेन्द्र निश्चय जानित। "अन्य लोकेर काछे याहारा वाञ्छार धन, किन्तु आयत्तेर अतीत, आमार काछे ताहारा चिरदिनेर जन्य आपनि धरा दियाछे," इहाते महेन्द्र वक्षेर मध्ये एकटा गर्वेर स्फीति अनुभव करिल।

महेन्द्र बिहारीके कहिल, "आच्छा चलो, याओया याक। तबे एकटा गाड़ि डाको।"

२२

महेन्द्र घरे फिरिया आसिबामात्र ताहार मुख देखियाइ आशार मनेर समस्त संशय क्षणकालेर कुयाशार मतो एक मुहूर्तेइ काटिया गेल। निजेर चिठिर कथा स्मरण करिया लज्जाय महेन्द्रेर सामने से येन मुख तुलितेइ पारिल ना। महेन्द्र ताहार उपरे भर्त्सना करिया कहिल, "एमन अपवाद दिया चिठिगुला लिखिले की करिया।"

बलिया पकेट हइते बहुबार पठित सेइ चिठि तिनखानि बाहिर करिल। आशा व्याकुल हइया कहिल, "तोमार पाये पड़ि, ओ चिठिगुलो छिँड़िया

फेलो।" बलिया महेन्द्रेर हात हइते चिठिगुला लइबार जन्य व्यस्त हइया पड़िल। महेन्द्र ताहाके निरस्त करिया सेगुलि पकेटे पुरिल। कहिल, "आमि कर्त्तव्येर अनुरोधे गेलाम, आर तुमि आमार अभिप्राय बुझिले ना? आमाके सन्देह करिले?"

आशा छल-छल चोखे कहिल, "एबारकार मतो आमाके माप करो। एमन आर कखनोइ हइबे ना।"

महेन्द्र कहिल, "कखनो ना?"

आशा कहिल, "कखनो ना।"

तखन महेन्द्र ताहाके टानिया लइया चुम्बन करिल। आशा कहिल, "चिठिगुला दाओ, छिँड़िया फेलि।"

महेन्द्र कहिल, "ना, ओ थाक्!"

आशा सविनये मने करिल, "आमार शास्तिस्वरूप ए चिठिगुलि उनि राखिलेन।"

एइ चिठिर व्यापारे विनोदिनीर उपर आशार मनटा एकटु येन बाँकिया दाँड़ाइल। स्वामीर आगमनवार्ता लइया से सखीर काछे आनन्द करिते गेल ना—वरञ्च विनोदिनीके एकटु येन एड़ाइया गेल। विनोदिनी सेटुकु लक्ष्य करिल एवं काजेर छल करिया एकेबारे दूरे रहिल।

महेन्द्र भाविल, "ए तो बड़ो अद्भुत। आमि भाबियाछिलाम, एबार विनोदिनीके विशेष करियाइ देखा याइबे—उल्टा हइल? तबे से चिठिगुलार अर्थ की।"

नारीहृदयेर रहस्य बुझिबार कोनो चेष्टा करिबे ना बलियाइ महेन्द्र मनके दृढ़ करियाछिल—भाबियाछिल, "विनोदिनी यदि काछे आसिबार चेष्टा करे, तबु आमि दूरे थाकिब।" आज से मने मने कहिल, "ना, ए तो ठिक हइतेछे ना। येन आमादेर मध्ये सत्यइ की एकटा विकार घटियाछे। विनोदिनीर सङ्गे सहज स्वाभाविक भावे कथावार्ता आमोदप्रमोद करिया एइ संशयाच्छन्न गुमटेर भावटा दूर करिया देओया उचित।"

आशाके महेन्द्र कहिल, "देखितेछि, आमिइ तोमार सखीर चोखेर बालि हइलाम। आजकाल ताँहार आर देखाइ पाओया याय ना।"

आशा उदासीन भावे उत्तर करिल, "के जाने, ताहार की हइयाछे।"

एदिके राजलक्ष्मी आसिया काँदो-काँदो हइया कहिलेन, "विपिनेर बउके आर तो धरिया राखा याय ना।"

महेन्द्र चकित भाव सामलाइया कहिल, "केन, मा।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "की जानि बाछा, से तो एबार बाड़ि याइबार जन्य नितान्तइ धरिया पड़ियाछे। तुइ तो काहाकेओ खातिर करिते जानिस ना। भद्रलोकेर मेये परेर बाड़िते आछे, उहाके आपनार लोकेर मतो आदर-यत्न ना करिले थाकिबे केन।"

विनोदिनी शोबार घरे बसिया बिछानार चादर सेलाइ करितेछिल। महेन्द्र प्रवेश करिया डाकिल, "बालि।"

विनोदिनी संयत हइया बसिल। कहिल, "की, महेन्द्रबाबु।"

महेन्द्र कहिल, "की सर्वनाश। महेन्द्र आबार बाबु हइलेन कबे।"

विनोदिनी आबार चादर सेलाइयेर दिके नतचक्षु निबद्ध राखिया कहिल, "तबे की बलिया डाकिब।"

महेन्द्र कहिल, "तोमार सखीके या बल—चोखेर बालि।"

विनोदिनी अन्यदिनेर मतो ठाट्टा करिया ताहार कोनो उत्तर दिल ना—सेलाइ करिया याइते लागिल।

महेन्द्र कहिल, "ओटा बुझि सत्यकार सम्बन्ध हइल, ताइ ओटा आर पातानो चलितेछे ना!"

विनोदिनी एकटु थामिया दाँत दिया सेलाइयेर प्रान्त हइते खानिकटा बाड़ति सुता काटिया फेलिया कहिल, "की जानि, से आपनि जानेन।"

बलियाइ ताहार सर्वप्रकार उत्तर चापा दिया गम्भीरमुखे कहिल, "कालेज हइते हठात् फेरा हइल ये।"

महेन्द्र कहिल, "केवल मड़ा काटिया आर कत दिन चलिबे।"

आबार विनोदिनी दन्त दिया सुता छेदन करिल एवं मुख ना तुलियाइ कहिल, "एखन बुझि जियन्तेर आवश्यक।"

महेन्द्र स्थिर करियाछिल, आज विनोदिनीर सङ्गे अत्यन्त सहज स्वाभाविक भावे हास्यपरिहास उत्तरप्रत्युत्तर करिया आसर जमाइया तुलिबे। किन्तु एमनि गाम्भीर्येर भार ताहार उपर चापिया आसिल ये, लघु जवाब प्राणपण चेष्टातेओ मुखेर काछे जोगाइल ना। विनोदिनी आज केमन एकरकम कठिन दूरत्व रक्षा करिया चलितेछे देखिया, महेन्द्रेर मनटा सवेगे ताहार दिके अग्रसर हइते लागिल—व्यवधानटाके कोनो एकटा नाड़ा दिया भूमिसात् करिते इच्छा हइल। विनोदिनीर शेष वाक्य-घातेर प्रतिघात ना दिया हठात् ताहार काछे आसिया बसिया कहिल, "तुमि आमादेर छाड़िया चलिया याइतेछो केन। कोनो अपराध करियाछि?"

विनोदिनी तखन एकटु सरिया सेलाइ हइते मुख तुलिया दुइ विशाल

उज्ज्वल चक्षु महेन्द्रेर मुखेर उपर स्थिर राखिया कहिल, "कर्तव्यकर्म तो सकलेरइ आछे। आपनि ये सकल छाड़िया कालेजेर बासाय यान, से कि काहारओ अपराधे। आमारओ याइते हइबे ना? आमारओ कर्तव्य नाइ?"

महेन्द्र भालो उत्तर अनेक भाबिया खुंजिया पाइल ना। किछुक्षण थामिया जिज्ञासा करिल, "तोमार एमन की कर्त्तव्य ये ना गेलेइ नय।"

विनोदिनी अत्यन्त सावधाने सूचिते सुता पराइते पराइते कहिल, "कर्तव्य आछे कि ना, से निजेर मनइ जाने। आपनार काछे ताहार आर की तालिका दिब।"

महेन्द्र गम्भीर चिन्तित मुखे जानालार बाहिरे एकटा सुदूर नारिकेल-गाछेर माथार दिके चाहिया अनेकक्षण चुप करिया बसिया रहिल। विनोदिनी निःशब्दे सेलाइ करिया याइते लागिल। घरे छुंचटि पड़िले शब्द शोना याय, एमनि हइल। अनेकक्षण परे महेन्द्र हठात् कथा कहिल। अकस्मात् निःशब्दताभङ्गे विनोदिनी चमकिया उठिल—ताहार हाते छुंच फुटिया गेल।

महेन्द्र कहिल, "तोमाके कोनो अनुनय-विनयेइ राखा याइबे ना?"

विनोदिनी ताहार आहत अंगुलि हइते रक्तविन्दु शुषिया लइया कहिल, "किसेर जन्य एत अनुनय-विनय। आमि थाकिलेइ की, आर ना थाकिलेइ की। आपनार ताहाते की आसे याय।"

बलिते बलिते गलाटा येन भारि हइया आसिल; विनोदिनी अत्यन्त माथा निचु करिया सेलाइयेर प्रति एकान्त मनोनिवेश करिल—मने हइल, हयतो वा ताहार नतनेत्रेर पल्लवप्रान्ते एकटुखानि जलेर रेखा देखा दियाछे। माघेर अपराह्ण तखन सन्ध्यार अन्धकारे मिलाइबार उपक्रम करितेछिल।

महेन्द्र मुहूर्तेर मध्ये विनोदिनीर हात चापिया धरिया रुद्ध सजलस्वरे कहिल, "यदि ताहाते आमार आसे याय, तबे तुमि थाकिबे?"

विनोदिनी ताड़ाताड़ि हात छाड़ाइया लइया सरिया बसिल। महेन्द्रेर चमक भाङ्गिया गेल। निजेर शेष कथाटा भीषण व्यङ्गेर मतो ताहार निजेर काने बारंबार प्रतिध्वनित हइते लागिल। अपराधी जिह्वाके महेन्द्र दन्त द्वारा दंशन करिल—ताहार पर हइते रसना निर्वाक हइया रहिल।

एमन समय एइ नैःशब्द्यपरिपूर्ण घरेर मध्ये आशा प्रवेश करिल। विनोदिनी तत्क्षणात् येन पूर्व-कथोपकथनेर अनुवृत्तिस्वरूपे हासिया महेन्द्रके बलिया उठिल, "आमार गुमर तोमरा यखन एत बाड़ाइले, तखन आमारओ कर्तव्य, तोमादेर एकटा कथा राखा। यतक्षण ना विदाय दिबे ततक्षण रहिलाम।"

आशा स्वामीर कृतकार्यताय उत्फुल्ल हइया उठिया सखीके आलिङ्गन करिया धरिल। कहिल, "तबे एइ कथा रहिल। ताहा हइले तिन-सत्य करो, यतक्षण ना विदाय दिब ततक्षण थाकिबे, थाकिबे, थाकिबे।"

विनोदिनी तिनबार स्वीकार करिल। आशा कहिल, "भाइ चोखेर बालि, सेइ यदि रहिलेइ तबे एत करिया साधाइले केन। शेषकाले आमार स्वामीर काछे तो हार मानिते हइल।"

विनोदिनी हासिया कहिल, "ठाकुरपो, आमि हार मानियाछि, ना तोमाके हार मानाइयाछि?"

महेन्द्र एतक्षण स्तम्भित हइया छिल; मने हइतेछिल, ताहार अपराधे येन समस्त घर भरिया रहियाछे, लाञ्छना येन ताहार सर्वाङ्ग परिवेष्टन करिया। आशार सङ्गे केमन करिया से प्रसन्नमुखे स्वाभाविकभावे कथा कहिबे। एक मुहूर्तेर मध्ये केमन करिया से आपनार वीभत्स असंयमके सहास्य चटुलताय परिणत करिबे। एइ पैशाचिक इन्द्रजाल ताहार आयत्तेर बहिर्भूत छिल। से गम्भीरमुखे कहिल, "आमारइ तो हार हइयाछे।" बलियाइ घर हइते बाहिर हइया गेल।

अनतिकाल परेइ आबार महेन्द्र घरेर मध्ये ढुकिया विनोदिनीके कहिल, "आमाके माप करो।"

विनोदिनी कहिल, "अपराध की करियाछ, ठाकुरपो।"

महेन्द्र कहिल, "तोमाके जोर करिया एखाने धरिया राखिबार अधिकार आमादेर नाइ।"

विनोदिनी हासिया कहिल, "जोर कइ करिले, ताहातो देखिलाम ना। भालोबासिया भालो मुखेइ तो थाकिते बलिले। ताहाके कि जोर बले। बलो तो भाइ, चोखेर बालि, गायेर जोर आर भालोबासा कि एकइ हइल।"

आशा ताहार सङ्गे सम्पूर्ण एकमत हइया कहिल, "कखनोइ ना।"

विनोदिनी कहिल, "ठाकुरपो, तोमार इच्छा आमि थाकि, आमि गेले तोमार कष्ट हइबे, से तो आमार सौभाग्य। की बल भाइ चोखेर बालि, संसारे एमन सुहृद कय जन पाओया जाय। तेमन व्यथार व्यथी, सुखेर सुखी, अदृष्टगुणे यदिइ पाओया याय, तबे आमिइ वा ताहाके छाड़िया याइबार जन्य व्यस्त हइब केन।"

आशा ताहार स्वामीके अपदस्थभावे निरुत्तर थाकिते देखिया ईषत् व्यथितचित्ते कहिल, "तोमार सङ्गे कथाय के पारिबे भाइ। आमार स्वामी तो हार मानियाछेन, एखन तुमि एकटु थामो।"

महेन्द्र आबार द्रुत घर हइते बाहिर हइल। तखन राजलक्ष्मीर सङ्गे किछुक्षण गल्प करिया बिहारी महेन्द्रेर सन्धाने आसितेछिल। महेन्द्र ताहाके द्वारेर सम्मुखे देखिते पाइयाइ बलिया उठिल, "भाइ बिहारी, आमार मतो पाषण्ड आर जगते नाइ।" एमन वेगे कहिल, से कथा घरेर मध्ये गिया पौंछिल।

घरेर मध्य हइते तत्क्षणात् आह्वान आसिल, "बिहारी ठाकुरपो।"

बिहारी कहिल, "एकटु बादे आसछि, विनोद-बोठान।"

विनोदिनी कहिल, "एकबार शुनेइ याओ-ना।"

बिहारी घरे ढुकियाइ मुहूर्तेर मध्ये एकबार आशार दिके चाहिल—घोमटार मध्य हइते आशार मुख यतटुकु देखिते पाइल, सेखाने विषाद वा वेदनार कोनो चिह्नइ तो देखा गेल ना। आशा उठिया याइबार चेष्टा करिल, विनोदिनी ताहाके जोर करिया धरिया राखिल—कहिल, "आच्छा, बिहारी-ठाकुरपो, आमार चोखेर बालिर सङ्गे कि तोमार सतिन-सम्पर्क। तोमाके देखलेइ ओ पालाते चाय केन।"

आशा अत्यन्त लज्जित हइया विनोदिनीके ताड़ना करिल।

बिहारी हासिया उत्तर करिल, "विधाता आमाके तेमन सुदृश्य करिया गड़ेन नाइ बलिया।"

विनोदिनी। देखछिस भाइ बालि, बिहारी-ठाकुरपो बाँचाइया कथा बलिते जानेन—तोर रुचिके दोष ना दिया विधाताकेइ दोष दिलेन। लक्ष्मणटिर मतो एमन सुलक्षण देवर पाइयाओ ताहाके आदर करिते शिखिलि ना—तोरइ कपाल मन्द।

बिहारी। तोमार यदि ताहाते दया हय विनोद-बोठान, तबे आर आमार आक्षेप किसेर।

विनोदिनी। समुद्र तो पड़िया आछे, तबु मेघेर धारा नइले चातकेर तृष्णा मेटे ना केन।

आशाके धरिया राखा गेल ना। से जोर करिया विनोदिनीर हात छाड़ाइया बाहिर हइया गेल। बिहारीओ चलिया याइबार उपक्रम करितेछिल। विनोदिनी कहिल, "ठाकुरपो, महेन्द्रबाबुर की हइयाछे, बलिते पार?"

शुनियाइ बिहारी थमकिया फिरिया दाँड़ाइल। कहिल, "ताहा तो जानि ना। किछु हइयाछे नाकि।"

विनोदिनी। की जानि ठाकुरपो, आमार तो भालो बोध हय ना।

बिहारी उद्विग्न मुखे चौकिर उपर बसिया पड़िल। कथाटा खोलसा शुनिबे बलिया विनोदिनीर मुखेर दिके व्यग्रभावे चाहिया अपेक्षा करिया रहिल। विनोदिनी कोनो कथा ना बलिया मनोयोग दिया चादर सेलाइ करिते लागिल।

किछुक्षण प्रतीक्षा करिया बिहारी कहिल, "महिनदार सम्बन्धे तुमि कि विशेष किछु लक्ष्य करियाछ।"

विनोदिनी अत्यन्त साधारण भावे कहिल, "की जानि ठाकुरपो, आमार तो भालो बोध हय ना। आमार चोखेर बालिर जन्य आमार केवलि भावना हय।" बलिया दीर्घनिश्वास फेलिया सेलाइ राखिया उठिया याइते उद्यत हइल।

बिहारी व्यस्त हइया कहिल, "बोठान, एकटु बसो।" बलिया एकटा चौकिते बसिल।

विनोदिनी घरेर समस्त जानाला-दरजा सम्पूर्ण खुलिया दिया केरोसिनेर बाति उसकाइया सेलाइ टानिया लइया बिछानार दूरप्रान्ते गिया बसिल। कहिल, "ठाकुरपो, आमि तो चिरदिन एखाने थाकिब ना—किन्तु आमि चलिया गेले आमार चोखेर बालिर उपर एकटु दृष्टि राखियो—से येन असुखी ना हय।" बलिया येन हृदयोच्छ्वास संवरण करिया लइबार जन्य विनोदिनी अन्य दिके मुख फिराइल।

बिहारी बलिया उठिल, "बोठान, तोमाके थाकितेइ हइबे। तोमार निजेर बलिते केह नाइ—एइ सरला मेयेटिके सुखे दुःखे रक्षा करिबार भार तुमि लओ—तुमि ताहाके फेलिया गेले आमि तो आर उपाय देखि ना।"

विनोदिनी। ठाकुरपो, तुमि तो संसारेर गतिक जान। एखाने बराबर थाकिब केमन करिया। लोके की बलिबे।

बिहारी। लोके या बले बलुक, तुमि कान दियो ना। तुमि देवी—असहाया बालिकाके संसारेर निष्ठुर आघात हइते रक्षा करा तोमारइ उपयुक्त काज। बोठान, आमि तोमाके प्रथमे चिनि नाइ, सेजन्य आमाके क्षमा करो। आमिओ संकीर्ण-हृदय साधारण इतरलोकदेर मतो मने मने तोमार सम्बन्धे अन्याय धारणा स्थान दियाछिलाम; एकबार एमनओ मन हइयाछिल, येन आशार सुखे तुमि ईर्षा करितेछ—येन—किन्तु से-सब कथा मुखे उच्चारण करितेओ पाप आछे। तार परे, तोमार देवीहृदयेर परिचय आमि पाइयाछि—तोमार उपर आमार गभीर भक्ति जन्मियाछे बलियाइ, आज तोमार काछे आमार समस्त अपराध स्वीकार ना करिया थाकिते पारिलाम ना।

विनोदिनीर सर्वशरीर पुलकित हइया उठिल। यदिओ से छलना करितेछिल, तबु बिहारीर एइ भक्ति-उपहार से मने मनेओ मिथ्या बलिया प्रत्याख्यान करिते पारिल ना। एमन जिनिस से कखनो काहारओ काछ हइते पाय नाइ। क्षणकालेर जन्य मने हइल, से येन यथार्थइ पवित्र उन्नत—आशार प्रति एकटा अनिर्देश्य दयाय ताहार चोख दिया जल पड़िते लागिल। सेइ अश्रुपात से बिहारीर काछे गोपन करिल ना, एवं सेइ अश्रुधारा विनोदिनीर निजेर काछे निजेके पूजनीया बलिया मोह उत्पादन करिल।

बिहारी विनोदिनीके अश्रु फेलिते देखिया निजेर अश्रुवेग संवरण करिया उठिया बाहिरे महेन्द्रेर घरे गेल। महेन्द्र ये हठात् निजेके पाषण्ड बलिया केन घोषणा करिल, बिहारी ताहार कोनो तात्पर्य खुँजिया पाइल ना। घरे गिया देखिल, महेन्द्र नाइ। खबर पाइल, महेन्द्र बेड़ाइते बाहिर हइयाछे। पूर्वे महेन्द्र अकारणे कखनोइ घर छाड़िया बाहिर हइत ना। सुपरिचित लोकेर एवं सुपरिचित घरेर बाहिरे महेन्द्रेर अत्यन्त क्लान्ति ओ पीड़ा बोध हइत। बिहारी भाबिते भाबिते धीरे धीरे बाड़ि चलिया गेल।

विनोदिनी आशाके निजेर शयनघरे आनिया बुकेर काछे टानिया दुइ चक्षु जले भरिया कहिल, "भाइ चोखेर बालि, आमि बड़ो हतभागिनी, आमि बड़ो अलक्षणा।"

आशा व्यथित हइया ताहाके बाहुपाशे वेष्टन करिया स्नेहार्द्रकण्ठे बलिल, "केन भाइ, अमन कथा केन बलितेछ।"

विनोदिनी रोदनोच्छ्वसित शिशुर मतो आशार वक्षे मुख राखिया कहिल, "आमि येखाने थाकिब, सेखाने केवल मन्दइ हइबे। दे भाइ, आमाके छाड़िया दे, आमि आमार जङ्गलेर मध्ये चलिया याइ।"

आशा चिबुके हात दिया विनोदिनीर मुख तुलिया धरिया कहिल, "लक्ष्मीटि भाइ, अमन कथा बलिसने—तोके छाड़िया आमि थाकिते पारिब ना—आमाके छाड़िया याइबार कथा केन आज तोर मने आसिल।"

महेन्द्रेर देखा ना पाइया बिहारी कोनो एकटा छुताय पुनर्वार विनोदिनीर घरे आसिया महेन्द्र ओ आशार मध्यवर्ती आशङ्कार कथाटा आर-एकटु स्पष्ट करिया शुनिबार जन्य उपस्थित हइल।

महेन्द्रके परदिन सकाले ताहादेर बाड़ि खाइते याइते बलिबार जन्य विनोदिनीके अनुरोध करिबार उपलक्ष्य लइया से उपस्थित हइल। "विनोद-बोठान" बलिया डाकियाइ हठात् केरोसिनेर उज्ज्वल आलोके बाहिर हइतेइ आलिङ्गनबद्ध साश्रुनेत्र दुइ सखीके देखियाइ थमकिया दाँड़ाइल। आशार

हठात् मने हइल, निश्चयइ बिहारी ताहार चोखेर बालिके कोनो अन्याय निन्दा करिया किछु बलियाछे, ताइ से आज एमन करिया चलिया याइबार कथा तुलियाछे। बिहारीबाबुर भारि अन्याय। उहार मन भालो नय। आशा विरक्त हइया बाहिर हइया आसिल। बिहारीओ विनोदिनीर प्रति भक्तिर मात्रा चड़ाइया विगलितहृदये द्रुत प्रस्थान करिल।

सेदिन रात्रे महेन्द्र आशाके कहिल, "चुनि, आमि काल सकालेर प्यासेञ्जारेइ काशी चलिया याइब।"

आशार वक्ष:स्थल धक् करिया उठिल—कहिल, "केन।"

महेन्द्र कहिल, "काकीमाके अनेक दिन देखि नाइ।"

शुनिया आशा बड़ोइ लज्जाबोध करिल; ए-कथा पूर्वेइ ताहार मने उदय हओया उचित छिल; निजेर सुखदु:खेर आकर्षणे स्नेहमयी मासिमाके से ये भुलियाछिल, अथच महेन्द्र सेइ प्रवासी-तपस्विनीके मने करियाछे, इहाते निजेके कठिनहृदया बलिया बड़ोइ धिक्कार जन्मिल।

महेन्द्र कहिल, "तिनि आमारइ हाते ताँहार संसारेर एकमात्र स्नेहेर धनके समर्पण करिया दिया चलिया गेछेन—ताँहाके एकबार ना देखिया आमि किछुतेइ सुस्थिर हइते पारितेछि ना।"

बलिते बलिते महेन्द्रेर कण्ठ वाष्परुद्ध हइया आसिल; स्नेहपूर्ण नीरव आशीर्वाद ओ अव्यक्त मङ्गलकामनार सहित बारंबार से आशार ललाट ओ मस्तकेर उपर दक्षिण करतल चालना करिते लागिल। आशा एइ अकस्मात् स्नेहावेगेर सम्पूर्ण मर्म बुझिते पारिल ना, केवल ताहार हृदय विगलित हइया अश्रु पड़िते लागिल। आजइ सन्ध्यावेलाय विनोदिनी ताहाके अकारण स्नेहातिशय्ये ये-सब कथा बलियाछिल, ताहा मने पड़िल। उभयेर मध्ये कोथाओ कोनो योग आछे कि ना, ताहा से किछुइ बुझिल ना। किन्तु मने हइल, येन इहा ताहार जीवने किसेर एकटा सूचना। भालो कि मन्द के जाने।

भयव्याकुलचित्ते से महेन्द्रके बाहुपाशे बद्ध करिल। महेन्द्र ताहार सेइ अकारण आशङ्कार आवेश अनुभव करिते पारिल। कहिल, "चुनि, तोमार उपर तोमार पुण्यवती मासिमार आशीर्वाद आछे, तोमार कोनो भय नाइ, कोनो भय नाइ। तिनि तोमारइ मङ्गलेर जन्य ताँहार समस्त त्याग करिया गेछेन, तोमार कखनो कोनो अकल्याण हइते पारे ना।"

आशा तखन दृढ़चित्ते समस्त भय दूर करिया फेलिल। स्वामीर एइ आशीर्वाद अक्षयकवचेर मतो ग्रहण करिल। से मने मने बारंबार

ताहार मासिमार पवित्र पदधूलि माथाय तुलिया लइते लागिल, एवं एकाग्र-मने कहिल, "मा, तोमार आशीर्वाद आमार स्वामीके सर्वदा रक्षा करुक।"

परदिने महेन्द्र चलिया गेल, विनोदिनीके किछुइ बलिया गेल ना। विनोदिनी मने मने कहिल, "निजे अन्याय करा हइल, आबार आमार उपरे राग! एमन साधु तो देखि नाइ। किन्तु एमन साधुत्व बेशिदिन टेँके ना।"

२३

संसारत्यागिनी अन्नपूर्णा बहुदिन परे हठात् महेन्द्रके आसिते देखिया येमन स्नेहे आनन्दे आप्लुत हइया गेलेन, तेमनि ताँहार हठात् भय हइल, बुझि आशाके लइया मार सङ्गे महेन्द्रेर आबार कोनो विरोध घटियाछे एवं महेन्द्र ताँहार काछे नालिश जानाइया सान्त्वनालाभ करिते आसियाछे। महेन्द्र शिशुकाल हइतेइ सकल प्रकार संकट ओ सन्तापेर समय ताहार काकीर काछे छुटिया आसे। काहारओ उपर राग करिले अन्नपूर्णा ताहार राग थामाइया दियाछेन, दुःखबोध करिले ताहा सहज सह्य करिते उपदेश दियाछेन। किन्तु विवाहेर पर हइते महेन्द्रेर जीवने सर्वापेक्षा ये संकटेर कारण घटियाछे, ताहार प्रतिकारचेष्टा दूरे थाक्, कोनोप्रकार सान्त्वना पर्यन्त तिनि दिते अक्षम। से-सम्बन्धे ये-भावे येमन करियाइ तिनि हस्तक्षेप करिबेन, ताहातेइ महेन्द्रेर सांसारिक विप्लव आरो द्विगुण बाड़िया उठिबे इहाइ यखन निश्चय बुझिलेन, तखनइ तिनि संसार त्याग करिलेन। रुग्ण शिशु यखन जल चाहिया काँदे, एवं जल देओया यखन कविराजेर नितान्त निषेध, तखन पीड़ितचित्ते मा येमन अन्य घरे चलिया यान, अन्नपूर्णा तेमनि करिया निजेके प्रवासे लइया गेछेन। दूर तीर्थवासे थाकिया धर्मकर्मेर नियमित अनुष्ठाने ए-कयदिन संसार अनेकटा भुलियाछिलेन, महेन्द्र आबार कि सेइ सकल विरोधेर कथा तुलिया ताँहार प्रच्छन्न क्षते आघात करिते आसियाछे।

किन्तु महेन्द्र आशाके लइया ताहार मार सम्बन्धे कोनो नालिशेर कथा तुलिल ना। तखन अन्नपूर्णार आशङ्का अन्य पथे गेल। ये-महेन्द्र आशाके छाड़िया कालेजे याइते पारित ना, से आज काकीर खोँज लइते काशी आसे केन। तबे कि आशार प्रति महेन्द्रेर टान क्रमे ढिला हइया आसितेछे। महेन्द्रके तिनि किछु आशङ्कार सहित जिज्ञासा करिलेन, "हाँ रे महिन, आमार माथा खा, ठिक करिया बल् देखि, चुनि केमन आछे।"

महेन्द्र कहिल, "से तो बेश भालो आछे काकीमा।"

"आजकाल से की करे, महिन। तोरा कि एखनो तेमनि छेलेमानुष आछिस, ना काजकर्म घरकन्नाय मन दियाछिस।"

महेन्द्र कहिल, "छेलेमानुषि एकेबारेइ बन्ध। सकल झंझाटेर मूल सेइ चारुपाठखाना ये कोथाय अदृश्य हइयाछे, ताहार आर सन्धान पाइबार जो नाइ। तुमि थाकिले देखिया खुशि हइते—लेखापड़ा शेखाय अवहेला करा स्त्रीलोकेर पक्षे यतदूर कर्त्तव्य, चुनि ताहा एकान्त मने पालन करितेछे।"

"महिन, बिहारी की करितेछे।"

महेन्द्र कहिल, "निजेर काज छाड़ा आर-समस्तइ करितेछे। नायेब-गोमस्ताय ताहार विषयसम्पत्ति देखे; की चक्षे देखे, ताहा ठिक बलिते पारि ना। बिहारीर चिरकाल ओइ दशा। ताहार निजेर काज परे देखे, परेर काज से निजे देखे।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "से कि विवाह करिबे ना, महिन।"

महेन्द्र एकटुखानि हासिया कहिल, "कइ, किछुमात्र उद्योग तो देखि ना।"

शुनिया अन्नपूर्णा हृदयेर गोपन स्थाने एकटा आघात पाइलेन। तिनि निश्चय बुझिते पारियाछिलेन, ताँहार बोनझिके देखिया, एकबार बिहारी आग्रहेर सहित विवाह करिते उद्यत हइयाछिल, ताहार सेइ उन्मुख आग्रह अन्याय करिया अकस्मात दलित हइयाछे। बिहारी बलियाछिल, "काकीमा, आमाके आर विवाह करिते कखनो अनुरोध करियो ना!" सेइ बड़ो अभिमानेर कथा अन्नपूर्णार काने बाजितेछिल। ताँहार एकान्त अनुगत सेइ स्नेहेर बिहारीके तिनि एमन मनभाङा अवस्थाय फेलिया आसियाछिलेन, ताहाके कोनो सान्त्वना दिते पारेन नाइ। अन्नपूर्णा अत्यन्त विमर्ष ओ भीत हइया भाबिते लागिलेन, "एखनो कि आशार प्रति बिहारीर मन पड़िया आछे।"

महेन्द्र कखनो ठाट्टार छले, कखनो गम्भीरभावे, ताहादेर घरकन्नार आधुनिक समस्त खबर-वार्ता जानाइल, केवल विनोदिनीर कथार उल्लेखमात्र करिल ना।

एखन कालेज खोला, काशीते महेन्द्रेर बेशि दिन थाकिबार कथा नय। किन्तु कठिन रोगेर पर स्वास्थ्यकर आवहाओयार मध्ये गिया आरोग्यलाभेर ये सुख, महेन्द्र काशीते अन्नपूर्णार निकटे थाकिया प्रतिदिन सेइ सुख अनुभव करितेछिल—ताइ एके एके दिन काटिया याइते लागिल। निजेर सङ्गे निजेर ये एकटा विरोध जन्मिबार उपक्रम हइयाछिल, सेटा देखिते देखिते दूर हइया गेल। कयदिन सर्वदा धर्मपरायणा अन्नपूर्णार स्नेहमुखच्छबिर

6

सम्मुखे थाकिया, संसारेर कर्तव्यपालन एमनि सहज ओ सुखकर मने हइते लागिल ये, ताहार पूर्वेकार आतङ्क हास्यकर बोध हइल। मने हइल, विनोदिनी किछुइ ना। एमन कि, ताहार मुखेर चेहाराइ महेन्द्र स्पष्ट करिया मने आनिते पारे ना। अवशेषे महेन्द्र खुब जोर करियाइ मने मने कहिल, "आशाके आमार हृदय हइते एक चुल सराइया बसिते पारे, एमन तो आमि कोथाओ काहाकेओ देखिते पाइ ना।"

महेन्द्र अन्नपूर्णाके कहिल, "काकीमा, आमार कालेज कामाइ याइतेछे—एबारकार मतो तबे आसि। यदिओ तुमि संसारेर माया काटाइया एकान्ते आसिया आछ—तबु अनुमति करो माझे माझे आसिया तोमार पायेर धुला लइया याइब।"

महेन्द्र गृहे फिरिया आसिया यखन आशाके ताहार मासिर स्नेहोपहार सिंदुरेर कौटा ओ एकटि सादा पाथरेर चुमकि घटि दिल, तखन ताहार चोख दिया झरझर करिया जल पड़िते लागिल। मासिमार सेइ परम-स्नेहमय धैर्य ओ मासिमार प्रति ताहादेर ओ ताहार शाशुड़ीर नानाप्रकार उपद्रव स्मरण करिया ताहार हृदय व्याकुल हइया उठिल। स्वामीके जानाइल, "आमार बड़ो इच्छा करे, आमि एक बार मासिमार काछे गिया ताँहार क्षमा ओ पायेर धुला लइया आसि। से कि कोनोमतेइ घटिते पारे ना।"

महेन्द्र आशार वेदना बुझिल, एवं किछु दिनेर जन्य काशीते से ताहार मासिमार काछे जाय, इहाते ताहार सम्मतिओ हइल। किन्तु पुनर्वार कालेज कामाइ करिया आशाके काशी पौंछाइया दिते ताहार द्विधा बोध हइते लागिल।

आशा कहिल, "जेठाइमा तो अल्पदिनेर मध्येइ काशी याइबेन, सेइ सङ्गे गेले कि क्षति आछे।"

महेन्द्र राजलक्ष्मीके गिया कहिल, "मा, बउ एकबार काशीते काकीमाके देखिते याइते चाय।"

राजलक्ष्मी श्लेषवाक्ये कहिलेन, "बउ याइते चान तो अवश्यइ याइबेन, याओ, ताँहाके लइया याओ।"

महेन्द्र ये आबार अन्नपूर्णार काछे यातायात आरम्भ करिल, इहा राज-लक्ष्मीर भालो लागे नाइ। बधूर याइबार प्रस्तावे तिनि मने मने आरो विरक्त हइया उठिलेन।

महेन्द्र कहिल, "आमार कालेज आछे, आमि राखिते याइते पारिब ना। ताहार जेठामशायेर सङ्गे याइबे।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "से तो भालो कथा। जेठामशायरा बड़ोलोक, कखनो आमादेर मतो गरिबेर छाया माड़ान ना, ताँहादेर सङ्गे याइते पारिले कत गौरव।"

मातार उत्तरोत्तर श्लेषवाक्ये महेन्द्रेर मन एकेबारे कठिन हइया बाँकिल। से कोनो उत्तर ना दिया आशाके काशी पाठाइते दृढ़प्रतिज्ञ हइया चलिया गेल।

बिहारी यखन राजलक्ष्मीर सङ्गे देखा करिते आसिल, राजलक्ष्मी कहिलेन, "ओ बिहारी, शुनियाछिस, आमादेर बउमा ये काशी याइते इच्छा करियाछेन।"

बिहारी कहिल, "बल की मा, महिनदा आबार कालेज कामाइ करिया काशी याइबे?"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "ना ना, महिन केन याइबेन। ता हइले आर बिबियाना हइल कइ। महिन एखाने थाकिबेन, बउ ताँहार जेठामहाराजेर सङ्गे काशी याइबेन। सबाइ साहेब-बिबि हइया उठिल।"

बिहारी मने मने उद्विग्न हइल, वर्तमान कालेर साहेबियाना स्मरण करिया नहे। बिहारी भाबिते लागिल, "व्यापारखाना की। महेन्द्र यखन काशी गेल आशा एखाने रहिल ; आबार महेन्द्र यखन फिरिल तखन आशा काशी याइते चाहितेछे। दु-जनेर माझखाने एकटा की गुरुतर व्यापार घटियाछे। एमन करिया कतदिन चलिबे? बन्धु हइयाओ आमरा इहार कोनो प्रतिकार करिते पारिब ना—दूरे दाँड़ाइया थाकिब?"

मातार व्यवहारे अत्यन्त क्षुब्ध हइया महेन्द्र ताहार शयनघरे आसिया बसियाछिल। विनोदिनी इतिमध्ये महेन्द्रेर सङ्गे साक्षात् करे नाइ—ताइ आशा ताहाके पाशेर घर हइते महेन्द्रेर काछे लइया आसिबार जन्य अनुरोध करितेछिल।

एमन समय बिहारी आसिया महेन्द्रके जिज्ञासा करिल, "आशा-बोठानेर कि काशी याओया स्थिर हइयाछे।"

महेन्द्र कहिल, "ना हइबे केन। बाधाटा की आछे।"

बिहारी कहिल, "बाधार कथा के बलितेछे। किन्तु हठात् ए खेयाल तोमादेर माथाय आसिल ये?"

महेन्द्र कहिल, "मासिके देखिबार इच्छा—प्रवासी आत्मीयेर जन्य व्याकुलता, मानवचरित्रे एमन माझे माझे घटिया थाके।"

बिहारी जिज्ञासा करिल, "तुमि सङ्गे याइतेछ?"

प्रश्न शुनियाइ महेन्द्र भाबिल, "जेठार सङ्गे आशाके पाठानो संगत नहे, एइ कथा लइया आलोचना करिते बिहारी आसियाछे।" पाछे अधिक कथा बलिते गेले क्रोध उच्छ्वसित हइया उठे, ताइ संक्षेपे बलिल, "ना।"

बिहारी महेन्द्रके चिनित। से ये रागियाछे, ताहा बिहारीर अगोचर छिल ना। एकबार जिद धरिले ताहाके टलानो याय ना, ताहाओ से जानित। ताइ महेन्द्रेर याओयार कथा आर तुलिल ना। मने मने भाबिल, "बेचारा आशा यदि कोनो वेदना वहन करियाइ चलिया याइतेछे हय, तबे सङ्गे विनोदिनी गेले ताहार सान्त्वना हइबे।" ताइ धीरे धीरे कहिल, "विनोद-बोठान ताँर सङ्गे गेले हय ना?"

महेन्द्र गर्जन करिया उठिल, "बिहारी, तोमार मनेर भितर ये-कथाटा आछे, ताहा स्पष्ट करिया बलो। आमार सङ्गे असरलता करिबार कोनो दरकार देखि ना। आमि जानि, तुमि मने मने सन्देह करियाछ, आमि विनोदिनीके भालोबासि। मिथ्या कथा। आमि बासि ना। आमाके रक्षा करिबार जन्य तोमाके पाहारा दिया बेड़ाइते हइबे ना। तुमि एखन निजेके रक्षा करो। यदि सरल बन्धुत्व तोमार मने थाकित, तबे बहुदिन आगे तुमि आमार काछे तोमार मनेर कथा बलिते एवं निजेके बन्धुर अन्तःपुर हइते बहु दूरे लइया याइते। आमि तोमार मुखेर सामने स्पष्ट करिया बलितेछि, तुमि आशाके भालोबासियाछ।"

अत्यन्त वेदनार स्थाने दुइ पा दिया माड़ाइया दिले, आहत व्यक्ति मुहूर्तकाल विचार ना करिया आघातकारीके येमन सबले धाक्का दिया फेलिते चेष्टा करे—रुद्धकण्ठ बिहारी तेमनि पांशुमुखे ताहार चौकि हइते उठिया महेन्द्रेर दिके धावित हइल—हठात् थामिया बहुकष्टे स्वर बाहिर करिया कहिल, "ईश्वर तोमाके क्षमा करुन, आमि विदाय हइ।" बलिया टलिते टलिते घर हइते बाहिर हइया गेल।

पाशेर घर हइते विनोदिनी छुटिया आसिया डाकिल, "बिहारी-ठाकुरपो।"

बिहारी देयाले भर करिया एकटुखानि हासिबार चेष्टा करिया कहिल, "की, विनोद-बोठान।"

विनोदिनी कहिल, "ठाकुरपो, चोखेर बालिर सङ्गे आमिओ काशीते याइब।"

बिहारी कहिल, "ना ना, बोठान, से हइबे ना, से किछुतेइ हइबे ना। तोमाके मिनति करितेछि—आमार कथाय किछुइ करियो ना। आमि एखानकार केह नइ, आमि एखानकार किछुतेइ हस्तक्षेप करिते चाहि ना,

ताहाते भालो हइबे ना। तुमि देवी, तुमि याहा भालो बोध कर, ताहाइ करियो। आमि चलिलाम।"

बलिया बिहारी विनोदिनीके विनम्र नमस्कार करिया चलिल। विनोदिनी कहिल, "आमि देवी नइ ठाकुरपो, शुनिया याओ। तुमि चलिया गेले काहारओ भालो हइबे ना। इहार परे आमाके दोष दियो ना।"

बिहारी चलिया गेल। महेन्द्र स्तम्भित हइया बसिया छिल। विनोदिनी ताहार प्रति ज्वलन्त वज्रेर मतो एकटा कठोर कटाक्ष निक्षेप करिया पाशेर घरे चलिया गेल। से-घरे आशा एकान्त लज्जाय संकोचे मरिया याइतेछिल। बिहारी ताहाके भालोबासे, ए-कथा महेन्द्रेर मुखे शुनिया से आर मुख तुलिते पारितेछिल ना। किन्तु ताहार उपर विनोदिनीर आर दया हइल ना। आशा यदि तखन चोख तुलिया चाहित, ताहा हइले से भय पाइत। समस्त संसारेर उपर विनोदिनीर येन खुन चापिया गेछे। मिथ्या कथा बटे! विनोदिनीके केहइ भालोबासे ना बटे! सकलेइ भालोबासे एइ लज्जावती ननिर पुतुलटिके।

महेन्द्र सेइ ये आवेगेर मुखे बिहारीके बलियाछिल, "आमि पाषण्ड"—ताहार पर आवेग-शान्तिर पर हइते सेइ हठात् आत्मप्रकाशेर जन्य से बिहारीर काछे कुण्ठित हइया छिल। से मने करितेछिल, ताहार सब कथाइ येन व्यक्त हइया गेछे। से विनोदिनीके भालोबासे ना, अथच बिहारी जानियाछे ये से भालोबासे,—इहाते बिहारीर उपरे ताहार बड़ो एकटा विरक्ति जन्मितेछिल। विशेषत, ताहार पर हइते यतबार बिहारी ताहार सम्मुखे आसितेछिल ताहार मने हइतेछिल, येन बिहारी सकौतूहले ताहार एकटा भितरकार कथा खुंजिया बेड़ाइतेछे। सेइ-समस्त विरक्ति उत्तरोत्तर जमितेछिल—आज एकटु आघातेइ बाहिर हइया पड़िल।

किन्तु विनोदिनी पाशेर घर हइते येरूप व्याकुलभावे छुटिया आसिल, येरूप आर्तकण्ठे बिहारीके राखिते चेष्टा करिल एवं बिहारीर आदेशपालन-स्वरूपे आशार सहित काशी याइते प्रस्तुत हइल, इहा महेन्द्रेर पक्षे अभावित-पूर्व। एइ दृश्यटि महेन्द्रके प्रबल आघाते अभिभूत करिया दिल। से बलियाछिल, से विनोदिनीके भालोबासे ना; किन्तु याहा शुनिल, याहा देखिल, ताहा ताहाके सुस्थिर हइते दिल ना, ताहाके चारिदिक हइते विचित्र आकारे पीड़न करिते लागिल। आर केवलइ निष्फल परितापेर सहित मने हइते लागिल, "विनोदिनी शुनियाछे—आमि बलियाछि, 'आमि ताहाके भालोबासि ना'।"

महेन्द्र भाबिते लागिल, "आमि बलियाछि, 'मिथ्या कथा, आमि विनोदिनीके भालोबासि ना।' अत्यन्त कठिन करिया बलियाछि। आमि ये ताहाके भालोबासि ताहा ना-इ हइल, किन्तु भालोबासि ना, ए कथाटा बड़ो कठोर। ए-कथाय आघात ना पाय, एमन स्त्रीलोक के आछे। इहार प्रतिवाद करिबार अवसर कबे कोथाय पाइब। भालोबासि ए-कथा ठिक बला याय ना; किन्तु भालोबासि ना, एइ कथाटाके एकटु फिका करिया, नरम करिया जानानो दरकार। विनोदिनीर मने एमन एकटा निष्ठुर अथच भुल संस्कार थाकिते देओया अन्याय।"

एइ बलिया महेन्द्र ताहार बाक्सर मध्य हइते आर-एकबार ताहार चिठि तिनखानि पड़िल। मने मने कहिल, "विनोदिनी आमाके ये भालोबासे, इहाते सन्देह नाइ। किन्तु काल से बिहारीर काछे अमन करिया आसिया पड़िल केन। से केवल आमाके देखाइया। आमि यखन ताहाके भालोबासि ना स्पष्ट करिया बलिलाम, तखन से कोनो सुयोगे आमार काछे ताहार भालोबासा प्रत्याख्यान ना करिया की करिबे। एमनि करिया आमार काछे अवमानित हइया हयतो से बिहारीके भालोबासितेओ पारे।"

महेन्द्रेर क्षोभ एतइ बाड़िया उठिते लागिल ये, निजेर चाञ्चल्ये से निजे आश्चर्य एवं भीत हइया उठिल। ना-हय विनोदिनी शुनियाछे, महेन्द्र ताहाके भालोबासे ना—ताहाते दोष की। ना-हय एइ कथाय अभिमानिनी विनोदिनी ताहार उपर हइते मन सराइया लइते चेष्टा करिबे—ताहातेइ वा क्षति की। झड़ेर समय नौकार शिकल येमन नोङरके टानिया धरे, महेन्द्र तेमनि व्याकुलतार सङ्गे आशाके येन अतिरिक्त जोर करिया धरिल।

रात्रे महेन्द्र आशार मुख वक्षेर काछे धरिया जिज्ञासा करिल, "चुनि, तुमि आमाके कतखानि भालोबास ठिक करिया बलो।"

आशा भाबिल, "ए केमन प्रश्न। बिहारीके लइया अत्यन्त लज्जाजनक ये-कथाटा उठियाछे, ताहातेइ कि ताहार उपरे संशयेर छाया पड़ियाछे।" से लज्जाय मरिया गिया कहिल, "छि छि, आज तुमि एमन प्रश्न केन करिले। तोमार दुटि पाये पड़ि, आमाके खुलिया बलो—आमार भालोबासाय तुमि कबे कोथाय की अभाव देखियाछ।"

महेन्द्र आशाके पीड़न करिया ताहार माधुर्य बाहिर करिबार जन्य कहिल, "तबे तुमि काशी याइते चाहितेछ केन।"

आशा कहिल, "आमि काशी याइते चाइ ना, आमि कोथाओ याइब ना।"

महेन्द्र। तखन तो चाहियाछिले।

आशा अत्यन्त पीड़ित हइया कहिल, "तुमि तो जान, केन चाहियाछिलाम।"

महेन्द्र। आमाके छाड़िया तोमार मासिर काछे बोध हय बेश सुखे थाकिते।

आशा कहिल, "कखनो ना। आमि सुखेर जन्य याइते चाहि नाइ।"

महेन्द्र कहिल, "आमि सत्य बलितेछि चुनि, तुमि आर काहाकेओ विवाह करिले ढेर बेशि सुखी हइते पारिते।"

शुनिया आशा चकितेर मध्ये महेन्द्रेर वक्ष हइते सरिया गिया, बालिशे मुख ढाकिया, काठेर मतो आड़ष्ट हइया रहिल—मुहूर्तपरेइ ताहार कान्ना आर चापा रहिल ना। महेन्द्र ताहाके सान्त्वना दिवार जन्य वक्षे तुलिया लइबार चेष्टा करिल, आशा बालिश छाड़िल ना। पतिव्रतार एइ अभिमाने महेन्द्र सुखे गर्वे धिक्कारे क्षुब्ध हइते लागिल।

ये-सब कथा भितरे-भितरे आभासे छिल, सेइगुला हठात् स्पष्ट कथाय परिस्फुट हइया सकलेरइ मने एकटा गोलमाल बाधाइया दिल। विनोदिनी मने मने भाबिते लागिल—अमन स्पष्ट अभियोगेर विरुद्धे बिहारी केन कोनो प्रतिवाद करिल ना। यदि से मिथ्या प्रतिवादओ करित, ताहा हइलेओ येन विनोदिनी एकटु खुशी हइत। बेश हइयाछे, महेन्द्र बिहारीके ये-आघात करियाछे, ताहा ताहार प्राप्यइ छिल। बिहारीर मतो अमन महत् लोक केन आशाके भालोबासिबे। एइ आघाते बिहारीके ये दूरे लइया गेछे, से येन भालोइ हइयाछे—विनोदिनी येन निश्चिन्त हइल।

किन्तु बिहारीर सेइ मृत्युबाणाहत रक्तहीन पांशु मुख विनोदिनीके सकल कर्मेर मध्ये येन अनुसरण करिया फिरिल। विनोदिनीर अन्तरे ये सेवा-परायणा नारी-प्रकृति छिल, से सेइ आर्त मुख देखिया काँदिते लागिल। रुग्ण शिशुके येमन माता बुकेर काछे दोलाइया बेड़ाय, तेमनि सेइ आतुर मूर्तिके विनोदिनी आपन हृदयेर मध्ये राखिया दोलाइते लागिल; ताहाके सुस्थ करिया सेइ मुखे आबार रक्तेर रेखा, प्राणेर प्रवाह, हास्येर विकाश देखिबार जन्य विनोदिनीर एकटा अधीर औत्सुक्य जन्मिल।

दुइ-तिन दिन सकल कर्मेर मध्ये एइरूप उन्मना हइया फिरिया विनोदिनी आर थाकिते पारिल ना। विनोदिनी एकखानि सान्त्वनार पत्र लिखिल, कहिल—

'ठाकुरपो, आमि तोमार सेदिनकार सेइ शुष्क मुख देखिया अवधि प्राणमने कामना करितेछि, तुमि सुस्थ हओ, तुमि येमन छिले तेमनिटि हओ—सेइ सहज हासि आबार कबे देखिब, सेइ उदार कथा आबार कबे शुनिब। तुमि केमन आछ, आमाके एकटि छत्र लिखिया जानाओ।

तोमार विनोद-बोठान।'

विनोदिनी दरोयानेर हात दिया बिहारीर ठिकानाय चिठि पाठाइया दिल।

आशाके बिहारी भालोबासे, ए-कथा ये एमन रूढ़ करिया, एमन गर्हित-भावे महेन्द्र मुखे उच्चारण करिते पारिबे, ताहा बिहारी स्वप्नेओ कल्पना करे नाइ। कारण, से निजेओ एमन कथा स्पष्ट करिया कखनो मने स्थान देय नाइ। प्रथमटा वज्राहत हइल—तार परे क्रोधे घृणाय छटफट करिया बलिते लागिल, "अन्याय, असंगत, अमूलक।"

किन्तु कथाटा यखन एकबार उच्चारित हइयाछे, तखन ताहाके आर सम्पूर्ण मारिया फेला याय ना। ताहार मध्ये येटुकु सत्येर बीज छिल, ताहा देखिते देखिते अंकुरित हइया उठिते लागिल। कन्या देखिबार उपलक्षे सेइ ये एकदिन सूर्यास्तकाले बागानेर उच्छ्वासित पुष्पगन्धप्रवाहे लज्जिता बालिकार सुकुमार मुखखानिके से नितान्तइ आपनार मने करिया विगलित अनुरागेर सहित एकबार चाहिया देखियाछिल, ताहाइ बार बार मने पड़िते लागिल, एवं बुकेर काछे की येन चापिया धरिते लागिल, एवं एकटा अत्यन्त कठिन बेदना कण्ठेर काछ पर्यन्त आलोड़ित हइया उठिल। दीर्घरात्रि छादेर उपर शुइया शुइया बाड़िर सम्मुखेर पथे द्रुतपदे पायचारि करिते करिते, याहा एतदिन अव्यक्त छिल ताहा बिहारीर मने व्यक्त हइया उठिल। याहा संयत छिल ताहा उद्दाम हइल; निजेर काछेओ याहार कोनो प्रमाण छिल ना, महेन्द्रेर वाक्ये ताहा विराट प्राण पाइया बिहारीर अन्तर-बाहिर व्याप्त करिया दिल।

तखन से निजेके अपराधी बलिया बुझिल। मने मने कहिल, "आमार तो आर राग करा शोभा पाय ना, महेन्द्रेर काछे तो क्षमा प्रार्थना करिया विदाय लइते हइबे। सेदिन एमनभावे चलिया आसियाछिलाम, येन महेन्द्र दोषी, आमि विचारक—से-अन्याय स्वीकार करिया आसिब।"

बिहारी जानित, आशा काशी चलिया गेछे। एक दिन से सन्ध्यार समय धीरे धीरे महेन्द्रेर द्वारेर सम्मुखे आसिया उपस्थित हइल। राजलक्ष्मीर दूरसम्पर्केर मामा साधुचरणके देखिया जिज्ञासा करिल, "साधुदा, क-दिन

आसिते पारि नाइ—एखानकार सब खबर भालो?" साधुचरण सकलेर कुशल जानाइल। बिहारी जिज्ञासा करिल, "बोठान काशीते कबे गेलेन;" साधुचरण कहिल, "तिनि यान नाइ। ताँहार काशी याओया हइबे ना।" शुनिया, किछु ना मानिया अन्तःपुरे याइबार जन्य बिहारीर मन छुटिल। पूर्वे येमन सहजे येमन आनन्दे आत्मीयेर मतो से परिचित सिँड़ि बाहिया भितरे याइत, सकलेर सङ्गे स्निग्ध कौतुकेर सहित हास्यालाप करिया आसित, किछुइ मने हइत ना, आज ताहा अविहित, ताहा दुर्लभ, जानियाइ ताहार चित्त येन उन्मत्त हइल। आर-एकटिबार, केवल शेषबार, तेमनि करिया भितरे गिया घरेर छेलेर मतो राजलक्ष्मीर सहित कथा सारिया, एकबार घोमटावृत आशाके बोठान बलिया दुटो तुच्छ कथा कहिया आसा ताहार काछे परम आकाङ्क्षार विषय हइया उठिल। साधुचरण कहिल, "भाइ, अन्धकारे दाँड़ाइया रहिले ये, भितरे चलो।"

शुनिया बिहारी द्रुतवेगे भितरेर दिके कयेक पद अग्रसर हइयाइ फिरिया साधुके कहिल, "याइ एकटा काज आछे।" बलिया ताड़ाताड़ि प्रस्थान करिल। सेइ रात्रेइ बिहारी पश्चिमे चलिया गेल।

दरोयान विनोदिनीर चिठि लइया बिहारीके ना पाइया चिठि फिराइया लइया आसिल। महेन्द्र तखन देउड़िर सम्मुखे छोटो बागानटिते बेड़ाइतेछिल। जिज्ञासा करिल, "ए काहार चिठि।" दरोयान समस्त बलिल। महेन्द्र चिठिखानि निजे लइल।

एकबार से भाबिल, चिठिखाना लइया विनोदिनीर हाते दिबे—अपराधिनी विनोदिनीर लज्जित मुख एकबार से देखिया आसिबे—कोनो कथा बलिबे ना। एइ चिठिर मध्ये विनोदिनीर लज्जार कारण ये आछेइ, महेन्द्रेर मने ताहाते कोनो सन्देह छिल ना। मने पड़िल, पूर्वेओ आर-एकदिन बिहारीर नामे एमनि एकखाना चिठि गियाछिल। चिठिते की लेखा आछे, ए-कथा ना जानिया महेन्द्र किछुतेइ स्थिर थाकिते पारिल ना। से मनके बुझाइल—विनोदिनी ताहार अभिभावकताय आछे, विनोदिनीर भालोमन्देर जन्य से दायी। अतएव एरूप सन्देहजनक पत्र खुलिया देखाइ ताहार कर्तव्य। विनोदिनीके विपथे याइते देओया कोनोमतेइ हइते पारे ना।

महेन्द्र छोटो चिठिखाना खुलिया पड़िल। ताहा सरल भाषाय लेखा, सेइजन्य अकृत्रिम उद्वेग ताहार मध्ये हइते परिष्कार प्रकाश पाइयाछे। चिठिखाना पुनःपुन पाठ करिया एवं अनेक चिन्ता करिया महेन्द्र भाबिया उठिते पारिल ना, विनोदिनीर मनेर गति कोन् दिके। ताहार केवलइ आशङ्का

हइते लागिल, "आमि ये ताहाके भालोबासि ना बलिया अपमान करियाछि, सेइ अभिमानेइ विनोदिनी अन्य दिके मन दिबार चेष्टा करितेछे। राग करिया आमार आशा से एकेबारेइ छाड़िया दियाछे।"

एइ कथा मने करिया महेन्द्रेर धैर्यरक्षा करा एकेबारे असम्भव हइया उठिल। ये-विनोदिनी ताहार निकट आत्मसमर्पण करिते आसियाछिल, से ये मुहूर्तकालेर मूढ़ताय सम्पूर्ण ताहार अधिकारच्युत हइया याइबे, सेइ सम्भावनाय महेन्द्रके स्थिर थाकिते दिल ना। महेन्द्र भाविल, "विनोदिनी आमाके यदि मने मने भालोबासे, ताहा विनोदिनीर पक्षे मङ्गलकर—एक जायगाय से बद्ध हइया थाकिबे। आमि निजेर मन जानि, आमि तो ताहार प्रति कखनोइ अन्याय करिब ना। से आमाके निरापदे भालोबासिते पारे। आमि आशाके भालोबासि, आमार द्वारा ताहार कोनो भय नाइ। किन्तु से यदि अन्य कोनो दिके मन देय तबे ताहार की सर्वनाश हइते पारे के जाने।" महेन्द्र स्थिर करिल, निजेके धरा ना दिया विनोदिनीर मन कोनो अवकाशे आर-एकबार फिराइतेइ हइबे।

महेन्द्र अन्तःपुरे प्रवेश करितेइ देखिल, विनोदिनी पथेर मध्येइ येन काहार जन्य उत्कण्ठित हइया प्रतीक्षा करितेछे। अमनि महेन्द्रेर मने चकितेर मध्ये विद्वेष ज्वलिया उठिल। कहिल, "ओगो, मिथ्या दाँड़ाइया आछ, देखा पाइबे ना। एइ तोमार चिठि फिरिया आसियाछे।" बलिया चिठि-खाना फेलिया दिल।

विनोदिनी कहिल, "खोला ये ?"

महेन्द्र ताहार जवाब ना दियाइ चलिया गेल। बिहारी चिठि खुलिया पड़िया कोनो उत्तर ना दिया चिठि फेरत पाठाइयाछे मने करिया विनोदिनीर सर्वाङ्गेर समस्त शिरा दब दब करिते लागिल। ये दरोयान चिठि लइया गियाछिल, ताहाके डाकिया पाठाइल; से अन्य काजे अनुपस्थित छिल, ताहाके पाओया गेल ना। प्रदीपेर मुख हइते येमन ज्वलन्त तैलविन्दु क्षरिया पड़े, रुद्ध शयनकक्षेर मध्ये विनोदिनीर दीप्त नेत्र हइते तेमनि हृदयेर ज्वाला अश्रुजले गड़िया पड़िते लागिल। निजेर चिठिखाना छिँड़िया छिँड़िया कुटिकुटि करिया किछुतेइ ताहार सान्त्वना हइल ना—सेइ दुइ-चारि लाइन कालिर दागके अतीत हइते वर्तमान हइते एकेबारेइ मुछिया फेलिबार, एके-बारेइ 'ना' करिया दिबार कोनो उपाय नाइ केन। क्रुद्धा मधुकरी याहाके सम्मुखे पाय ताहाकेइ दंशन करे, क्षुब्धा विनोदिनी तेमनि ताहार चारिदिकेर समस्त संसारटाके ज्वालाइबार जन्य प्रस्तुत हइल। से याहा चाय ताहातेइ

बाधा ? कोनो किछुतेइ कि से कृतकार्य हइते पारिबे ना। सुख यदि ना पाइल, तबे याहारा ताहार सकल सुखेर अन्तराय, याहारा ताहाके कृतार्थता हइते भ्रष्ट, समस्त सम्भवपर सम्पद हइते वञ्चित करियाछे, ताहादिगके परास्त धूलिलुण्ठित करिलेइ ताहार व्यर्थ जीवनेर कर्म समाधा हइबे।

२५

सेदिन नूतन फाल्गुने प्रथम बसन्तेर हाओया दितेइ आशा अनेक दिन परे सन्ध्यार आरम्भे छादे मादुर पातिया बसियाछे। एकखानि मासिक कागज लइया खण्डश प्रकाशित एकटा गल्प खुब मनोयोग दिया सेइ अल्प आलोके पड़ितेछिल। गल्पेर नायक तखन संवत्सर परे पूजार छुटिते बाड़ि आसिबार समय डाकातेर हाते पड़ियाछे, आशार हृदय उद्वेगे काँपितेछिल ; एदिके हतभागिनी नायिका ठिक सेइ समयेइ विपदेर स्वप्न देखिया काँदिया जागिया उठियाछे। आशा चोखेर जल आर राखिते पारे ना। आशा बांला गल्पेर अत्यन्त उदार समालोचक छिल। याहा पड़ित, ताहाइ मने हइत चमत्कार। विनोदिनीके डाकिया बलित, "भाइ चोखेर बालि, माथा खाओ, ए-गल्पटा पड़िया देखो। एमन सुन्दर। पड़िया आर काँदिया बाँचि ना।" विनोदिनी भालोमन्द विचार करिया आशार उच्छ्वसित उत्साहे बड़ो आघात करित।

आजिकार एइ गल्पटा आशा महेन्द्रके पड़ाइबे बलिया स्थिर करिया यखन सजलचक्षे कागजखाना बन्ध करिल, एमन समय महेन्द्र आसिया उपस्थित हइल। महेन्द्रेर मुख देखियाइ आशा उत्कण्ठित हइया उठिल। महेन्द्र जोर करिया प्रफुल्लता आनिबार चेष्टा करिया कहिल, "एकला छादेर उपर कोन् भाग्यवानेर भावनाय आछ।"

आशा नायक-नायिकार कथा एकबारे भुलिया गिया कहिल, "तोमार की शरीर आज भालो नाइ।"

महेन्द्र। शरीर बेश आछे।

आशा। तबे तुमि मने मने की एकटा भाबितेछ, आमाके खुलिया बलो।

महेन्द्र आशार बाटा हइते एकटा पान तुलिया लइया मुखे दिया कहिल, "आमि भावितेछिलाम, तोमार मासिमा बेचारा कत दिन तोमाके देखेन नाइ। एकबार हठात् यदि तुमि ताँहार काछे गिया पड़िते पार, तबे तिनि कत खुशिइ हन।"

आशा कोनो उत्तर ना करिया महेन्द्रेर मुखेर दिके चाहिया रहिल। हठात् ए-कथा आबार नूतन करिया केन महेन्द्रेर मने उदय हइल, ताहा से बुझिते पारिल ना।

आशाके चुप करिया थाकिते देखिया महेन्द्र कहिल, "तोमार याइते इच्छा करे ना?"

ए-कथार उत्तर देओया कठिन। मासिके देखिबार जन्य याइते इच्छा करे, आबार महेन्द्रके छाड़िया याइते इच्छाओ करे ना। आशा कहिल, "कालेजेर छुटि पाइले तुमि यखन याइते पारिबे, आमिओ सङ्गे याइब।"

महेन्द्र। छुटि पाइलेओ याइबार जो नाइ; परीक्षार जन्य प्रस्तुत हइते हइबे।

आशा। तबे थाक्, एखन ना-इ गेलाम।

महेन्द्र। थाक् केन। याइते चाहियाछिले, याओ-ना।

आशा। ना, आमार याइबार इच्छा नाइ।

महेन्द्र। एइ सेदिन एत इच्छा छिल, हठात् इच्छा चलिया गेल?

आशा एइ कथाय चुप करिया चोख निचु करिया बसिया रहिल। विनोदिनीर सङ्गे सन्धि करिबार जन्य बाधाहीन अवसर चाहिया महेन्द्रेर मन भितरे-भितरे अत्यन्त अधीर हइया उठियाछिल। आशाके चुप करिया थाकिते देखिया ताहार एकटा अकारण रागेर सञ्चार हइल। "आमार उपर मने मने तोमार कोनो सन्देह जन्मियाछे नाकि। ताइ आमाके चोखे चोखे पाहारा दिया राखिते चाओ?"

आशार स्वाभाविक मृदुता नम्रता धैर्य महेन्द्रेर काछे हठात् अत्यन्त असह्य हइया उठिल। मने मने कहिल, "मासिर काछे याइते इच्छा आछे, बलो ये, आमि याइबइ, आमाके येमन करिया होक पाठाइया दाओ—ता नय, कखनो हाँ, कखनो ना, कखनो चुपचाप—ए की रकम।"

हठात् महेन्द्रेर एइ उग्रता देखिया आशा विस्मित भीत हइया उठिल। से अनेक चेष्टा करिया कोनो उत्तरइ भाबिया पाइल ना। महेन्द्र केन ये कखनो हठात् एत आदर करे, कखनो हठात् एमन निष्ठुर हइया उठे, ताहा से किछुइ बुझिते पारे ना। एइरूपे महेन्द्र यतइ ताहार काछे दुर्बोध्य हइया उठितेछे, ततइ आशार कम्पान्वित चित्त भये ओ भालोबासाय ताहाके येन अत्यन्त अधिक करिया वेष्टन करिया धरितेछे।

महेन्द्रके आशा मने मने सन्देह करिया चोखे चोखे पाहारा दिते चाय! इहा कि कठिन उपहास, ना निर्दय सन्देह? शपथ करिया कि इहार प्रतिवाद आवश्यक, ना हास्य करिया इहा उड़ाइया दिबार कथा?

हतबुद्धि आशाके पुनश्च चुप करिया थाकिते देखिया अधीर महेन्द्र द्रुतवेगे सेखान हइते उठिया चलिया गेल। तखन कोथाय रहिल मासिक पत्रेर सेइ गल्पेर नायक, कोथाय रहिल गल्पेर नायिका। सूर्यास्तेर आभा अन्धकारे मिशाइया गेल, सन्ध्यारम्भेर क्षणिक वसन्तेर वातास गिया शीतेर हाओया दिते लागिल—तखनो आशा सेइ मादुरेर उपर लुण्ठित हइया पड़िया रहिल।

अनेक रात्रे आशा शयनघरे गिया देखिल, महेन्द्र ताहाके ना डाकियाइ शुइया पड़ियाछे। तखनइ आशार मने हइल, स्नेहमयी मासिर प्रति ताहार उदासीनता कल्पना करिया महेन्द्र ताहाके मने मने घृणा करितेछे। बिछानार मध्ये ढुकियाइ आशा महेन्द्रेर दुइ पा जड़ाइया ताहार पायेर उपर मुख राखिया पड़िया रहिल। तखन महेन्द्र करुणाय विचलित हइया ताहाके टानिया लइबार चेष्टा करिल। आशा किछुतेइ उठिल ना। से कहिल, "आमि यदि कोनो दोष करिया थाकि, आमाके माप करो।"

महेन्द्र आर्द्रचित्ते कहिल, "तोमार कोनो दोष नाइ, चुनि। आमि नितान्त पाषण्ड, ताइ तोमाके अकारणे आघात करियाछि।"

तखन महेन्द्रेर दुइ पा अभिषिक्त करिया आशार अश्रु झरिया पड़िते लागिल। महेन्द्र उठिया बसिया ताहाके दुइ बाहुते तुलिया आपनार पाशे शोयाइल। आशार रोदनवेग थामिले से कहिल, "मासिके कि आमार देखिते याइबार इच्छा करे ना। किन्तु तोमाके फेलिया आमार याइते मन सरे ना। ताइ आमि याइते चाइ नाइ, तुमि राग करियो ना।"

महेन्द्र धीरे धीरे आशार आर्द्र कपोल मुछाइते मुछाइते कहिल, "ए कि राग करिबार कथा, चुनि। आमाके छाड़िया याइते पार ना, से लइया आमि राग करिब? तोमाके कोथाओ याइते हइबे ना।"

आशा कहिल, "ना, आमि काशी याइब।"

महेन्द्र। केन।

आशा। तोमाके मने मने सन्देह करिया याइतेछि ना—ए-कथा यखन एकबार तोमार मुख दिया बाहिर हइयाछे, तखन आमाके किछुदिनेर जन्यओ याइतेइ हइबे।

महेन्द्र। आमि पाप करिलाम, ताहार प्रायश्चित्त तोमाके करिते हइबे?

आशा। ताहा आमि जानि ना—किन्तु पाप आमार कोनोखाने हइयाछेइ, नहिले एमन-सकल असम्भव कथा उठितेइ पारित ना। ये-सब कथा आमि स्वप्नेओ भाबिते पारिताम ना, से-सब कथा केन शुनिते हइतेछे।

महेन्द्र। ताहार कारण, आमि ये की मन्द लोक ताहा तोमार स्वप्नेरओ अगोचर।

आशा व्यस्त हइया कहिल, "आवार! ओ-कथा बलियो ना। किन्तु एबार आमि काशी याइबइ।"

महेन्द्र हासिया कहिल, "आच्छा याओ, किन्तु तोमार चोखेर आड़ाले आमि यदि नष्ट हइया याइ, ताहा हइले की हइबे।"

आशा कहिल, "तोमार आर अत भय देखाइते हइबे ना, आमि किना भाबिया अस्थिर हइतेछि?"

महेन्द्र। किन्तु भाबा उचित। तोमार एमन स्वामीटिके यदि असावधाने बिगड़ाइते दाओ, तबे एर परे काहाके दोष दिबे?

आशा। तोमाके दोष दिब ना, सेजन्य तुमि भाबियो ना।

महेन्द्र। तखन निजेर दोष स्वीकार करिबे?

आशा। एकशोबार।

महेन्द्र। आच्छा, ताहा हइले काल एकबार तोमार जेठामशायेर सङ्गे गिया कथावार्ता ठिक करिया आसिब।

एइ बलिया महेन्द्र 'अनेक रात हइयाछे' बलिया पाश फिरिया शुइल।

किछुक्षण परे हठात् पुनर्वार एपाशे फिरिया कहिल, "चुनि, काज नाइ, तुमि नाइबा गेले।"

आशा कातर हइया कहिल, "आबार वारण करितेछ केन। एबार एकबार ना गेले तोमार सेइ भर्त्सनाटा आमार गाये लागिया थाकिबे। आमाके दु-चार दिनेर जन्यओ पाठाइया दाओ।"

महेन्द्र कहिल, "आच्छा।" बलिया आबार पाश फिरिया शुइल।

काशी याइबार आगेर दिन आशा विनोदिनीर गला जड़ाइया कहिल, "भाइ बालि, आमार गा छुँइया एकटा कथा बल्।"

विनोदिनी आशार गाल टिपिया धरिया कहिल, "की कथा, भाइ। तोमार अनुरोध आमि राखिब ना?"

आशा। के जाने भाइ, आजकाल तुमि की रकम हइया गेछ। कोनोमतेइ येन आमार स्वामीर काछे बाहिर हइते चाओ ना।

विनोदिनी। केन चाइ ना, से कि तुइ जानिसने, भाइ। सेदिन बिहारीबाबुके महेन्द्रबाबु ये-कथा बलिलेन, से कि तुइ निजेर काने शुनिस नाइ। ए-सकल कथा यखन उठिल तखन कि आर बाहिर हओया उचित—तुमिइ बलो-ना, भाइ बालि।

ठिक उचित य नहे, ताहा आशा बुझित। ए-सकल कथार लज्जाकरता ये कतदूर, ताहाओ से निजेर मन हइतेइ सम्प्रति बुझियाछे। तबु बलिल, "कथा अमन कत उठिया थाके, से-सब यदि ना सहिते पारिस तबे आर भालोबासा किसेर, भाइ। ओ-कथा भुलिते हइबे।"

विनोदिनी। आच्छा भाइ, भुलिब।

आशा। आमि तो भाइ, काल काशी याइब, आमार स्वामीर याहाते कोनो असुविधा ना हय तोमाके सेइटे विशेष करिया देखिते हइबे। एखन-कार मतो पालाइया बेड़ाइले चलिबे ना।

विनोदिनी चुप करिया रहिल। आशा विनोदिनीर हात चापिया धरिया कहिल, "माथा खा भाइ बालि, एइ कथाटा आमाके दितेइ हइबे।"

विनोदिनी कहिल, "आच्छा।"

२६

एकदिके चन्द्र अस्त याय, आर-एक दिके सूर्य उठे। आशा चलिया गेल, किन्तु महेन्द्रेर भाग्ये एखनो विनोदिनीर देखा नाइ। महेन्द्र घुरिया घुरिया बेड़ाय, माझे माझे छुता करिया समये-असमये ताहार मार घरे आसिया उपस्थित हय, विनोदिनी केवलइ फाँकि दिया पालाय, धरा देय ना।

राजलक्ष्मी महेन्द्रेर एइरूप अत्यन्त शून्यभाव देखिया भाबिलेन, "बउ गियाछे, ताइ ए बाड़िते महिनेर किछुइ आर भालो लागितेछे ना।" आज-काल महेन्द्रेर सुखदुःखेर पक्षे मा ये बउयेर तुलनाय एकान्त अनावश्यक हइया पड़ियाछे, ताहा मने करिया ताँहाके बिँधिल—तबु महेन्द्रेर एइ लक्ष्मीछाड़ा विमर्ष भाव देखिया तिनि वेदना पाइलेन। विनोदिनीके डाकिया बलिलेन, "सेइ इन्फ्लुयेञ्जार पर हइते आमार हाँपानिर मतो हइयाछे; आमि तो आजकाल सिँड़ि भाङिया घन घन उपरे याइते पारि ना। तोमाके बाछा, निजे थाकिया महिनेर खाओयादाओया समस्तइ देखिते हइबे। बराबरकार अभ्यास, एकजन केह यत्न ना करिले महिन थाकिते पारे ना। देखो-ना, बउ याओयार पर हइते ओ केमन एकरकम हइया गेछे। बउकेओ धन्य बलि, केमन करिया गेल?"

विनोदिनी एकटुखानि मुख बाँकाइया बिछानार चादर खुँटिते लागिल। राजलक्ष्मी कहिलेन, "की बउ, की भाबितेछ। इहाते भाबिबार कथा किछु नाइ। ये याहा बले बलुक, तुमि आमादेर पर नओ।"

विनोदिनी कहिल, "काज नाइ, मा।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "आच्छा, तबे काज नाइ। देखि आमि निजे या पारि ताइ करिब।"

बलिया तखनइ तिनि महेन्द्रेर तेतलार घर ठिक करिबार जन्य उद्यत हइलेन। विनोदिनी व्यस्त हइया कहिल, "तोमार असुख-शरीर, तुमि याइयो ना, आमि याइतेछि। आमाके माप करो पिसिमा, तुमि येमन आदेश करिबे आमि ताहाइ करिब।"

राजलक्ष्मी लोकेर कथा एकेबारेइ तुच्छ करितेन। स्वामीर मृत्युर पर हइते संसारे एवं समाजे तिनि महेन्द्र छाड़ा आर किछुइ जानितेन ना। महेन्द्र सम्बन्धे विनोदिनी समाजनिन्दार आभास देओयाते तिनि विरक्त हइयाछिलेन। आजन्मकाल तिनि महिनके देखिया आसितेछेन, ताहार मतो एमन भालो छेले आछे कोथाय। सेइ महिनेर सम्बन्धेओ निन्दा! यदि केह करे, तबे ताहार जिह्वा खसिया याक। ताँहार निजेर काछे येटा भालो लागे ओ भालो बोध हय से-सम्बन्धे विश्वेर लोकके उपेक्षा करिबार जन्य राजलक्ष्मीर एकटा स्वाभाविक जेद छिल।

आज महेन्द्र कालेज हइते फिरिया आसिया आपनार शयनघर देखिया आश्चर्य हइया गेल। द्वार खुलियाइ देखिल, चन्दनगुँड़ा ओ धुनार गन्धे घर आमोदित हइया आछे। मशारिते गोलापि रेशमेर झालर लागानो। नीचेर बिछानाय शुभ्र जाजिम तकतक करितेछे एवं ताहार उपरे पूर्वेकार पुरातन ताकियार परिवर्ते रेशम ओ पशमेर फुलकाटा बिलाति चौका बालिश सुसज्जित। ताहार कारुकार्य विनोदिनीर बहुदिनेर परिश्रमजात। आशा ताहाके जिज्ञासा करित, "एगुलि तुइ कार जन्ये तैरि करितेछिस, भाइ।" विनोदिनी हासिया बलित, "आमार चिताशय्यार जन्य। मरण छाड़ा तो सोहागेर लोक आमार आर केहइ नाइ।"

देयाले महेन्द्रेर ये बाँधानो फोटोग्राफखानि छिल, ताहार फ्रेमेर चार कोणे रङिन फितार द्वारा सुनिपुणभावे चारिटि ग्रन्थि बाँधा, एवं सेइ छबिर नीचे भित्तिगात्रे एकटि टिपाइयेर दुइ धारे दुइ फुलदानिते फुलेर तोड़ा, येन महेन्द्रेर प्रतिमूर्ति कोनो अज्ञात भक्तेर पूजा प्राप्त हइयाछे। सबसुद्ध समस्त घरेर चेहारा अन्यरकम। खाट येखाने छिल, सेखान हइते एकटुखानि सरानो। घरटिके दुइ भाग करा हइयाछे; खाटेर सम्मुखे दुटि बड़ो आलनाय कापड़ झुलाइया दिया आड़ालेर मतो प्रस्तुत हओयाय नीचे बसिबार बिछाना ओ रात्रे शुइबार खाट स्वतन्त्र हइया गेछे। ये आलमारिते आशार

समस्त शखेर जिनिस चीनेर खेलना प्रभृति साजानो छिल, सेइ आलमारिर काँचेर दरजाय भितरेर गाये लाल सालु कुञ्चित करिया मारिया देओया हइयाछे ; एखन आर ताहार भितरेर कोनो जिनिस देखा याय ना। घरेर मध्ये ताहार पूर्व-इतिहासेर ये-किछु चिह्न छिल, ताहा नूतन हस्तेर नव सज्जाय सम्पूर्ण आच्छन्न हइया गेछे।

परिश्रान्त महेन्द्र मेझेर उपरकार शुभ्र बिछानाय शुइया नूतन बालिश-गुलिर उपर माथा राखिबामात्र एकटि मृदु सुगन्ध अनुभव करिल—बालिशेर भितरकार तुलार सङ्गे प्रचुर परिमाणे नागकेशर फुलेर रेणु ओ किछु आतर मिश्रित छिल।

महेन्द्रेर चोख बुजिया आसिल, मने हइते लागिल, एइ बालिशेर उपर याहार निपुण हस्तेर शिल्प, ताहारइ कोमल चम्पक-अङ्गलिर येन गन्ध पाओया याइतेछे।

एमन समय दासी रुपार रेकाबिते फल ओ मिष्ट, एवं काँचेर ग्लासे बरफ-देओया आनारसेर शरबत आनिया दिल। ए-समस्तइ पूर्वप्रथा हइते किछु विभिन्न एवं बहु यत्न ओ पारिपाट्येर सहित रचित। समस्त स्वादे गन्धे दृश्ये नूतनत्व आसिया महेन्द्रेर इन्द्रियसकल आविष्ट करिया तुलिल।

तृप्तिपूर्वक भोजन समाधा हइले, रुपार बाटाय पान ओ मशला लइया विनोदिनी धीरे-धीरे घरे प्रवेश करिल। हासिते हासिते कहिल, "ए-कयदिन तोमार खावार समय हाजिर हइते पारि नाइ, माप करियो, ठाकुरपो। आर याइ कर, आमार माथार दिव्य रहिल, तोमार अयत्न हइतेछे, ए-खबरटा आमार चोखेर बालिके दियो ना। आमार यथासाध्य आमि करितेछि—किन्तु की करिब भाइ, संसारेर समस्त काजइ आमार घाड़े।"

एइ बलिया विनोदिनी पानेर बाटा महेन्द्रेर सम्मुखे अग्रसर करिया दिल। आजिकार पानेर मध्येओ केया-खयेरेर एकटु विशेष नूतन गन्ध पाओया गेल।

महेन्द्र कहिल, "यत्नेर माझे-माझे एमन एक-एकटा त्रुटि थाकाइ भालो।"

विनोदिनी कहिल, "भालो केन, शुनि।"

महेन्द्र उत्तर करिल, "तार परे खोंटा दिया सुदसुद्ध आदाय करा याय।"

"महाजन-महाशय, सुद कत जमिल।"

महेन्द्र कहिल, "खाबार समय हाजिर छिले ना, एखन खाबार परे हाजरि पोषाइया आरो पाओना बाकि थाकिबे।"

विनोदिनी हासिया कहिल, "तोमार हिसाब ये-रकम कड़ाक्कड़, तोमार हाते एकबार पड़िले आर उद्धार नाइ देखितेछि।"

महेन्द्र कहिल, "हिसाबे याइ थाक्, आदाय की करिते पारिलाम।"

विनोदिनी कहिल, "आदाय करिबार मतो आछे की। तबु तो बन्दी करिया राखियाछ।" बलिया ठाट्टाके हठात् गाम्भीर्ये परिणत करिया ईषत् एकटु दीर्घनिश्वास फेलिल।

महेन्द्रओ एकटु गम्भीर हइया कहिल, "भाइ बालि, एटा कि तबे जेल-खाना।"

एमन समय बेहारा नियममत आलो आनिया टिपाइयेर उपर राखिया चलिया गेल।

हठात् चोखे आलो लागाते मुखेर सामने एकटु हातेर आड़ाल करिया नतनेत्रे विनोदिनी बलिल, "की जानि भाइ। तोमार सङ्गे कथाय के पारिबे। एखन याइ, काज आछे।"

महेन्द्र हठात् ताहार हात चापिया धरिया कहिल, "बन्धन यखन स्वीकार करियाछ तखन याइबे कोथाय?"

विनोदिनी कहिल, "छि छि, छाड़ो याहार पालाइबार रास्ता नाइ, ताहाके आबार बाँधिबार चेष्टा केन।"

विनोदिनी जोर करिया हात छाड़ाइया लइया प्रस्थान करिल।

महेन्द्र सेइ बिछानाय सुगन्ध बालिशेर उपर पड़िया रहिल, ताहार बुकेर मध्ये रक्त तोलपाड़ करिते लागिल। निस्तब्ध सन्ध्या, निर्जन घर, नववसन्तेर वातास दितेछे, विनोदिनीर मन येन धरा दिल-दिल—उन्माद महेन्द्र आपनाके आर धरिया राखिते पारिबे ना, एमनि बोध हइल। ताड़ाताड़ि आलो निबाइया घरेर प्रवेशद्वार बन्ध करिल, ताहार उपरे शार्शि आँटिया दिल, एवं समय ना हइतेइ बिछानार मध्ये गिया शुइया पड़िल।

एओ तो से पुरातन बिछाना नहे। चार-पाँचखाना तोशके शय्यातल पूर्वेर चेये अनेक नरम। आबार एकटि गन्ध—से अगुरुर कि खसखसेर, कि किसेर ठिक बुझा गेल ना। महेन्द्र अनेकबार एपाश-ओपाश करिते लागिल—कोथाओ येन पुरातनेर कोनो एकटा निदर्शन खुंजिया पाइया ताहा आँकड़ाइया धरिबार चेष्टा। किन्तु किछुइ हाते ठेकिल ना।

रात्रिर नटार समय रुद्ध द्वारे घा पड़िल। विनोदिनी बाहिर हइते कहिल, "ठाकुरपो, तोमार खाबार आसियाछे, दुयार खोलो।"

तखनइ द्वार खुलिबार जन्य महेन्द्र धड़फड़ करिया उठिया शार्शिर अर्गले हात लागाइल। किन्तु खुलिल ना—मेझेर उपर उपुड़ हइया लुटाइया कहिल, "ना ना, आमार क्षुधा नाइ, आमि खाइब ना।"

बाहिर हइते उद्विग्न कण्ठेर प्रश्न शोना गेल, "असुख करेनि तो? जल आनिया दिब? किछु चाइ कि।"

महेन्द्र कहिल, "आमार किछुइ चाइ ना—कोनो प्रयोजन नाइ।"

विनोदिनी कहिल, "माथा खाओ, आमार काछे भाँड़ाइयो ना। आच्छा, असुख ना थाके तो एकबार दरजा खोलो।"

महेन्द्र सवेगे बलिया उठिल, "ना खुलिब ना, किछुतेइ ना। तुमि याओ।"

बलिया महेन्द्र ताड़ाताड़ि उठिया पुनर्वार बिछानार मध्ये गिया शुइया पड़िल एवं अन्तर्हिता आशार स्मृतिके शून्य शय्या ओ चञ्चल हृदयेर मध्ये अन्धकारे खुँजिया बेड़ाइते लागिल।

घुम यखन किछुतेइ आसिते चाय ना, तखन महेन्द्र बाति ज्वालाइया दोयात कलम लइया आशाके चिठि लिखिते बसिल। लिखिल, "आशा, आर अधिक दिन आमाके एका फेलिया राखियो ना। आमार जीवनेर लक्ष्मी तुमि—तुमि ना थाकिलेइ आमार समस्त प्रवृत्ति शिकल छिड़िया आमाके कोन् दिके टानिया लइते चाय, बुझिते पारि ना। पथ देखिया चलिब, ताहार आलो कोथाय—से आलो तोमार विश्वासपूर्ण दुटि चोखेर प्रेमस्निग्ध दृष्टिपाते। तुमि शीघ्र एसो, आमार शुभ, आमार ध्रुव, आमार एक। आमाके स्थिर करो, रक्षा करो, आमार हृदय परिपूर्ण करो। तोमार प्रति लेशमात्र अन्यायेर महापाप हइते, तोमाके मुहूर्तकाल विस्मरणेर विभीषिका हइते आमाके उद्धार करो।"

एमनि करिया महेन्द्र निजेके आशार अभिमुखे सवेगे ताड़ना करिबार जन्य अनेक रात धरिया अनेक कथा लिखिल। दूर हइते सुदूरे अनेकगुलि गिर्जार घड़िते ढं ढं करिया तिनटा बाजिल। कलिकातार पथे गाड़िर शब्द आर प्राय नाइ, पाड़ार परप्रान्ते कोनो दोतला हइते नटीकण्ठे बेहाग-रागिणीर ये-गान उठितेछिल सेओ विश्वव्यापिनी शान्ति ओ निद्रार मध्ये एकेवारे डुबिया गेछे। महेन्द्र एकान्तमने आशाके स्मरण करिया एवं मनेर उद्वेग दीर्घ पत्रे नानारूपे व्यक्त करिया अनेकटा सान्त्वना पाइल, एवं बिछानाय शुइबामात्र घुम आसिते ताहार किछुमात्र विलम्ब हइल ना।

सकाले महेन्द्र यखन जागिया उठिल, तखन वेला हइयाछे, घरेर मध्ये रौद्र आसियाछे। महेन्द्र ताड़ाताड़ि उठिया बसिल; निद्रार पर गतरात्रिर समस्त व्यापार मनेर मध्ये हालका हइया आसियाछे। बिछानार बाहिरे आसिया महेन्द्र देखिल—गतरात्रे आशाके से ये-चिठि लिखियाछिल, ताहा टिपाइयेर उपर दोयात दिया चापा रहियाछे। सेखानि पुनर्वार पड़िया

महेन्द्र भाबिल, "करेछि की। ए ये नभेलि व्यापार। भाग्ये पाठाइ नाइ। आशा पड़िले की मने करित। से तो एर अर्धेक कथा बुझितेइ पारित ना।" रात्रे क्षणिक कारणे हृदयावेग ये असंगत बाड़िया उठियाछिल, इहाते महेन्द्र लज्जा पाइल; चिठिखाना टुकरा टुकरा करिया छिंड़िया फेलिल; सहज भाषाय आशाके एकखानि संक्षिप्त चिठि लिखिल—

'तुमि आर कत देरि करिबे। तोमार जेठामहाशयेर यदि शीघ्र फिरिबार कथा ना थाके, तबे आमाके लिखियो, आमि निजे गिया तोमाके लइया आसिब। एखाने एकला आमार भालो लागितेछे ना।'

२७

महेन्द्रेर चलिया याओयार किछुदिन परेइ आशा यखन काशीते आसिल, तखन अन्नपूर्णार मने बड़ोइ आशङ्का जन्मिल। आशाके तिनि नानाप्रकारे नाना प्रश्न जिज्ञासा करिते लागिलेन, "हाँ रे चुनि, तुइ ये तोर सेइ चोखेर बालिर कथा बलितेछिलि, तोर मते, तार मतन एमन गुणवती मेये आर जगते नाइ?"

"सत्यइ मासि, आमि बाड़ाइया बलितेछि ना। तार येमन बुद्धि तेमनि रूप, काजकर्मे तार तेमनि हात।"

"तोर सखी, तुइ तो ताहाके सर्वगुणवती देखिबि, बाड़िर आर-सकले ताहाके के की बले शुनि।"

"मार मुखे तो तार प्रशंसा धरे ना। चोखेर बालि देशे याइबार कथा बलितेइ तिनि अस्थिर हइया ओठेन। एमन सेवा करिते केह जाने ना। बाड़िर चाकर-दासीरओ यदि कारओ व्यामो हय ताके बोनेर मतो, मार मतो यत्न करे।"

"महेन्द्रेर मत की।"

"ताँके तो जानइ मासि, नितान्त घरेर लोक छाड़ा आर-काउके ताँर पछन्दइ हय ना। आमार बालिके सकलेइ भालोबासे, किन्तु ताँर सङ्गे ताँर आज पर्यन्त भालो बने नाइ।"

"की रकम।"

"आमि यदि वा अनेक करिया देखासाक्षात् कराइया दिलाम, ताँर सङ्गे तार कथावार्ताइ प्राय बन्ध। तुमि तो जान, तिनि की रकम कुनो—लोके

मने करे, तिनि अहंकारी, किन्तु ता नय मासि, तिनि दुटि-एकटि लोक छाड़ा काहाकेओ सह्य करिते पारेन ना।"

शेष कथाटा बलिया फेलिया हठात् आशार लज्जाबोध हइल, गाल-दुटि लाल हइया उठिल। अन्नपूर्णा खुशि हइया मने-मने हासिलेन—कहिलेन, "ताइ बटे, सेदिन महिन यखन आसियाछिल, तोर बालिर कथा एकबार मुखेओ आने नाइ।"

आशा दुःखित हइया कहिल, "ओइ ताँर दोष। याके भालोबासेन ना, से येन एकेबारेइ नाइ। ताके येन एकदिनओ देखेन नाइ, जानेन नाइ, एमनि ताँर भाव।"

अन्नपूर्णा शान्त स्निग्ध हास्ये कहिलेन, "आबार याके भालोबासेन, महिन येन जन्मजन्मान्तर केवल ताकेइ देखेन एवं जानेन, ए भावओ ताँर आछे। की बलिस, चुनि।"

आशा ताहार कोनो उत्तर ना करिया चोख निचु करिया हासिल। अन्नपूर्णा जिज्ञासा करिलेन, "चुनि, बिहारीर की खबर बल् देखि। से कि विवाह करिबे ना।"

मुहूर्तेर मध्येइ आशार मुख गम्भीर हइया गेल। से की उत्तर दिबे भाबिया पाइल ना।

आशार निरुत्तर भावे अत्यन्त भय पाइया अन्नपूर्णा बलिया उठिलेन, "सत्य बल् चुनि, बिहारीर असुख-विसुख किछु हयनि तो?"

बिहारी एइ चिरपुत्रहीना रमणीर स्नेह-सिंहासने पुत्रेर मानस-आदर्श रूपे विराज करित। बिहारीके तिनि संसारे प्रतिष्ठित देखिया आसिते पारेन नाइ, ए दुःख प्रवासे आसिया प्रतिदिन ताँहार मने जागित। ताँहार क्षुद्र संसारेर आर-समस्तइ एक प्रकार सम्पूर्ण हइयाछे, केवल बिहारीर सेइ गृहहीन अवस्था स्मरण करियाइ ताँहार परिपूर्ण वैराग्यचर्चार व्याघात घटे।

आशा कहिल, "मासि, बिहारी-ठाकुरपोर कथा आमाके जिज्ञासा करियो ना।"

अन्नपूर्णा आश्चर्य हइया जिज्ञासा करिलेन, "केन बल् देखि।"

आशा कहिल, "से आमि बलिते पारिब ना।" बलिया घर हइते उठिया गेल।

अन्नपूर्णा चुप करिया बसिया भाबिते लागिलेन, "अमन सोनार छेले बिहारी, एरइ मध्ये ताहार कि एतइ बदल हइयाछे ये, चुनि आज ताहार नाम शुनिया उठिया याय। अदृष्टेरइ खेला। केन ताहार सहित चुनिर विवाहेर

कथा हइल, केनइ वा महेन्द्र ताहार हातेर काछ हइते चुनिके काड़िया लइल।"

अनेक दिन परे आज आबार अन्नपूर्णार चोख दिया जल पड़िल--मने-मने तिनि कहिलेन, "आहा, आमार बेहारी यदि एमन किछु करिया थाके याहा आमार बेहारीर योग्य नहे, तबे से ताहा अनेक दुःख पाइयाइ करियाछे, सहजे करे नाइ।" बिहारीर सेइ दुःखेर परिमाण कल्पना करिया अन्नपूर्णार वक्ष व्यथित हइते लागिल।

सन्ध्यार समय यखन अन्नपूर्णा आह्निके बसियाछेन, तखन एकटा गाड़ि आसिया दरजाय थामिल, एवं सहिस बाड़िर लोकके डाकिया रुद्ध द्वारे घा मारिते लागिल। अन्नपूर्णा पूजागृह हइते बलिया उठिलेन, "ओइ या, आमि एकेबारेइ भुलिया गियाछिलाम, आज कुञ्जर शाशुड़ीर एवं तार दुइ बोनझिर एलाहाबाद हइते आसिबार कथा छिल। ओइ बुझि ताहारा आसिल। चुनि, तुइ एकबार आलोटा लइया दरजा खुलिया दे।"

आशा लण्ठन-हाते दरजा खुलिया दितेइ देखिल, बिहारी दाँड़ाइया। बिहारी बलिया उठिल, "ए की बोठान, तबे ये शुनिलाम, तुमि काशी आसिबे ना।" आशार हात हइते लण्ठन पड़िया गेल। से येन प्रेतमूर्ति देखिया एक निश्वासे दोतलाय छुटिया गिया आर्तस्वरे बलिया उठिल, "मासिमा तोमार दुटि पाये पड़ि, उँहाके एखनइ याइते बलो।"

अन्नपूर्णा पूजार आसन हइते चमकिया उठिया कहिलेन, "काहाके चुनि काहाके।"

आशा कहिल, "बिहारी-ठाकुरपो एखानेओ आसियाछेन।" बलिया से पाशेर घरे गिया द्वार रोध करिल।

बिहारी नीचे हइते सकल कथाइ शुनिते पाइल। से तखनइ छुटिया याइते उद्यत—किन्तु अन्नपूर्णा पूजाह्निक फेलिया यखन नामिया आसिलेन, तखन देखिलेन, बिहारी द्वारेर काछे माटिते बसिया पड़ियाछे, ताहार शरीर हइते समस्त शक्ति चलिया गेछे।

अन्नपूर्णा आलो आनेन नाइ। अन्धकारे तिनि बिहारीर मुखेर भाव देखिते पाइलेन ना, बिहारीओ ताँहाके देखिते पाइल ना।

अन्नपूर्णा कहिलेन, "बेहारी।"

हाय, सेइ चिरदिनेर स्नेहसुधासिक्त कण्ठस्वर कोथाय। ए कण्ठेर मध्ये ये कठिन विचारेर वज्रध्वनि प्रच्छन्न हइया आछे। जननी अन्नपूर्णा, संहार-खड्ग तुलिले कार 'परे। भाग्यहीन बिहारी ये आज अन्धकारे तोमार मङ्गलचरणाश्रये माथा राखिते आसियाछिल।

बिहारीर अवश शरीर आपादमस्तक विद्युतेर आघाते चकित हइया उठिल, कहिल, "काकीमा, आर नय, आर एकटि कथाओ बलियो ना। आमि चलिलाम।"

बलिया बिहारी भूमिते माथा राखिया प्रणाम करिल, अन्नपूर्णार पा-ओ स्पर्श करिल ना। जननी येमन गङ्गासागरे सन्तान विसर्जन करे, अन्नपूर्णा तेमनि करिया बिहारीके सेइ रात्रेर अन्धकारे नीरवे विसर्जन करिलेन, एक बार फिरिया डाकिलेन ना। गाड़ि बिहारीके लइया देखिते देखिते अदृश्य हइया गेल।

सेइ रात्रेइ आशा महेन्द्रके चिठि लिखिल—

'बिहारी ठाकुरपो हठात् आज सन्ध्या वेलाय एखाने आसियाछिलेन। जेठामशायरा कबे कलिकाताय फिरिबेन, ठिक नाइ—तुमि शीघ्र आसिया आमाके एखान हइते लइया याओ।'

२८

सेदिन रात्रिजागरण ओ प्रबल आवेगेर परे सकालवेलाय महेन्द्रेर शरीर मने एकटा अवसाद उपस्थित हइयाछिल। तखन फाल्गुनेर माझामाझि, गरम पड़िते आरम्भ करियाछे। महेन्द्र अन्यदिन सकाले ताहार शयनगृहेर कोणे टेबिले बइ लइया बसित। आज नीचेर बिछानाय ताकियाय हेलान दिया पड़िल। वेला हइया याय, स्नाने गेल ना। रास्ता दिया फेरिओयाला हाँकिया याइतेछे। पथे आपिसेर गाड़िर शब्देर विराम नाइ। प्रतिवेशीर नूतन बाड़ि तैरि हइतेछे, मिस्त्रि-कन्यारा ताहारइ छाद पिटिबार ताले ताले समस्वरे एकघेये गान धरिल। ईषत् तप्त दक्षिणेर हाओयाय महेन्द्रेर पीड़ित स्नायुजाल शिथिल हइया आसियाछे; कोनो कठिन पण, दुरूह चेष्टा, मानस-संग्राम आजिकार एइ हालछाड़ा गा-ढाला वसन्तेर दिनेर उपयुक्त नहे।

"ठाकुरपो, तोमार आज हल की। स्नान करिबे ना? एदिके खाबार ये प्रस्तुत। ओ की भाइ, शुइया ये। असुख करियाछे? माथा धरियाछे?" बलिया विनोदिनी काछे आसिया महेन्द्रेर कपाले हात दिल।

महेन्द्र अर्धेक चोख बुजिया जड़ित कण्ठे बलिल, "आज शरीरटा तेमन भालो नाइ—आज आर स्नान करिब ना।"

विनोदिनी कहिल, "स्नान ना कर तो दुटिखानि खाइआ लओ।"

बलिया पीड़ापीड़ि करिया से महेन्द्रके भोजनस्थाने लइया गेल एवं उत्कण्ठित यत्नेर सहित अनुरोध करिया आहार कराइल।

आहारेर पर महेन्द्र पुनराय नीचेर बिछानाय आसिया शुइल, विनोदिनी शियरे बसिया धीरे धीरे ताहार माथा टिपिया दिते लागिल। महेन्द्र निमीलितचक्षे बलिल, "भाइ बालि, एखनो तो तोमार खाओया हय नाइ, तुमि खाइते याओ।"

विनोदिनी किछुतेइ गेल ना। अलस मध्याह्नेर उत्तप्त हाओयाय घरेर पर्दा उड़िते लागिल एवं प्राचीरेर काछे कम्पमान नारिकेल गाछेर अर्थहीन मर्मरशब्द घरेर मध्ये प्रवेश करिल। महेन्द्रेर हृत्पिण्ड क्रमशइ द्रुततर ताले नाचिते लागिल एवं विनोदिनीर घननिश्वास सेइ ताले महेन्द्रेर कपाले चुलगुलि काँपाइते थाकिल। काहारओ कण्ठ दिया एकटि कथा बाहिर हइल ना। महेन्द्र मने मने भाबिते लागिल, "असीम विश्वसंसारेर अनन्त प्रवाहेर मध्ये भासिया चलियाछि, तरणी क्षणकालेर जन्य कखन कोथाय ठेके, ताहाते काहार की आसे याय एवं कतदिनेर जन्यइ वा याय आसे।"

शियरेर काछे बसिया कपाले हात बुलाइते बुलाइते विह्वल यौवनेर गुरुभारे धीरे धीरे विनोदिनीर माथा नत हइया आसितेछिल; अवशेषे ताहार केशाग्र-भाग महेन्द्रेर कपोल स्पर्श करिल। वातासे आन्दोलित सेइ केशगुच्छेर कम्पित मृदु स्पर्शे ताहार समस्त शरीर बारंबार काँपिया उठिल, हठात् येन निश्वास ताहार बुकेर काछे अवरुद्ध हइया बाहिर हइबार पथ पाइल ना। धड़फड़ करिया उठिया बसिया महेन्द्र कहिल, "नाः, आमार कालेज आछे, आमि याइ।" बलिया विनोदिनीर मुखेर दिके ना चाहिया दाँड़ाइया उठिल।

विनोदिनी कहिल, "व्यस्त हइयो ना, आमि तोमार कापड़ आनिया दिइ।" बलिया महेन्द्रेर कालेजेर कापड़ बाहिर करिया आनिल।

महेन्द्र ताड़ाताड़ि कालेजे चलिया गेल, किन्तु सेखाने किछुतेइ स्थिर थाकिते पारिल ना। पड़ाशुनाय मन दिते अनेकक्षण वृथा चेष्टा करिया सकाल-सकाल बाड़ि फिरिया आसिल।

घरे ढुकिया देखे, विनोदिनी बुकेर तलाय बालिश टानिया लइया नीचेर बिछानाय उपुड़ हइया की एकटा बइ पड़ितेछे—राशीकृत कालो चुल पिठेर उपर छड़ानो। बोध करि वा से महेन्द्रेर जुतार शब्द शुनिते पाय नाइ। महेन्द्र आस्ते आस्ते पा टिपिया काछे आसिया दाँड़ाइल। शुनिते पाइल, पड़िते पड़िते विनोदिनी एकटा गभीर दीर्घनिश्वास फेलिल।

महेन्द्र कहिल, "ओगो करुणामयी, काल्पनिक लोकेर जन्य हृदयेर बाजे खरच करियो ना। की पड़ा हइतेछे।"

विनोदिनी त्रस्त हइया उठिया ताड़ाताड़ि बइखाना अञ्चलेर मध्ये लुका-इया फेलिल। महेन्द्र काड़िया देखिबार चेष्टा करिते लागिल। अनेकक्षण हाताहाति-काड़ाकाड़िर पर पराभूत विनोदिनीर अञ्चल हइते महेन्द्र बइखानि छिनाइया लइया देखिल—विषवृक्ष। विनोदिनी घन निश्वास फेलिते फेलिते राग करिया मुख फिराइया चुप करिया बसिया रहिल।

महेन्द्रेर वक्षःस्थल तोलपाड़ करितेछिल। अनेक चेष्टाय से हासिया कहिल, "छि छि, बड़ो फाँकि दिले। आमि भाबियाछिलाम, खुब एकटा गोपनीय किछु हइबे वा। एत काड़ाकाड़ि करिया शेषकाले किना विषवृक्ष बाहिर हइया पड़िल।"

विनोदिनी कहिल, "आमार आबार गोपनीय की थाकिते पारे, शुनि।"

महेन्द्र फस् करिया बलिया फेलिल, "एइ मने करो, यदि बिहारीर काछ हइते कोनो चिठि आसित?"

निमेषेर मध्ये विनोदिनीर चोखे विद्युत् स्फुरित हइल। एतक्षण फुलशर घरेर कोणे खेला करितेछिल, से येन द्वितीय बार भस्मसात् हइया गेल। मुहूर्ते-प्रज्वलित अग्निशिखार मतो विनोदिनी उठिया दाँड़ाइल। महेन्द्र ताहार हात धरिया कहिल, "माप करो, आमार परिहास माप करो।"

विनोदिनी सवेगे हात छिनाइया लइया कहिल, "परिहास करितेछ काहाके। यदि ताँहार सङ्गे बन्धुत्व करिबार योग्य हइते, तबे ताँहाके परिहास करिले सह्य करिताम। तोमार छोटो मन, बन्धुत्व करिबार शक्ति नाइ, अथच ठाट्टा।"

विनोदिनी चलिया याइते उद्यत हइबामात्र महेन्द्र दुइ हाते ताहार पा वेष्टन करिया बाधा दिल।

एमन समये सम्मुखे एक छाया पड़िल, महेन्द्र विनोदिनीर पा छाड़िया चमकिया मुख तुलिया देखिल, बिहारी।

बिहारी स्थिर दृष्टिपाते उभयके दग्ध करिया शान्त धीर स्वरे कहिल, "अत्यन्त असमये उपस्थित हइयाछि, किन्तु बेशिक्षण थाकिब ना। एकटा कथा बलिते आसियाछिलाम। आमि काशी गियाछिलाम, जानिताम ना, सेखाने बउठाकरुन आछेन। ना जानिया ताँहार काछे अपराधी हइयाछि; ताँहार काछे क्षमा चाहिबार अवसर नाइ, ताइ तोमार काछे क्षमा चाहिते आसियाछि। आमार मने ज्ञाने अज्ञाने यदि कखनो कोनो पाप स्पर्श करिया

थाके, सेजन्य ताँहाके येन कखनो कोनो दुःख सह्य करिते ना हय, तोमार काछे आमार एइ प्रार्थना।"

बिहारीर काछे दुर्बलता हठात् प्रकाश पाइल बलिया महेन्द्रेर मनटा येन ज्वलिया उठिल। एखन ताहार औदार्येर समय नहे। से एकटु हासिया कहिल, "ठाकुरघरे कला खाइबार ये गल्प आछे, तोमार ठिक ताइ देखितेछि। तोमाके दोष स्वीकार करितेओ बलि नाइ, अस्वीकार करितेओ बलि नाइ; तबे क्षमा चाहिया साधु हइते आसियाछ केन।"

बिहारी काठेर पुतुलेर मतो किछुक्षण आड़ष्ट हइया दाँड़ाइया रहिल—तार परे यखन कथा बलिबार प्रबल चेष्टाय ताहार ठोंट काँपिते लागिल, तखन विनोदिनी बलिया उठिल, "बिहारी-ठाकुरपो, तुमि कोनो उत्तर दियो ना। किछुइ बलियो ना। ओइ लोकटि याहा मुखे आनिल ताहाते उहारइ मुखे कलङ्क लागिया रहिल, से कलङ्क तोमाके स्पर्श करे नाइ।"

विनोदिनीर कथा बिहारीर काने प्रवेश करिल किना सन्देह—से येन स्वप्नचालितेर मतो महेन्द्रेर घरेर सम्मुख हइते फिरिया सिँड़ि दिया नामिया याइते लागिल।

विनोदिनी ताहार पश्चाते गिया कहिल, "बिहारी-ठाकुरपो, आमाके कि तोमार कोनो कथा बलिबार नाइ। यदि तिरस्कारेर किछु थाके, तबे तिरस्कार करो।"

बिहारी यखन कोनो उत्तर ना करिया चलिते लागिल, विनोदिनी सम्मुखे आसिया दुइ हाते ताहार दक्षिण हात चापिया धरिल। बिहारी अपरिसीम घृणार सहित ताहाके ठेलिया दिया चलिया गेल। सेइ आघाते विनोदिनी ये पड़िया गेल ताहा से जानितेओ पारिल ना।

पतनशब्द शुनिया महेन्द्र छुटिया आसिल। देखिल, विनोदिनीर वाम हातेर कनुयेर काछे काटिया रक्त पड़ितेछे।

महेन्द्र कहिल, "इस, ए ये अनेकटा काटियाछे।" बलिया तत्क्षणात् निजेर पातला जामा खानिकटा टानिया छिँड़िया क्षतस्थाने ब्याण्डेज बाँधिते प्रस्तुत हइल।

विनोदिनी ताड़ाताड़ि हात सराइया लइया कहिल, "ना, ना, किछुइ करियो ना, रक्त पड़िते दाओ।"

महेन्द्र कहिल, "बाँधिया एकटा औषध दितेछि, ता हइले आर व्यथा हइबे ना, शीघ्र सारिया याइबे।"

विनोदिनी सरिया गिया कहिल, "आमि व्यथा साराइते चाइ ना, ए काटा आमार थाक।"

महेन्द्र कहिल, "आज अधीर हइया तोमाके आमि लोकेर सामने अपदस्थ करियाछि, आमाके माप करिते पारिबे कि।"

विनोदिनी कहिल, "माप किसेर जन्य। बेश करियाछ। आमि कि लोकके भय करि। आमि काहाकेओ मानि ना। याहारा आघात करिया फेलिया चलिया याय, ताहाराइ कि आमार सब, आर याहारा आमाके पाये धरिया टानिया राखिते चाय, ताहारा आमार केहइ नहे?"

महेन्द्र उन्मत्त हइया गदगदकण्ठे बलिया उठिल, "विनोदिनी, तबे आमार भालोबासा तुमि पाये ठेलिबे ना?"

विनोदिनी कहिल, "माथाय करिया राखिब। भालोबासा आमि जन्मावधि एत बेशी पाइ नाइ ये, 'चाइ ना' बलिया फिराइया दिते पारि।"

महेन्द्र तखन दुइ हाते विनोदिनीर दुइ हात धरिया कहिल, "तबे एसो आमार घरे। तोमाके आज आमि व्यथा दियाछि, तुमिओ आमाके व्यथा दिया चलिया आसियाछ—यतक्षण ताहा एकेबारे मुछिया ना याइबे, ततक्षण आमार खाइया शुइया किछुतेइ सुख नाइ।"

विनोदिनी कहिल, "आज नय, आज आमाके छाड़िया दाओ। यदि तोमाके दुःख दिया थाकि, माप करो।"

महेन्द्र कहिल, "तुमिओ आमाके माप करो, नहिले आमि रात्रे घुमाइते पारिब ना।"

विनोदिनी कहिल, "माप करिलाम।"

महेन्द्र तखनइ अधीर हइया विनोदिनीर काछे हाते-हाते क्षमा ओ भालोबासार एकटा निदर्शन पाइबार जन्य व्यग्र हइया उठिल। किन्तु विनोदिनीर मुखेर दिके चाहिया थमकिया दाँड़ाइल। विनोदिनी सिँड़ि दिया नामिया चलिया गेल—महेन्द्रओ धीरे धीरे सिँड़ि दिया उपरे उठिया छादे वेड़ाइते लागिल। बिहारीर काछे हठात् आज महेन्द्र धरा पड़ियाछे, इहाते ताहार मने एकटा मुक्तिर आनन्द उपस्थित हइल। लुकाचुरिर ये-एकटा घृण्यता आछे, एकजनेर काछे प्रकाश हइयाइ येन ताहा अनेकटा दूर हइल। महेन्द्र मने मने कहिल, "आमि निजेके भालो बलिया मिथ्या करिया आर चालाइते चाहि ना—किन्तु आमि भालोबासि—आमि भालोबासि, से-कथा मिथ्या नहे।"—निजेर भालोबासार गौरवे ताहार स्पर्धा एतइ बाड़िया उठिल ये, निजेके मन्द बलिया से आपन मने उद्धतभावे गर्व करिते लागिल। निस्तब्ध सन्ध्याकाले नीरव-ज्योतिष्कमण्डली-अधिराजित अनन्त जगतेर प्रति एकटा अवज्ञा निक्षेप करिया मने मने कहिल,

"ये आमाके यत मन्दइ मने करे करुक, किन्तु आमि भालोबासि।" बलिया विनोदिनीर मानसी मूर्तिके दिया महेन्द्र समस्त आकाश, समस्त संसार, समस्त कर्तव्य आच्छन्न करिया फेलिल। बिहारी हठात् आसिया आज येन महेन्द्रेर जीवनेर छिपि-आँटा मसीपात्र उलटाइया भाङिया फेलिल—विनोदिनीर कालो चोख एवं कालो चुलेर कालि देखिते देखिते विस्तृत हइया पूर्वेकार समस्त सादा एवं समस्त लेखा लेपिया एकाकार करिया दिल।

२९

परदिन घुम भाङिया बिछाना हइते उठिबामात्रइ एकटि मधुर आवेगे महेन्द्रेर हृदय पूर्ण हइया गेल। प्रभातेर सूर्य। लोक येन ताहार समस्त भावनाय वासनाय सोना माखाइया दिल। की सुन्दर पृथिवी, की मधुमय आकाश, वातास येन पुष्परेणुर मतो समस्त मनके उड़ाइया लइया याइतेछे।

सकालवेलाय वैष्णव भिक्षुक खोल-करताल बाजाइया गान जुड़िया दियाछिल। दरोयान ताड़ाइया दिते उद्यत हइले, महेन्द्र दरोयानके भर्त्सना करिया तखनइ ताहादिगके एकटा टाका दिया फेलिल। बेहारा केरोसिनेर ल्याम्प लइया याइबार समय असावधाने फेलिया दिया चुरमार करिल—महेन्द्रेर मुखेर दिके ताकाइया भये ताहार प्राण शुकाइया गेल। महेन्द्र तिरस्कार मात्र ना करिया प्रसन्नमुखे कहिल, "ओरे ओखानटा भालो करिया झाँट दिया फेलिस—येन काहारओ पाये काँच ना फोटे।" आज कोनो क्षतिकेइ क्षति बलिया मने हइल ना।

प्रेम एतदिन नेपथ्येर आड़ाले लुकाइया बसिया छिल—आज से सम्मुखे आसिया पर्दा उठाइया दियाछे। जगत्संसारेर उपर हइते आवरण उठिया गेछे। प्रतिदिनेर पृथिवीर समस्त तुच्छता आज अन्तर्हित हइल। गाछपाला, पशुपक्षी, पथेर जनता, नगरेर कोलाहल, सकलइ आज अपरूप। एइ विश्वव्यापी नूतनता एतकाल छिल कोथाय।

महेन्द्रेर मने हइते लागिल, आज येन विनोदिनीर सङ्गे अन्यदिनेर मतो सामान्यभावे मिलन हइबे ना। आज येन कविताय कथा बलिले एवं संगीते भाव प्रकाश करिले, तबे ठीक उपयुक्त हय। आजिकार दिनके ऐश्वर्ये सौन्दर्ये पूर्ण करिया महेन्द्र सृष्टिछाड़ा समाजछाड़ा एकटा आरब्य उपन्यासेर अद्भुत दिनेर मतो करिया तुलिते चाय। ताहा सत्य हइबे, अथच स्वप्न हइबे—ताहाते संसारेर कोनो विधिविधान, कोनो दायित्व, कोनो वास्तविकता थाकिबे ना।

आज सकाल हइते महेन्द्र चञ्चल हइया बेड़ाइते लागिल, कालेजे याइते पारिल ना ; कारण, मिलनेर लग्नटि कखन अकस्मात् आविर्भूत हइबे, ताहा तो कोनो पञ्जिकाय लेखे ना।

गृहकार्ये रत विनोदिनीर कण्ठस्वर माझे माझे भाँड़ार हइते, रान्नाघर हइते महेन्द्रेर काने आसिया पौँछिते लागिल। आज ताहा महेन्द्रेर भालो लागिल ना--आज से विनोदिनीके मने मने संसार हइते बहुदूरे स्थापन करियाछे।

समय काटिते चाय ना। महेन्द्रेर स्नानाहार हइया गेल--समस्त गृहकर्मेर विरामे मध्याह्न निस्तब्ध हइया आसिल। तबु विनोदिनीर देखा नाइ। दुःखे एवं सुखे, अधैर्ये एवं आशाय महेन्द्रेर मनोयन्त्रेर समस्त तारगुला झंकृत हइते लागिल।

कालिकार काड़ाकाड़ि-करा सेइ विषवृक्षखानि नीचेर बिछानाय पड़िया आछे। देखिबामात्र सेइ काड़ाकाड़िर स्मृतिते महेन्द्रेर मने पुलकावेश जागिया उठिल। विनोदिनी ये-बालिश चापिया शुइयाछिल, सेइ बालिशटा टानिया लइया महेन्द्र ताहाते माथा राखिल ; एवं विषवृक्षखानि तुलिया लइया ताहार पाता उलटाइते लागिल। क्रमे कखन एक समय पड़ाय मन लागिया गेल, कखन पाँचटा बाजिया गेल---हुँश हइल ना।

एमन समय एकटि मोरादाबादि खुञ्चेर उपर थालाय फल ओ सन्देश एवं रेकाबे बरफचिनिसंयुक्त सुगन्धित दलित खरमुजा लइया विनोदिनी घरे प्रवेश करिल एवं महेन्द्रेर सम्मुखे राखिया कहिल, "की करितेछ, ठाकुरपो। तोमार हइल की। पाँचटा बाजिया गेछे, एखनो तोमार हातमुख-धोया कापड़ छाड़ा हइल ना ?"

महेन्द्रेर मने एकटा धाक्का लागिल। महेन्द्रेर की हइयाछे, से कि जिज्ञासा करिबार विषय। विनोदिनीर से कि अगोचर थाका उचित। आजिकार दिन कि अन्य दिनेरइ मतो। पाछे याहा आशा करियाछिल, हठात् ताहार उलटा किछु देखिते पाय, एइ भये महेन्द्र गतकल्यकार कथा स्मरण कराइया कोनो दाबि उत्थापन करिते पारिल ना।

महेन्द्र खाइते बसिल। विनोदिनी छादे-बिछानो रौद्रे-देओया महेन्द्रेर कापड़गुलि द्रुतपदे घरे बहिया आनिया निपुण हस्ते भाँज करिया कापड़ेर आलमारिर मध्ये तुलिते लागिल।

महेन्द्र कहिल, "एकटु रोसो, आमि खाइया उठिया तोमार साहाय्य करितेछि।"

विनोदिनी जोड़हात करिया कहिल, "दोहाइ तोमार, आर या कर साहाय्य करियो ना।"

महेन्द्र खाइया उठिया कहिल, "बटे! आमाके अकमण्य ठाओराइयाछ! आच्छा, आज आमार परीक्षा हउक।" बलिया कापड़ भाँज करिबार वृथा चेष्टा करिते लागिल।

विनोदिनी महेन्द्रेर हात हइते कापड़ काड़िया लइया कहिल, "ओगो मशाय, तुमि राखो, आमार काज बाड़ाइयो ना।"

महेन्द्र कहिल, "तबे तुमि काज करिया याओ, आमि देखिया शिक्षालाभ करि।" बलिया आलमारिर सम्मुखे विनोदिनीर काछे आसिया माटिते आसन करिया बसिल। विनोदिनी कापड़ झाड़िबार छले एकबार करिया महेन्द्रेर पिठेर उपर आछड़ाइया कापड़गुलि परिपाटिपूर्वक भाँज करिया आलमारिते तुलिते लागिल।

आजिकार मिलन एमनि करिया आरम्भ हइल। महेन्द्र प्रत्युष हइते येरूप कल्पना करितेछिल, सेइ अपूर्वतार कोनो लक्षणइ नाइ। एरूप भावे मिलन काव्ये लिखिबार, संगीते गाहिबार, उपन्यासे रचिबार योग्य नहे। किन्तु तबु महेन्द्र दु:खित हइल ना, वरञ्च एकटु आराम पाइल। ताहार काल्पनिक आदर्शके केमन करिया खाड़ा करिया राखित, किरूप ताहार आयोजन, की कथा बलित, की भाव प्रकाश करिते हइत, सकल प्रकार सामान्यताके की उपाये दूरे राखित, ताहा महेन्द्र ठाओराइते पारितेछिल ना—एइ कापड़ झाड़ा ओ भाँज करार मध्ये हासि-तामाशा करिया से येन स्वरचित एकटा असम्भव दुरुह आदर्शेर हात हइते निष्कृति पाइया बाँचिल।

एमन समय राजलक्ष्मी घरे प्रवेश करिलेन। महेन्द्रके कहिलेन, "महिन, बउ कापड़ तुलितेछे, तुइ ओखाने बसिया की करितेछिस।"

विनोदिनी कहिल, "देखो तो पिसिमा, मिछामिछि केवल आमार काजे देरि कराइया दितेछेन।"

महेन्द्र कहिल, "विलक्षण। आमि आरो ओँर काजे साहाय्य करितेछिलाम।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "आमार कपाल! तुइ आबार साहाय्य करिबि! जान बउ, महिनेर बराबर ओइरकम। चिरकाल मा-खुड़िर आदर पाइया ओ यदि कोनो काज निजेर हाते करिते पारे।"

एइ बलिया माता परमस्नेहे कर्म-अपटु महेन्द्रेर प्रति नेत्रपात करिलेन। केमन करिया एइ अकर्मण्य एकान्त मातृस्नेहापेक्षी वयस्क सन्तानटिके सर्व-

प्रकार आरामे राखिते पारिबेन, विनोदिनीर सहित राजलक्ष्मीर सेइ एकमात्र परामर्श। एइ पुत्रसेवा व्यापारे विनोदिनीर प्रति निर्भर करिया तिनि नितान्त निश्चिन्त, परम सुखी। सम्प्रति विनोदिनीर मर्यादा ये महेन्द्र बुझियाछे एवं विनोदिनीके राखिबार जन्य ताहार यत्न हइयाछे, इहातेओ राजलक्ष्मी आनन्दित। महेन्द्रके शुनाइया शुनाइया तिनि कहिलेन, "बउ, आज तो तुमि महिनेर गरम कापड़ रोदे दिया तुलिले, काल महिनेर नूतन रुमालगुलिते उहार नामेर अक्षर सेलाइ करिया दिते हइबे। तोमाके एखाने आनिया अवधि यत्न-आदर करिते पारिलाम ना बाछा, केवल खाटाइया मारिलाम।"

विनोदिनी कहिल, "पिसिमा, अमन करिया यदि बल तबे बुझिब, तुमि आमाके पर भावितेछ।"

राजलक्ष्मी आदर करिया कहिलेन, "आहा, मा, तोमार मतो आपन आमि पाब कोथाय।"

विनोदिनीर कापड़ तोला शेष हइले राजलक्ष्मी कहिलेन, "एखन कि तबे सेइ चिनिर रसटा चड़ाइया दिब, ना, एखन तोमार अन्य काज आछे?"

विनोदिनी कहिल, "ना, पिसिमा, अन्य काज आर कइ। चलो, मिठाइ-गुलि तैरि करिया आसिगे।"

महेन्द्र कहिल, "मा, एइमात्र अनुताप करितेछिले उँहाके खाटाइया मारितेछ, आबार एखनइ काजे टानिया लइया चलिले?"

राजलक्ष्मी विनोदिनीर चिबुक स्पर्श करिया कहिलेन, "आमादेर लक्ष्मी मेये ये काज करितेइ भालोबासे।"

महेन्द्र कहिल, "आज सन्ध्यावलाय आमार हाते कोनो काज नाइ, भाबि-याछिलाम बालिके लइया एकटा बइ पड़िब।"

विनोदिनी कहिल, "पिसिमा, बेश तो, आज सन्ध्यावला आमरा दु-जनेइ ठाकुरपोर बइ-पड़ा शुनिते आसिब—की बल।"

राजलक्ष्मी भाबिलेन, "महिन आमार नितान्त एकला पड़ियाछे, एखन सकले मिलिया ताहाके भुलाइया राखा आवश्यक।" कहिलेन, "ता बेश तो, महिनेर खाबार तैरि शेष करिया आमरा आज सन्ध्यावला पड़ा शुनिते आसिब। की बलिस, महिन।"

विनोदिनी महेन्द्रेर मुखेर दिके कटाक्षपात करिया एकबार देखिया लइल। महेन्द्र कहिल, "आच्छा।" किन्तु ताहार आर उत्साह रहिल ना। विनो-दिनी राजलक्ष्मीर सङ्गे-सङ्गेइ बाहिर हइया गेल।

महेन्द्र राग करिया भाबिल, "आमिओ आज बाहिर हइया याइब—देरि करिया बाड़ि फिरिब।" बलिया तखनइ बाहिरे याइबार कापड़ परिल। किन्तु संकल्प काजे परिणत हइल ना। महेन्द्र अनेकक्षण धरिया छादे पायचारि करिया बेड़ाइल, सिंड़िर दिके अनेक बार चाहिल, शेषे घरेर मध्ये आसिया बसिया पड़िल। विरक्त हइया मने मने कहिल, "आमि आज मिठाइ स्पर्श ना करिया माके जानाइया दिब, एत दीर्घकाल धरिया चिनिर रस ज्वाल दिले ताहाते मिष्टत्व थाके ना।"

आज आहारेर समय विनोदिनी राजलक्ष्मीके सङ्गे करिया आनिल। राजलक्ष्मी ताँहार हाँपानिर भये प्राय उपरे उठिते चान ना, विनोदिनी ताँहाके अनुरोध करियाइ सङ्गे आनियाछे। महेन्द्र अत्यन्त गम्भीर मुखे खाइते बसिल।

विनोदिनी कहिल, "ओ की ठाकुरपो, आज तुमि किछुइ खाइतेछ ना ये।"

राजलक्ष्मी व्यस्त हइया जिज्ञासा करिलेन, "किछु असुख करे नाइ तो?"

विनोदिनी कहिल, "एत करिया मिठाइ करिलाम, किछु मुखे दितेइ हइबे। भालो हयनि बुझि? तबे थाक्। ना ना, अनुरोधे पड़िया जोर करिया खाओया किछु नय। ना ना, काज नाइ।"

महेन्द्र कहिल, "भालो मुशकिलेइ फेलिले। मिठाइटाइ सब चेये खाइबार इच्छा, लागितेछेओ भालो, तुमि बाधा दिले शुनिब केन।"

दुइटि मिठाइ महेन्द्र निःशेषपूर्वक खाइल—ताहार एकटि दाना, एकटु गुंड़ा पर्यन्त फेलिल ना।

आहारान्ते तिन जने महेन्द्रेर शोबार घरे आसिया बसिलेन। पड़िबार प्रस्तावटा महेन्द्र आर तुलिल ना। राजलक्ष्मी कहिलेन, "तुइ ये की बइ पड़िबि बलियाछिलि, आरम्भ कर ना।"

महेन्द्र कहिल, "किन्तु ताहाते ठाकुर-देवतार कथा किछुइ नाइ, तोमार शुनिते भालो लागिबे ना।"

भालो लागिबे ना! येमन करिया होक, भालो लागिबार जन्य राजलक्ष्मी कृतसंकल्प। महेन्द्र यदि तुर्कि भाषाओ पड़े, ताँहार भालो लागितेइ हइबे। आहा बेचारा महिन, बउ काशी गेछे, एकला पड़िया आछे—ताहार या भालो लागिबे मातार ताहा भालो ना लागिले चलिबे केन।

विनोदिनी कहिल, "एक काज करो-ना ठाकुरपो, पिसिमार घरे बांला शान्तिशतक आछे, अन्य बइ राखिया आज सेइटे पड़िया शोनाओ ना। पिसिमारओ भालो लागिबे, सन्ध्याटाओ काटिबे भालो।"

महेन्द्र नितान्त करुणभावे एकबार विनोदिनीर मुखेर दिके चाहिल। एमन समय झि आसिया खबर दिल, "मा, कायेत-ठाकरुन आसिया तोमार घरे बसिया आछेन।"

कायेत-ठाकरुन राजलक्ष्मीर अन्तरङ्ग बन्धु। सन्ध्यार पर ताँहार सङ्गे गल्प करिबार प्रलोभन संवरण करा राजलक्ष्मीर पक्षे दुःसाध्य। तबु झिके बलिलेन, "कायेत-ठाकरुनके बल्, आज महिनेर घरे आमार एकटु काज आछे, काल तिनि येन अवश्य-अवश्य करिया आसेन।"

महेन्द्र ताड़ाताड़ि कहिल, "केन मा, तुमि ताँर सङ्गे देखा करियाइ एसो-ना।"

विनोदिनी कहिल, "काज की पिसिमा, तुमि एखाने थाको, आमि बरञ्च कायेत-ठाकरुनेर काछे गिया बसिगे।"

राजलक्ष्मी प्रलोभन संवरण करिते ना पारिया कहिलेन, "बउ, तुमि ततक्षण एखाने बोसो—देखि, यदि कायेत-ठाकरुनके विदाय करिया आसिते पारि। तोमरा पड़ा आरम्भ करिया दाओ—आमार जन्य अपेक्षा करियो ना।"

राजलक्ष्मी घरेर बाहिर हइबामात्र महेन्द्र आर थाकिते पारिल ना—बलिया उठिल, "केन तुमि आमाके इच्छा करिया एमन करिया मिछामिछि पीड़न कर।"

विनोदिनी येन आश्चर्य हइया कहिल, "से की, भाइ! आमि तोमाके पीड़न की करिलाम। तबे कि तोमार घरे आसा आमार दोष हइयाछे। काज नाइ, आमि याइ।" बलिया विमर्षमुखे उठिवार उपक्रम करिल।

महेन्द्र ताहार हात धरिया फेलिया कहिल, "अमनि करियाइ तो तुमि आमाके दग्ध कर।"

विनोदिनी कहिल, "इस, आमार ये एत तेज, ताहा तो आमि जानिताम ना। तोमारओ तो प्राण कठिन कम नय, अनेक सह्य करिते पार। खुब ये झलसिया-पुड़िया गेछ, चेहारा देखिया ताहा किछु बुझिबार जो नाइ।"

महेन्द्र कहिल, "चेहाराय की बुझिबे।" बलिया विनोदिनीर हात बलपूर्वक लइया निजेर बुकेर उपर चापिया धरिल।

विनोदिनी, "उः" बलिया चीत्कार करिया उठितेइ महेन्द्र ताड़ाताड़ि हात छाड़िया दिया कहिल, "लागिल कि।"

देखिल, काल विनोदिनीर हातेर येखानटा काटिया गियाछिल, सेइखान दिया आबार रक्त पड़िते लागिल। महेन्द्र अनुतप्त हइया कहिल, "आमि

भुलिया गियाछिलाम—भारि अन्याय करियाछि। आज किन्तु एखनइ तोमार ओ-जायगाटा बाँधिया ओषुध लागाइया दिब—किछुतेइ छाड़िब ना।"

विनोदिनी कहिल, "ना, ओ किछुइ ना। आमि ओषुध दिब ना।"

महेन्द्र कहिल, "केन दिबे ना।"

विनोदिनी कहिल, "केन आबार की। तोमार आर डाक्तारि करिते हइबे ना, ओ येमन आछे थाक्।"

महेन्द्र मुहूर्तेर मध्ये गम्भीर हइया गेल—मने मने कहिल, "किछुइ बुझिबार जो नाइ। स्त्रीलोकेर मन।"

विनोदिनी उठिल। अभिमानी महेन्द्र बाधा ना दिया कहिल, "कोथाय याइतेछ।"

विनोदिनी कहिल, "काज आछे।" बलिया धीरपदे चलिया गेल।

मिनिटखानेक बसियाइ महेन्द्र विनोदिनीके फिराइया आनिबार जन्य द्रुत उठिया पड़िल; सिंड़िर काछ पर्यन्त गियाइ फिरिया आसिया एकला छादे बेड़ाइते लागिल।

विनोदिनी अहरह आकर्षणओ करे, अथच विनोदिनी एक मुहूर्त काछे आसितेओ देय ना। अन्ये ताहाके जिनिते पारे ना, ए गर्व महेन्द्रेर छिल, ताहा से सम्प्रति विसर्जन दियाछे,—किन्तु चेष्टा करिलेइ अन्यके से जिनिते पारे, ए गर्वटुकुओ कि राखिते पारिबे ना। आज से हार मानिल, अथच हार मानाइते पारिल ना। हृदयक्षेत्रे महेन्द्रेर माथा बड़ो उच्चेइ छिल—से काहाकेओ आपनार समकक्ष बलिया जानित ना—आज सेइखानेइ ताहाके धुलाय माथा लुटाइते हइल। ये श्रेष्ठता हाराइल ताहार बदले किछु पाइलओ ना। भिक्षुकेर मतो रुद्ध द्वारेर सम्मुखे सन्ध्यार समय रिक्तहस्ते पथे दाँड़ाइया थाकिते हइल।

फाल्गुन-चैत्रमासे बिहारीदेर जमिदारी हइते सरषे-फुलेर मधु आसित, प्रति वत्सरइ से ताहा राजलक्ष्मीके पाठाइया दित—एबारओ पाठाइया दिल।

विनोदिनी मधुभाण्ड लइया स्वयं राजलक्ष्मीर काछे गिया कहिल, "पिसि-मा, बिहारी-ठाकुरपो मधु पाठाइयाछेन।"

राजलक्ष्मी ताहा भाँड़ारे तुलिया राखिते उपदेश दिलेन। विनोदिनी मधु तुलिया आसिया राजलक्ष्मीर काछे बसिल। कहिल, "बिहारी-ठाकुरपो कखनो तोमादेर तत्त्व लइते भोलेन ना। बेचारार निजेर मा नाइ नाकि, ताइ तोमाकेइ मार मतो देखेन।"

बिहारीके राजलक्ष्मी एमनि महेन्द्रेर छाया बलिया जानितेन ये, ताहार

कथा तिनि विशेष-किछु भाबितेन ना—से ताँहादेर बिना-मूल्येर बिना-यत्नेर बिना-विन्तार अनुगत लोक छिल। विनोदिनी यखन राजलक्ष्मीके मातृहीन बिहारीर मातृस्थानीया बलिया उल्लेख करिल, तखन राजलक्ष्मीर मातृहृदय अकस्मात् स्पर्श करिल। हठात् मने हइल, "ता बटे, बिहारीर मा नाइ एवं आमाकेइ से मार मतो देखे।" मने पड़िल, रोगे तापे संकटे बिहारी बराबर बिना-आह्वाने, बिना-आड़म्बरे ताँहाके निःशब्द निष्ठार सहित सेवा करियाछे; राजलक्ष्मी ताहा निश्वासप्रश्वासेर मतो सहजे ग्रहण करियाछेन एवं सेजन्य काहारओ काछे कृतज्ञ हओयार कथा ताँहार मनेओ उदय हय नाइ। किन्तु बिहारीर खोंजखबर के राखियाछे। यखन अन्नपूर्णा छिलेन तिनि राखितेन बटे—राजलक्ष्मी भाबितेन, "बिहारीके वशे राखिबार जन्य अन्नपूर्णा स्नेहेर आड़म्बर करितेछेन।"

राजलक्ष्मी आज निश्वास फेलिया कहिलेन, "बिहारी आमार आपन छेलेर मतोइ बटे।"

बलियाइ मने उदय हइल, बिहारी ताँहार आपन छेलेर चेये ढेर बेशि करे—एवं कखनो विशेष किछु प्रतिदान ना पाइयाओ ताँहादेर प्रति से भक्ति स्थिर राखियाछे। इहा भाविया ताँहार अन्तरेर मध्य हइते दीर्घनिश्वास पड़िल।

विनोदिनी कहिल, "बिहारी-ठाकुरपो तोमार हातेर रान्ना खाइते बड़ो भालोबासेन।"

राजलक्ष्मी सस्नेहगर्वे कहिलेन, "आर-कारो माछेर झोल ताहार मुखे रोचे ना।"

बलिते बलिते मने पड़िल, अनेक दिन बिहारी आसे नाइ। कहिलेन, "आच्छा बउ, बिहारीके आजकाल देखिते पाइ ना केन।"

विनोदिनी कहिल, "आमिओ तो ताइ भाबितेछिलाम, पिसिमा। ता, तोमार छेलेटि विवाहेर पर हइते निजेर बउके लइयाइ एमनि मातिया रहियाछे—बन्धुबान्धवरा आसिया आर की करिबे बलो।"

कथाटा राजलक्ष्मीर अत्यन्त संगत बोध हइल। स्त्रीके लइया महेन्द्र ताहार समस्त हितैषीदेर दूर करियाछे। बिहारीर तो अभिमान हइतेइ पारे—केन से आसिबे। बिहारीके निजेर दले पाइया ताहार प्रति राजलक्ष्मीर समवेदना बाड़िया उठिल। बिहारी ये छेलेवेला हइते एकान्त निःस्वार्थभावे महेन्द्रेर कत उपकार करियाछे, ताहार जन्य कतबार कत कष्ट सह्य करियाछे, से—समस्त तिनि विनोदिनीर काछे विवृत करिया बलिते लागिलेन—छेलेर

उपर ताँहार निजेर या नालिश ता बिहारीर विवरण द्वारा समर्थन करिते लागिलेन। दु-दिन बउके पाइया महेन्द्र यदि ताहार चिरकालेर बन्धुके एमन अनादर करे, तबे संसारे न्यायधर्म आर रहिल कोथाय।

विनोदिनी कहिल, "काल रविवार आछे, तुमि बिहारी-ठाकुरपोके निमन्त्रण करिया खाओयाओ, तिनि खुशि हइबेन।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "ठिक बलियाछ बउ, ता हइले महिनके डाकाइ, से बिहारीके निमन्त्रण करिया पाठाइबे।"

विनोदिनी। ना पिसिमा, तुमि निजे निमन्त्रण करो।

राजलक्ष्मी। आमि कि तोमादेर मतो लिखिते पड़िते जानि।

विनोदिनी। ता होक, तोमार हइया ना-हय आमिइ लिखिया दितेछि।

विनोदिनी राजलक्ष्मीर नाम दिया निजेइ निमन्त्रण-चिठि लिखिया पाठाइल।

रविवार दिन महेन्द्रेर अत्यन्त आग्रहेर दिन। पूर्वरात्रि हइतेइ ताहार कल्पना उद्दाम हइया उठिते थाके, यदिओ ए-पर्यन्त ताहार कल्पनार अनुरूप किछुइ हय नाइ—तबु रविवारेर भोरेर आलो ताहार चक्षे मधुवर्षण करिते लागिल। जाग्रत नगरीर समस्त कोलाहल ताहार काने अपरूप संगीतेर मतो आसिया प्रवेश करिल।

किन्तु व्यापारखाना की। मार आज कोनो व्रत आछे नाकि। अन्य-दिनेर मतो विनोदिनीर प्रति गृहकर्मेर भार दिया तिनि तो विश्राम करितेछेन ना। आज तिनि निजेइ व्यस्त हइया बेड़ाइतेछेन।

एइ हाङ्गामे दशटा बाजिया गेल—इतिमध्ये महेन्द्र कोनो छुताय विनो-दिनीर सङ्गे एक मुहूर्त विरले देखा करिते पारिल ना। बइ पड़िते चेष्टा करिल, पड़ाय किछुतेइ मन बसिल ना—खबरेर कागजेर एकटा अनावश्यक विज्ञापने पनेरो मिनिट दृष्टि आबद्ध हइया रहिल। आर थाकिते पारिल ना। नीचे गिया देखिल, मा ताँहार घरेर बारान्दाय एकटा तोला उनाने राँधितेछेन एवं विनोदिनी कटिदेशे दृढ़ करिया आँचल जड़ाइया जोगान दिते व्यस्त।

महेन्द्र जिज्ञासा करिल, "आज तोमादेर व्यापारटा की। एत धुमधाम ये।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "बउ तोमाके बले नाइ? आज ये बिहारीके निमन्त्रण करियाछि।"

बिहारीके निमन्त्रण! महेन्द्रेर सर्वशरीर ज्वलिया उठिल। तत्क्षणात् कहिल, "किन्तु मा, आमि तो थाकिते पारिब ना।"

राजलक्ष्मी। केन।

महेन्द्र। आमार ये बाहिरे याइते हइबे।

राजलक्ष्मी। खाओयादाओया करिया यास, बेशि देरि हइबे ना।

महेन्द्र। आमार ये बाहिरे निमन्त्रण आछे।

विनोदिनी मुहूर्तेर जन्य महेन्द्रेर मुखे कटाक्षपात करिया कहिल, "यदि निमन्त्रण थाके, ता हइले उनि यान-ना, पिसिमा। नाहय आज बिहारी-ठाकुरपो एकलाइ खाइबेन।"

किन्तु निजेर हातेर यत्नेर रान्ना महिनके खाओयाइते पारिबेन ना, इहा राजलक्ष्मीर सहिबे केन। तिनि यतइ पीड़ापीड़ि करिते लागिलेन, महिन ततइ बाँकिया दाँड़ाइल। "अत्यन्त जरुरि निमन्त्रण, किछुतेइ काटाइबार जो नाइ—बिहारीके निमन्त्रण करिबार पूर्वे आमार सहित परामर्श करा उचित छिल" इत्यादि।

राग करिया महेन्द्र एइरूपे माके शास्ति दिबार व्यवस्था करिल। राजलक्ष्मीर समस्त उत्साह चलिया गेल। ताँहार इच्छा हइल, रान्ना फेलिया तिनि चलिया यान। विनोदिनी कहिल, "पिसिमा, तुमि किछु भाबियो ना—ठाकुरपो मुखे आस्फालन करितेछेन, किन्तु आज उँहार बाहिरे निमन्त्रणे याओया हइतेछे ना।"

राजलक्ष्मी माथा नाड़िया कहिलेन, "ना बाछा, तुमि महिनके जान ना, ओ या एकबार धरे ता किछुतेइ छाड़े ना।"

किन्तु विनोदिनी महेन्द्रके राजलक्ष्मीर चेये कम जाने ना, ताहाइ प्रमाण हइल। महेन्द्र बुझियाछिल, बिहारीके विनोदिनीइ निमन्त्रण कराइयाछे। इहाते ताहार हृदय ईर्षाय यतइ पीड़ित हइते लागिल, ततइ ताहार पक्षे दूरे याओया कठिन हइल। बिहारी की करे, विनोदिनी की करे, ताहा ना देखिया से बाँचिबे की करिया। देखिया ज्वलिते हइबे, किन्तु देखाओ चाइ।

बिहारी आज अनेक दिन परे निमन्त्रित-आत्मीय-भावे महेन्द्रेर अन्तःपुरे प्रवेश करिल। बाल्यकाल हइते ये घर ताहार परिचित एवं येखाने से घरेर छेलेर मतो अवारितभावे प्रवेश करिया दौरात्म्य करियाछे, ताहार द्वारेर काछे आसिया मुहूर्तेर जन्य से थमकिया दाँड़ाइल—एकटा अश्रुतरङ्ग पलकेर मध्ये उच्छ्वसित हइया उठिबार जन्य ताहार वक्षकवाटे आघात करिल। सेइ आघात संवरण करिया लइया से स्मितहास्ये घरे प्रवेश करिया सद्यःस्नाता राजलक्ष्मीके प्रणाम करिया ताँहार पायेर धुला लइल। बिहारी यखन सर्वदा यातायात करित, तखन एरूप अभिवादन ताहादेर

प्रथा छिल ना। आज येन से बहुदूरप्रवास हइते पुनर्वार घरे फिरिया आसिल। बिहारी प्रणाम करिया उठिबार समय राजलक्ष्मी सस्नेहे ताहार माथाय हस्तस्पर्श करिलेन।

राजलक्ष्मी आज निगूढ़ सहानुभूति-वशत बिहारीर प्रति पूर्वेर चेये अनेक बेशि आदर ओ स्नेह प्रकाश करिलेन। कहिलेन, "ओ बेहारि, तुइ एतदिन आसिस नाइ केन। आमि रोज मने करिताम, आज निश्चय बेहारि आसिबे, किन्तु तोर आर देखा नाइ।"

बिहारी हासिया कहिल, "रोज आसिले तो तोमार बिहारीके रोजमने करिते ना, मा। महिनदा कोथाय।"

राजलक्ष्मी विमर्ष हइया कहिलेन, "महिनेर आज कोथाय निमन्त्रण आछे, से आज किछुतेइ थाकिते पारिल ना।"

शुनिबामात्र बिहारीर मनटा विकल हइया गेल। आशैशव प्रणयेर शेष एइ परिणाम? एकटा दीर्घनिश्वास फेलिया मन हइते समस्त विषाद-वाष्प उपस्थितमत ताड़ाइया दिबार चेष्टा करिया बिहारी जिज्ञासा करिल, "आज की रान्ना हइयाछे शुनि।" बलिया ताहार निजेर प्रिय व्यञ्जन-गुलिर कथा जिज्ञासा करिते लागिल। राजलक्ष्मीर रन्धनेर दिन बिहारी किछु अतिरिक्त आड़म्बर करिया निजेके लुब्ध बलिया परिचय दित—आहार-लोलुपता देखाइया बिहारीर मातृहृदयशालिनी राजलक्ष्मीर स्नेह काड़िया लइत। आजओ ताँहार स्वरचित व्यञ्जन सम्बन्धे बिहारीर अतिमात्राय कौतूहल देखिया, राजलक्ष्मी हासिते हासिते ताँहार लोभातुर अतिथिके आश्वास दिलेन।

एमन समय महेन्द्र आसिया बिहारीके शुष्कस्वरे दस्तुरमत जिज्ञासा करिल, "की बिहारी, केमन आछ।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "कइ महिन, तुइ तोर निमन्त्रणे गेलि ना।"

महेन्द्र लज्जा ढाकिते चेष्टा करिया कहिल, "ना, सेटा काटाइया देओया गेछे।"

स्नान करिया आसिया विनोदिनी यखन देखा दिल, तखन बिहारी प्रथमटा किछुइ बलिते पारिल ना। विनोदिनी ओ महेन्द्रेर ये दृश्य से देखियाछिल, ताहा ताहार मने मुद्रित छिल।

विनोदिनी बिहारीर अनतिदूरे आसिया मदुस्वरे कहिल, "की ठाकुर-पो, एकेबारे चिनितेइ पार ना नाकि।"

बिहारी कहिल, "सकलकेइ कि चेना याय।"

विनोदिनी कहिल, "एकटु विवेचना थाकिलेइ याय।" बलिया खबर दिल, "पिसिमा, खाबार प्रस्तुत हइयाछे।"

महेन्द्र बिहारी खाइते बसिल ; राजलक्ष्मी अदूरे बसिया देखिते लागिलेन एवं विनोदिनी परिवेषण करिते लागिल।

महेन्द्रेर खाओयाय मनोयोग छिल ना, से केवल परिवेषणे पक्षपात लक्ष्य करिते लागिल। महेन्द्रेर मने हइल, बिहारीके परिवेषण करिया विनोदिनी येन एकटा विशेष सुख पाइतेछे। बिहारीर पातेइ ये विशेष करिया माछेर मुड़ा ओ दधिर सर पड़िल, ताहार उत्तम कैफियत छिल—महेन्द्र घरेर छेले, बिहारी निमन्त्रित। किन्तु मुख फुटिया नालिश करिबार भालो हेतुवाद छिल ना बलियाइ महेन्द्र आरो बेशि करिया ज्वलिते लागिल। असमये विशेष सन्धाने तपसिमाछ पाओया गियाछिल, ताहार मध्ये एकटि डिमओयाला छिल ; सेइ माछटि विनोदिनी बिहारीर पाते दिते गेले बिहारी कहिल, "ना ना, महिनदाके दाओ, महिनदा भालोबासे।" महेन्द्र तीव्र अभिमाने बलिया उठिल, "ना ना, आमि चाइ ना।" शुनिया विनोदिनी द्वितीय बार अनुरोधमात्र ना करिया से माछ बिहारीर पाते फेलिया दिल।

आहारान्ते दुइ बन्धु उठिया घरेर बाहिरे आसिले विनोदिनी ताड़ाताड़ि आसिया कहिल, "बिहारी-ठाकुरपो, एखनइ याइयो ना, उपरेर घरे एकटु बसिबे चलो।"

बिहारी कहिल, "तुमि खाइते याइबे ना?"

विनोदिनी कहिल, "ना, आज एकादशी।"

निष्ठुर विद्रूपेर एकटि सूक्ष्म हास्यरेखा बिहारीर ओष्ठप्रान्ते देखा दिल—ताहार अर्थ एइ ये, एकादशी-कराओ आछे। अनुष्ठानेर त्रुटि नाइ।

सेइ हास्येर आभासटुकु विनोदिनीर दृष्टि एड़ाय नाइ—तबु से येमन ताहार हातेर काटा घा सह्य करियाछिल, तेमनि करिया इहाओ सह्य करिल। नितान्त मिनतिर स्वरे कहिल, "आमार माथा खाओ, एकबार बसिबे चलो।"

महेन्द्र हठात् असंगत भावे उत्तेजित हइया बलिया उठिल, "तोमादेर किछुइ तो विवेचना नाइ—काज थाक् कर्म थाक्, इच्छा थाक् वा ना थाक्, तबु बसितेइ हइबे। एत अधिक आदरेर आमि तो कोनो माने बुझिते पारि ना।"

विनोदिनी उच्चहास्य करिया उठिल। कहिल, "बिहारी-ठाकुरपो, शोनो एकबार, तोमार महिनदार कथा शोनो। आदरेर माने आदर, अभिधाने ताहार आर कोनो द्वितीय माने लेखे ना।" (महेन्द्रेर प्रति) "याइ

बल ठाकुरपो, अधिक आदरेर माने शिशुकाल हइते तुमि यत परिष्कार बोझ, एमन आर केह बोझे ना।"

बिहारी कहिल, "महिनदा, एकटा कथा आछे, एकबार शुनिया याओ।" बलिया बिहारी विनोदिनीके कोनो विदायसम्भाषण ना करिया महेन्द्रके लइया बाहिरे गेल। विनोदिनी बारान्दार रेलिं धरिया चुप करिया दाँड़ाइया शून्य उठानेर शून्यतार दिके ताकाइया रहिल।

बिहारी बाहिरे आसिया कहिल, "महिनदा, आमि जानिते चाइ, एइखाने कि आमादेर बन्धुत्व शेष हइल।"

महेन्द्रेर बुकेर भितर तखन ज्वलितेछिल, विनोदिनीर परिहास-हास्य विद्युत्शिखार मतो ताहार मस्तिष्केर एक प्रान्त हइते आर एक प्रान्त बारंबार फिरिया फिरिया बिंधितेछिल—से कहिल, "मिटमाट हइले तोमार ताहाते विशेष सुविधा हइते पारे, किन्तु आमार काछे ताहा प्रार्थनीय बोध हय ना। आमार संसारेर मध्ये आमि बाहिरेर लोक ढुकाइते चाइ ना, अन्तःपुरके आमि अन्तःपुर राखिते चाइ।"

बिहारी किछु ना बलिया चलिया गेल।

ईर्षाजर्जर महेन्द्र एकबार प्रतिज्ञा करिल विनोदिनीर सङ्गे देखा करिब ना—ताहार परे विनोदिनीर सहित साक्षातेर प्रत्याशाय घरे-बाहिरे, उपरे-नीचे छटफट करिया बेड़ाइते लागिल।

३०

आशा एकदिन अन्नपूर्णाके जिज्ञासा करिल, "आच्छा मासिमा, मेसोमशायके तोमार मने पड़े?"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "आमि एगारो वत्सर वयसे विधवा हइयाछि, स्वामीर मूर्ति छायार मतो मने हय।"

आशा जिज्ञासा करिल, "मासि, तबे तुमि काहार कथा भाव।"

अन्नपूर्णा ईषत् हासिया कहिलेन, "आमार स्वामी एखन याँहार मध्ये आछेन, सेइ भगवानेर कथा भाबि।"

आशा कहिल, "ताहाते तुमि सुख पाओ?"

अन्नपूर्णा सस्नेहे आशार माथाय हात बुलाइया कहिलेन, "आमार से मनेर कथा तुइ की बुझिबि, बाछा। से आमार मन जाने, आर याँर कथा भाबि, तिनिइ जानेन।"

आशा मने मने भाबिते लागिल, "आमि याँर कथा रात्रिदिन भाबि, तिनि कि आमार मनेर कथा जानेन ना। आमि भालो करिया चिठि लिखिते पारि ना बलिया तिनि केन आमाके चिठि लेखा छाड़िया दियाछेन।"

आशा कयदिन महेन्द्रेर चिठि पाय नाइ। निश्वास फेलिया मने मने से भाबिल, "चोखेर बालि यदि हातेर काछे थाकित, से आमार मनेर कथा ठिकमतो करिया लिखिया दिते पारित।"

कुलिखित तुच्छपत्र स्वामीर काछे आदर पाइबे ना मने करिया चिठि लिखिते किछुते आशार हात सरित ना। यतइ यत्न करिया लिखिते चाहित, ततइ ताहार अक्षर खाराप हइया याइत। मनेर कथा यतइ भालो करिया गुछाइया लइबार चेष्टा करित ततइ ताहार पद कोनोमतेइ सम्पूर्ण हइत ना। यदि एकटिमात्र "श्रीचरणेषु" लिखिया नाम सहि करिलेइ महेन्द्र अन्तर्यामी देवतार मतो सकल कथा बुझिते पारित, ताहा हइलेइ आशार चिठिलेखा सार्थक हइत। विधाता एतखानि भालोबासा दियाछिलेन, एकटुखानि भाषा देन नाइ केन।

मन्दिरे सन्ध्यारतिर परे गृहे फिरिया आसिया आशा अन्नपूर्णार पायेर काछे बसिया आस्ते आस्ते ताँहार पाये हात बुलाइया दिते लागिल। अनेक-क्षण निःशब्देर पर बलिल, "मासि, तुमि ये बल, स्वामीके देवतार मतो करिया सेवा करा स्त्रीर धर्म, किन्तु ये स्त्री मूर्ख, याहार बुद्धि नाइ, केमन करिया स्वामीर सेवा करिते हय ये जाने ना, से की करिबे।"

अन्नपूर्णा किछुक्षण आशार मुखेर दिके चाहिया रहिलेन—एकटि चापा दीर्घनिश्वास फेलिया कहिलेन, "बाछा, आमिओ तो मूर्ख, तबुओ तो भगवानेर सेवा करिया थाकि।"

आशा कहिल, "तिनि ये तोमार मन जानेन, ताइ खुशि हन। किन्तु मने करो, स्वामी यदि मूर्खेर सेवाय खुशि ना हन।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "सकलके खुशि करिबार शक्ति सकलेर थाके ना, बाछा। स्त्री यदि आन्तरिक श्रद्धाभक्तियत्नेर सङ्गे स्वामीर सेवा ओ संसारेर काज करे, तबे स्वामी ताहा तुच्छ करिया फेलिया दिलेओ स्वयं जगदीश्वर ताहा कुड़ाइया लन।"

आशा निरुत्तरे चुप करिया रहिल। मासिर एइ कथा हइते सान्त्वना ग्रहणेर अनेक चेष्टा करिल, किन्तु स्वामी याहाके तुच्छ करिया फेलिया दिबेन, जगदीश्वरओ ये ताहाके सार्थकता दिते पारिबेन, ए-कथा किछुतेइ ताहार मने लइल ना। से नतमुखे बसिया ताहार मासिर पाये हात बुलाइया दिते लागिल।

अन्नपूर्णा तखन आशार हात धरिया ताहाके आरो काछे टानिया लइलेन, ताहार मस्तकचुम्बन करिलेन; रुद्धकण्ठके दृढ़चेष्टाय बाधामुक्त करिया कहिलेन, "चुनि, दुःखे कष्टे ये-शिक्षालाभ हय शुधु काने शुनिया ताहा पाइबि ना। तोर एइ मासिओ एकदिन तोर बयसे तोरि मतो संसारेर सङ्गे मस्त करिया देनापाओनार सम्पर्क पातिया बसियाछिल। तखन आमिओ तोरइ मतो मने करिताम, याहार सेवा करिब ताहार सन्तोष ना जन्मिबे केन। याहार पूजा करिब ताहार प्रसाद ना पाइब केन। याहार भालोर चेष्टा करिब से आमार चेष्टाके भालो बलिया ना बुझिबे केन। पदे पदे देखिलाम, सेरूप हय ना। अवशेषे एकदिन असह्य हइया मने हइल, पृथिवीते आमार समस्तइ व्यर्थ हइयाछे—सेइ दिनइ संसार त्याग करिया आसिलाम। आज देखितेछि, आमार किछुइ निष्फल हय नाइ। ओरे बाछा, याँर सङ्गे आसल देनापाओनार सम्पर्क, यिनि एइ संसार-हाटेर मूल महाजन, तिनिइ आमार समस्तइ लइतेछिलेन, हृदये बसिया आज से-कथा स्वीकार करियाछेन। तखन यदि जानिताम! यदि ताँर कर्म बलिया संसारेर कर्म करिताम, ताँके दिलाम बलियाइ संसारके हृदय दिताम, ता हइले के आमाके दुःख दिते पारित।"

आशा बिछानाय शुइया शुइया अनेक रात्रि पर्यन्त अनेक कथा भाबिल, तबु भालो करिया किछुइ बुझिते पारिल ना। किन्तु पुण्यवती मासिर प्रति ताहार असीम भक्ति छिल, सेइ मासिर कथा सम्पूर्ण ना बुझिलेओ एक प्रकार शिरोधार्य करिया लइल। मासि सकल संसारेर उपरे याँहाके हृदये स्थान दियाछेन, ताँहार उद्देशे अन्धकारे बिछानाय उठिया बसिया गड़ करिया प्रणाम करिल। बलिल, "आमि बालिका, तोमाके जानि ना, आमि केवल आमार स्वामीके जानि, सेजन्य अपराध लइयो ना। आमार स्वामीके आमि ये पूजा दिइ भगवान, तुमि ताँहाके ताहा ग्रहण करिते बलियो। तिनि यदि ताहा पाये ठेलिया देन, तबे आमि आर बाँचिब ना। आमि आमार मासिमार मतो पुण्यवती नइ, तोमाके आश्रय करिया आमि रक्षा पाइब ना।" एइ बलिया आशा बार बार बिछानार उपर गड़ करिया प्रणाम करिल।

आशार जेठामशायेर फिरिबार समय हइल। विदायेर पूर्वसन्ध्याय अन्नपूर्णा आशाके आपनार कोले बसाइया कहिलेन, "चुनि, मा आमार, संसारेर शोक-दुःख-अमङ्गल हइते तोके सर्वदा रक्षा करिबार शक्ति आमार नाइ। आमार एइ उपदेश, येखान थेके यत कष्टइ पास, तोर विश्वास तोर भक्ति स्थिर राखिस, तोर धर्म येन अटल थाके।"

आशा ताँहार पायेर धुला लइया कहिल, "आशीर्वाद करो मासिमा, ताइ हइबे।"

३१

आशा फिरिया आसिल। विनोदिनी ताहार 'परे खुब अभिमान करिल—"बलि, एतदिन विदेशे रहिले, एकखाना चिठि लिखिते नाइ?"

आशा कहिल, "तुमिइ कोन् लिखिले भाइ, बालि।"

विनोदिनी। आमि केन प्रथमे लिखिब। तोमारइ तो लिखिबार कथा।

आशा विनोदिनीर गला जड़ाइया धरिया निजेर अपराध स्वीकार करिया लइल। कहिल, "जान तो भाइ, आमि भालो लिखिते जानि ना। विशेष, तोमार मतो पण्डितेर काछे लिखिते आमार लज्जा करे।"

देखिते देखिते दुइ जनेर विवाद मिटिया गिया प्रणय उद्वेलित हइया उठिल।

विनोदिनी कहिल, "दिनरात्रि सङ्ग दिया तोमार स्वामीटिर अभ्यास तुमि एकेबारे खाराप करिया दियाछ। एकटि केह काछे नहिले थाकिते पारे ना।"

आशा। सेइजन्यइ तो तोमार उपरे भार दिया गियाछिलाम। केमन करिया सङ्ग दिते हय, आमार चेये तुमि भालो जान।

विनोदिनी। दिनटा तो एकरकम करिया कालेजे पाठाइया निश्चिन्त हइताम, किन्तु सन्ध्यावेलाय कोनोमतेइ छाड़ाछुड़ि नाइ—गल्प करिते हइबे, बइ पड़िया शुनाइते हइबे, आबदारेर शेष नाइ।

आशा। केमन जब्द। लोकेर मन भुलाइते यखन पार तखन लोकेइ वा छाड़िबे केन।

विनोदिनी। सावधान थाकिस, भाइ। ठाकुरपो ये-रकम बाड़ा-बाड़ि करेन, एक-एकबार सन्देह हय, बुझि वश करिबार विद्या जानि वा।

आशा हासिया कहिल, "तुमि जान ना तो के जाने। तोमार विद्या आमि एकटुखानि पाइले बाँचिया याइताम।"

विनोदिनी। केन, कार सर्वनाश करिबार इच्छा हइयाछे। घरे येटि आछे, सेइटिके रक्षा कर, परके भोलाइबार चेष्टा करिस ने भाइ बालि। बड़ो ल्याठा।

आशा विनोदिनीके हस्तद्वारा तर्जन करिया बलिल, "आः, की बकिस, तार ठिक नेइ।"

काशी हइते फिरिया आसार पर प्रथम साक्षातेइ महेन्द्र कहिल, "तोमार शरीर बेश भालो छिल देखितेछि, दिव्य मोटा हइया आसियाछ।"

आशा अत्यन्त लज्जाबोध करिल। कोनोमतेइ ताहार शरीर भालो थाका उचित छिल ना—किन्तु मूढ़ आशार किछुइ ठिकमतो चले ना; ताहार मन यखन एत खाराप छिल, तखनो ताहार पोड़ा शरीर मोटा हइया उठियाछिल; एके तो मनेर भाव व्यक्त करिते कथा जोटे ना, ताहाते आबार शरीरटाओ उल्टा बलिते थाके।

आशा मृदुस्वरे जिज्ञासा करिल, "तुमि केमन छिले।"

आगे हइले महेन्द्र कतक ठाट्टा, कतक मनेर सङ्गे बलित, "मरिया छिलाम।" एखन आर ठाट्टा करिते पारिल ना, गलार काछे आसिया बाधिया गेल। कहिल, "बेश छिलाम, मन्द छिलाम ना।"

आशा चाहिया देखिल, महेन्द्र पूर्वेर चेये येन रोगाइ हइयाछे—ताहार मुख पाण्डुवर्ण, चोखे एकप्रकार तीव्र दीप्ति। एकटा येन आभ्यन्तरिक क्षुधाय ताहाके अग्निजिह्वा दिया लेहन करिया खाइतेछे। आशा मने मने व्यथा अनुभव करिया भाबिल, "आहा, आमार स्वामी भालो छिलेन ना, केन आमि उँहाके फेलिया काशी चलिया गेलाम।" स्वामी रोगा हइलेन, अथच निजे मोटा हइल, इहातेओ निजेर स्वास्थ्येर प्रति आशार अत्यन्त धिक्कार जन्मिल।

महेन्द्र आर की कथा तुलिबे भाबिते भाबिते खानिक बादे जिज्ञासा करिल, "काकीमा भालो आछेन तो?"

से प्रश्नेर उत्तरे कुशल-संवाद पाइया ताहार आर द्वितीय कथा मने आना दुःसाध्य हइल। काछे एकटा छिन्न पुरातन खबरेर कागज छिल, सेइटे टानिया लइया महेन्द्र अन्यमनस्क भावे पड़िते लागिल। आशा मुख निचु करिया भाबिते लागिल, "एतदिन परे देखा हइल, किन्तु उनि आमार सङ्गे केन भालो करिया कथा कहिलेन ना, एमन कि, आमार मुखेर दिकेओ येन चाहिते पारिलेन ना। आमि तिन-चार दिन चिठि लिखिते पारि नाइ बलिया कि राग करियाछेन, आमि मासिर अनुरोधे बेशि दिन काशीते छिलाम बलिया कि विरक्त हइयाछेन।" अपराध कोन् छिद्र दिया केमन करिया प्रवेश करिल, इहाइ से नितान्त क्लिष्टहृदये सन्धान करिते लागिल।

महेन्द्र कालेज हइते फिरिया आसिल। अपराह्ने जलपानेर समय राजलक्ष्मी छिलेन, आशाओ घोमटा दिया अदूरे दुयार धरिया दाँड़ाइया छिल, किन्तु आर केहइ छिल ना।

राजलक्ष्मी उद्विग्न हइया जिज्ञासा करिलेन, "आज कि तोर असुख करियाछे, महिन।"

महेन्द्र विरक्तभावे कहिल, "ना मा, असुख केन करबे।"

राजलक्ष्मी। तबे तुइ ये किछु खाइतेछिस ना!

महेन्द्र पुनर्वार उत्त्यक्त स्वरे कहिल, "एइ तो, खाच्छि ना तो की।"

महेन्द्र ग्रीष्मेर सन्ध्याय एकखाना पातला चादर गाये छादेर एधारे ओधारे बेड़ाइतें लागिल। मने बड़ो आशा छिल, ताहादेर नियमित पड़ाटा आज क्षान्त थाकिबे ना। आनन्दमठ प्राय शेष हइयाछे, आर गुटि दुइ-तिन अध्याय बाकि आछे मात्र। विनोदिनी यत निष्ठुर होक से-कयटा अध्याय आज ताहाके निश्चय शुनाइया याइबे। किन्तु सन्ध्या अतीत हइल, समय उत्तीर्ण हइया गेल, गुरुभार नैराश्य बहिया महेन्द्रके शुइते याइते हइल।

सज्जित लज्जान्वित आशा धीरे धीरे शयनगृहे प्रवेश करिल। देखिल, बिछानाय महेन्द्र शुइया पड़ियाछे। तखन, केमन करिया अग्रसर हइबे भाबिया पाइल ना। विच्छेदेर पर किछुक्षण एकटा नूतन लज्जा आसे—येखानटिते छाड़िया याओया याय ठिक सेइखानटिते मिलिबार पूर्वे परस्पर परस्परेर निकट हइते नूतन सम्भाषणेर प्रत्याशा करे। आशा ताहार सेइ चिरपरिचित आनन्दशय्याटिते आज अनाहूत केमन करिया प्रवेश करिबे। द्वारेर काछे अनेकक्षण दाँड़ाइया रहिल—महेन्द्रेर कोनो साड़ा पाइल ना। अत्यन्त धीरे धीरे एक पा एक पा करिया अग्रसर हइते लागिल। यदि असतर्के दैवात् कोनो गहना बाजिया उठे तो से लज्जाय मरिया याय। कम्पितहृदये आशा मशारिर काछे आसिया अनुभव करिल, महेन्द्र घुमाइतेछे। तखन ताहार निजेर साजसज्जा ताहाके सर्वाङ्गे वेष्टन करिया परिहास करिते लागिल। इच्छा हइल, विद्युत्वेगे ए घर हइते बाहिर हइया अन्य कोथाओ गिया शोय।

आशा यथासाध्य निःशब्दे संकुचित हइया खाटेर उपर गिया उठिल। तबु ताहाते एतटुकु शब्द ओ नड़ाचड़ा हइल ये, महेन्द्र यदि सत्यइ घुमाइत, ताहा हइले जागिया उठित। किन्तु आज ताहार चक्षु खुलिल ना; केनना, महेन्द्र घुमाइतेछिल ना। महेन्द्र खाटेर अपर प्रान्ते पाश फिरिया शुइया छिल, सुतरां आशा ताहार पश्चाते शुइया रहिल। आशा ये निःशब्दे अश्रुपात करितेछिल, ताहा पिछन फिरियाओ महेन्द्र स्पष्ट बुझिते पारितेछिल। निजेर निष्ठुरताय ताहार हृत्पिण्डटाके येन जाँतार मतो पेषण करिया व्यथा दिते-छिल। किन्तु की कथा बलिबे, केमन करिया आदर करिबे, महेन्द्र ताहा

कोनोमतेइ भाबिया पाइल ना; मने मने निजेके सुतीव्र कशाघात करिते लागिल, ताहाते आघात पाइल, किन्तु उपाय पाइल ना। भाबिल, "प्रातः-काले तो घुमेर भान करा याइबे ना, तखन मुखोमुखि हइले आशाके की कथा बलिब।"

आशा निजेइ महेन्द्रेर से संकट दूर करिया दिल। से अति प्रत्युषेइ अपमानित साजसज्जा लइया बिछाना छाड़िया चलिया गेल, से-ओ महेन्द्रके मुख देखाइते पारिल ना।

३२

आशा भाबिते लागिल, "एमन केन हइल। आमि की करियाछि।" ये-जायगाय यथार्थ विपद, से-जायगाय ताहार चोख पड़िल ना। विनोदिनीके ये महेन्द्र भालोबासिते पारे, ए सम्भावनाओ ताहार मने उदय हय नाइ। संसारेर अभिज्ञता ताहार किछुइ छिल ना। ता छाड़ा विवाहेर अनतिकाल पर हइतेइ से महेन्द्रके याहा बलिया निश्चय जानियाछिल, महेन्द्र ये ताहा छाड़ा आर किछुइ हइते पारे, इहा ताहार कल्पनातेओ आसे नाइ।

महेन्द्र आज सकाल सकाल कालेजे गेल। कालेजयात्राकाले आशा बराबर जानलार काछे आसिया दाँड़ाइत, एवं महेन्द्र गाड़ि हइते एकबार मुख तुलिया देखित, इहा ताहादेर चिरकालेर नित्यप्रथा छिल। सेइ अभ्यास अनुसारे गाड़िर शब्द शुनिबामात्र यन्त्रचालितेर मतो आशा जानलार काछे आसिया उपस्थित हइल। महेन्द्रओ अभ्यासेर खातिरे एकबार चकितेर मतो उपरे चोख तुलिल; देखिल, आशा दाँड़ाइया आछे—तखनो ताहार स्नान हय नाइ, मलिन वस्त्र, असंयत केश, शुष्क मुख—देखिया निमेषेर मध्येइ महेन्द्र चोख नामाइया कोलेर बइ देखिते लागिल। कोथाय चोखे चोखे सेइ नीरव सम्भाषण, सेइ भाषापूर्ण हासि।

गाड़ि चलिया गेल; आशा सेइखानेइ माटिर उपर बसिया पड़िल। पृथिवी संसार समस्त विस्वाद हइया गेल। कलिकातार कर्मप्रवाहे तखन जोयार आसिबार समय। साड़े दशटा बाजियाछे—आपिसेर गाड़िर विराम नाइ, ट्रामेर पश्चाते ट्राम छुटितेछे—सेइ व्यस्ततावगवान कर्मकल्लोलेर अदूरे एइ एकटि वेदनास्तम्भित मुह्यमान हृदय अत्यन्त विसदृश।

हठात् एक समय आशार मने हइल, "बुझियाछि। ठाकुरपो काशी गियाछिलेन, सेइ खबर पाइया उनि राग करियाछेन। इहा छाड़ा इति-

मध्ये आर तो कोनो अप्रीतिकर घटना घटे नाइ। किन्तु आमार ताहाते की दोष छिल।"

भाबिते भाबिते अकस्मात् एक मुहूर्तेर जन्य येन आशार हृत्स्पन्दन बन्ध हइया गेल। हठात् ताहार आशङ्का हइल, महेन्द्र बुझि सन्देह करियाछेन, बिहारीर काशी याओयार सङ्गे आशारओ कोनो योग आछे। दुइ जने परामर्श करिया एइ काज। छि छि छि। एमन सन्देह ! की लज्जा ! एके तो बिहारीर सङ्गे ताहार नाम जड़ित हइया धिक्कारेर कारण घटियाछे, ताहार उपरे महेन्द्र यदि एमन सन्देह करे तबे तो आर प्राण राखा याय ना। किन्तु यदि कोनो सन्देहेर कारण हय, यदि कोनो अपराध घटिया थाके, महेन्द्र केन स्पष्ट करिया बले ना—विचार करिया ताहार उपयुक्त दण्ड केन ना देय। महेन्द्र खोलसा कोनो कथा ना बलिया केवलइ आशाके येन एड़ाइया बेड़ाइतेछे, ताइ आशार बार बार मने हइते लागिल, महेन्द्रेर मने एमन कोनो सन्देह आसियाछे, याहा निजेइ से अन्याय बलिया जाने, याहा से आशार काछे स्पष्ट करिया स्वीकार करितेओ लज्जा बोध करितेछे। नहिले एमन अपराधीर मतो ताहार चेहारा हइबे केन। क्रुद्ध विचारकेर तो एमन कुण्ठित भाव हइबार कथा नहे।

महेन्द्र गाड़ि हइते चकितेर मतो सेइ ये आशार म्लान करुण मुख देखिया गेल, ताहा समस्त दिने से मन हइते मुछिते पारिल ना। कालेजेर लेकचारेर मध्ये, श्रेणीबद्ध छात्रमण्डलीर मध्ये, सेइ वातायन, आशार सेइ अस्नात रुक्ष केश, सेइ मलिन वस्त्र, सेइ व्यथित-व्याकुल दृष्टिपात सुस्पष्टरेखाय बारंबार अङ्कित हइया उठिते लागिल।

कालेजेर काज सारिया से गोलदिघिर धारे बेड़ाइते लागिल। बेड़ाइते बेड़ाइते सन्ध्या हइया आसिल; आशार सङ्गे किरुप व्यवहार कर्तव्य ताहा से किछुतेइ भाबिया पाइल ना—सदय छलना, ना अकपट निष्ठुरता, कोन्‌टा उचित। विनोदिनीके परित्याग करिबे कि ना, से-तर्क आर मने उदयइ हय ना। दया एवं प्रेम, महेन्द्र उभयेर दाबि केमन करिया राखिबे।

महेन्द्र तखन मनके एइ बलिया बुझाइल ये, आशार प्रति एखनो ताहार ये भालोबासा आछे, ताहा अल्प स्त्रीर भाग्ये जोटे। सेइ स्नेह सेइ भालोबासा पाइले आशा केन ना सन्तुष्ट थाकिबे। विनोदिनी एवं आशा, उभयकेइ स्थान दिबार मतो प्रशस्त हृदय महेन्द्रेर आछे। विनोदिनीर सहित महेन्द्रेर ये पवित्र प्रेमेर सम्बन्ध ताहाते दाम्पत्य-नीतिर कोनो व्याघात हइबे ना।

एइरूप बुझाइया महेन्द्र मन हइते एकटा भार नामाइया फेलिल। विनो-

दिनी एवं आशा, काहाकेओ त्याग ना करिया दुइचन्द्रसेवित ग्रहेर मतो एइभावेइ से चिरकाल काटाइया दिते पारिबे, एइ मने करिया ताहार मन प्रफुल्ल हइया उठिल। आज रात्रे से सकाल सकाल बिछानाय प्रवेश करिया आदरे यत्ने स्निग्ध आलापे आशार मन हइते समस्त वेदना दूर करिया दिबे, इहा निश्चय करिया द्रुतपदे बाड़ि चलिया आसिल।

आहारेर समय आशा उपस्थित छिल ना; किन्तु से एक समय शुइते आसिबे तो, एइ मने करिया महेन्द्र बिछानार मध्ये प्रवेश करिल। किन्तु निस्तब्ध घरे सेइ शून्य शय्यार मध्ये कोन् स्मृति महेन्द्रेर हृदयके आविष्ट करिया तुलिल। आशार सहित नवपरिणयेर नित्य-नूतन लीलाखेला? ना। सूर्यालोकेर काछे ज्योत्स्ना येमन मिलाइया याय, से-सकल स्मृति तेमनि क्षीण हइया आसियाछे—एकटि तीव्र उज्ज्वल तरुणीमूर्ति, सरला बालिकार सलज्ज स्निग्धच्छविके कोथाय आवृत आच्छन्न करिया दीप्यमान हइया उठियाछे। विनोदिनीर सङ्गे विषवृक्ष लइया सेइ काड़ाकाड़ि मने पड़िते लागिल; सन्ध्यार पर विनोदिनी कपालकुण्डला पड़िया शुनाइते शुनाइते क्रमे रात्रि हइया आसित, बाड़िर लोक घुमाइया पड़ित, रात्रे निभृत कक्षेर सेइ स्तब्ध निर्जनताय विनोदिनीर कण्ठस्वर येन आवेशे मृदुतर ओ रुद्धप्राय हइया आसित, हठात् से आत्मसंवरण करिया बइ फेलिया उठिया पड़ित, महेन्द्र बलित, "तोमाके सिंड़िर नीचे पर्यन्त पौंछाइया दिया आसि।" सेइ सकल कथा बारंबार मने पड़िया ताहार सर्वाङ्गे पुलकसञ्चार करिते लागिल। रात्रि बाड़िया चलिल—महेन्द्रेर मने मने ईषत् आशङ्का हइते लागिल, एखनइ आशा आसिया पड़िबे; किन्तु आशा आसिल ना। महेन्द्र भाविल, "आमि तो कर्तव्येर जन्य प्रस्तुत छिलाम, किन्तु आशा यदि अन्याय राग करिया ना आसे तो आमि की करिब।" एइ बलिया निशीथरात्रे विनोदिनीर ध्यानके घनीभूत करिया तुलिल।

घड़िते यखन एकटा बाजिल, तखन महेन्द्र आर थाकिते पारिल ना, मशारि खुलिया बाहिर हइया पड़िल। छादे आसिया देखिल, ग्रीष्मेर ज्योत्स्नारात्रि बड़ो रमणीय हइयाछे। कलिकातार प्रकाण्ड निःशब्दता एवं सुप्ति येन स्तब्ध समुद्रेर जलराशिर न्याय स्पर्शगम्य बलिया बोध हइतेछे; असंख्य हर्म्यश्रेणीर उपर दिया महानगरीर निद्राके निबिड़तर करिया वातास मृदुगमने पदचारण करिया आसितेछे।

महेन्द्रेर बहुदिनेर रुद्ध आकांक्षा आपनाके आर धरिया राखिते पारिल ना। आशा काशी हइते फिरिया अवधि विनोदिनी ताहाके देखा देय नाइ।

ज्योत्स्नामद-विह्वल निर्जन रात्रि महेन्द्रके मोहाविष्ट करिया विनोदिनीर दिके ठेलिया लइया याइते लागिल। महेन्द्र सिँड़ि दिया नामिया गेल। विनोदिनीर घरेर सम्मुखेर बारान्दाय आसिया देखिल, घर बन्ध हय नाइ। घरे प्रवेश करिया देखिल, बिछाना तैरि रहियाछे, केह शोय नाइ। घरेर मध्ये पदशब्द शुनिते पाइया घरेर दक्षिणदिकेर खोला बारान्दा हइते विनोदिनी जिज्ञासा करिया उठिल, "के ओ।"

महेन्द्र अभिभूत आर्द्रकण्ठे उत्तर करिल, "विनोद, आमि।"

बलिया से एकेबारे बारान्दाय आसिया उपस्थित हइल।

ग्रीष्मरात्रिते बारान्दाय मादुर पातिया विनोदिनीर सङ्गे राजलक्ष्मी शुइया छिलेन, तिनि बलिया उठिलेन, "महिन, एत रात्रे तुइ एखाने ये।"

विनोदिनी ताहार घनकृष्ण भ्रूयुगेर नीचे हइते महेन्द्रेर प्रति वज्राग्नि निक्षेप करिल। महेन्द्र कोनो उत्तर ना दिया द्रुतपदे सेखान हइते चलिया गेल।

३३

परदिन प्रत्युष हइते घनघटा करिया आछे। किछुकाल असह्य उत्तापेर पर स्निग्धश्यामल मेघे दग्ध आकाश जुड़ाइया गेल। आज महेन्द्र समय हइबार पूर्वेइ कालेजे गेछे। ताहार छाड़ा-कापड़गुला मेझेर उपर पड़िया। आशा महेन्द्रेर मयला कापड़ गनिया गनिया, ताहार हिसाब राखिया धोबाके बुझाइया दितेछे।

महेन्द्र स्वभावत भोलामन असावधान लोक; एइजन्य आशार प्रति ताहार अनुरोध छिल धोबार बाड़ि दिबार पूर्वे ताहार छाड़ा-कापड़ेर पकेट तदन्त करिया लओया हय येन। महेन्द्रेर एकटा छाड़ा-जामार पकेटे हात दितेइ एकखाना चिठि आशार हाते ठेकिल।

सेइ चिठि यदि विषधर सापेर मूर्ति धरिया तखनइ आशार अंगुलि दंशन करित तबे भालो हइत; कारण, उग्र विष शरीरे प्रवेश करिले पाँच मिनिटेर मध्येइ ताहार चरम फल फलिया शेष हइते पारे, किन्तु विष मने प्रवेश करिले मृत्युयन्त्रणा आने—मृत्यु आने ना।

खोला चिठि बाहिर करिबामात्र देखिल, विनोदिनीर हस्ताक्षर। चकितेर मध्ये आशार मुख पांशुवर्ण हइया गेल। चिठि हाते लइया से पाशेर घरे गिया पड़िल—

'काल रात्रे तुमि ये-काण्डटा करिले, ताहातेओ कि तोमार तृप्ति हइल

ना। आज आबार केन खेमिर हात दिया आमाके गोपने चिठि पाठाइले। छि छि, से की मने करिल। आमाके तुमि कि जगते काहारओ काछे मुख देखाइते दिबे ना।

'आमार काछे की चाओ तुमि। भालोबासा? तोमार ए भिक्षावृत्ति केन। जन्मकाल हइते तुमि केवल भालोबासाइ पाइया आसितेछ, तबु तोमार लोभेर अन्त नाइ।

'जगते आमार भालोबासिबार एवं भालोबासा पाइबार कोनो स्थान नाइ। ताइ आमि खेला खेलिया भालोबासार खेद मिटाइया थाकि। यखन तोमार अवसर छिल, तखन सेइ मिथ्या खेलाय तुमिओ योग दियाछिले। किन्तु खेलार छुटि कि फुराय ना। घरेर मध्ये तोमार डाक पड़ियाछे, एखन आबार खेलार घरे उँकिझुँकि केन। एखन धुला झाड़िया घरे याओ। आमार तो घर नाइ, आमि मने मने एकला बसिया खेला करिब, तोमाके डाकिब ना।

'तुमि लिखियाछ, आमाके भालोबास। खेलार बेलाय से-कथा शोना याइते पारे—किन्तु यदि सत्य बलिते हय, ओ-कथा विश्वास करि ना। एक समय मने करिते तुमि आशाके भालोबासितेछ, सेओ मिथ्या; एखन मने करितेछ तुमि आमाके भालोबासितेछ, एओ मिथ्या। तुमि केवल निजेके भालोबासो।

'भालोबासार तृष्णाय आमार हृदय हइते वक्ष पर्यन्त शुकाइया उठियाछे—से तृष्णा पूरण करिबार सम्बल तोमार हाते नाइ, से आमि बेश भालो करियाइ देखियाछि। आमि तोमाके बारंबार बलितेछि, तुमि आमाके त्याग करो, आमार पश्चाते फिरियो ना; निर्लज्ज हइया आमाके लज्जा दियो ना। आमार खेलार शखओ मिटियाछे; एखन डाक दिले किछुतेइ आमार साड़ा पाइबे ना। चिठिते तुमि आमाके निष्ठुर बलियाछ—से-कथा सत्य हइते पारे; किन्तु आमार किछु दयाओ आछे—ताइ आज तोमाके आमि दया करिया त्याग करिलाम। ए-चिठिर यदि उत्तर दाओ, तबे बुझिब, ना पलाइले तोमार हात हइते आमार आर निष्कृति नाइ।'

चिठिखानि पड़िबामात्र मुहूर्त्तेर मध्ये चारिदिक हइते आशार समस्त अवलम्बन येन खसिया पड़िया गेल, शरीरेर समस्त स्नायुपेशी येन एकेबारेइ हाल छाड़िया दिल—निश्वास लइबार जन्य येन वातासटुकु पर्यन्त रहिल ना, सूर्य ताहार चोखेर उपर हइते समस्त आलो येन तुलिया लइल। आशा प्रथमे देयाल, ताहार पर आलमारि, ताहार पर चौकि धरिते धरिते माटिते

पड़िया गेल, क्षणकाल परे सचेतन हइया चिठिखाना आर-एक बार पड़िते चेष्टा करिल, किन्तु उद्‌भ्रान्तचित्ते किछुतेइ ताहार अर्थ ग्रहण करिते पारिल ना—कालो-कालो अक्षरगुला ताहार चोखेर उपर नाचिते लागिल। ए की। ए की हइल। ए केमन करिया हइल। ए की सम्पूर्ण सर्वनाश। से की करिबे, काहाके डाकिबे, कोथाय याइबे किछुइ भाबिया पाइल ना। डाङार उपरे उठिया माछ येमन खाबि खाय, ताहार बुकेर भितरटा तेमनि करिते लागिल। मज्जमान व्यक्ति येमन कोनो एकटा आश्रय पाइबार जन्य जलेर उपरे हस्त प्रसारित करिया आकाश खुंजिया बेड़ाय, तेमनि आशा मनेर मध्ये एकटा या-हय किछु प्राणपणे आँकड़िया धरिबार जन्य एकान्त चेष्टा करिल, अवशेषे बुक चापिया उर्ध्वश्वासे बलिया उठिल, "मासिमा।"

सेइ स्नेहेर सम्भाषण उच्छ्‌वसित हइबामात्र ताहार चोख दिया झर झर करिया जल पड़िते लागिल। माटिते बसिया कान्नार उपर कान्ना—कान्नार उपर कान्ना यखन फिरिया फिरिया शेष हइल, तखन से भाबिते लागिल, "ए-चिठि लइया आमि की करिब।" स्वामी यदि जानिते पारेन, ए-चिठि आशार हाते पड़ियाछे, तबे सेइ उपलक्षे ताँहार निदारुण लज्जा स्मरण करिया आशा अत्यन्त कुण्ठित हइते लागिल। स्थिर करिल, चिठिखानि सेइ छाड़ा-जामार पकेटे पुनराय राखिया जामाटि आलनाय झुलाइया राखिबे, धोबार बाड़ि दिबे ना।

एइ भाबिया चिठि हाते से शयनगृहे आसिल। धोबाटा इतिमध्ये मयला कापड़ेर गाँठरिर उपर ठेस दिया घुमाइया पड़ियाछे। महेन्द्रेर छाड़ा जामाटा तुलिया लइया आशा ताहार पकेटे चिठि पुरिबार उद्योग करितेछे, एमन समय साड़ा पाइल, "भाइ बालि।"

ताड़ाताड़ि चिठि ओ जामाटा खाटेर उपर फेलिया से ताहा चापिया बसिल। विनोदिनी घरे प्रवेश करिया कहिल, "धोबा बड़ो कापड़ बदल करितेछे। ये कापड़गुलाय मार्का देओया हय नाइ, सेगुला आमि लइया याइ।"

आशा विनोदिनीर मुखेर दिके चाहिते पारिल ना। पाछे मुखेर भावे सकल कथा स्पष्ट करिया प्रकाश पाय, एइजन्य से जानालार दिके मुख फिराइया आकाशेर दिके चाहिया रहिल, ठोंटे ठोंट चापिया रहिल, पाछे चोख दिया जल बाहिर हइया पड़े।

विनोदिनी थमकिया दाँड़ाइया एकबार आशाके निरीक्षण करिया देखिल। मने मने कहिल, "ओ, बुझियाछि। काल रात्रेर विवरण तबे जानिते पारियाछ। आमार उपरेइ समस्त राग! येन अपराध आमारइ।"

विनोदिनी आशार सङ्गे कथावार्ता कहिबार कोनो चेष्टाइ करिल ना। खानकयेक कापड़ बाछिया लइया द्रुतपदे घर हइते चलिया गेल।

विनोदिनीर सङ्गे आशा ये एतदिन सरलचित्ते बन्धुत्व करिया आसितेछे, सेइ लज्जा निदारुण दुःखेर मध्येओ ताहार हृदये पुञ्जीकृत हइया उठिल। ताहार मनेर मध्ये सखीर ये-आदर्श छिल, सेइ आदर्शेर सङ्गे निष्ठुर चिठिखाना आर एकबार मिलाइया देखिबार इच्छा हइल।

चिठिखाना खुलिया देखितेछे, एमन समय ताड़ाताड़ि महेन्द्र घरेर मध्ये आसिया प्रवेश करिल। हठात् की मने करिया कालेजेर एकटा लेकचारेर माझखाने भङ्ग दिया से छुटिया बाड़ि चलिया आसियाछे।

आशा चिठिखाना अञ्चलेर मध्ये लुकाइया फेलिल। महेन्द्रओ घरे आशाके देखिया एकटु थमकिया दाँड़ाइल। ताहार पर व्यग्रदृष्टिते घरेर एदिक-ओदिक चाहिया देखिते लागिल। आशा बुझियाछिल, महेन्द्र की खुंजितेछे; किन्तु केमन करिया से हातेर चिठिखाना अलक्षिते यथास्थाने राखिया पालाइया याइबे, भाबिया पाइल ना।

महेन्द्र तखन एकटा एकटा करिया मयला कापड़ तुलिया तुलिया देखिते लागिल। महेन्द्रेर सेइ निष्फल प्रयास देखिया आशा आर थाकिते पारिल ना, चिठिखाना ओ जामाटा मेजेर उपर फेलिया दिया डान हाते खाटेर थामटा धरिया सेइ हाते मुख लुकाइल। महेन्द्र विद्युद्वेगे चिठिखाना तुलिया लइल। निमेषेर जन्य स्तब्ध हइया आशार दिके चाहिल। ताहार परे आशा सिँड़ि दिया महेन्द्रेर द्रुतधावनेर शब्द शुनिते पाइल। तखन धोबा डाकितेछे, "मा-ठाकरुन, कापड़ दिते आर कत देरी करिबे। वेला अनेक हइल, आमार बाड़ि तो एखाने नय।"

३४

राजलक्ष्मी आज सकाल हइते आर विनोदिनीके डाकेन नाइ। विनोदिनी नियममत भाँड़ारे गेल, देखिल, राजलक्ष्मी मुख तुलिया चाहिलेन ना।

से ताहा लक्ष्य करियाओ बलिल, "पिसिमा, तोमार असुख करियाछे बुझि। करिबारइ कथा। काल रात्रे ठाकुरपो ये कीर्ति करिलेन। एकेबारे पागलेर मतो आसिया उपस्थित। आमार तो तार परे घुम हइल ना।"

राजलक्ष्मी मुख भार करिया रहिलेन, हाँ-ना कोनो उत्तरइ करिलेन ना।

विनोदिनी बलिल, "हयतो चोखेर बालिर सङ्गे सामान्य किछु खिटि-

मिटि हइया थाकिबे, आर देखे के। तखनइ नालिश किंवा निष्पत्तिर जन्ये आमाके धरिया लइया याओया चाइ, रात पोहाइते तर सय ना। याइ बल पिसिमा, तुमि राग करियो ना, तोमार छेलेर सहस्र गुण थाकिते पारे, किन्तु धैर्येर लेशमात्र नाइ। ओइ जन्येइ आमार सङ्गे केवलइ झगड़ा हय।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "बउ, तुमि मिथ्या बकितेछ—आमार आज आर कोनो कथा भालो लागितेछे ना।"

विनोदिनी कहिल, "आमारओ किछु भालो लागितेछे ना, पिसिमा। तोमार मने आघात लागिबे, एइ भये मिथ्या कथा दिया तोमार छेलेर दोष ढाकिबार चेष्टा करियाछि। किन्तु एमन हइयाछे ये, आर ढाका पड़े ना।"

राजलक्ष्मी। आमर छेलेर दोष-गुण आमि जानि—किन्तु तुमि ये केमन मायाविनी, ताहा आमि जानिताम ना।

विनोदिनी की एकटा बलिबार जन्य उद्यत हइया निजेके संवरण करिल—कहिल, "से-कथा ठिक पिसिमा, केह काहाकेओ जाने ना। निजेर मनओ कि सबाइ जाने। तुमि कि कखनो तोमार बउयेर उपर द्वेष करिया एइ मायाविनीके दिया तोमार छेलेर मन भुलाइते चाओ नाइ? एकबार ठाओर करिया देखो देखि।"

राजलक्ष्मी अग्निर मतो उद्दीप्त हइया उठिलेन—कहिलेन, "हतभागिनी, छेलेर सम्बन्धे मार नामे तुइ एमन अपवाद दिते पारिस? तोर जिब खसिया पड़िबे ना!"

विनोदिनी अविचलित भावे कहिल, "पिसिमा, आमरा मायाविनीर जात, आमार मध्ये की माया छिल, ताहा आमि ठिक जानि नाइ, तुमि जानियाछ—तोमार मध्येओ की माया छिल, ताहा तुमि ठिक जान नाइ, आमि जानियाछि। किन्तु माया छिल, नहिले एमन घटना घटित ना। फाँद आमिओ कतकटा जानिया एवं कतकटा ना जानिया पातियाछि। फाँद तुमिओ कतकटा जानिया एवं कतकटा ना जानिया पातियाछ। आमादेर जातेर धर्म एइरूप—आमरा मायाविनी।"

रोषे राजलक्ष्मीर येन कण्ठरोध हइया गेल—तिनि घर छाड़िया द्रुतपदे चलिया गेलेन।

विनोदिनी एकला-घरे क्षणकालेर जन्य स्थिर हइया दाँड़ाइया रहिल—ताहार दुइ चक्षे आगुन ज्वलिया उठिल।

सकालवेलाकार गृहकार्य हइया गेले राजलक्ष्मी महेन्द्रके डाकिया पाठाइलेन। महेन्द्र बुझिल, काल रात्रिकार व्यापार लइया आलोचना हइबे।

तखन विनोदिनीर काछ हइते पत्रोत्तर पाइया ताहार मन विकल हइया उठियाछिल। सेइ आघातेर प्रतिघात स्वरूपे ताहार समस्त तरङ्गित हृदय विनोदिनीर दिके सवेगे धावमान हइतेछिल। इहार उपरे आबार मार सङ्गे उत्तर-प्रत्युत्तर करा ताहार पक्षे असाध्य। महेन्द्र जानित, मा ताहाके विनोदिनी सम्बन्धे भर्त्सना करिलेइ विद्रोहिभावे से यथार्थ मनेर कथा बलिया फेलिबे एवं बलिया फेलिलेइ निदारुण गृहयुद्ध आरम्भ हइबे। अतएव ए-समये बाड़ि हइते दूरे गिया सकल कथा परिष्कार करिया भाबिया देखा दरकार। महेन्द्र चाकरके बलिल, "माके बलिस, आज कालेजे आमार विशेष काज आछे, एखनइ याइते हइबे, फिरिया आसिया देखा हइबे।" बलिया पलातक बालकेर मतो तखनि ताड़ाताड़ि कापड़ परिया ना खाइया छुटिया बाहिर हइया गेल। विनोदिनीर ये दारुण चिठिखाना आज सकाल हइते बार बार करिया से पड़ियाछे एवं पकेटे लइया फिरियाछे, आज नितान्त ताड़ाताड़िते सेइ चिठिसुद्ध जामा छाड़ियाइ से चलिया गेल।

एक पसला घन वृष्टि हइया ताहार परे बादलार मतो करिया रहिल। विनोदिनीर मन आज अत्यन्त विरक्त हइया आछे। मनेर कोनो असुख हइले विनोदिनी काजेर मात्रा बाड़ाय। ताइ से आज यत राज्येर कापड़ जड़ो करिया चिह्न दिते आरम्भ करियाछे। आशार निकट हइते कापड़ चाहिते गिया आशार मुखेर भाव देखिया ताहार मन आरो बिगड़ाइया गेछे। संसारे यदि अपराधी हइते हय, तबे अपराधेर यत लाञ्छना ताहाइ केन भोग करिबे, अपराधेर यत सुख ताहा हइते केन वञ्चित हइबे।

झुप झुप शब्दे चापिया वृष्टि आसिल। विनोदिनी ताहार घरे मेझेर उपर बसिया। सम्मुखे कापड़ स्तूपाकार। खेमि दासी एक-एकखानि कापड़ अग्रसर करिया दितेछे, आर विनोदिनी मार्का दिबार कालि दिया ताहाते अक्षर मुद्रित करितेछे। महेन्द्र कोनो साड़ा ना दिया दरजा खुलिया एकेबारे घरेर मध्ये प्रवेश करिल। खेमि दासी काज फेलिया माथाय कापड़ दिया घर छाड़िया छुट दिल।

विनोदिनी कोलेर कापड़ माटिते फेलिया दिया विद्युद्वेगे उठिया दाँड़ाइया कहिल, "याओ, आमार ए-घर हइते चलिया याओ।"

महेन्द्र कहिल, "केन, की करियाछि।"

विनोदिनी। की करियाछि! भीरु कापुरुष! की करिबार साध्य आछे तोमार। ना जान भालोबासिते, ना जान कर्त्तव्य करिते। माझे हइते आमाके केन लोकेर काछे नष्ट करितेछ।

महेन्द्र। तोमाके आमि भालोबासि नाइ, एमन कथा बलिले?

विनोदिनी। आमि सेइ कथाइ बलितेछि। लुकाचुरि ढाकाढाकि, एकबार एदिक, एकबार ओदिक—तोमार एइ चोरेर मतो प्रवृत्ति देखिया आमार घृणा जन्मिया गेछे। आर भालो लागे ना। तुमि याओ।

महेन्द्र एकेबारे मुह्यमान हइया कहिल, "तुमि आमाके घृणा कर, विनोद!"

विनोदिनी। हाँ, घृणा करि।

महेन्द्र। एखनो प्रायश्चित्त करिबार समय आछे, विनोद। आमि यदि आर द्विधा ना करि, समस्त परित्याग करिया चलिया याइ, तुमि आमार सङ्गे याइते प्रस्तुत आछ।

बलिया महेन्द्र विनोदिनीर दुइ हात सबले धरिया ताहाके काछे टानिया लइल। विनोदिनी कहिल, "छाड़ो, आमार लागितेछे।"

महेन्द्र। ता लागुक। बलो, तुमि आमार सङ्गे याइबे?

विनोदिनी। ना, याइब ना। कोनोमतेइ ना।

महेन्द्र। केन याइबे ना। तुमिइ आमाके सर्वनाशेर मुखे टानिया आनियाछ, आज तुमि आमाके परित्याग करिते पारिबे ना। तोमाके याइतेइ हइबे।

बलिया महेन्द्र सुदृढ़बले विनोदिनीके बुकेर उपर टानिया लइल, जोर करिया ताहाके धरिया राखिया कहिल, "तोमार घृणाओ आमाके फिराइते पारिबे ना, आमि तोमाके लइया याइबइ, एवं येमन करियाइ हउक, तुमि आमाके भालोबासिबेइ।"

विनोदिनी सबले आपनाके विच्छिन्न करिया लइल।

महेन्द्र कहिल, "चारिदिके आगुन ज्वालाइया तुलियाछ, एखन आर निबाइतेओ पारिबे ना, पालाइतेओ पारिबे ना।"

बलिते बलिते महेन्द्रेर गला चड़िया उठिल, उच्चैःस्वरे से कहिल, "एमन खेला केन खेलिले, विनोद। एखन आर इहाके खेला बलिया मुक्ति पाइबे ना। एखन तोमार आमार एकइ मृत्यु।"

राजलक्ष्मी घरे ढुकिया कहिलेन, "महिन, की करछिस।"

महेन्द्रेर उन्मत्त दृष्टि एकनिमेषमात्र मातार मुखेर दिके घुरिया आसिल; ताहार परे पुनराय विनोदिनीर दिके चाहिया महेन्द्र कहिल, "आमि सब छाड़िया चलिया याइतेछि, बलो, तुमि आमार सङ्गे याइबे।"

विनोदिनी क्रुद्धा राजलक्ष्मीर मुखेर दिके एकबार चाहिल। ताहार पर अग्रसर हइया अविचलित भावे महेन्द्रेर हात धरिया कहिल, "याइब।"

महेन्द्र कहिल, "तबे आजकेर मतो अपेक्षा करो, आमि चलिलाम, काल हइते तुमि छाड़ा आमार आर केह रहिबे ना।"

बलिया महेन्द्र चलिया गेल।

एमन समय धोबा आसिया विनोदिनीके कहिल, "माठाकरुन, आर तो बसिते पारि ना। आज यदि तोमादेर फुरसत् ना थाके तो आमि काल आसिया कापड़ लइया याइब।"

खेमि आसिया कहिल, "बउठाकरुन, सहिस बलितेछे दाना फुराइया गेछे।"

विनोदिनी सात दिनेर दाना ओजन करिया आस्ताबले पाठाइया दित, एवं निजे जानालाय दाँड़ाइया घोड़ार खाओया देखित।

गोपाल-चाकर आसिया कहिल, "बउठाकरुन, झड़ु-बेहारा आज दादा-मशायेर (साधुचरणेर) सङ्गे झगड़ा करियाछे। से बलितेछे, ताहार केरोसिनेर हिसाब बुझिया लइलेइ से सरकार-बाबुर काछ हइते वेतन चुकाइया लइया काज छाड़िया दिया चलिया याइबे।"

संसारेर समस्त कर्मइ पूर्ववत् चलितेछे।

३५

बिहारी एतदिन मेडिकाल कालेजे पड़ितेछिल। ठिक परीक्षा दिबार पूर्वेइ से छाड़िया दिल। केह विस्मय प्रकाश करिले बलित, "परेर स्वास्थ्य परे देखिब, आपातत निजेर स्वास्थ्य रक्षा करा चाइ।"

आसल कथा, बिहारीर उद्यम अशेष; एकटा-किछु ना करिया ताहार थाकिबार जो नाइ, अथच यशेर तृष्णा, टाकार लोभ एवं जीविकार जन्य उपार्जनेर प्रयोजन ताहार किछुमात्र छिल ना। कालेजे डिग्री लइया प्रथमे से शिवपुरे एञ्जिनियारिं शिखिते गियाछिल। यतटुकु जानिते ताहार कौतूहल छिल, एवं हातेर काजे यतटुकु दक्षतालाभ से आवश्यक बोध करित, सेइटुकु समाधा करियाइ से मेडिकाल कालेजे प्रवेश करे। महेन्द्र एक वत्सर पूर्वे डिग्री लइया मेडिकाल कालेजे भर्ति हय। कालेजेर बाङालि छात्रदेर निकट ताहादेर दुइ जनेर बन्धुत्व विख्यात छिल। ताहारा ठाट्टा करिया इहादेर दु-जनके श्यामदेशीय जोड़ा-यमज बलिया डाकित। गत वत्सर महेन्द्र परीक्षाय फेल कराते दुइ बन्धु एक श्रेणीते आसिया मिलिल। एमन समये हठात् जोड़ केन ये भाङिल, ताहा छात्रेरा बुझिते पारिल ना।

रोज येखाने महेन्द्रेर सङ्गे देखा हइबेइ, अथच तेमन करिया देखा हइबे ना, सेखाने बिहारी किछुतेइ याइते पारिल ना। सकलेइ जानित, बिहारी भालो-रकम पास करिया निश्चय सम्मान ओ पुरस्कार पाइबे, किन्तु ताहार आर परीक्षा देओया हइल ना।

ताहादेर बाड़िर पार्श्वे एक कुटिरे राजेन्द्र चक्रवर्ती बलिया एक गरिब ब्राह्मण वास करित, छापाखानाय बारो टाका वेतने कम्पोजिटारि करिया से जीविका चालाइत। बिहारी ताहाके बलिल, "तोमार छेलेके आमार काछे राखो, आमि उहाके निजे लेखापड़ा शिखाइब।"

ब्राह्मण बाँचिया गेल। खुशि हइया ताहार आट बछरेर छेले वसन्तके बिहारीर हाते समर्पण करिल।

बिहारी ताहाके निजेर प्रणालीमते शिक्षा दिते लागिल। बलिल, "दश वत्सर वयसेर पूर्वे आमि इहाके बइ पड़ाइब ना, सब मुखे मुखे शिखा-इब।" ताहाके लइया खेला करिया, ताहाके लइया गड़ेर माठे, मिउजियामे, आलिपुर-पशुशालाय शिवपुरेर बागाने घुरिया बिहारी दिन काटाइते लागिल। ताहाके मुखे मुखे इंराजि शेखानो, इतिहास गल्प करिया शोनानो, नानाप्रकारे बालकेर चित्तवृत्ति परीक्षा ओ ताहार परिणतिसाधन, बिहारीर समस्त दिनेर काज एइ छिल—से निजेके मुहूर्तमात्र अवसर दित ना।

सेदिन सन्ध्यावेलाय बाहिर हइबार जो छिल ना। दुपुरवेलाय वृष्टि थामिया आबार विकाल हइते वर्षण आरम्भ हइयाछे। बिहारी ताहार दोतलार बड़ो घरे आलो ज्वालिया बसिया वसन्तके लइया निजेर नूतन प्रणालीर खेला करितेछिल।

"वसन्त, ए-घरे क-टा कड़ि आछे, चट् करिया बलो। ना, गुनिते पाइबे ना।"

वसन्त। कुड़िटा।

बिहारी। हार हइल—आठारोटा।

फस करिया खड़खड़ि खुलिया जिज्ञासा करिल, "ए खड़खड़िते कटा पाल्ला आछे?" बलिया खड़खड़ि बन्ध करिया दिल।

वसन्त बलिल, "छयटा।"

"जित।"—"एइ वेञ्चिटा लम्बाय कत हइबे। एइ बइटार कत ओजन।" एमनि करिया बिहारी वसन्तर इन्द्रियबोधेर उत्कर्षसाधन करितेछिल, एमन समय बेहारा आसिया कहिल, "बाबुजी, एकठो औरत....."

कथा शेष करिते ना करिते विनोदिनी घरेर मध्ये आसिया प्रवेश करिल।

बिहारी आश्चर्य हइया कहिल "ए की काण्ड, बोठान।"

विनोदिनी कहिल, "तोमार एखाने तोमार आत्मीय स्त्रीलोक केह नाइ ?"

बिहारी। आत्मीयओ नाइ, परओ नाइ। पिसि आछेन देशेर बाड़िते।

विनोदिनी। तबे तोमार देशेर बाड़िते आमाके लइया चलो।

बिहारी। की बलिया लइया याइब।

विनोदिनी। दासी बलिया। आमि सेखाने घरेर काज करिब।

बिहारी। पिसि किछु आश्चर्य हइबेन, तिनि आमाके दासीर अभाव तो जानान नाइ। आगे शुनि, ए संकल्प केन मने उदय हइल। वसन्त, याओ, शुइते याओ।

वसन्त चलिया गेल। विनोदिनी कहिल, "बाहिरेर घटना शुनिया तुमि भितरेर कथा किछुइ बुझिते पारिबे ना।"

बिहारी। ना-इ बुझिलाम, ना हय भुलइ बुझिब, क्षति की।

विनोदिनी। आच्छा, ना हय भुलइ बुझिओ। महेन्द्र आमाके भालो-बासे।

बिहारी। से-खबर तो नूतन नय, एवं एमन खबर नय, याहा द्वितीय बार शुनिते इच्छा करे।

विनोदिनी। बारबार शुनाइबार इच्छा आमारओ नाइ। सेइजन्यइ तोमार काछे आसियाछि, आमाके आश्रय दाओ।

बिहारी। इच्छा तोमार नाइ ? ए विपत्ति के घटाइल। महेन्द्र ये-पथे चलियाछिल से-पथ हइते ताहाके के भ्रष्ट करियाछे।

विनोदिनी। आमि करियाछि। तोमार काछे लुकाइब ना, ए-समस्तइ आमारइ काज। आमि मन्द हइ या हइ, एकबार आमार मतो हइया आमार अन्तरेर कथा बुझिबार चेष्टा करो। आमार बुकेर ज्वाला लइया आमि महेन्द्रेर घर ज्वालाइयाछि। एकबार मने हइयाछिल, आमि महेन्द्रके भालोबासि, किन्तु ताहा भुल।

बिहारी। भालोबासिले कि केह एमन अग्निकाण्ड करिते पारे।

विनोदिनी। ठाकुरपो, ए तोमार शास्त्रेर कथा। एखनो ओ-सब कथा शुनिबार मतो मति आमार हय नाइ। ठाकुरपो, तोमार पुंथि राखिया एकबार अन्तर्यामीर मतो आमार हृदयेर मध्ये दृष्टिपात करो। आमार भालोमन्द सब आज आमि तोमार काछे बलिते चाइ।

बिहारी। पुंथि साधे खुलिया राखि, बोठान। हृदयके हृदयेरइ

नियमे बुझिबार भार अन्तर्यामीरइ उपरे थाक्, आमरा पुँथिर विधान मिलाइया ना चलिले शेषकाले ये ठेकाइते पारि ना।

विनोदिनी। शुन ठाकुरपो, आमि निर्लज्ज हइया बलितेछि, तुमि आमाके फिराइते पारिते। महेन्द्र आमाके भालोबासे बटे, किन्तु से निरेट अन्ध, आमाके किछुइ बोझे ना। एकबार मने हइयाछिल, तुमि आमाके येन बुझियाछ—एकबार तुमि आमाके श्रद्धा करियाछिले—सत्य करिया बलो, से-कथा आज चापा दिते चेष्टा करियो ना।

बिहारी। सत्यइ बलितेछि, आमि तोमाके श्रद्धा करियाछिलाम।

विनोदिनी। भुल कर नाइ ठाकुरपो, किन्तु बुझिलेइ यदि, श्रद्धा करिलेइ यदि, तबे सेइखानेइ थामिले केन। आमाके भालोबासिते तोमार की बाधा छिल। आमि आज निर्लज्ज हइया तोमार काछे आसियाछि, एवं आमि आज निर्लज्ज हइयाइ तोमाके बलितेछि—तुमिओ आमाके भालोबासिले ना केन। आमार पोड़ाकपाल। तुमिओ किना आशार भालोबासाय मजिले। ना, तुमि राग करिते पाइबे ना। बसो ठाकुरपो, आमि कोनो कथा ढाकिया बलिब ना। तुमि ये आशाके भालोबास, से-कथा तुमि यखन निजे जानिते ना, तखनो आमि जानिताम। किन्तु आशार मध्ये तोमरा कि देखिते पाइयाछ, आमि किछुइ बुझिते पारि ना। भालोइ बल आर मन्दइ बल, ताहार आछे की। विधाता कि पुरुषेर दृष्टिर सङ्गे अन्तर्दृष्टि किछुइ देन नाइ। तोमरा की देखिया, कतटुकु देखिया भोल। निर्बोध! अन्ध!

बिहारी उठिया दाँड़ाइया कहिल, "आज तुमि आमाके याहा शुनाइबे समस्तइ आमि शुनिब—किन्तु ये-कथा बलिवार नहे, से कथा बलियो ना, तोमार काछे आमार एइ एकान्त मिनति।"

विनोदिनी। ठाकुरपो, कोथाय तोमार व्यथा लागितेछे ताहा आमि जानि—किन्तु याहार श्रद्धा आमि पाइयाछिलाम एवं याहार भालोबासा पाइले आमार जीवन सार्थक हइत, ताहार काछे एइ रात्रे भय-लज्जा समस्त विसर्जन दिया छुटिया आसिलाम, से ये कतबड़ो वेदनाय ताहा मने करिया एकटु धैर्य धरो। आमि सत्यइ बलितेछि, तुमि यदि आशाके भालो ना बासिते, तबे आमार द्वारा आशार आज एमन सर्वनाश हइत ना।

बिहारी विवर्ण हइया कहिल, "आशार की हइयाछे। तुमि ताहार की करियाछ।"

विनोदिनी। महेन्द्र ताहार समस्त संसार परित्याग करिया काल आमाके लइया चलिया याइते प्रस्तुत हइयाछे।

बिहारी हठात् गर्जन करिया उठिल, "ए किछुतेइ हइते पारे ना। कोनोमतेइ ना।"

विनोदिनी। कोनोमतेइ ना? महेन्द्रके आज के ठेकाइते पारे।

बिहारी। तुमि पार।

विनोदिनी खानिकक्षण चुप करिया रहिल—ताहार परे बिहारीर मुखेर दिके दुइ चक्षु स्थिर राखिया कहिल, "ठेकाइब काहार जन्य। तोमार आशार जन्य? आमार निजेर सुखदुःख किछुइ नाइ? तोमार आशार भालो हउक, महेन्द्रेर संसारेर भालो हउक, एइ बलिया इहकाले आमार सकल दाबि मुछिया फेलिब, एत भालो आमि नइ—धर्मशास्त्रेर पुंथि एत करिया आमि पड़ि नाइ। आमि याहा छाड़िब ताहार बदले आमि की पाइब।"

बिहारीर मुखेर भाव क्रमश अत्यन्त कठिन हइया आसिल—कहिल, "तुमि अनेक स्पष्ट कथा बलिबार चेष्टा करियाछ, एबार आमिओ एकटा स्पष्ट कथा बलि। तुमि आज जे काण्डटा करिले, एवं ये कथागुला बलितेछ, इहार अधिकांशइ, तुमि ये-साहित्य पड़ियाछ ताहा हइते चुरि। इहार बारो आनाइ नाटक एवं नभेल।"

विनोदिनी। नाटक! नभेल!

बिहारी। हाँ, नाटक, नभेल। ताओ खुब उँचुदरेर नय। तुमि मने करितेछ, ए-समस्त तोमार निजेर—ताहा नहे। ए-सबइ छापाखानार प्रतिध्वनि। यदि तुमि नितान्त निर्बोध मूर्ख सरला बालिका हइते, ताहा हइलेओ संसारे भालोबासा हइते वञ्चित हइते ना—किन्तु नाटकेर नायिका स्टेजेर उपरेइ शोभा पाय, घरे ताहाके लइया चले ना।

कोथाय विनोदिनीर सेइ तीव्र तेज, दुःसह दर्प। मन्त्राहत फणिनीर मतो से स्तब्ध हइया नत हइया रहिल। अनेकक्षण परे, बिहारीर मुखेर दिके ना चाहिया शान्तनम्रस्वरे कहिल, "तुमि आमाके की करिते बल।"

बिहारी कहिल, "असाधारण किछु करिते चाहियो ना। साधारण स्त्रीलोकेर शुभबुद्धि याहा बले, ताइ करो। देशे चलिया याओ।"

विनोदिनी। केमन करिया याइब।

बिहारी। मेयेदेर गाड़िते तुलिया दिया आमि तोमाके तोमादेर स्टेशन पर्यन्त पौंछाइया दिब।

विनोदिनी। आज रात्रे तबे आमि एइखानेइ थाकि।

बिहारी। ना, एत विश्वास आमार निजेर 'परे नाइ।

शुनिया तत्क्षणात् विनोदिनी चौकि हइते भूमिते लुटाइया पड़िया, बिहारीर दुइ पा प्राणपण बले वक्षे चापिया धरिया कहिल, "ओइटुकु दुर्बलता राखो ठाकुरपो। एकेबारे पाथरेर देवतार मतो पवित्र हइयो ना। मन्दके भालोबासिया एकटुखानि मन्द हओ।"

बलिया विनोदिनी बिहारीर पदयुगल बार बार चुम्बन करिल। बिहारी विनोदिनीर एइ आकस्मिक अभावनीय व्यवहारे क्षणकालेर जन्य येन आत्मसंवरण करिते पारिल ना। ताहार शरीर-मनेर समस्त ग्रन्थि येन शिथिल हइया आसिल। विनोदिनी बिहारीर एइ स्तब्ध विह्वल भाव अनुभव करिया ताहार पा छाड़िया दिया निजेइ दुइ हाँटुर उपर उन्नत हइया उठिल, एवं चौकिते आसीन बिहारीर गलदेश बाहुते वेष्टन करिया बलिल, "जीवनसर्वस्व, जानि तुमि आमार चिरकालेर नओ, किन्तु आज एक मुहूर्तेर जन्य आमाके भालोबासो। तारपरे आमि आमादेर सेइ बने-जङ्गले चलिया याइब, काहारओ काछे किछुइ चाहिब ना। मरण पर्यन्त मने राखिबार मतो आमाके एकटा किछु दाओ।" बलिया विनोदिनी चोख बुजिया ताहार ओष्ठाधर बिहारीर काछे अग्रसर करिया दिल। मुहूर्तकालेर जन्य दुइजने निश्चल एवं समस्त घर निस्तब्ध हइया रहिल। ताहार पर दीर्घनिश्वास फेलिया बिहारी धीरे धीरे विनोदिनीर हात छाड़ाइया लइया अन्य चौकिते गिया बसिल एवं रुद्धप्राय कण्ठस्वर परिष्कार करिया लइया कहिल, "आज रात्रि एकटार समय एकटा प्यासेञ्जार-ट्रेन आछे।"

विनोदिनी एकटुखानि स्तब्ध हइया रहिल, ताहार परे अस्फुटकण्ठे कहिल, "सेइ ट्रेनेइ याइब।"

एमन समय, पाये जुता नाइ, गाये जामा नाइ, बसन्त ताहार परिस्फुट गौरसुन्दर देह लइया बिहारीर चौकिर काछे आसिया दाँड़ाइया गम्भीरमुखे विनोदिनीके देखिते लागिल।

बिहारी जिज्ञासा करिल, "शुते यास नि ये।" बसन्त कोनो उत्तर ना दिया गम्भीरमुखे दाँड़ाइया रहिल।

विनोदिनी दुइ हात बाड़ाइया दिल। बसन्त प्रथमे एकटु द्विधा करिया, धीरे धीरे विनोदिनीर काछे गेल। विनोदिनी ताहाके दुइ हाते बुकेर मध्ये चापिया धरिया झरझर करिया काँदिते लागिल।

३६

याहा असम्भव ताहाओ सम्भव हय, याहा असह्य ताहाओ सह्य हय, नहिले महेन्द्रेर संसारे से-रात्रि सेदिन काटित ना। विनोदिनीके प्रस्तुत हइया थाकिते परामर्श दिया महेन्द्र रात्रेइ एकटा पत्र लिखियाछिल, सेइ पत्र डाकयोगे सकाले महेन्द्रेर बाड़िते पौंछिल।

आशा तखन शय्यागत। बेहारा चिठि हाते करिया आसिया कहिल, "माजि, चिट्ठि।"

आशार हृत्पिण्डे रक्त धक् करिया घा दिल। एक पलकेर मध्ये सहस्र आश्वास ओ आशंका एक सङ्गे ताहार वक्षे बाजिया उठिल। ताड़ाताड़ि माथा तुलिया चिठिखाना लइया देखिल, महेन्द्रेर हातेर अक्षरे विनोदिनीर नाम। तत्क्षणात् ताहार माथा बालिशेर उपरे पड़िया गेल—कोनो कथा ना बलिया आशा से-चिठि बेहारार हाते फिराइया दिल। बेहारा जिज्ञासा करिल, "चिठि काहाके दिते हइबे।"

आशा कहिल, "जानि ना।"

रात्रि तखन आटटा हइबे, महेन्द्र ताड़ाताड़ि झड़ेर मतो विनोदिनीर घरेर सम्मुखे आसिया उपस्थित हइल, देखिल—घरे आलो नाइ, समस्त अन्धकार। पकेट हइते एकटा देशालाइयेर बाक्स बाहिर करिया देशालाइ धराइल—देखिल, घर शून्य। विनोदिनी नाइ, ताहार जिनिसपत्रओ नाइ। दक्षिणेर बारान्दाय गिया देखिल, बारान्दा निर्जन। डाकिल, "विनोद।" कोनो उत्तर आसिल ना।

"निर्बोध। आमि निर्बोध। तखनइ सङ्गे करिया लइया याओया उचित छिल। निश्चइ मा विनोदिनीके एमन गञ्जना दियाछेन ये, से घरे टिकिते पारे नाइ।"

सेइ कल्पनामात्र मने उदय हइतेइ, ताहा निश्चय सत्य बलिया ताहार मने विश्वास हइल। महेन्द्र अधीर हइया तत्क्षणात् मार घरे गेल। से-घरेओ आलो नाइ—किन्तु राजलक्ष्मी बिछानाय शुइया आछेन, ताहा अन्धकारेओ लक्ष्य हइल। महेन्द्र एकेबारेइ रुष्ट स्वरे बलिया उठिल, "मा, तोमरा विनोदिनीके की बलियाछ।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "किछुइ बलि नाइ।"

महेन्द्र। तबे से कोथाय गेछे।

राजलक्ष्मी। आमि की जानि।

महेन्द्र अविश्वासेर स्वरे कहिल, "तुमि जान ना ? आच्छा, आमि ताहार सन्धाने चलिलाम—से येखानेइ याक्, आमि ताहाके बाहिर करिबइ।"

बलिया महेन्द्र चलिया गेल। राजलक्ष्मी ताड़ाताड़ि बिछाना हइते उठिया ताहार पश्चात् पश्चात् चलिते चलिते बलिते लागिलेन, "महिन, यास ने महिन, फिरिया आय, आमार एकटा कथा शुनिया या।"

महेन्द्र एक निश्वासे छुटिया बाड़ि हइते बाहिर हइया गेल। मुहूर्त परेइ फिरिया आसिया दरोयानके जिज्ञासा करिल, "बहुठाकुरानी कोथाय गियाछेन।"

दरोयान कहिल, "आमादेर बलिया यान नाइ, आमरा किछुइ जानि ना।"

महेन्द्र गर्जित भर्त्सनार स्वरे कहिल, "जान ना !"

दरोयान करजोड़े कहिल, "ना महाराज, जानि ना।"

महेन्द्र मने मने स्थिर करिल, "मा इहादेर शिखाइया दियाछेन।" कहिल, "आच्छा, ता हउक।"

महानगरीर राजपथे ग्यासालोकविद्ध सन्ध्यान्धकारे बरफओयाला तखन बरफ ओ तप्सिमाछओयाला तप्सिमाछ हाँकितेछिल। कलरवक्षुब्ध जनतार मध्ये महेन्द्र प्रवेश करिल एवं अदृश्य हइया गेल।

३७

बिहारी एकला निजेके लइया अन्धकार रात्रे कखनो ध्यान करिते बसे ना। कोनोकालेइ बिहारी निजेर काछे निजेके आलोच्य विषय करे नाइ। से पड़ाशुना काजकर्म बन्धुबान्धव लोकजन लइयाइ थाकित। चारि दिकेर संसारकेइ से निजेर चेये प्राधान्य दिया आनन्दे छिल, किन्तु हठात् एकदिन प्रबल आघाते ताहार चारि दिक येन विश्लिष्ट हइया पड़िया गेल ; प्रलयेर अन्धकारे अभ्रभेदी वेदनार गिरिशृङ्गे निजेके एकला लइया दाँड़ाइते हइल। सेइ हइते निजेर निर्जन सङ्गके से भय करिते आरम्भ करियाछे ; जोर करिया निजेर घाड़े काज चापाइया एइ सङ्गीटिके से कोनोमतेइ अवकाश दिते चाय ना।

किन्तु आज निजेर सेइ अन्तरवासीके बिहारी कोनोमतेइ ठेलिया राखिते पारिल ना। काल विनोदिनीके बिहारी देशे पौंछाइया दिया आसियाछे, ताहार पर हइते से ये-कोनो काजे ये-कोनो लोकेर सङ्गेइ आछे, ताहार गुहा-शायी वेदनातुर हृदय ताहाके निजेर निगूढ़ निर्जनतार दिके अविश्राम आकर्षण करितेछे।

श्रान्ति ओ अवसादे आज बिहारीके परास्त करिल। रात्रि तखन नयटा हइबे ; बिहारीर गृहेर सम्मुखवर्ती दक्षिणेर छादेर उपर दिनान्तरम्य ग्रीष्मेर वातास उतला हइया उठियाछे। बिहारी चन्द्रोदयहीन अन्धकारे छादे एकखानि केदारा लइया बसिया आछे।

बालक वसन्तके आज सन्ध्यावेलाय से पड़ाय नाइ—सकाल सकाल ताहाके विदाय करिया दियाछे। आज सान्त्वनार जन्य, सङ्गेर जन्य, ताहार चिराभ्यस्त प्रीतिसुधास्निग्ध पूर्वजीवनेर जन्य ताहार हृदय येन मातृपरित्यक्त शिशुर मतो विश्वेर अन्धकारेर मध्ये दुइ बाहु तुलिया काहाके खुँजिया बेड़ाइतेछे। आज ताहार दृढ़ता, ताहार कठोर संयमेर बाँध कोथाय भाङिया गेछे। याहादेर कथा भाबिबे ना पण करियाछिल, समस्त हृदय ताहादेर दिके छुटियाछे, आज आर पथरोध करिबार लेशमात्र बल नाइ।

महेन्द्रेर सहित बाल्यकालेर प्रणय हइते सेइ प्रणयेर अवसान पर्यन्त समस्त कथा—ये सुदीर्घ काहिनी नानावर्णे चित्रित, जले-स्थले पर्वते नदीते विभक्त मानचित्रेर मतो ताहार मनेर मध्ये गुटानो छिल—बिहारी प्रसारित करिया धरिल। ये क्षुद्र जगत्टुकुर उपर से ताहार जीवनेर प्रतिष्ठा करियाछिल, ताहा कोन्खाने कोन् दुर्ग्रहेर सहित संघात पाइल, ताहाइ से मने करिया देखिते लागिल। प्रथमे बाहिर हइते के आसिल। सूर्यास्तकालेर करुण रक्तिमच्छटाय आभासित आशार लज्जामण्डित तरुण मुखखानि अन्धकारे अङ्कित हइया उठिल, ताहार सङ्गे-सङ्गे मङ्गलउत्सवेर पुण्यशङ्खध्वनि ताहार काने बाजिते लागिल। एइ शुभग्रह अदृष्टाकाशेर अज्ञात प्रान्त हइते आसिया दुइ बन्धुर माझखाने दाँड़ाइल—एकटु येन विच्छेद आनिल, कोथा हइते एमन एकटि गूढ़ वेदना आनिया उपस्थित करिल, याहा मुखे बलिबार नहे, याहा मनेओ लालन करिते नाइ। किन्तु तबु एइ विच्छेद, एइ वेदना अपूर्व स्नेहरञ्जित माधुर्यरश्मि द्वारा आच्छन्न परिपूर्ण हइया रहिल।

ताहार परे ये शनिग्रहेर उदय हइल—बन्धुर प्रणय, दम्पतिर प्रेम, गृहेर शान्ति ओ पवित्रता एकेबारे छारखार करिया दिल, बिहारी प्रबल घृणाय सेइ विनोदिनीके समस्त अन्तःकरणेर सहित सुदूरे ठेलिया फेलिते चेष्टा करिल। किन्तु ए की आश्चर्य। आघात येन अत्यन्त मृदु हइया गेल, ताहाके येन स्पर्श करिल ना। सेइ परमा सुन्दरी प्रहेलिका ताहार दुर्भेद्यरहस्यपूर्ण घनकृष्ण अनिमेष दृष्टि लइया कृष्णपक्षेर अन्धकारे बिहारीर सम्मुखे स्थिर हइया दाँड़ाइल। ग्रीष्मरात्रिर उच्छ्वसित दक्षिण-वातास ताहारइ घन निश्वासेर मतो बिहारीर गाये आसिया पड़िते लागिल। धीरे

धीरे सेइ पलकहीन चक्षुर ज्वालामयी दीप्ति म्लान हइया आसिते लागिल ; सेइ तृषा-शुष्क खर दृष्टि अश्रुजले सिक्त स्निग्ध हइया गभीर भावरसे देखिते देखिते परिप्लुत हइया उठिल ; मुहूर्तेर मध्ये सेइ मूर्ति बिहारीर पायेर काछे पड़िया ताहार दुइ जानु प्राणपण बले वक्षे चापिया धरिल—ताहार परे से एकटि अपरूप मायालतार मतो निमेषेर मध्येइ बिहारीके वेष्टन करिया बाड़िया उठिया सद्योविकशित सुगन्धि पुष्पमञ्जरितुल्य एकखानि चुम्बनोन्मुख मुख बिहारीर ओष्ठेर निकट आनिया उपनीत करिल। बिहारी चक्षु बुजिया सेइ कल्पमूर्तिके स्मृतिलोक हइते निर्वासित करिया दिबार चेष्टा करिते लागिल ; किन्तु कोनोमतेइ ताहाके आघात करिते येन ताहार हात उठिल ना—एकटि असम्पूर्ण व्याकुल चुम्बन ताहार मुखेर काछे आसन्न हइया रहिल, पुलके ताहाके आविष्ट करिया तुलिल।

बिहारी छातेर निर्जन अन्धकारे आर थाकिते पारिल ना। आर-कोनो दिके मन दिबार जन्य से ताड़াताड़ि दीपालोकित घरेर मध्ये आसिया प्रवेश करिल।

कोणे टिपाइयेर उपर रेशमेर-ढाका-देओया एकखानि बाँधानो फोटो-ग्राफ छिल। बिहारी ढाका खुलिया सेइ छबिटि घरेर माझखाने आलोर नीचे लइया बसिल—कोलेर उपर राखिया देखिते लागिल।

छविटि महेन्द्र ओ आशार विवाहेर अनतिकाल परेर युगलमूर्ति। छबिर पश्चाते महेन्द्र निजेर अक्षरे "महिनदा" एवं आशा स्वहस्ते "आशा" एइ नामटुकु लिखिया दियाछिल। छबिर मध्ये सेइ नवपरिणयेर मधुर दिनटि आर घुचिल ना। महेन्द्र चौकिते बसिया आछे, ताहार मुखे नूतन विवाहेर एकटि नवीन सरस भावावेश ; पाशे आशा दाँड़াइया—छबिओ-याला ताहाके माथाय घोमटा दिते देय नाइ, किन्तु ताहार मुख हइते लज्जा-टुकु खसाइते पारे नाइ। आज महेन्द्र ताहार पार्श्वचरी आशाके काँदाइया कतदूरे चलिया याइतेछे, किन्तु जड़ छबि महेन्द्रेर मुख हइते नवीन प्रेमेर एकटि रेखाओ बदल हइते देय नाइ, किछु ना बुझिया मूढ़भावे अदृष्टेर परिहासके स्थायी करिया राखियाछे।

एइ छबिखानि कोले लइया बिहारी विनोदिनीके धिक्कारेर द्वारा सुदूरे निर्वासित करिते चाहिल। किन्तु विनोदिनीर सेइ प्रेमे-कातर यौवने-कोमल बाहुदुटि बिहारीर जानु चापिया रहिल। बिहारी मने मने कहिल, "एमन सुन्दर प्रेमेर संसार छारखार करिया दिलि !" किन्तु विनोदिनीर सेइ उर्ध्वोत्क्षिप्त व्याकुल मुखेर चुम्बन-निवेदन ताहाके नीरवे कहिते लागिल,

10

"आमि तोमाके भालोबासि। समस्त जगतेर मध्ये आमि तोमाके वरण करियाछि।"

किन्तु एइ कि जवाब हइल। एइ कथाइ कि एकटि भग्न संसारेर निदारुण आर्तस्वरके ढाकिते पारे। पिशाची!

पिशाची! बिहारी एटा कि पूरा भर्त्सना करिया बलिल, ना, इहार सङ्गे एकटुखानि आदरेर सुर आसियाओ मिशिल। ये मुहूर्ते बिहारी ताहार समस्त जीवनेर समस्त प्रेमेर दाबि हइते वञ्चित हइया एकेबारे निःस्व भिखारिर मतो पथे आसिया दाँड़ाइयाछे, सेइ मुहूर्ते बिहारी कि एमन अयाचित अजस्र प्रेमेर उपहार समस्त हृदयेर सहित उपेक्षा करिया फेलिया दिते पारे। इहार तुलनाय बिहारी की पाइयाछे। एतदिन पर्यन्त समस्त जीवन उत्सर्ग करिया से केवल प्रेमभाण्डारेर खुदकुँड़ा भिक्षा करितेछिल। प्रेमेर अन्नपूर्णा सोनार थाला भरिया आज एका ताहारइ जन्य ये भोज पाठाइयाछेन, हतभाग्य किसेर द्विधाय ताहा हइते निजेके वञ्चित करिबे।

छबि कोले लइया एइ रकम नाना कथा यखन से एकमने आलोचना करितेछिल, एमन समय पार्श्वे शब्द शुनिया चमकिया उठिया देखिल महेन्द्र आसियाछे। चकित हइया दाँड़ाइया उठितेइ कोल हइते छबिखानि नीचे कार्पेटेर उपर पड़िया गेल—बिहारी ताहा लक्ष्य करिल ना।

महेन्द्र एकेवारेइ बलिया उठिल, "विनोदिनी कोथाय।"

बिहारी महेन्द्रेर काछे अग्रसर हइया ताहार हात धरिया कहिल, "महिनदा, एकटु बोसो भाइ, सकल कथार आलोचना करा याइतेछे।"

महेन्द्र कहिल, "आमार बसिबार एवं आलोचना करिबार समय नाइ। बलो, विनोदिनी कोथाय।"

बिहारी कहिल, "तुमि ये-प्रश्नटि जिज्ञासा करितेछ, एक कथाय ताहार उत्तर देओया चले ना। एकटु तोमाके स्थिर हइया बसिते हइबे।"

महेन्द्र कहिल, "उपदेश दिबे? से-सब उपदेशेर कथा आमि शिशुकालेइ पड़ियाछि।"

बिहारी। ना, उपदेश दिबार अधिकार ओ क्षमता आमार नाइ।

महेन्द्र। भर्त्सना करिबे? आमि जानि आमि पाषण्ड, आमि नराधम एवं तुमि याहा बलिते चाओ ताहा सबइ। किन्तु कथा एइ, तुमि जान कि ना, विनोदिनी कोथाय।

बिहारी। जानि।

महेन्द्र। आमाके बलिबे कि ना।

बिहारी। ना।

महेन्द्र। बलितेइ हइबे। तुमि ताहाके चुरि करिया आनिया लुकाइया राखियाछ। से आमार, ताहाके फिराइया दाओ।

बिहारी क्षणकाल स्तब्ध हइया रहिल। ताहार पर दृढ़स्वरे बलिल, "से तोमार नहे। आमि ताहाके चुरि करिया आनि नाइ, से निजे आमार काछे आसिया धरा दियाछे।"

महेन्द्र गर्जन करिया उठिल, "मिथ्या कथा।" एइ बलिया पार्श्ववर्ती घरेर रुद्ध द्वारे आघात दिते दिते उच्चस्वरे डाकिल, "विनोद, विनोद।"

घरेर भीतर हइते कान्नार शब्द शुनिते पाइया बलिया उठिल, "भय नाइ विनोद। आमि महेन्द्र, आमि तोमाके उद्धार करिया लइया याइब— केह तोमाके बन्ध करिया राखिते पारिबे ना।"

बलिया महेन्द्र सबले द्वारे धाक्का दितेइ द्वार खुलिया गेल। भितरे छुटिया गिया देखिल, घरे अन्धकार। अस्फुट छायार मतो देखिते पाइल, बिछानाय के येन भये आड़ष्ट हइया अव्यक्त शब्द करिया बालिश चापिया धरिल। बिहारी ताड़ाताड़ि घरेर मध्ये ढुकिया वसन्तके बिछाना हइते कोले तुलिया सान्त्वनार स्वरे बलिते लागिल, "भय नाइ वसन्त, भय नाइ, कोनो भय नाइ।"

महेन्द्र तखन द्रुतपदे बाहिर हइया बाड़िर समस्त घर देखिया आसिल। यखन फिरिया आसिल, तखनो वसन्त भयेर आवेगे थाकिया थाकिया काँदिया उठितेछिल, बिहारी ताहार घरे आलो ज्वालिया ताहाके बिछानाय शोयाइया गाये हात बुलाइया ताहाके घुम पाड़ाइबार चेष्टा करितेछिल।

महेन्द्र आसिया कहिल, "विनोदिनीके कोथाय राखियाछ।"

बिहारी कहिल, "महिनदा, गोल करियो ना, तुमि अकारणे एइ बालकके येरूप भय पाओयाइया दियाछ, इहार असुख करिते पारे। आमि बलितेछि, विनोदिनीर खबरे तोमार कोनो प्रयोजन नाइ।"

महेन्द्र कहिल, "साधु! महात्मा! धर्मेर आदर्श खाड़ा करियो ना। आमार स्त्रीर एइ छबि कोले करिया रात्रे कोन् देवतार ध्याने कोन् पुण्यमन्त्र जप करितेछिले? भण्ड!"

बलिया, छबिखानि महेन्द्र भूमिते फेलिया जुतासुद्ध पा दिया ताहार काच चूर्ण चूर्ण करिल एवं प्रतिमूर्तिटि लइया टुकरा टुकरा करिया छिड़िया बिहारीर गायेर उपर फेलिया दिल।

ताहार मत्तता देखिया वसन्त आबार भये काँदिया उठिल। बिहारीर

कण्ठ रुद्धप्राय हइया आसिल—द्वारेर दिके हस्तनिर्देश करिया कहिल, "याओ।"

महेन्द्र झड़ेर वेगे बाहिर हइया चलिया गेल।

३८

विनोदिनी यखन यात्रिशून्य मेयेदेर गाड़िते चड़िया वातायन हइते चषा-माठ ओ छायावेष्ठित एक-एकखानि ग्राम देखिते पाइल, तखन ताहार मने स्निग्धनिभृत पल्लीर जीवनयात्रा जागिया उठिल। सेइ तरुच्छायावेष्टनेर मध्ये ताहार स्वरचित कल्पनानीड़े निजेर प्रिय बइगुलि लइया किछुकाल नगर-वासेर समस्त क्षोभ, दाह ओ क्षतवेदना हइते से ये शान्तिलाभ करिते पारिबे, एइ कथा ताहार मने हइते लागिल। ग्रीष्मेर शस्यशून्य दिगन्तप्रसारित धूसर माठेर मध्ये सूर्यास्तदृश्य देखिया विनोदिनी भाबिते लागिल, आर येन किछुर दरकार नाइ—मन येन एइरूप सुवर्णरञ्जित स्तब्धविस्तीर्ण शान्तिर मध्ये समस्त भुलिया दुइ चक्षु मुद्रित करिते चाय, तरङ्गविक्षुब्ध सुखदुःख-सागर हइते जीवनतरीटि तीरे भिड़ाइया निःशब्द सन्ध्याय एकटि निष्कम्प वटवृक्षेर तलाय बाँधिया राखिते चाय, आर किछुतेइ कोनो प्रयोजन नाइ। गाड़ी चलिते चलिते एक-एक जायगाय आम्रकुञ्ज हइते मुकुलेर गन्ध आसितेइ पल्लीर स्निग्धशान्ति ताहाके निविड़भावे आविष्ट करिया तुलिल। मने मने से कहिल, "बेश हइयाछे, भालोइ हइयाछे, निजेके लइया आर टानाछेंड़ा करिते पारि ना—एबारे समस्त भुलिब, घुमाइब—पाड़ागाँयेर मेये हइया घरेर ओ पल्लीर काजे-कर्मे सन्तोषेर सङ्गे, आरामेर सङ्गे जीवन काटाइया दिब।"

तृषित वक्षे एइ शान्तिर आशा वहन करिया विनोदिनी आपनार कुटिरेर मध्ये प्रवेश करिल। किन्तु हाय, शान्ति कोथाय। केवल शून्यता एवं दारिद्र्य। चारिदिकेइ समस्त जीर्ण, अपरिच्छन्न, अनादृत, मलिन। बहुदिनेर रुद्ध स्याँत्सेंते घरेर वाष्पे ताहार येन निश्वास बन्ध हइया आसिल। घरे अल्पस्वल्प ये-समस्त आसबाबपत्र छिल, ताहा कीटेर दंशने, इँदुरेर उत्पाते ओ धुलार आक्रमणे छारखार हइया आसियाछे। सन्ध्यार समय विनोदिनी घरे गिया पौंछिल—घर निरानन्द अन्धकार। कोनोमते सरषेर तेले प्रदीप ज्वालाइतेइ ताहार धोंयाय ओ क्षीण आलोते घरेर दीनता आरो परिस्फुट हइल। आगे याहा ताहाके पीड़न करित ना, एखन ताहा असह्य बोध हइते लागिल—ताहार समस्त विद्रोही अन्तःकरण सबले बलिया उठिल,

"एखाने तो एक मुहूर्तओ काटिबे ना।" कुलुङ्गिते पूर्वेकार दुइ-एकटा धुलाय आच्छन्न बइ ओ मासिक पत्र पड़िया आछे, किन्तु ताहा छुँइते इच्छा हइल ना। बाहिरे वायुसम्पर्कशून्य आमबागाने झिल्लि ओ मशार गुञ्जनस्वर अन्धकारे ध्वनित हइते लागिल।

विनोदिनीर ये वृद्धा अभिभाविका छिलेन, तिनि घरे ताला लागाइया मेयेके देखिते सुदूरे जामाइबाड़िते गियाछेन। विनोदिनी प्रतिवेशिनीदेर बाड़िते गेल। ताहारा ताहाके देखिया येन चकित हइया उठिल। ओ मा, विनोदिनीर दिव्य रं साफ हइया उठियाछे, कापड़चोपड़ फिटफाट, येन मेमसाहेबेर मतो। ताहारा परस्परे की येन इशाराय कहिया विनोदिनीर प्रति लक्ष करिया मुख-चाओया-चाओयि करिल। येन की एकटा जनरव शोना गियाछिल, ताहार सहित लक्षण मिलिल।

विनोदिनी ताहार पल्ली हइते सर्वतोभावे बहु दूरे गिया पड़ियाछे, ताहा पदे-पदे अनुभव करिते लागिल। स्वगृहे ताहार निर्वासन। कोथाओ ताहार एक मुहूर्तेर आरामेर स्थान नाइ।

डाकघरेर बुड़ो पेयादा विनोदिनीर आबाल्य परिचित। परदिन विनोदिनी यखन पुष्करिणीर घाटे स्नान करिते उद्यत हइयाछे, एमन समय चिठिर ब्याग लइया पेयादाके पथ दिया याइते देखिया विनोदिनी आर आत्मसंवरण करिते पारिल ना। गामछा फेलिया ताड़ाताड़ि उठिया गिया ताहाके डाकिया कहिल, "पाँचुदादा, आमार चिठि आछे?"

बुड़ा कहिल, "ना।"

विनोदिनी व्यग्र हइया कहिल, "थाकितेओ पारे। एकबार देखि।"

बलिया पाड़ार अल्प खान-पाँच-छय चिठि लइया उल्टाइया-पाल्टाइया देखिल, कोनोटाइ ताहार नहे। विमर्षमुखे यखन घाटे फिरिया आसिल, तखन ताहार कोनो सखी सकौतुके कटाक्षे कहिल, "की लो बिन्दि, चिठिर जन्ये एत व्यस्त केन।"

आर-एकजन प्रगल्भा कहिल, "भालो भालो, डाकेर चिठि आसे एत भाग्य कयजनेर। आमादेर तो स्वामी, देवर, भाइ विदेशे काज करे किन्तु डाकेर पेयादार दया हय ना।"

एइरूपे कथाय कथाय परिहास स्फुटतर ओ कटाक्ष तीक्ष्णतर हइया उठिते लागिल। विनोदिनी बिहारीके अनुनय करिया आसियाछिल, प्रत्यह यदि नितान्त ना घटे, तबे अन्तत सप्ताहे दुइबार ताहाके किछु ना-हय तो दुइ छत्रओ येन चिठि लेखे। आजइ बिहारीर चिठि पाइबार सम्भावना

अत्यन्त विरल, किन्तु आकाङ्क्षा एत अधिक हइया उठिल ये, दूर सम्भावनार आशाओ विनोदिनी छाड़िते पारिल ना। ताहार मने हइते लागिल, येन कतकाल कलिकाता त्याग करियाछे।

महेन्द्रेर सहित जड़ित करिया विनोदिनीर नामे निन्दा ग्रामेर घरे-घरे किरूप व्याप्त हइया पड़ियाछे, शत्रु-मित्रेर कृपाय विनोदिनीर काछे ताहा अगोचर रहिल ना। शान्ति कोथाय।

ग्रामवासीर सकलेर काछ हइते विनोदिनी निजेके निर्लिप्त करिया लइते चेष्टा करिल। पल्लीर लोकेरा ताहाते आरओ राग करिल। पातकिनीके काछे लइया घृणा ओ पीड़न करिबार विलाससुख हइते ताहारा वञ्चित हइते चाय ना।

क्षुद्र पल्लीर मध्ये निजेके सकलेर काछ हइते गोपन राखिबार चेष्टा वृथा। एखाने आहत हृदयटिके कोणेर अन्धकारे लइया निर्जने शुश्रूषा करिबार अवकाश नाइ—येखान-सेखान हइते सकलेर तीक्ष्ण कौतूहलदृष्टि आसिया क्षतस्थाने पतित हय। विनोदिनीर अन्तःप्रकृति चुपड़िर भितरकार सजीव माछेर मतो यतइ आछड़ाइते लागिल,ततइ चारि दिकेर संकीर्णतार मध्ये निजेके बारंबार आहत करिते लागिल। एखाने स्वाधीनभावे परिपूर्णरूपे वेदनाभोग करिबारओ स्थान नाइ।

द्वितीय दिने चिठि पाइबार समय उत्तीर्ण हइतेइ विनोदिनी घरे दरजा बन्ध करिया लिखिते बसिल—

'ठाकुरपो, भय करियो ना, आमि तोमाके प्रेमेर चिठि लिखिते बसि नाइ। तुमि आमार विचारक, आमि तोमाके प्रणाम करि। आमि ये पाप करियाछि, तुमि ताहार कठिन दण्ड दियाछ; तोमार आदेशमात्र से दण्ड आमि माथाय करिया वहन करियाछि। दुःख एइ, दण्डटि ये कत कठिन, ताहा तुमि देखिते पाइले ना। यदि देखिते, यदि जानिते पाइते, ताहा हइले तोमार मने ये-दया हइत ताहा हइतेओ वञ्चित हइलाम। तोमाके स्मरण करिया, मने मने तोमार दुइखानि पायेर काछे माथा राखिया, आमि इहाओ सह्य करिब। किन्तु प्रभु, जेलखानार कयेदि कि आहारओ पाय ना। शौखिन आहार नहे—यतटुकु ना हइले ताहार प्राण बाँचे ना, सेटुकुओ तो बराद्द आछे। तोमार दुइ छत्र चिठि आमार एइ निर्वासनेर आहार—ताहा यदि ना पाइ, तबे आमार केवल निर्वासनदण्ड नहे, प्राणदण्ड। आमाके एत अधिक परीक्षा करियो ना, दण्डदाता। आमार पापमने अहंकारेर सीमा छिल ना—काहारओ काछे आमाके एमन करिया

माथा नोयाइते हइबे, इहा आमि स्वप्नेओ जानिताम ना। तोमार जय हइयाछे, प्रभु; आमि विद्रोह करिब ना। किन्तु आमाके दया करो—आमाके बाँचिते दाओ। एइ अरण्यवासेर सम्बल आमाके अल्प एकटु करिया दियो। ताहा हइले तोमार शासन हइते आमाके केहइ किछुतेइ टलाइते पारिब ना। एइटुकु दुःखेर कथाइ जानाइलाम। आर ये-सबकथा मने आछे, बलिबार जन्य बुक फाटिया याइतेछे, ताहा तोमाके जानाइब ना प्रतिज्ञा करियाछि—सेइ प्रतिज्ञा रक्षा करिलाम।

तोमार
विनोद-बोठान।'

विनोदिनी चिठि डाके दिल—पाड़ार लोके छि छि करिते लागिल। घरे द्वार रुद्ध करिया थाके, चिठि लेखे, चिठि पाइबार जन्य पेयादाके गिया आक्रमण करे—कलिकाताय दु' दिन थाकिलेइ लज्जाधर्म खोयाइया कि एमनइ माटि हइते हय।

परदिनेओ चिठि पाइल ना। विनोदिनी समस्त दिन स्तब्ध हइया रहिल, ताहार मुख कठिन हइया उठिल। अन्तरे-बाहिरे चारि दिकेर आघात ओ अपमानेर मन्थने ताहार हृदयेर अन्धकार तलदेश हइते निष्ठुर संहारशक्ति मूर्तिपरिग्रह करिया बाहिर हइया आसते चाहिल। सेइ निदारुण निष्ठुरतार आविर्भाव विनोदिनी समये उपलब्धि करिया घरे द्वार दिल।

ताहार काछे बिहारीर किछुइ छिल ना, छवि ना, एकछत्र चिठि ना, किछुइ ना। से शून्येर मध्ये किछु येन एकटा खुंजिया वेड़ाइते लागिल। से बिहारीर एकटा किछु चिह्नके वक्षे जड़ाइया धरिया शुष्क चक्षे जल आनिते चाय। अश्रुजले अन्तरेर समस्त कठिनताके गलाइया विद्रोहवह्निके निर्वापित करिया बिहारीर कठोर आदेशके हृदयेर कोमलतम प्रेमेर सिंहासने बसाइया राखिते चाय। किन्तु अनावृष्टिर मध्याह्न-आकाशेर मतो ताहार हृदय केवल ज्वलितेइ लागिल, दिग्‌दिगन्ते कोथाओ से एक फोँटाओ अश्रुर लक्षण देखिते पाइल ना।

विनोदिनी शुनियाछिल, एकाग्रमने ध्यान करिते करिते याहाके डाका याय, से ना आसिया थाकिते पारे ना। ताइ जोड़हात करिया चोख बुजिया से बिहारीके डाकिते लागिल, "आमार जीवन शून्य, आमार हृदय शून्य, आमार चतुर्दिक शून्य—एइ शून्यतार माझखाने एकबार तुमि एसो, एक मुहूर्तेर जन्य एसो, तोमाके आसितेइ हइबे, आमि किछुतेइ तोमाके छाड़िब ना।"

एइ कथा प्राणपण बले बलिते बलिते विनोदिनी येन यथार्थ बल पाइल।

मने हइल, येन एइ प्रेमेर बल, एइ आह्वानेर बल, वृथा हइबे ना। केवल स्मरणमात्र करिया, दुराशार गोड़ाय हृदयेर रक्त सेचन करिया हृदय केवल अवसन्न हइया पड़े। किन्तु एइरूप एकमने ध्यान करिया प्राणपण शक्तिते कामना करिते थाकिले निजेके येन सहायवान् मने हय। मने हय, येन प्रबल इच्छा जगतेर आर-समस्त छाड़िया केवल वाञ्छितके आकर्षण करिते थाकाते प्रतिमुहूर्ते क्रमे क्रमे धीरे धीरे से निकटवर्ती हइतेछे।

बिहारीर ध्याने यखन सन्ध्यार दीपशून्य अन्धकार घर निबिड़भावे परिपूर्ण हइया उठियाछे—यखन समाज-संसार, ग्राम-पल्ली, समस्त विश्व-भुवन प्रलये विलीन हइया गियाछे—तखन विनोदिनी हठात् द्वारे आघात शुनिया भूमितल हइते द्रुतवेगे दाँड़ाइया उठिल, असंशय विश्वासे छुटिया द्वार खुलिया कहिल, "प्रभु, आसियाछ?" ताहार दृढ़ प्रत्यय हइल, एइ मुहूर्ते जगतेर आर-केहइ द्वारे आसिते पारे ना।

महेन्द्र कहिल, "आसियाछि, विनोद।"

विनोदिनी अपरिसीम विराग ओ प्रचण्ड धिक्कारेर सहित बलिया उठिल, "याओ, याओ, याओ एखान हइते। एखनइ याओ।"

महेन्द्र अकस्मात् स्तम्भित हइया गेल।

"ह्याँला बिन्दि, तोर दिदिशाशुड़ी यदि काल"—एइ कथा बलिते बलिते कोनो प्रौढ़ प्रतिवेशिनी विनोदिनीर द्वारेर काछे आसिया "ओ मा" बलिया मस्त घोमटा टानिया सवेगे पलायन करिल।

३९

पाड़ाय भारि एकटा गोलमाल पड़िया गेल। पल्लीवृद्धेरा चण्डीमण्डपे बसिया कहिल, "ए कखनोइ सह्य करा याइते पारे ना। कलिकाताय की घटितेछिल, ताहा काने ना तुलिलेओ चलित, किन्तु एमन साहस ये महेन्द्रके चिठिर उपर चिठि लिखिया पाड़ाय आनिया एमन प्रकाश्य निर्लज्जता! एरूप भ्रष्टाके ग्रामे राखिले तो चलिबे ना।"

विनोदिनी आज निश्चय आशा करियाछिल, बिहारीर पत्रेर उत्तर पाइबे, किन्तु उत्तर आसिल ना। विनोदिनी मने मने बलिते लागिल, "आमार उपरे बिहारीर किसेर अधिकार। आमि केन ताहार हुकुम शुनिते गेलाम। आमि केन ताहाके बुझिते दिलाम ये, से आमार प्रति येमन विधान करिबे आमि ताहाइ नतशिरे ग्रहण करिब। ताहार भालोबासार आशाके

बाँचाइबार जन्य येटुकु दरकार, आमार सङ्गे केवलमात्र ताहार सेइटुकु सम्पर्क ? आमार निजेर कोनो प्राप्य नाइ, दावि नाइ, सामान्य दुइ छत्र चिठिओ ना---आमि एत तुच्छ, एत घृणार सामग्री ?" तखन ईर्षार विषे विनोदिनीर समस्त बक्ष पूर्ण हइया उठिल---से कहिल, "आर-काहारओ जन्य एत दुःख सह्य करा याइते पारे, किन्तु ताइ बलिया आशार जन्य नय। एइ दैन्य, एइ वनवास, एइ लोकनिन्दा, एइ अवज्ञा, एइ जीवनेर सकलप्रकार अपरितृप्ति, केवल आशारइ जन्य आमाके वहन करिते हइबे---एतबड़ो फाँकि केन आमि माथाय करिया लइलाम। केन आमार सर्वनाशेर व्रत सम्पूर्ण करिया आसिलाम ना। निर्बोध, आमि निर्बोध। आमि केन बिहारीके भालोबासिलाम।"

विनोदिनी यखन काठेर मूर्तिर मतो घरेर मध्ये कठिन हइया बसिया छिल, एमन समय ताहार दिदिशाशुड़ी जामाइबाड़ि हइते फिरिया आसियाइ ताहाके कहिल, "पोड़ारमुखी, की सब कथा शुनितेछि।"

विनोदिनी कहिल, "याहा शुनितेछ सबइ सत्य कथा।"

दिदिशाशुड़ी। तबे ए कलंक पाड़ाय बहिया आनिबार की दरकार छिल---एखाने केन आसिलि।

रुद्ध क्षोभे विनोदिनी चुप करिया बसिया रहिल। दिदिशाशुड़ी कहिल, "बाछा, एखाने तोमार थाका हइबे ना, ताहा बलितेछि। पोड़ा अदृष्टे आमार सबाइ मरिया-झरिया गेल, इहाओ सह्य करिया बाँचिया आछि, किन्तु ताइ बलिया ए-सकल व्यापार आमि सहिते पारिब ना। छि छि, आमादेर माथा हेंट करिले। तुमि एखनइ याओ।"

विनोदिनी कहिल, "आमि एखनइ याइब।"

एमन समय महेन्द्र, स्नान नाइ, आहार नाइ, उस्कखुस्क चुल करिया हठात् आसिया उपस्थित हइल। समस्त रात्रिर अनिद्राय ताहार चक्षु रक्तवर्ण, मुख शुष्क। अन्धकार थाकितेइ भोरे आसिया से विनोदिनीके लइया याइबार जन्य द्वितीय बार चेष्टा करिबे, एइरूप ताहार संकल्प छिल। किन्तु पूर्वदिने विनोदिनीर अभूतपूर्व घृणार अभिघात पाइया ताहार मने नानाप्रकार द्विधार उदय हइते लागिल। क्रमे यखन बेला हइया गेल, रेलगाड़िर समय आसन्न हइया आसिल, तखन स्टेशनेर यात्रिशाला हइते बाहिर हइया, मन हइते सर्वप्रकार विचार-वितर्क सबले दूर करिया, गाड़ि चड़िया महेन्द्र एकेबारे विनोदिनीर द्वारे आसिया उपस्थित हइयाछे। लज्जा त्याग करिया प्रकाश्य दुःसाहसेर काज करिते प्रवृत्त हइले ये एकटा स्पर्धापूर्ण बल जन्मे, सेइ बलेर आवेगे महेन्द्र एकटा उद्भ्रान्त आनन्द बोध करिल---

ताहार समस्त अवसाद ओ द्विधा चूर्ण हइया गेल। ग्रामेर कौतूहली लोक-गुलि ताहार उन्मत्त दृष्टिते धूलिर निर्जीव पुत्तलिकार मतो बोध हइल। महेन्द्र कोनोदिके दृक्पातमात्र ना करिया एकेबारे विनोदिनीर काछे आसिया कहिल, "विनोद, लोकनिन्दार मुखे तोमाके एकला फेलिया याइब, एमन कापुरुष आमि नहि। तोमाके येमन करिया हउक, एखान हइते लइया याइतेइ हइबे। ताहार परे तुमि आमाके परित्याग करिते चाओ, परित्याग करिओ, आमि तोमाके किछुमात्र बाधा दिब ना। आमि तोमाके स्पर्श करिया आज शपथ करिया बलितेछि, तुमि यखन येमन इच्छा कर ताहाइ हइबे—दया यदि कर तबे बाँचिब; ना यदि कर तबे तोमार पथ हइते दूरे चलिया याइब। आमि संसारे नाना अविश्वासेर काज करियाछि, किन्तु आज आमाके अविश्वास करियो ना। आमरा प्रलयेर मुखे दाँड़ाइयाछि, एखन छलना करिबार समय नहे।"

विनोदिनी अत्यन्त सहजभावे अविचलित-मुखे कहिल, "आमाके सङ्गे लइया चलो। तोमार गाड़ि आछे?"

महेन्द्र कहिल, "आछे।"

विनोदिनीर दिदिशाशुड़ी घर हइते बाहिर हइया आसिया कहिल, "महेन्द्र, तुमि आमाके चेन ना, किन्तु तुमि आमार पर नओ। तोमार मा राजलक्ष्मी आमादेर ग्रामेरइ मेये, ग्रामसम्पर्के आमि ताहार मामी। जिज्ञासा करि, ए तोमार की रकम व्यवहार। घरे तोमार स्त्री आछे, मा आछे, आर तुमि एमन बेहाया हइया, उन्मत्त हइया फिरितेछ! भद्रसमाजे तुमि मुख देखाइबे की बलिया।"

महेन्द्र ये भावोन्मादेर राज्ये छिल, सेखाने एइ एकटा आघात लागिल। ताहार मा आछे, स्त्री आछे, भद्रसमाज बलिया एकटा व्यापार आछे। एइ सहज कथाटा नूतन करिया येन मने उठिल। एइ अज्ञात सुदूर पल्लीर अपरिचित गृहद्वारे महेन्द्रके ये एमन कथा शुनिते हइबे, इहा ताहार एक समये स्वप्नेरओ अतीत छिल। दिनेर वेलाय ग्रामेर माझखाने दाँड़ाइया से एकटि भद्रघरेर विधवा रमणीके घर हइते पथे बाहिर करितेछे, महेन्द्रेर जीवनचरिते एमनओ एकटा अद्भुत अध्याय लिखित हइल। तबु ताहार मा आछे, स्त्री आछे, एवं भद्रसमाज आछे।

महेन्द्र यखन निरुत्तर हइया दाँड़ाइया रहिल, तखन वृद्धा कहिल, "याइते हय तो एखनइ याओ, एखनइ याओ। आमार घरेर दाओयाय दाँड़ाइया थाकिओ ना—आर एक मुहूर्त्तओ देरि करियो ना।"

बलिया वृद्धा घरेर मध्ये प्रवेश करिया भितर हइते द्वार रुद्ध करिया दिल। अस्नात अभुक्त मलिनवस्त्र विनोदिनी शून्य हस्ते गाड़िते गिया उठिल। महेन्द्र यखन गाड़िते उठिते गेल, विनोदिनी कहिल, "ना, स्टेशन दूरे नय, तुमि हाँटिया याओ।"

महेन्द्र कहिल, "ताहा हइले ग्रामेर सकल लोक आमाके देखिते पाइबे।"

विनोदिनी कहिल, "एखनो तोमार लज्जार बाकि आछे?" बलिया गाड़िर दरजा बन्ध करिया विनोदिनी गाड़ोयानके बलिल, "स्टेशने चलो।"

गाड़ोयान जिज्ञासा करिल, "बाबु याइबे ना?"

महेन्द्र एकटु इतस्तत करिया आर याइते साहस करिल ना। गाड़ि चलिया गेल। महेन्द्र ग्रामेर पथ परित्याग करिया माठेर पथ दिया घुरिया नतशिरे स्टेशनेर अभिमुखे चलिल।

तखन ग्रामवधूदेर स्नानाहार हइया गेछे। केवल ये-सकल कर्मनिष्ठा प्रौढ़ा गृहिणी विलम्बे अवकाश पाइयाछे, ताहाराइ गामछा ओ तेलेर बाटि लइया आम्रमुकुलेआमोदित छायास्निग्ध पुष्करिणीर निभृत घाटे चलियाछे।

४०

महेन्द्र कोथाय निरुद्देश हइया गेल, सेइ आशङ्काय राजलक्ष्मीर आहार-निद्रा बन्ध। साधुचरण सम्भव-असम्भव सकल स्थानेइ ताहाके खुंजिया बेड़ाइतेछे—एमन समय महेन्द्र विनोदिनीके लइया कलिकाताय फिरिया आसिल। पटलडाङार बासाय ताहाके राखिया रात्रे महेन्द्र ताहार बाड़िते आसिया पौंछिल।

मातार घरे महेन्द्र प्रवेश करिया देखिल, घर अन्धकारप्राय, केरोसिनेर लण्ठन आड़ाल करिया राखा हइयाछे। राजलक्ष्मी रोगीर न्याय बिछानाय शुइया आछेन एवं आशा पदतले बसिया आस्ते आस्ते ताँहार पाये हात बुलाइया दितेछे। एतकाल परे गृहेर वधू शाशुड़िर पदतलेर अधिकार पाइयाछे।

महेन्द्र आसितेइ आशा चकित हइया उठिया घर छाड़िया चलिया गेल। महेन्द्र बलपूर्वक सर्वप्रकार द्विधा परित्याग करिया कहिल, "मा, एखाने आमार पड़ार सुविधा हय ना; आमि कालेजेर काछे एकटा बासा लइयाछि; सेइ-खानेइ थाकिब।"

राजलक्ष्मी बिछानार प्रान्ते अंगुलिनिर्देश करिया महेन्द्रके कहिलेन, "महिन, एकटु बोस्।"

महेन्द्र संकोचेर सहित बिछानाय बसिल। राजलक्ष्मी कहिलेन, "महिन, तोर येखाने इच्छा तुइ थाकिस्, किन्तु आमार बउमाके तुइ कष्ट दिस ने।"

महेन्द्र चुप करिया रहिल। राजलक्ष्मी कहिलेन, "आमार मन्द कपाल, ताइ आमि आमार एमन लक्ष्मी बउके चिनिते पारि नाइ"—बलिते बलिते राजलक्ष्मीर गला भाङिया आसिल—"किन्तु तुइ ताहाके एतदिन जानिया, एत भालोबासिया, शेषकाले एत दुःखेर मध्ये फेलिलि की करिया।" राजलक्ष्मी आर थाकिते पारिलेन ना, काँदिते लागिलेन।

महेन्द्र सेखान हइते कोनोमते उठिया पालाइते पारिले बाँचे, किन्तु हठात् उठिते पारिल ना। मार बिछानार प्रान्ते अन्धकारे निस्तब्ध हइया बसिया रहिल।

अनेकक्षण परे राजलक्ष्मी कहिलेन, "आज रात्रे तो एखानेइ आछिस?"

महेन्द्र कहिल, "ना।"

राजलक्ष्मी जिज्ञासा करिलेन, "कखन याबि।"

महेन्द्र कहिल, "एखनइ।"

राजलक्ष्मी कष्टे उठिया बसिया कहिलेन, "एखनइ? एकबार बउमार सङ्गे भालो करिया देखाओ करिया याबि ना?"

महेन्द्र निरुत्तर हइया रहिल। राजलक्ष्मी कहिलेन, "ए-कयटा दिन बउमार केमन करिया काटियाछे, ताहा कि तुइ एकटु बुझितेओ पारिलि ना। ओरे निर्लज्ज, तोर निष्ठुरताय आमार बुक फाटिया गेल।" बलिया राजलक्ष्मी छिन्न शाखार मतो शुइया पड़िलेन।

महेन्द्र मार बिछाना छाड़िया बाहिर हइया गेल। अति मृदुपदे निःशब्द गमने से सिंड़ि दिया ताहार उपरेर शयनघरे चलिल। आशार सहित देखा हय, ए ताहार इच्छा छिल ना।

महेन्द्र उपरे उठियाइ देखिल, ताहार शयनगृहेर सम्मुखे ये ढाका छाद आछे, सेइखाने आशा माटिते पड़िया। से महेन्द्रेर पायेर शब्द पाय नाइ, हठात् ताहाके सम्मुखे उपस्थित देखिया ताड़ाताड़ि कापड़ सारिया लइया उठिया बसिल। एइ समये महेन्द्र यदि एकटिवार डाकित, "चुनि"—तबे तखनइ से महेन्द्रेर समस्त अपराध येन निजेरइ माथाय तुलिया लइया क्षमाप्राप्त अपराधिनीर मतो महेन्द्रेर दुइ पा जड़ाइया धरिया ताहार जीवनेर समस्त कान्नाटा काँदिया लइत। किन्तु महेन्द्र से प्रिय नाम डाकिते पारिल ना। यतइ से चेष्टा करिल, इच्छा करिल, यतइ से वेदना पाइल, ए-कथा भुलिते पारिल ना ये, आज आशाके आदर करा शून्यगर्भ परिहासमात्र। ताहाके

मुखे सान्त्वना दिया की हइबे, यखन विनोदिनीके परित्याग करिबार पथ महेन्द्र निजेर हाते एकेबारे बन्ध करिया दियाछे।

आशा संकोचे मरिया गिया बसिया रहिल। उठिया दाँड़ाइते, चलिया याइते, कोनोप्रकार गतिर चेष्टामात्र करिते ताहार लज्जाबोध हइल। महेन्द्र कोनो कथा ना बलिया धीरे धीरे छादे पायचारि करिते लागिल। कृष्णपक्षेर आकाशे तखनो चाँद ओठे नाइ—छादेर कोणे एकटा छोटो गामलाय रजनीगन्धार गाछे दुइटि डाँटाय फुल फुटियाछे। छादेर उपरकार अन्धकार आकाशे ओइ नक्षत्रगुलि—ओइ सप्तर्षि, ओइ कालपुरुष, ताहादेर अनेक सन्ध्यार अनेक निभृत प्रेमाभिनयेर नीरव साक्षी छिल, आजओ ताहारा निस्तब्ध हइया चाहिया रहिल।

महेन्द्र भाविते लागिल, माझखानेर कयटिमात्र दिनेर विप्लवकाहिनी एइ आकाशभरा अन्धकार दिया मुछिया फेलिया यदि आगेकार ठिक सेइ दिनेर मतो एइ खोला छादे मादुर पातिया आशार पाशे आमार सेइ चिरन्तन स्थानटिते अति अनायासे गिया बसिते पारि। कोनो प्रश्न नाइ, जवाबदिहि नाइ, सेइ विश्वास, सेइ प्रेम, सेइ सहज आनन्द! किन्तु हाय, जगत्संसारे सेइटुकुमात्र जायगाय फिरिबार पथ आर नाइ। एइ छादे आशार पाशे मादुरेर एकटुखानि भाग महेन्द्र एकेबारे हाराइयाछे। एतदिन विनोदिनीर सङ्गे महेन्द्रेर अनेकटा स्वाधीन सम्बन्ध छिल। भालोबासिबार उन्मत्त सुख छिल, किन्तु ताहार अविच्छेद्य बन्धन छिल ना। एखन महेन्द्र विनोदिनीके समाज हइते स्वहस्ते छिन्न करिया आनियाछे, एखन आर विनोदिनीके कोथाओ राखिबार, कोथाओ फिराइया दिबार जायगा नाइ—महेन्द्रइ ताहार एकमात्र निर्भर। एखन इच्छा थाक् वा ना थाक्, विनोदिनीर समस्त भार ताहाके वहन करितेइ हइबे। एइ कथा मने करिया महेन्द्रेर हृदय भितरे भितरे पीड़ित हइते लागिल। ताहादेर छादेर उपरकार एइ घरकन्ना, एइ शान्ति, एइ बाधाविहीन दाम्पत्यमिलनेर निभृत रात्रि, हठात् महेन्द्रेर काछे बड़ो आरामेर बलिया बोध हइल। किन्तु एइ सहजसुलभ आराम, याहाते एकमात्र ताहारइ अधिकार, ताहाइ आज महेन्द्रेर पक्षे दुराशार सामग्री। चिरजीवनेर मतो ये-बोझा से माथाय तुलिया लइयाछे, ताहा नामाइया महेन्द्र एक मुहूर्तओ हाँप छाड़िते पारिबे ना।

दीर्घनिश्वास फेलिया महेन्द्र एकबार आशार दिके चाहिया देखिल। निस्तब्ध रोदने वक्ष परिपूर्ण करिया आशा तखनो निश्चल हइया बसिया आछे—रात्रिर अन्धकार जननीर अञ्चलेर न्याय ताहार लज्जा ओ वेदना आवृत करिया राखियाछे।

महेन्द्र पायचारि भङ्ग करिया की बलिबार जन्य हठात् आशार काछे आसिया दाँड़ाइल। समस्त शरीरेर रक्त आशार कानेर मध्ये गिया शब्द करिते लागिल, से चक्षु मुद्रित करिल। महेन्द्र की बलिते आसियाछिल, भाबिया पाइल ना, ताहार कोइ वा बलिबार आछे। किन्तु किछु-एकटा ना बलिया आर फिरिते पारिल ना। बलिल, "चाबिर गोछाटा कोथाय।"

चाबिर गोछा छिल बिछानार गदिटार नीचे। आशा उठिया घरेर मध्ये गेल—महेन्द्र ताहार अनुसरण करिल। गदिर नीचे हइते चाबि बाहिर करिया आशा गदिर उपरे राखिया दिल। महेन्द्र चाबिर गोछा लइया निजेर कापड़ेर आलमारिते एक-एकटि चाबि लागाइया देखिते लागिल। आशा आर थाकिते पारिल ना, मृदुस्वरे कहिल, "ओ-आलमारिर चाबि आमार काछे छिल ना।"

काहार काछे चाबि छिल से-कथा आशार मुख दिया बाहिर हइल ना, किन्तु महेन्द्र ताहा बुझिल। आशा ताड़ाताड़ि घर हइते बाहिर हइया गेल, भय हइल, पाछे महेन्द्रेर काछे आर ताहार कान्ना चापा ना थाके। अन्धकारे छादेर प्राचीरेर एक कोणे मुख फिराइया दाँड़ाइया उच्छ्वसित रोदनके प्राणपणे रुद्ध करिया से काँदिते लागिल।

किन्तु अधिकक्षण काँदिबार समय छिल ना। हठात् मने पड़िया गेल, महेन्द्रेर आहारेर समय हइयाछे। द्रुतपदे आशा नीचे चलिया गेल।

राजलक्ष्मी आशाके जिज्ञासा करिलेन, "महिन कोथाय, बउमा।"

आशा कहिल, "तिनि उपरे।"

राजलक्ष्मी। तुमि नामिया आसिले ये।

आशा नतमुखे कहिल, "ताँहार खाबार—"

राजलक्ष्मी। खाबारेर आमि व्यवस्था करितेछि, बउमा, तुमि एकटु परिष्कार हइया लओ। तोमार सेइ नूतन ढाकाइ शाड़िखाना शीघ्र परिया आमार काछे एसो, आमि तोमार चुल बाँधिया दिइ।

शाशुड़िर आदर उपेक्षा करिते पारे ना, किन्तु एइ साजसज्जार प्रस्तावे आशा मरमे मरिया गेल। मृत्यु इच्छा करिया भीष्म येरूप स्तब्ध हइया शरवर्षण सह्य करियाछिलेन, आशाओ सेरूप राजलक्ष्मीर कृत समस्त प्रसाधन परमधैर्ये सर्वाङ्गे ग्रहण करिल।

साज करिया आशा अति धीरे धीरे निःशब्दपदे सिँड़ि बाहिया उपरे उठिल। उँकि दिया देखिल, महेन्द्र छादे नाइ। आस्ते आस्ते द्वारेर काछे आसिया देखिल, महेन्द्र घरेओ नाइ, ताहार खाबार अभुक्त पड़िया आछे।

चाबिर अभावे कापड़ेर आलमारि जोर करिया खुलिया आवश्यक कयेकखान कापड़ ओ डाक्तारि बइ लइया महेन्द्र चलिया गेछे।

परदिन एकादशी छिल। असुस्थ क्लिष्टदेह राजलक्ष्मी बिछानाय पड़िया छिलेन। बाहिरे घन मेघे झड़ेर उपक्रम करियाछे। आशा धीरे धीरे घरेर मध्ये प्रवेश करिल। आस्ते आस्ते राजलक्ष्मीर पायेर काछे बसिया ताँहार पाये हात दिया कहिल, "तोमार दुध ओ फल आनियाछि मा, खाबे एसो।"

करुणमूर्ति वधूर एइ अनभ्यस्त सेवार चेष्टा देखिया राजलक्ष्मीर शुष्क चक्षु प्लावित हइया गेल। तिनि उठिया बसिया आशाके कोले लइया ताहार अश्रुजलसिक्त कपोल चुम्बन करिलेन। जिज्ञासा करिलेन, "महिन, एखन की करितेछे बउमा।"

आशा अत्यन्त लज्जित हइल—मृदुस्वरे कहिल, "तिनि चलिया गेछेन।"

राजलक्ष्मी। कखन चलिया गेल, आमि तो जानितेओ पारि नाइ।

आशा नतशिरे कहिल, "तिनि काल रात्रेइ गेछेन।"

शुनिबामात्र राजलक्ष्मीर समस्त कोमलता येन दूर हइया गेल—वधूर प्रति ताँहार आदरस्पर्शेर मध्ये आर रसलेशमात्र रहिल ना। आशा एकटा नीरव लाञ्छना अनुभव करिया नतमुखे आस्ते आस्ते चलिया गेल।

४१

प्रथम रात्रे विनोदिनीके पटलडाङार बासाय राखिया महेन्द्र यखन ताहार कापड़ ओ बइ आनिते बाड़ि गेल, विनोदिनी तखन कलिकातार विश्रामविहीन जनतरङ्गेर कोलाहले एकला बसिया निजेर कथा भावितेछिल। पृथिवीते ताहार आश्रयस्थान कोनोकालेइ यथेष्ट विस्तीर्ण छिल ना, तबु ताहार एक पाश तातिया उठिले आर एकपाशे फिरिया शुइबार एकटुखानि जायगा छिल—आज ताहार निर्भरस्थल अत्यन्त संकीर्ण। से ये-नौकाय चड़िया स्रोते भासियाछे, ताहा दक्षिणे बामे एकटु कात हइलेइ एकेबारे जलेर मध्ये गिया पड़िते हइबे। अतएव बड़ोइ स्थिर हइया हाल धरा चाइ, एकटु भुल, एकटु नाड़ाचाड़ा सहिबे ना। ए अवस्थाय कोन् रमणीर हृदय ना कम्पित हय। परेर मन सम्पूर्ण वशे राखिते येटुकु लीलाखेला चाइ, येटुकु अन्तरालेर प्रयोजन, एइ संकीर्णतार मध्ये ताहार अवकाश कोथाय। एकेबारे महेन्द्रेर सहित मुखोमुखी करिया ताहाके समस्त जीवन यापन करिते प्रस्तुत हइते

हइबे। प्रभेद एइ ये, महेन्द्रेर कूले उठिबार उपाय आछे, किन्तु विनोदिनीर ताहा नाइ।

विनोदिनी निजेर एइ असहाय अवस्था यतइ सुस्पष्ट बुझिल ततइ से मनेर मध्ये बलसञ्चय करिते लागिल। एकटा उपाय ताहाके करितेइ हइबे, ए-भावे ताहार चलिबे ना।

येदिन बिहारीर काछे विनोदिनी निजेर प्रेम निवेदन करियाछे, सेदिन हइते ताहार धैर्येर बाँध भाङिया गेछे। ये उद्यत चुम्बन बिहारीर मुखेर काछ हइते से फिराइया लइया आसियाछे, जगते ताहा कोथाओ आर नामाइया राखिते पारितेछे ना, पूजार अर्घ्येर न्याय देवतार उद्देशे ताहा रात्रिदिन वहन करियाइ राखियाछे। विनोदिनीर हृदय कोनो अवस्थातेइ सम्पूर्ण हाल छाड़िया दिते जाने ना—नैराश्यके से स्वीकार करे ना। ताहार मन अहरह प्राणपण बले बलितेछे, "आमार ए पूजा बिहारीके ग्रहण करितेइ हइबे।"

विनोदिनीर एइ दुर्दान्त प्रेमेर उपरे ताहार आत्मरक्षार एकान्त आकाङ्क्षा योग दिल। बिहारी छाड़ा ताहार आर उपाय नाइ। महेन्द्रके विनोदिनी खुब भालो करियाइ जानियाछे, ताहार उपरे निर्भर करिते गेले से भर सय ना—ताहाके छाड़िया दिले तबेइ ताहाके पाओया याय, ताहाके धरिया थाकिले से छुटिते चाय। किन्तु नारीर पक्षे ये निश्चिन्त विश्वस्त निरापद निर्भर एकान्त आवश्यक, बिहारीइ ताहा दिते पारे। आज आर बिहारीके छाड़िले विनोदिनीर एकेबारेइ चलिबे ना।

ग्राम छाड़िया आसिबार दिन ताहार नामेर समस्त चिठिपत्र नूतन ठिकानाय पाठाइबार जन्य महेन्द्रके दिया विनोदिनी स्टेशनेर संलग्न पोस्ट-आपिसे विशेष करिया बलिया आसियाछिल। बिहारी ये एकेबारेइ ताहार चिठिर कोनो उत्तर दिबे ना, ए-कथा विनोदिनी कोनोमतेइ स्वीकार करिल ना—से बलिल, "आमि सातटा दिन धैर्य धरिया उत्तरेर जन्य अपेक्षा करिब, ताहार परे देखा याइबे।"

एइ बलिया विनोदिनी अन्धकारे जानाला खुलिया ग्यासालोकदीप्त कलिकातार दिके अन्यमने चाहिया रहिल। एइ सन्ध्यावेलाय बिहारी एइ शहरेर मध्येइ आछे—इहारइ गोटाकतक रास्ता ओ गलि पार हइया गेलेइ एखनइ ताहार दरजार काछे पौंछानो याइते पारे—ताहार परे सेइ जलेर कलओयाला छोटो आङिना, सेइ सिँड़ि, सेइ सुसज्जित परिपाटि आलोकित निभृत घरटि—सेखाने निस्तब्ध शान्तिर मध्ये बिहारी एकला केदाराय बसिया आछे—हयतो काछे सेइ ब्राह्मणबालक, सेइ सुगोल सुन्दर गौरवर्ण आयतनेत्र सरलमूर्ति

छेलेटि निजेर मने छबिर बइ लइया पाता उलटाइतेछे—एके एके समस्त चित्रटा मने करिया स्नेहे प्रेमे विनोदिनीर सर्वाङ्ग परिपूर्ण हइया उठिल। इच्छा करिले एखनइ याओया याय, इहाइ मने करिया विनोदिनी इच्छाके वक्षे तुलिया लइया खेला करिते लागिल। आगे हइले हय तो सेइ इच्छा पूर्ण करिते से अग्रसर हइत; किन्तु एखन अनेक कथा भाबिते हय। एखन शुधु वासना चरितार्थ करा नय, उद्देश्य सिद्ध करिते हइबे। विनोदिनी कहिल, "आगे देखि बिहारी किरूप उत्तर देय, ताहार परे कोन् पथे चला आवश्यक, स्थिर करा याइबे।" किछु ना बुझिया बिहारीके विरक्त करिते याइते ताहार आर साहस हइल ना।

एइरूप भाबिते भाबिते यखन रात्रि नयटा-दशटा बाजिया गेल, तखन महेन्द्र धीरे धीरे आसिया उपस्थित। कयदिन अनिद्राय अनियमे अत्यन्त उत्तेजित अवस्थाय से काटाइयाछे; आज कृतकार्य हइया विनोदिनीके बासाय आनिया एकेबारे अवसाद ओ श्रान्तिते ताहाके येन अभिभूत करिया दियाछे। आज आर संसारेर सङ्गे, निजेर अवस्थार सङ्गे लड़ाइ करिबार बल येन ताहार नाइ। ताहार समस्त भाराक्रान्त भावी जीवनेर क्लान्ति येन ताहाके आज आगे हइते आक्रमण करिल।

रुद्ध द्वारेर काछे दाँड़ाइया घा दिते महेन्द्रेर अत्यन्त लज्जाबोध हइते लागिल। ये उन्मत्तताय समस्त पृथिवीके से लक्ष्य करे नाइ, से मत्तता कोथाय। पथेर अपरिचित लोकदेर दृष्टिर सम्मुखेओ ताहार सर्वाङ्ग संकुचित हइतेछे केन।

भितरे नूतन चाकरटा घुमाइया पड़ियाछे—दरजा खोलाइते अनेक हाङ्गाम करिते हइल। अपरिचित नूतन बासार अन्धकारेर मध्ये प्रवेश करिया महेन्द्रेर मन दमिया गेल। मातार आदरेर धन महेन्द्र चिरदिन ये विलास-उपकरणे, ये-सकल टानापाखा ओ मूल्यवान चौकि-सोफाय अभ्यस्त, बासार नूतन आयोजने ताहार अभाव सेइ सन्ध्यावेलाय अत्यन्त परिस्फुट हइया उठिल। एइ-समस्त आयोजन महेन्द्रके सम्पूर्ण करिते हइबे, बासार समस्त व्यवस्थार भार ताहारइ उपरे। महेन्द्र कखनो निजेर वा परेर आरामेर जन्ये चिन्ता करे नाइ—आज हइते एकटि नूतन-गठित असम्पूर्ण संसारेर समस्त खुँटिनाटि ताहाकेइ वहन करिते हइबे। सिँड़िते एकटा केरोसिनेर डिबा अपर्याप्त धूमोद्गार करिया मिट्‌मिट् करितेछिल—ताहार परिवर्ते एकटा भालो ल्याम्प किनिते हइबे। बारान्दा बाहिया सिँड़िते उठिबार रास्ताटा कलेर जलेर प्रवाहे स्याँत्स्याँत् करितेछे—मिस्त्रि डाकाइया बिलाति

माटिर द्वारा से जायगा मेरामत करा आवश्यक। रास्तार दिकेर दुटो घर ये जुतार दोकानदारदेर हाते छिल, ताहारा से दुटो घर एखनो छाड़े नाइ, ताहा लइया बाड़िओयालार सहित लड़ाइ करिते हइबे। एइ-समस्त काज ताहार निजे ना करिले नय, इहाइ चकितेर मध्ये मने उदय हइया ताहार श्रान्तिर बोझाय आरओ बोझा चापिल।

महेन्द्र सिंड़िर काछे किछुक्षण दांड़ाइया निजेके सामलाइया लइल—विनोदिनीर प्रति ताहार ये प्रेम छिल, ताहाके उत्तेजित करिल। निजेके बुझाइल ये, एतदिन समस्त पृथिवीके भुलिया से याहाके चाहियाछिल, आज ताहाके पाइयाछे, आज उभयेर माझखाने कोनो बाधा नाइ—आज महेन्द्रेर आनन्देर दिन। किन्तु कोनो बाधा ये नाइ, ताहाइ सर्वापेक्षा बड़ो बाधा, आज महेन्द्र निजेइ निजेर बाधा।

विनोदिनी रास्ता हइते महेन्द्रके देखिया ताहार ध्यानासन हइते उठिया घरे आलो ज्वालिल, एवं एकटा सेलाइ कोले लइया नतशिरे ताहाते निविष्ट हइल—एइ सेलाइ विनोदिनीर आवरण, इहार अन्तराले ताहार येन एकटा आश्रय आछे।

महेन्द्र घरे ढुकिया कहिल, "विनोद, एखाने निश्चय तोमार अनेक असुविधा घटितेछे।"

विनोदिनी सेलाइ करिते करिते बलिल, "किछुमात्र ना।"

महेन्द्र कहिल, "आमि आर दुइ-तिन दिनेर मध्येइ समस्त आसबाब आनिया उपस्थित करिब, एइ कयदिन तोमाके एकटु कष्ट पाइते हइबे।"

विनोदिनी कहिल, "ना, से किछुतेइ हइते पारिबे ना—तुमि आर-एकटिओ आसबाब आनियो ना, एखाने याहा आछे ताहा आमार आवश्यकेर चेये ढेर बेशि।"

महेन्द्र कहिल, "आमि-हतभाग्यओ कि सेइ ढेर बेशिर मध्ये।"

विनोदिनी। निजेके अत 'बेशि' मने करिते नाइ—एकटु विनय थाका भालो।

सेइ निर्जन दीपालोके कर्मरत नतशिर विनोदिनीर आत्मसमाहित मूर्ति देखिया मुहूर्तेर मध्ये महेन्द्रेर मने आबार सेइ मोहेर सञ्चार हइल।

बाड़िते हइले छुटिया से विनोदिनीर पायेर काछे आसिया पड़ित—किन्तु ए तो बाड़ि नहे, सेइजन्य महेन्द्र ताहा पारिल ना। आज विनोदिनी असहाय, एकान्तइ से महेन्द्रेर आयत्तेर मध्ये, आज निजेके संयत ना राखिले बड़ोइ कापुरुषता हय।

विनोदिनी कहिल, "एखाने तुमि तोमार बइ-कापड़गुला आनिले केन।"

महेन्द्र कहिल, "ओगुलाके ये आमि आमार आवश्यकेर मध्येइ गण्य करि। ओगुला 'ढेर बेशि'र दले नय।"

विनोदिनी। जानि, किन्तु एखाने ओ-सब केन।

महेन्द्र। से ठिक कथा, एखाने कोनो आवश्यक जिनिस शोभा पाय ना---विनोद, बइटइगुलो तुमि रास्ताय टान मारिया फेलिया दियो, आमि आपत्तिमात्र करिब ना, केवल सेइ-सङ्गे आमाकेओ फेलियो ना।

बलिया एइ उपलक्षे महेन्द्र एकटुखानि सरिया आसिया कापड़े-बाँधा बइयेर पुँटुलि विनोदिनीर पायेर काछे आनिया फेलिल।

विनोदिनी गम्भीरमुखे सेलाइ करिते-करिते माथा ना तुलिया बलिल, "ठाकुरपो, एखाने तोमार थाका हइबे ना।"

महेन्द्र ताहार सद्योजाग्रत आग्रहेर मुखे प्रतिघात पाइया व्याकुल हइया उठिल---गद्‌गदकण्ठे कहिल, "केन विनोद, केन तुमि आमाके दूरे राखिते चाओ। तोमार जन्य समस्त त्याग करिया कि एइ पाइलाम।"

विनोदिनी। आमार जन्य तोमाके समस्त त्याग करिते दिब ना।

महेन्द्र बलिया उठिल, "एखन से आर तोमार हाते नाइ---समस्त संसार आमार चारि दिक हइते स्खलित हइया पड़ियाछे---केवल तुमि एकला आछ, विनोद। विनोद---विनोद---"

बलिते बलिते महेन्द्र शुइया पड़िया विह्वलभावे विनोदिनीर पा जोर करिया चापिया धरिल एवं ताहार पदपल्लव बारंबार चुम्बन करिते लागिल।

विनोदिनी पा छाड़ाइया लइया उठिया दाँड़ाइल। कहिल, "महेन्द्र, तुमि की प्रतिज्ञा करियाछिले मने नाइ?"

समस्त बलप्रयोग करिया महेन्द्र आत्मसंवरण करिया लइल---कहिल, "मने आछे। शपथ करियाछिलाम, तोमार याहा इच्छा ताहाइ हइबे, आमि कखनो ताहार कोनो अन्यथा करिब ना। सेइ शपथइ रक्षा करिब। की करिते हइबे, बलो।"

विनोदिनी। तुमि तोमार बाड़िते गिया थाकिबे।

महेन्द्र। आमिइ कि तोमार एकमात्र अनिच्छार सामग्री, विनोद। ताइ यदि हइबे, तबे तुमि आमाके टानिया आनिले केन। ये तोमार भोगेर सामग्री नय, ताहाके शिकार करिबार की प्रयोजन छिल। सत्य करिया बलो, आमि कि इच्छा करिया तोमार काछे धरा दियाछि, ना तुमि इच्छा करिया आमाके धरियाछ। आमाके लइया तुमि एइरूप खेला करिबे,

हइआओ कि आमि सह्य करिब। तबु आमि आमार शपथ पालन करिब— ये-बाड़िते आमि निजेर स्थान पदाघाते चूर्ण करिया फेलियाछि सेइ बाड़िते गियाइ आमि थाकिब।

विनोदिनी भूमिते बसिया पुनराय निरुत्तरे सेलाइ करिते लागिल।

महेन्द्र किछुक्षण स्थिरभावे ताहार मुखेर दिके चाहिया बलिया उठिल, "निष्ठुर, विनोद, तुमि निष्ठुर। आमि अत्यन्त हतभाग्य ये, आमि तोमाके भालोबासियाछि।"

विनोदिनी सेलाइये एकटा भुल करिया आलोर काछे धरिया ताहा बहुयत्ने पुनर्वार खुलिते लागिल। महेन्द्रेर इच्छा करिते लागिल, विनोदिनीर ओइ पाषाण हृदयटाके निजेर कठिन मुष्टिर मध्ये सबले चापिया भाङिया फेले। एइ नीरव निर्दयता ओ अविचलित उपेक्षाके प्रबल आघात करिया येन बाहुबलेर द्वारा परास्त करिते इच्छा करे।

महेन्द्र घर हइते बाहिर हइया पुनराय फिरिया आसिल—कहिल, "आमि ना थाकिले एखाने एकाकिनी तोमाके के रक्षा करिबे।"

विनोदिनी कहिल, "सेजन्य तुमि किछुमात्र भय करियो ना। पिसिमा खेमिके छाड़ाइया दियाछेन, से आज आमार एखाने आसिया काज लइयाछे। द्वारे ताला दिया आमरा दुइ स्त्रीलोके एखाने बेश थाकिब।"

मने मने यतइ राग हइते लागिल, विनोदिनीर प्रति महेन्द्रेर आकर्षण ततइ एकान्त प्रबल हइया उठिल। ओइ अटल मूर्तिके वज्रबले वक्षे चापिया धरिया क्लिष्ट पिष्ट करिया फेलिते इच्छा करिते लागिल। सेइ दारुण इच्छार हात एड़ाइबार जन्य महेन्द्र छुटिया बाड़ि हइते बाहिर हइया गेल।

रास्ताय घुरिते घुरिते महेन्द्र प्रतिज्ञा करिते लागिल, विनोदिनीके से उपेक्षार परिवर्ते उपेक्षा देखाइबे। ये-अवस्थाय विश्वजगते विनोदिनीर एकमात्र निर्भर महेन्द्र से-अवस्थातेओ महेन्द्रके एमन नीरवे निर्भये, एमन सुदृढ़ सुस्पष्टभावे प्रत्याख्यान—एत बड़ो अपमान कि कोनो पुरुषेर भाग्ये कखनो घटियाछे। महेन्द्रेर गर्व चूर्ण हइयाओ किछुतेइ मरिते चाहिल ना, से केवलइ पीड़ित दलित हइते लागिल। महेन्द्र कहिल, "आमि कि एतइ अपदार्थ। आमार सम्बन्धे एतबड़ो स्पर्धा की करिया ताहार मने हइल। आमि छाड़ा एखन ताहार आर के आछे।"

भाबिते भाबिते हठात् मने पड़िल—बिहारी। हठात् एक मुहूर्तेर जन्य ताहार वक्षे समस्त रक्तप्रवाह येन स्तब्ध हइया गेल। बिहारीर उपरेइ विनोदिनी निर्भर स्थापन करिया आछे—आमि ताहार उपलक्षमात्र, आमि

ताहार सोपान, ताहार पा राखिबार, पदे-पदे पदाघात करिबार स्थान। सेइ साहसेइ आमार प्रति एत अवज्ञा। महेन्द्रेर सन्देह हइल, बिहारीर सहित विनोदिनीर चिठिपत्र चलितेछे एवं विनोदिनी ताहार काछ हइते कोनो आश्वास पाइयाछे।

तखनइ महेन्द्र बिहारीर बाड़िर दिके चलिल। यखन बिहारीर द्वारे गिया घा दिल, तखन रात्रि आर बड़ो अधिक नाइ। अनेक धाक्कार पर बेहारा भितर हइते दरजा खुलिया दिया कहिल, "बाबुजि बाड़ि नाइ।"

महेन्द्र चमकिया उठिल। भाबिल, "आमि यखन निर्बोधेर मतो रास्ताय रास्ताय छुटिया बेड़ाइतेछि, बिहारी सेइ अवकाशे विनोदिनीर काछे गेछे। एइजन्यइ विनोदिनी आमाके एइ रात्रे एमन निर्दयभावे अपमान करियाछे, एवं आमिओ ताड़ित गर्दभेर मतो छुटिया चलिया आसियाछि।"

महेन्द्र ताहार पुरातन परिचित बेहाराके जिज्ञासा करिल, "भजु, बाबु कखन बाहिर हइया गेछेन।"

भजु कहिल, "से आज चार-पाँच दिन हइया गेछे। तिनि पश्चिमे कोथाय बेड़ाइते गेछेन।"

शुनिया महेन्द्र बाँचिया गेल। ताहार मने हइल, "एइबार एकटु शुइया आरामे घुमाइ, आर समस्त रात घुरिया बेड़ाइते पारि ना।" बलिया उपरे उठिया बिहारीर घरे कौचेर उपर शुइया तत्क्षणात् घुमाइया पड़िल।

महेन्द्र ये-रात्रे बिहारीर घरे आसिया उपद्रव करियाछिल, ताहार पर-दिनइ बिहारी कोथाय याइते हइबे, किछुइ स्थिर ना करिया पश्चिमे चलिया गेछे। बिहारी भाबिल, एखाने थाकिले पूर्वबन्धुर सहित संघर्ष कोन्-एकदिन एमन वीभत्स हइया उठिबे ये, ताहार पर चिरजीवन अनुतापेर कारण थाकिया याइबे।

परदिन महेन्द्र यखन उठिल तखन वेला एगारोटा। उठियाइ सम्मुखेर टिपाइयेर उपर ताहार दृष्टि पड़िल। देखिल, विनोदिनीर हस्ताक्षरे बिहारीर नामे एक पत्र पाथरेर कागजचापा दिया चापा रहियाछे। ताड़ा-ताड़ि ताहा तुलिया लइया देखिल, पत्र एखनो खोला हय नाइ। प्रवासी बिहारीर जन्य ताहा अपेक्षा करिया आछे। कम्पितहस्ते महेन्द्र ताड़ाताड़ि ताहा खुलिया पड़िते लागिले। एइ चिठिइ विनोदिनी ताहादेर ग्राम हइते बिहारीके लिखियाछिल एवं इहार कोनो जवाब से पाय नाइ।

चिठिर प्रत्येक अक्षर महेन्द्रके दंशन करिते लागिल। बाल्यकाल हइते बराबर बिहारी महेन्द्रेर अन्तरालेइ पड़िया छिल। जगते स्नेहप्रेम सम्बन्धे

महेन्द्र-देवतार शुष्क निर्माल्यइ ताहार भाग्ये जुटित। आज महेन्द्र स्वयं प्रार्थी एवं बिहारी विमुख, तबु महेन्द्रके ठेलिया विनोदिनी एइ अरसिक बिहारीकेइ वरण करिल। महेन्द्रओ विनोदिनीर दुइ-चारिखानि चिठि पाइयाछे, किन्तु बिहारीर ए-चिठिर काछे ताहा नितान्त कृत्रिम, ताहा निर्बोधके भुलाइबार शून्य छलना।

नूतन ठिकाना जानाइबार जन्य ग्रामेर डाकघरे महेन्द्रके पाठाइते विनोदिनीर व्यग्रता महेन्द्रेर मने पड़िल एवं ताहार कारण से बुझिते पारिल। विनोदिनी ताहार समस्त मन-प्राण दिया बिहारीर चिठिर उत्तर पाइबार जन्य पथ चाहिया बसिया आछे।

पूर्वप्रथामत मनिब ना थाकिलेओ भजु बेहारा महेन्द्रके चा एवं बाजार हइते जलखाबार आनिया खाओयाइल। महेन्द्र स्नान भुलिया गेल। उत्तप्त बालुकार उपर दिया पथिक येमन द्रुतपदे चले, महेन्द्र सेइरूप क्षणे क्षणे विनोदिनीर ज्वालाकर चिठिर उपर द्रुत चोख बुलाइते लागिल। महेन्द्र पण करिते लागिल, विनोदिनीर सङ्गे आर किछुतेइ देखा करिबे ना। किन्तु ताहार मने हइल, आर दुइ एकदिन चिठिर जवाब ना पाइले विनोदिनी बिहारीर बाड़िते आसिया उपस्थित हइबे एवं तखन समस्त अवस्था जानिते पारिया सान्त्वना लाभ करिबे। से सम्भावना ताहार काछे असह्य बोध हइल।

तखन चिठिखाना पकेटे करिया महेन्द्र सन्ध्यार किछु पूर्वे पटलडाङार बासाय आसिया उपस्थित हइल।

महेन्द्रेर म्लान अवस्थाय विनोदिनीर मने दया हइल—से बुझिते पारिल, महेन्द्र काल रात्रे हयतो पथे-पथे अनिद्राय यापन करियाछे। जिज्ञासा करिल, "काल रात्रे बाड़ि याओ नाइ ?"

महेन्द्र कहिल, "ना।"

विनोदिनी व्यस्त हइया बलिया उठिल, "आज एखनो तोमार खाओया हय नि नाकि।" बलिया सेवापरायणा विनोदिनी तत्क्षणात् आहारेर आयोजन करिते उद्यत हइल।

महेन्द्र कहिल, "थाक् थाक्, आमि खाइया आसियाछि।"

विनोदिनी। कोथाय खाइयाछ।

महेन्द्र। बिहारीदेर बाड़िते।

मुहूर्तेर जन्य विनोदिनीर मुख पाण्डुवर्ण हइया गेल। मुहूर्तकाल निरुत्तर थाकिया आत्मसंवरण करिया विनोदिनी जिज्ञासा करिल, "बिहारी ठाकुरपो भालो आछेन तो ?"

महेन्द्र कहिल, "भालोइ आछे। बिहारी ये पश्चिमे चलिया गेल।" महेन्द्र एमन भावे बलिल, येन बिहारी आजइ रओना हइयाछे।

विनोदिनीर मुख आर-एकबार पांशुवर्ण हइया गेल। पुनर्वार आत्म-संवरण करिया से कहिल, "एमन चञ्चल लोकओ तो देखि नाइ। आमादेर समस्त खबर पाइयाछेन बुझि? ठाकुरपो खुब कि राग करियाछेन।"

महेन्द्र। ता ना हइले एइ असह्य गरमेर समय कि मानुष शख करिया पश्चिमे बेड़ाइते याय।

विनोदिनी। आमार कथा किछु बलिलेन ना कि।

महेन्द्र। बलिबार आर की आछे। एइ लओ बिहारीर चिठि।

बलिया चिठिखाना विनोदिनीर हाते दिया महेन्द्र तीव्रदृष्टिते ताहार मुखेर भाव निरीक्षण करिते लागिल।

विनोदिनी ताड़ाताड़ि चिठि लइया देखिल, खोला चिठि—लेफाफार उपरे ताहारइ हस्ताक्षरे बिहारीर नाम लेखा। लेफाफा हइते बाहिर करिया देखिल, ताहारइ लेखा सेइ चिठि। उल्टाइया-पाल्टाइया कोथाओ बिहारीर लेखा जवाब किछुइ देखिते पाइल ना।

एकटुखानि चुप करिया थाकिया विनोदिनी महेन्द्रके जिज्ञासा करिल, "चिठिखाना तुमि पड़ियाछ?"

विनोदिनीर मुखेर भाव देखिया महेन्द्रेर मने भयेर सञ्चार हइल। से फस करिया मिथ्या कथा कहिल, "ना।"

विनोदिनी चिठिखाना टुकरा-टुकरा करिया छिड़िया, पुनराय ताहा कुटिकुटि करिया जानालार बाहिरे फेलिया दिल।

महेन्द्र कहिल, "आमि बाड़ि याइतेछि।"

विनोदिनी ताहार कोनो उत्तर दिल ना।

महेन्द्र। तुमि येमन इच्छा प्रकाश करियाछ, आमि ताहाइ करिब। सातदिन आमि बाड़िते थाकिब। कालेजे आसिबार समय प्रत्यह एकबार एखानकार समस्त बन्दोबस्त करिया खेमिर हाते दिया याइब। देखा करिया तोमाके विरक्त करिब ना।

विनोदिनी महेन्द्रेर कोनो कथा शुनिते पाइल कि ना के जाने, किन्तु कोनो उत्तर करिल ना—खोला जानालार बाहिरे अन्धकार आकाशे चाहिया रहिल।

महेन्द्र ताहार जिनिसपत्र लइया बाहिर हइया गेल।

विनोदिनी शून्यगृहे अनेकक्षण आड़ष्टेर मतो बसिया थाकिया अवशेषे

निजेके येन प्राणपण बले सचेतन करिबार जन्य वक्षेर कापड़ छिँड़िया आपनाके निष्ठुरभावे आघात करिते लागिल।

खेमि शब्द शुनिया व्यस्त हइया कहिल, "बउठाकरुन, करितेछ की।"

"तुइ या एखान थेके" बलिया गर्जन करिया उठिया विनोदिनी खेमिके घर हइते बाहिर करिया दिल। ताहार परे सशब्दे द्वार रुद्ध करिया, दुइ हात मुठा करिया, माटिते लुटाइया पड़िया, बाणाहत जन्तुर मतो आर्तस्वरे काँदिते लागिल। एइरूपे विनोदिनी निजेके विक्षत परिश्रान्त करिया मूर्छितेर मतो मुक्त वातायनेर तले समस्त रात्रि पड़िया रहिल।

प्रातःकाले सूर्यालोक गृहे प्रवेश करितेइ ताहार हठात् सन्देह हइल, बिहारी यदि ना गिया थाके, महेन्द्र यदि विनोदिनीके भुलाइबार जन्य मिथ्या बलिया थाके। तत्क्षणात् खेमिके डाकिया कहिल, "खेमि, तुइ एखनइ या—बिहारी-ठाकुरपोर बाड़ि गिया ताँहादेर खबर लइया आय।"

खेमि घण्टाखानेक परे फिरिया आसिया कहिल, "बिहारी बाबुर बाड़िर समस्त जानाला-दरजा बन्ध। दरजाय घा दिते भितर हइते बेहारा बलिल, "बाबु बाड़िते नाइ, तिनि पश्चिमे बेड़ाइते गियाछेन।"

विनोदिनीर मने आर सन्देहेर कोनोइ कारण रहिल ना।

४२

रात्रेइ महेन्द्र शय्या छाड़िया गेछे शुनिया राजलक्ष्मी वधूर प्रति अत्यन्त राग करिलेन। मने करिलेन, आशार लाञ्छनातेइ महेन्द्र चलिया गेछे। राजलक्ष्मी आशाके जिज्ञासा करिलेन, "महेन्द्र काल रात्रे चलिया गेल केन।"

आशा मुख निचु करिया बलिल, "जानि ना, मा।"

राजलक्ष्मी भाविलेन, एटाओ अभिमानेर कथा। विरक्त हइया कहिलेन, "तुमि जान ना तो के जानिबे। ताहाके किछु बलियाछिले?"

आशा केवलमात्र बलिल, "ना।"

राजलक्ष्मी विश्वास करिलेन ना। ए कि कखनो सम्भव हय।

जिज्ञासा करिलेन, "काल महिन कखन गेल।"

आशा संकुचित हइया कहिल, "जानि ना।"

राजलक्ष्मी अत्यन्त रागिया उठिया कहिलेन, "तुमि किछुइ जान ना! कचि खुकि! तोमार सब चालाकि।"

आशारइ आचरणे ओ स्वभावदोषेइ ये महेन्द्र गृहत्यागी हइयाछे, ए-

मतओ राजलक्ष्मी तीव्रस्वरे घोषणा करिया दिलेन। आशा नतमस्तके सेइ भर्त्सना वहन करिया निजेर घरे गिया काँदिते लागिल। से मने मने भाबिल, "केन ये आमाके आमार स्वामी एकदिन भालोबासियाछिलेन, ताहा आमि जानि ना एवं केमन करिया ये ताँहार भालोबासा फिरिया पाइब, ताहाओ आमि बलिते पारि ना।" ये लोक भालोबासे, ताहाके केमन करिया खुशि करिते हय, ताहा हृदय आपनि बलिया देय; किन्तु ये भालोबासे ना, ताहार मन की करिया पाइते हय, आशा ताहार की जाने। ये लोक अन्यके भालोबासे, ताहार निकट हइते सोहाग लइते याओयार मतो एमन निरतिशय लज्जाकर चेष्टा से केमन करिया करिबे।

सन्ध्याकाले बाड़िर दैवज्ञ-ठाकुर एवं ताँहार भगिनी आचार्य-ठाकरुन आसियाछेन। छेलेर ग्रहशान्तिर जन्य राजलक्ष्मी इँहादिगके डाकिया पाठाइया-छिलेन। राजलक्ष्मी एकबार बउमार कोष्ठी एवं हात देखिबार जन्य दैवज्ञके अनुरोध करिलेन एवं सेइ उपलक्षे आशाके उपस्थित करिलेन। परेर काछे निजेर दुर्भाग्य-आलोचनार संकोचे एकान्त कुण्ठित हइया आशा कोनोमते ताहार हात बाहिर करिया बसियाछे, एमन समय राजलक्ष्मी ताँहार घरेर पार्श्वस्थ दीपहीन बारान्दा दिया मृदु जुतार शब्द पाइलेन—के येन गोपने चलिया याइबार चेष्टा करितेछे। राजलक्ष्मी डाकिलेन, "के ओ।"

प्रथमे साड़ा पाइलेन ना। ताहार पर आबार डाकिलेन, "के याय गो।" तखन निरुत्तरे महेन्द्र घरेर मध्ये प्रवेश करिल।

आशा खुशि हइबे कि, महेन्द्रेर लज्जा देखिया लज्जाय ताहार हृदय भरिया गेल। महेन्द्रके एखन निजेर बाड़ितेओ चोरेर मतो प्रवेश करिते हय। दैवज्ञ एवं आचार्य-ठाकरुन बसिया आछेन बलिया ताहार आरओ लज्जा हइल। समस्त पृथिवीर काछे निजेर स्वामीर जन्य ये लज्जा, इहाइ आशार दुःखेर चेयेओ येन बेशि हइया उठियाछे। राजलक्ष्मी यखन मृदुस्वरे बउके बलिलेन "बउमा, पार्वतीके बलिया दाओ, महिनेर खाबार गुछाइया आने", तखन आशा कहिल, "मा, आमिइ आनितेछि।" बाड़िर दासदासीदेर दृष्टि हइतेओ से महेन्द्रके ढाकिया राखिते चाय।

एदिके आचार्य ओ ताहार भगिनीके देखिया महेन्द्र मने मने अत्यन्त राग करिल। ताहार माता ओ स्त्री दैवसहाये ताहाके वश करिबार जन्य एइ अशिक्षित मूढ़देर सहित निर्लज्जभावे षड़यन्त्र करितेछे, इहा महेन्द्रेर काछे असह्य बोध हइल। इहार उपर यखन आचार्य-ठाकरुन कण्ठस्वरे अतिरिक्त मधुमाखा स्नेहरसेर सञ्चार करिया जिज्ञासा करिलेन, "भालो

आछ तो, बाबा।" तखन महेन्द्र आर बसिया थाकिते पारिल ना; कुशल प्रश्नेर कोनो उत्तर ना दिया कहिल, "मा, आमि एक बार उपरे याइतेछि।"

मा भाबिलेन महेन्द्र बुझि शयनगृहे विरले वधूर सङ्गे कथावार्ता कहिते चाय। अत्यन्त खुशि हइया ताड़ाताड़ि रन्धनशालाय निजे गिया आशाके कहिलेन, "याओ, याओ, तुमि एकबार शीघ्र उपरे याओ, महिनेर की बुझि दरकार आछे।"

आशा दुरुदुरुवक्षे ससंकोच पदक्षेपे उपरे गेल। शाशुड़ीर कथाय से मने करियाछिल, महेन्द्र बुझि ताहाके डाकियाछे। किन्तु घरेर मध्ये कोनोमतेइ हठात् ढुकिते पारिल ना, ढुकिबार पूर्वे आशा अन्धकारे द्वारेर अन्तराले महेन्द्रके देखिते लागिल।

महेन्द्र तखन अत्यन्त शून्यहृदये नीचेर बिछानाय पड़िया ताकियाय ठेस दिया कड़िकाठ पर्यालोचना करितेछिल। एइ तो सेइ महेन्द्र—सेइ सबइ, किन्तु की परिवर्तन। एइ क्षुद्र शयनघरटिके एकदिन महेन्द्र स्वर्ग करिया तुलियाछिल—आज केन सेइ आनन्दस्मृतिते-पवित्र घरटिके महेन्द्र अपमान करितेछे। एत कष्ट, एत विरक्ति, एत चाञ्चल्य यदि, तबे ओ-शय्याय आर बसियो ना, महेन्द्र। एखाने आसियाओ यदि मने ना पड़े सेइ-समस्त परिपूर्ण गभीर रात्रि, सेइ-समस्त सुनिविड़ मध्याह्न, आत्महारा कर्मविस्मृत घनवर्षार दिन, दक्षिणवायुकम्पित वसन्तेर विह्वल सन्ध्या, सेइ अनन्त असीम असंख्य अनिर्वचनीय कथागुलि, तबे ए-बाड़िते अन्य अनेक घर आछे, किन्तु एइ क्षुद्र घरटिते आर एक मुहूर्तओ नहे!

आशा अन्धकारे दाँड़ाइया यतइ महेन्द्रके निरीक्षण करिया देखिते लागिल ततइ ताहार मने हइते लागिल, महेन्द्र एइमात्र सेइ विनोदिनीर काछ हइते आसितेछे; ताहार अङ्गे सेइ विनोदिनीर स्पर्श, ताहार चोखे सेइ विनोदिनीर मूर्ति, काने सेइ विनोदिनीर कण्ठस्वर, मने सेइ विनोदिनीर वासना एकेबारे लिप्त जड़ित हइया आछे। एइ महेन्द्रके आशा केमन करिया पवित्र भक्ति दिबे, केमन करिया एकाग्रमने बलिबे, "एसो, आमार अनन्यपरायण हृदयेर मध्ये एसो, आमार अटलनिष्ठ सतीप्रेमेर शुभ्र शतदलेर उपर तोमार चरण-दुखानि राखो।" से ताहार मासिर उपदेश, पुराणेर कथा, शास्त्रेर अनुशासन किछुइ मानिते पारिल ना—एइ दाम्पत्यस्वर्गच्युत महेन्द्रके से आर मनेर मध्ये देवता बलिया अनुभव करिल ना। से आज विनोदिनीर कलङ्क-पारावारेर मध्ये ताहार हृदयदेवताके विसर्जन दिल; सेइ प्रेमशून्य रात्रिर अन्धकारे ताहार कानेर मध्ये, बुकेर मध्ये, मस्तिष्केर मध्ये, ताहार सर्वाङ्गे

रक्तस्रोतेर मध्ये, ताहार चारिदिकेर समस्त संसारे, ताहार आकाशेर नक्षत्रे, ताहार प्राचीरवेष्टित निभृत छादटिते, ताहार शयनगृहेर परित्यक्त विरह-शय्यातले एकटि भयानक गम्भीर व्याकुलतार सङ्गे विसर्जनेर वाद्य बाजिते लागिल।

विनोदिनीर महेन्द्र येन आशार पक्षे परपुरुष, येन परपुरुषेरओ अधिक—एमन लज्जार विषय येन अति-बड़ो अपरिचितओ नहे। से कोनोमतेइ घरे प्रवेश करिते पारिल ना।

एक समय कड़िकाठ हइते महेन्द्रेर अन्यमनस्क दृष्टि सम्मुखेर देयालेर दिके नामिया आसिल। ताहार दृष्टि अनुसरण करिया आशा देखिल, सम्मुखेर देयाले महेन्द्रेर छविर पार्श्वेइ आशार एकखानि फोटोग्राफ झुलानो रहियाछे। इच्छा हइल, सेखाना आँचल दिया झाँपिया फेले, टानिया छिँड़िया लइया आसे। अभ्यासवशत केन ये सेटा चोखे पड़े नाइ, केन से ये एतदिन सेटा नामाइया फेलिया देय नाइ, ताहाइ मने करिया से आपनाके धिक्कार दिते लागिल। ताहार मने हइल, येन महेन्द्र मने मने हासितेछे एवं ताहार हृदयेर आसने ये विनोदिनीर मूर्ति प्रतिष्ठित, से-ओ येन ताहार जोड़ा-भुरुर भितर हइते ओइ फोटोग्राफटार प्रति सहास्य कटाक्षपात करितेछे।

अवशेषे विरक्तिपीड़ित महेन्द्रेर दृष्टि देयाल हइते नामिया आसिल। आशा आपनार मूर्खता घुचाइबार जन्य आजकाल सन्ध्यार समय काजकर्म ओ शाशुड़ीर सेवा हइते अवकाश पाइलेइ अनेकरात्रि पर्यन्त निर्जने अध्ययन करित। ताहार सेइ अध्ययनेर खातापत्रबइगुलि घरेर एकधारे गोछानो छिल। हठात् महेन्द्र अलसभावे ताहार एकखाना खाता टानिया लइया खुलिया देखिते लागिल। आशार इच्छा करिल, चीत्कार करिया छुटिया सेखाना काड़िया लइया आसे। ताहार काँचा-हातेर अक्षरगुलिर प्रति महेन्द्रेर हृदयहीन विद्रूपदृष्टि कल्पना करिया से आर एक मुहूर्तओ दाँड़ाइते पारिल ना। द्रुतपदे नीचे चलिया गेल—पदशब्द गोपन करिबार चेष्टाओ रहिल ना।

महेन्द्रेर आहार समस्तइ प्रस्तुत हइयाछिल। राजलक्ष्मी मने करितेछिलेन, महेन्द्र बउमार सङ्गे रहस्यालापे प्रवृत्त आछे; सेइजन्य खाबार लइया गिया माझखाने भङ्ग दिते ताँहार प्रवृत्ति हइतेछिल ना। आशाके नीचे आसिते देखिया तिनि भोजनस्थले आहार लइया महेन्द्रके खबर दिलेन। महेन्द्र खाइते उठिबामात्र आशा घरेर मध्ये छुटिया गिया निजेर छबिखाना छिँड़िया लइया छादेर प्राचीर डिङाइया फेलिया दिल, एवं ताहार खाता-पत्रगुला ताड़ाताड़ि तुलिया लइया गेल।

आहारान्ते महेन्द्र शयनगृहे आसिया बसिल। राजलक्ष्मी वधूके काछा-काछि कोथाओ खुंजिया पाइलेन ना। अवशेषे एकतलाय रन्धन-शालाय आसिया देखिलेन, आशा ताँहार जन्य दुध ज्वाल दितेछे। कोनो आवश्यक छिल ना। कारण, ये-दासी राजलक्ष्मीर रात्रेर दुध प्रतिदिन ज्वाल दिया थाके, से निकटेइ छिल एवं आशार एइ अकारण उत्साहे आपत्ति प्रकाश करितेछिल ; विशुद्ध जलेर द्वारा पूरण करिया दुधेर ये अंशटुकु से हरण करित, सेटुकु आज व्यर्थ हइबार सम्भावनाय से मने मने व्याकुल हइतेछिल।

राजलक्ष्मी कहिलेन, "ए की बउमा, एखाने केन। याओ, उपरे याओ।"

आशा उपरे गिया ताहार शाशुड़ीर घर आश्रय करिल। राजलक्ष्मी वधूर व्यवहारे विरक्त हइलेन। भाविलेन, "यदि वा महेन्द्र मायाविनीर माया काटाइया क्षणकालेर जन्य बाड़ि आसिल, बउ रागारागि मान-अभिमान करिया आबार ताहाके बाड़िछाड़ा करिबार चेष्टाय आछे। विनोदिनीर फाँदे महेन्द्र ये धरा पड़िल, से तो आशारइ दोष। पुरुषमानुष तो स्वभावतइ विपथे याइबार जन्य प्रस्तुत, स्त्रीर कर्त्तव्य ताहाके छले बले कौशले सिधा पथे राखा।"

राजलक्ष्मी तीव्र भर्त्सनार स्वरे कहिलेन, "तोमार ए की-रकम व्यवहार, बउमा। तोमार भाग्यक्रमे स्वामी यदि घरे आसिलेन, तुमि मुख हाँड़िपाना करिया अमन कोणे-कोणे लुकाइया बेड़ाइतेछ केन।"

आशा निजेके अपराधिनी ज्ञान करिया अंकुशाहतचित्ते उपरे चलिया गेल, एवं मनके द्विधा करिबार अवकाशमात्र ना दिया एक निश्वासे घरेर मध्ये गिया उपस्थित हइल। दशटा बाजिया गेछे। महेन्द्र ठिक सेइ समय बिछानार सम्मुखे दाँड़ाइया अनावश्यक दीर्घकाल धरिया चिन्तितमुखे मशारि झाड़ितेछे। विनोदिनीर उपरे ताहार मने एकटा तीव्र अभिमानेर उदय हइयाछे। से मने मने बलितेछिल, "विनोदिनी कि आमाके ताहार एमनइ क्रीतदास बलिया निश्चय स्थिर करिया राखियाछे ये, आशार काछे आमाके पाठाइते ताहार मने लेशमात्र आशङ्का जन्मिल ना। आज हइते यदि आमि आशार प्रति आमार कर्तव्य पालन करि, तबे विनोदिनी काहाके आश्रय करिया एइ पृथिवीते दाँड़ाइबे। आमि कि एतइ अपदार्थ ये, एइ कर्तव्यपालनेर इच्छा आमार पक्षे एकेबारेइ असम्भव। विनोदिनीर काछे कि शेषकाले आमार एइ परिचय हइल। श्रद्धाओ हाराइलाम, भालोबासाओ पाइलाम ना, आमाके अपमान करिते ताहार द्विधाओ हइल ना?"

महेन्द्र मशारिर सम्मुखे दाँड़ाइया दृढ़चित्ते प्रतिज्ञा करितेछिल, विनोदिनीर एइ स्पर्धार से प्रतिवाद करिबे, येमन करिया हउक आशार प्रति हृदयके अनुकूल करिया विनोदिनीकृत अवमाननार प्रतिशोध दिबे।

आशा येइ घरे प्रवेश करिल, महेन्द्रेर अन्यमनस्क मशारिझाड़ा अमनि बन्ध हइया गेल। की बलिया आशार सङ्गे से कथा आरम्भ करिबे, सेइ एक अतिदुरूह समस्या उपस्थित हइल।

महेन्द्र काष्ठहासि हासिया, हठात् ताहार ये कथाटा मुखे आसिल ताहाइ बलिल। कहिल, "तुमिओ देखिलाम आमार मतो पड़ाय मन दियाछ। खातापत्र एइ ये एखाने देखियाछिलाम, सेगुलि गेल कोथाय।"

कथाटा ये केवल खापछाड़ा शुनाइल ताहा नहे, आशाके येन मारिल। मूढ़ आशा ये शिक्षिता हइबार चेष्टा करितेछे, सेटा ताहार बड़ो गोपन कथा— आशा स्थिर करियाछिल, ए-कथाटा बड़ोइ हास्यकर। ताहार एइ शिक्षालाभेर संकल्प यदि काहारओ हास्यविद्रूपेर लेशमात्र आभास हइतेओ गोपन करिबार विषय हय, तबे ताहा विशेषरूपे महेन्द्रेर। सेइ महेन्द्र यखन एतदिन परे प्रथम सम्भाषणे हासिया सेइ कथाटारइ अवतारणा करिल, तखन निष्ठुर-वेत्राहत शिशुर कोमल देहेर मतो आशार समस्त मनटा संकुचित व्यथित हइते लागिल। से आर कोनो उत्तर ना दिया मुख फिराइया टिपाइयेर प्रान्त धरिया दाँड़ाइया रहिल।

महेन्द्रओ उच्चारणमात्र बुझियाछिल, कथाटा ठिक संगत, ठिक समयोपयोगी हय नाइ—किन्तु वर्तमान अवस्थाय उपयोगी कथाटा ये की हइते पारे ताहा महेन्द्र किछुतेइ भाबिया पाइल ना। माझखानेर एत बड़ो विप्लवेर परे पूर्वेर न्याय कोनो सहज कथा ठिकमतो शुनाय ना, हृदयओ एकेबारे मूक, कोनो नूतन कथा बलिबार जन्य से प्रस्तुत नहे। महेन्द्र भाविल, "बिछानार भितरे ढुकिया पड़िले सेखानकार निभृत वेष्टनेर मध्ये हयतो कथा कओया सहज हइबे।" एइ भाविया महेन्द्र आबार मशारिर बहिर्भाग कोंचा दिया झाड़िते लागिल। नूतन अभिनेता रङ्गभूमिते प्रवेशेर पूर्वे येमन उत्कण्ठार सङ्गे नेपथ्यद्वारे दाँड़ाइया निजेर अभिनेतव्य विषय मने मने आवृत्ति करिया देखिते थाके, महेन्द्र सेइरूप मशारिर सम्मुखे दाँड़ाइया मने मने ताहार वक्तव्य ओ कर्त्तव्य आलोचना करिते लागिल। एमन समय अत्यन्त मृदु एकटा शब्द शुनिया महेन्द्र मुख फिराइया देखिल, आशा घरेर मध्ये नाइ।

४३

परदिन प्राते महेन्द्र माके बलिल, "मा, पड़ाशुनार जन्य आमार एकटि निरिबिलि स्वतन्त्र घर चाइ। काकीमा ये घरे थाकितेन, सेइ घरे आमि थाकिब।"

मा खुशि हइया उठिलेन—"तबे तो महिन बाड़ितेइ थाकिबे। तबे तो बउमार सङ्गे मिटमाट हइया गेछे। आमार एमन सोनार बउके कि महिन चिरदिन अनादर करिते पारे। एइ लक्ष्मीके छाड़िया कोथाकार सेइ मायाविनी डाइनिटाके लइया कतदिनइ वा मानुष भुलिया थाकिबे।"

मा ताड़ाताड़ि कहिलेन, "ता बेश तो महिन।" बलिया तखनइ चाबि बाहिर करिया रुद्ध घर खुलिया झाड़ाझोड़ार धुमधाम बाधाइया दिलेन। "बउ, ओ बउ, बउ कोथाय गेल।" अनेक सन्धाने बाड़िर एक कोण हइते संकुचिता वधूके बाहिर करिया आना हइल। "एकटा साफ जाजिम बाहिर करिया दाओ; ए घरे टेबिल नाइ, एखाने एकटा टेबिल पातिया दिते हइबे; ए आलो तो एखाने चलिबे ना, उपर हइते ल्याम्पटा पाठाइया दाओ।" एइरूपे उभये मिलिया एइ बाड़िटिर राजाधिराजेर जन्य अन्नपूर्णार घरे विस्तृत राजासन प्रस्तुत करिया दिलेन। महेन्द्र सेवाकारिणीदेर प्रति भ्रूक्षेपमात्र ना करिया गम्भीर मुखे खातापत्र बहि लइया घरे बसिल एवं समयेर लेशमात्र अपव्यय ना करिया तत्क्षणात् पड़िते आरम्भ करिल।

सन्ध्यावेलाय आहारेर पर महेन्द्र पुनराय पड़िते बसिया गेल। से उपरे ताहार शयनघरे शुइबे कि नीचे शुइबे ताहा केह बुझिते पारिल ना। राजलक्ष्मी बहुयत्ने आशाके आड़ष्ट पुतुलटिर मतो साजाइया कहिलेन, "याओ तो बउमा, महिनके जिज्ञासा करिया एसो, ताहार बिछाना कि उपरे हइबे।"

ए-प्रस्तावे आशार पा किछुतेइ सरिल ना, से नीरवे नतमुखे दाँड़ाइया रहिल। रुष्ट राजलक्ष्मी ताहाके तीव्र भर्त्सना करिते लागिलेन। आशा बहुकष्टे धीरे-धीरे द्वारेर काछे गेल, किछुतेइ आर अग्रसर हइते पारिल ना। राजलक्ष्मी दूर हइते वधूर एइ व्यवहार देखिया बारान्दार प्रान्ते दाँड़ाइया क्रुद्ध इङ्गित करिते लागिलेन।

आशा मरिया हइया घरेर मध्ये ढुकिया पड़िल। महेन्द्र पश्चाते पदशब्द शुनिया बइ हइते माथा ना तुलिया कहिल, "एखनो आमार देरि आछे—आबार काल भोरे उठिया पड़िते हइबे—आमि एइखानेइ शुइब।"

की लज्जा। आशा कि महेन्द्रके उपरेर घरे शुइते याइबार जन्य साधिते आसियाछिल।

घर हइते से बाहिर हइतेइ राजलक्ष्मी विरक्तिर स्वरे जिज्ञासा करिलेन, "की, हइल की।"

आशा कहिल, "तिनि एखन पड़ितेछेन, नीचेइ शुइबेन।" बलिया से निजेर अपमानित शयनगृहे आसिया प्रवेश करिल। कोथाओ ताहार सुख नाइ—समस्त पृथिवी सर्वत्रइ येन मध्याह्नेर मरु-भूतलेर मतो तप्त हइया उठियाछे।

खानिक रात्रे आशार शयनगृहेर रुद्धद्वारे घा पड़िल, "बउ, बउ, दरजा खोलो।"

आशा ताड़ाताड़ि द्वार खुलिया दिल। राजलक्ष्मी ताँहार हाँपानि लइया सिँड़िते उठिया कष्टे निश्वास लइतेछिलेन। घरे प्रवेश करियाइ तिनि बिछानाय बसिया पड़िलेन ओ वाक्शक्ति फिरिया आसितेइ भाङा गलाय कहिलेन, "बउ, तोमार रकम की। उपरे आसिया द्वारबन्ध करियाछ ये। एखन कि एइ रकम रागारागि करिबार समय। एत दुःखेओ तोमार घटे बुद्धि आसिल ना। याओ, नीचे याओ।"

आशा मृदुस्वरे कहिल, "तिनि एकला थाकिबेन बलियाछेन।"

राजलक्ष्मी। एकला थाकिबे बलिलेइ हइल। रागेर मुखे से की कथा बलियाछे, ताइ शुनिया अमनि बाँकिया बसिते हइबे! एत अभिमानी हइले चले ना। याओ, शीघ्र याओ।

दुःखेर दिने वधूर काछे शाशुड़ीर आर लज्जा नाइ। ताँहार हाते ये-किछु उपाय आछे, ताहाइ दिया महेन्द्रके कोनोमते बाँधितेइ हइबे।

आवेगेर सहित कथा कहिते कहिते राजलक्ष्मीर पुनराय अत्यन्त श्वासकष्ट हइल। कतकटा संवरण करिया तिनि उठिलेन। आशाओ द्विरुक्ति ना करिया ताँहाके धरिया लइया नीचे चलिल। राजलक्ष्मीके आशा ताँहार शयनघरे बिछानाय बसाइया, ताकिया-बालिशगुलि पिठेर काछे ठिक करिया दिते लागिल। राजलक्ष्मी कहिलेन, "थाक् बउमा, थाक्। सुधोके डाकिया दाओ। तुमि याओ, आर देरि करियो ना।"

आशा एबार आर द्विधामात्र करिल ना। शाशुड़िर घर हइते बाहिर हइया एकेबारे महेन्द्रेर घरे गिया उपस्थित हइल। महेन्द्रेर सम्मुखे टेबिलेर उपर खोला बइ पड़िया आछे—से टेबिलेर उपर दुइ पा तुलिया दिया चौकिर उपर माथा राखिया एकमने की भावितेछिल। पश्चाते पदशब्द शुनिया

एकेबारे चमकिया उठिया फिरिया ताकाइल। येन काहार ध्याने निमग्न छिल, हठात् भ्रम हइयाछिल, से-इ बुझि आसियाछे। आशाके देखिया महेन्द्र संयत हइया पा नामाइया खोला बइटा कोले टानिया लइल।

महेन्द्र आज मने मने आश्चर्य हइल। आजकाल तो आशा एमन असंकोचे ताहार सम्मुखे आसे ना—दैवात् ताहादेर उभयेर साक्षात् हइले से तखनइ चलिया याय। आज एत रात्रे एमन सहजे से ये ताहार घरे आसिया प्रवेश करिल, ए बड़ो विस्मयकर। महेन्द्र ताहार बइ हइते मुख ना तुलियाइ बुझिल, आशार आज चलिया याइबार लक्षण नहे। आशा महेन्द्रेर सम्मुखे स्थिरभावे आसिया दाँड़ाइल। तखन महेन्द्र आर पड़िबार भान करिते पारिल ना—मुख तुलिया चाहिल। आशा सुस्पष्ट स्वरे कहिल, "मार हाँपानि बाड़ियाछे, तुमि एकबार ताँहाके देखिले भालो हय।"

महेन्द्र। तिनि कोथाय आछेन?

आशा। ताँहार शोबार घरेइ आछेन, घुमाइते पारितेछेन ना।

महेन्द्र। तबे चलो ताहाके देखिया आसि गे।

अनेक दिनेर परे आशार सङ्गे एइटुकु कथा कहिया महेन्द्र येन अनेकटा हाल्का बोध करिल। नीरवता येन दुर्भेद्य दुर्गप्राचीरेर मतो स्त्रीपुरुषेर माझ-खाने कालो छाया फेलिया दाँड़ाइया छिल, महेन्द्रेर तरफ हइते ताहा भाङिबार कोनो अस्त्र छिल ना—एमन समय आशा स्वहस्ते केल्लार एकटि छोटो द्वार खुलिया दिल।

राजलक्ष्मीर द्वारेर बाहिरे आशा दाँड़ाइया रहिल, महेन्द्र घरे प्रवेश करिल। महेन्द्रके असमये घरे आसिते देखिया राजलक्ष्मी भीत हइलेन, भाबिलेन, बुझि वा आशार सङ्गे रागारागि करिया आबार से विदाय लइते आसियाछे। कहिलेन, "महिन, एखनो घुमास नाइ?"

महेन्द्र कहिल, "मा, तोमार सेइ हाँपानि कि बाड़ियाछे।"

एतदिन परे एइ प्रश्न शुनिया मार मने बड़ो अभिमान जन्मिल। बुझि-लेन, बउ गिया बलातेइ आज महिन मार खबर लइते आसियाछे। एइ अभिमानेर आवेगे ताँहार वक्ष आरो आन्दोलित हइया उठिल—कष्टे वाक्य उच्चारण करिया बलिलेन, "या, तुइ शुते या। आमार ओ किछुइ ना।"

महेन्द्र। ना मा, एकबार परीक्षा करिया देखा भालो, ए व्यामो उपेक्षा करिबार जिनिस नहे।

महेन्द्र जानित, ताहार मातार हृत्पिण्डेर दुर्बलता आछे, एइ कारणे एवं मातार मुखश्रीर लक्षण देखिया से उद्‌वेग अनुभव करिल।

मा कहिलेन, "परीक्षा करिबार दरकार नाइ, आमार ए व्यामो सारिबार नहे ।"

महेन्द्र कहिल, "आच्छा, आज रात्रेर मतो एकटा घुमेर ओषुध आनाइया दितेछि, काल भालो करिया देखा याइबे ।"

राजलक्ष्मी । ढेर ओषुध खाइयाछि, ओषुधे आमार किछु हय ना । याओ महिन, अनेक रात हइयाछे, तुमि घुमाइते याओ ।

महेन्द्र । तुमि एकटु सुस्थ हइलेइ आमि याइब ।

तखन अभिमानिनी राजलक्ष्मी द्वारेर अन्तरालवर्तिना वधूके सम्बोधन करिया बलिलेन, "बउ, केन तुमि एइ रात्रे महेन्द्रके विरक्त करिबार जन्य एखाने आनियाछ ।" बलिते बलिते ताँहार श्वासकष्ट आरो बाड़िया उठिल ।

तखन आशा घरेर मध्ये प्रवेश करिया मृदु अथच दृढ़स्वरे महेन्द्रके कहिल, "याओ, तुमि शुइते याओ, आमि मार काछे थाकिब ।"

महेन्द्र आशाके आड़ाले डाकिया कहिल, "आमि एकटा ओषुध आनाइते पाठाइलाम । शिशिते दुइ दाग थाकिबे—एक दाग खाओयाइया यदि घुम ना आसे, तबे एक घण्टा परे आर-एक दाग खाओयाइया दिओ । रात्रे बाड़िले आमाके खबर दिते भुलियो ना ।"

एइ बलिया महेन्द्र निजेर घरे फिरिया गेल । आशा आज ताहार काछे ये-मूर्तिते देखा दिल, ए येन महेन्द्रेर पक्षे नूतन । ए-आशार मध्ये संकोच नाइ, दीनता नाइ, एइ आशा निजेर अधिकारेर मध्ये निजे अधिष्ठित, सेटुकुर जन्य महेन्द्रेर निकट से भिक्षाप्रार्थिणी नहे । निजेर स्त्रीके महेन्द्र उपेक्षा करियाछे, किन्तु बाड़िर वधूर प्रति ताहार सम्भ्रम जन्मिल ।

आशा ताँहार प्रति यत्नवशत महेन्द्रके डाकिया आनियाछे, इहाते राजलक्ष्मी मने मने खुशि हइलेन । मुखे बलिलेन, "बउमा, तोमाके शुते पाठाइलाम, तुमि आबार महेन्द्रके टानिया आनिले केन ।"

आशा ताँहार उत्तर ना दिया पाखा-हाते ताँहार पश्चाते बसिया वातास करिते लागिल ।

राजलक्ष्मी कहिलेन, "याओ बउमा, शुते याओ ।"

आशा मृदुस्वरे कहिल, "आमाके एइखाने बसिते बलिया गेछेन ।" आशा जानित, महेन्द्र मातार सेवाय ताहाके नियोग करिया गेछे, ए-खबरे राजलक्ष्मी खुशि हइबेन ।

12

राजलक्ष्मी यखन स्पष्टइ देखिलेन, आशा महेन्द्रेर मन बाँधिते पारितेछे ना, तखन ताँहार मने हइल, "अन्तत आमार व्यामो उपलक्ष करियाओ यदि महेन्द्रके थाकिते हय सेओ भालो।" ताँहार भय हइते लागिल, पाछे ताँहार असुख एकेबारे सारिया याय। आशाके भाँड़ाइया ओषुध तिनि फेलिया दिते आरम्भ करिलेन।

अन्यमनस्क महेन्द्र बड़ो-एकटा खेयाल करित ना। किन्तु आशा देखिते पाइत, राजलक्ष्मीर रोग किछुइ कमितेछे ना, वरञ्च येन बाड़ितेछे। आशा भाबित, महेन्द्र यथेष्ट यत्न ओ चिन्ता करिया औषध निर्वाचन करितेछे ना--महेन्द्रेर मन एतइ उद्भ्रान्त ये, मातार पीड़ाओ ताहाके चेताइया तुलिते पारितेछे ना। महेन्द्रेर एत बड़ो दुर्गतिते आशा ताहाके मने मने धिक्कार ना दिया थाकिते पारिल ना। एक दिके नष्ट हइले मानुष कि सकल दिकेइ एमनि करिया नष्ट हय।

एकदिन सन्ध्याकाले रोगेर कष्टेर समय राजलक्ष्मीर बिहारीके मने पड़िया गेल। कतदिन बिहारी आसे नाइ, ताहार ठिक नाइ। आशाके जिज्ञासा करिलेन, "बउमा, बिहारी एखन कोथाय आछे जान?" आशा बुझिते पारिल, चिरकाल रोगतापेर समय बिहारीइ मार सेवा करिया आसियाछे। ताइ कष्टेर समय बिहारीकेइ मातार मने पड़ितेछे। हाय, एइ संसारेर अटल निर्भर सेइ चिरकालेर बिहारीओ दूर हइल। बिहारी-ठाकुरपो थाकिले एइ दुःसमये मार यत्न हइत—इँहार मतो तिनि हृदयहीन नहेन। आशार हृदय हइते दीर्घनिश्वास पड़िल।

राजलक्ष्मी। बिहारीर सङ्गे महिन बुझि झगड़ा करियाछे? बड़ो अन्याय करियाछे बउमा। ताहार मतो एमन हिताकांक्षी बन्धु महिनेर आर केह नाइ।

बलिते बलिते ताँहार दुइ चक्षुर कोणे अश्रुजल जड़ो हइल।

एके एके आशार अनेक कथा मने पड़िल। अन्ध मूढ़ आशाके यथा-समये सतर्क करिबार जन्य बिहारी कतरूपे कत चेष्टा करियाछे एवं सेइ चेष्टार फले से क्रमशइ आशार अप्रिय हइया उठियाछे, सेइ कथा मने करिया आज आशा मने मने निजेके तीव्रभावे अपमान करिते लागिल। एकमात्र सुहृत्के लाञ्छित करिया एकमात्र शत्रुके ये वक्षे टानिया लय, विधाता सेइ कृतघ्न मूर्खके केन ना शास्ति दिबेन। भग्नहृदय बिहारी ये-निश्वास फेलिया ए-घर हइते विदाय हइया गेछे, से-निश्वास कि ए-घरके लागिबे ना।

आबार अनेकक्षण चिन्तित मुखे स्थिर थाकिया राजलक्ष्मी हठात् बलिया उठिलेन, "बउमा, बिहारी यदि थाकित, तबे एइ दुर्दिने से आमादेर रक्षा करिते पारित---एतदूर पर्यन्त गड़ाइते पाइत ना।"

आशा निस्तब्ध हइया भाबिते लागिल। राजलक्ष्मी निश्वास फेलिया बलिलेन, "से यदि खबर पाय आमार व्यामो हइयाछे, तबे से ना आसिया थाकिते पारिबे ना।"

आशा बुझिल, राजलक्ष्मीर इच्छा बिहारी एइ खबरटा पाय। बिहारीर अभावे तिनि आजकाल एकेबारे निराश्रय हइया पड़ियाछेन।

घरेर आलो निबाइया दिया महेन्द्र ज्योत्स्नाय जानलार काछे चुप करिया दाँड़ाइया छिल। पड़िते आर भालो लागे ना। गृहे कोनो सुख नाइ। याहारा परम आत्मीय, ताहादेर सङ्गे सहजभावेर सम्बन्ध दूर हइया गेले ताहादिगके परेर मतो अनायासे फेलिया देओया याय ना, आबार प्रियजनेर मतो अनायासे ताहादिगके ग्रहण करा याय ना---ताहादेर सेइ अत्याज्य आत्मीयता अहरह असह्य भारेर मतो वक्षे चापिया थाके। मार सम्मुखे याइते महेन्द्रेर इच्छा हय ना—तिनि हठात् महेन्द्रके काछे आसिते देखिलेइ एमन एकटा शङ्कित उद्वेगेर सहित ताहार मुखेर दिके चान ये, महेन्द्रके ताहा आघात करे। आशा कोनो उपलक्षे काछे आसिले ताहार सङ्गे कथा कहाओ कठिन हय, चुप करिया थाकाओ कष्टकर हइया उठे। एमन करिया दिन आर काटिते चाहे ना। महेन्द्र दृढ़ प्रतिज्ञा करियाछिल, अन्तत सात दिन से विनोदिनीर सङ्गे एकेबारेइ देखा करिबे ना। आरो दुइ दिन बाकि आछे— केमन करिया से दुइ दिन काटिबे।

महेन्द्र पश्चाते पदशब्द शुनिल। बुझिल, आशा घरे प्रवेश करियाछे। येन शुनिते पाय नाइ, एइ भान करिया स्थिर हइया दाँड़ाइया रहिल। आशा से भानटुकु बुझिते पारिल, तबु घर हइते चलिया गेल ना। पश्चाते दाँड़ाइया कहिल, "एकटा कथा आछे, सेइटे बलियाइ आमि याइतेछि।"

महेन्द्र फिरिया कहिल, "याइते हइबे केन, एकटु बसोइ ना।"

आशा एइ भद्रताटुकुते कान ना दिया स्थिर दाँड़ाइया कहिल, "बिहारी ठाकुरपोके मार असुखेर खबर देओया उचित।"

बिहारीर नाम शुनियाइ महेन्द्रेर गभीर हृदयक्षते घा पड़िल। निजेके एकटुखानि सामलाइया लइया कहिल, "केन उचित। आमार चिकित्साय बुझि विश्वास हय ना।"

महेन्द्र मातार चिकित्साय यथोचित यत्न करितेछे ना, एइ भर्त्सनाय आशार

हृदय परिपूर्ण हइया छिल, ताइ ताहार मुख दिया बाहिर हइल, "कइ, मार व्यामो तो किछुइ भालो हय नाइ, दिने दिने आरओ येन बाड़िया उठितेछे।"

एइ सामान्य कथाटार भितरकार उत्ताप महेन्द्र बुझिते पारिल। एमन गूढ़ भर्त्सना आशा आर कखनोइ महेन्द्रके करे नाइ। महेन्द्र निजेर अहंकारे आहत हइया विस्मित विद्रूपेर सहित कहिल, "तोमार काछे डाक्तारि शिखिते हइबे देखितेछि!"

आशा एइ विद्रूपे ताहार पुञ्जीभूत वेदनार उपरे हठात् अप्रत्याशित आघात पाइल; ताहार उपरे घर अन्धकार छिल, ताइ सेइ चिरकालेर निरुत्तर आशा आज असंकोचे उद्दीप्त तेजेर सहित बलिया उठिल, "डाक्तारि ना शेख, माके यत्न करा शिखिते पार।"

आशार काछे एमन जवाब पाइया महेन्द्रेर विस्मयेर सीमा रहिल ना। एइ अनभ्यस्त तीव्र वाक्ये महेन्द्र निष्ठुर हइया उठिल। कहिल, "तोमार बिहारी-ठाकुरपोके केन एइ बाड़िते आसिते निषेध करियाछि, ताहा तो तुमि जान—आबार ताहाके स्मरण करियाछ बुझि!"

आशा द्रुतपदे घर हइते चलिया गेल। लज्जार झड़े येन ताहाके ठेलिया लइया गेल। लज्जा ताहार निजेर जन्य नहे। अपराधे ये-व्यक्ति मग्न हइया आछे, से एमन अन्याय अपवाद मुखे उच्चारण करिते पारे। एतबड़ो निर्लज्जताके पर्वतप्रमाण लज्जा दियाओ ढाका याय ना।

आशा चलिया गेलेइ महेन्द्र निजेर सम्पूर्ण पराभव अनुभव करिते पारिल। आशा ये कोनो काले कोनो अवस्थातेइ महेन्द्रके एमन धिक्कार करिते पारे, ताहा महेन्द्र कल्पनाओ करिते पारे नाइ। महेन्द्र देखिल, येखाने ताहार सिंहासन छिल सेखाने से धुलाय लुटाइतेछे। एतदिन परे ताहार आशङ्का हइल, पाछे आशार वेदना घृणाय परिणत हय।

ओदिके बिहारीर कथा मने आसितेइ विनोदिनी सम्बन्धे चिन्ता ताहाके अधीर करिया तुलिल। बिहारी पश्चिम हइते फिरियाछे कि ना, के जाने। इतिमध्ये विनोदिनी ताहार ठिकाना जानितेओ पारे, विनोदिनीर सङ्गे बिहारीर देखा हओयाओ असम्भव नहे। महेन्द्रेर आर प्रतिज्ञा रक्षा हय ना।

रात्रे राजलक्ष्मीर वक्षेर कष्ट बाड़िल, तिनि आर थाकिते ना पारिया निजेइ महेन्द्रके डाकिया पाठाइलेन। कष्टे वाक्य उच्चारण करिया कहिलेन, "महिन, बिहारीके आमार बड़ो देखिते इच्छा हय, अनेक दिन से आसे नाइ।"

आशा शाशुड़िके वातास करितेछिल। से मुख निचु करिया रहिल। महेन्द्र कहिल, "से एखाने नाइ, पश्चिमे कोथाय चलिया गेछे।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "आमार मन बलितेछे, से एखानेइ आछे, केवल तोर उपर अभिमान करिया आसितेछे ना। आमार माथा खा, काल एकबार तुइ ताहार बाड़िते यास।"

महेन्द्र कहिल, "आच्छा याब।"

आज सकलेइ बिहारीके डाकितेछे। महेन्द्र निजेके विश्वेर परित्यक्त बलिया बोध करिल।

४५

परदिन प्रत्युषेइ महेन्द्र बिहारीर बाड़िते गिया उपस्थित हइल। देखिल, द्वारेर काछे अनेकगुला गोरुर गाड़िते भृत्यगण आसबाब बोझाइ करितेछे। भजुके महेन्द्र जिज्ञासा करिल, "व्यापारखाना की!" भजु कहिल, "बाबु बालिते गङ्गार धारे एकटि बागान लइयाछेन, सेइखाने जिनिसपत्र चलियाछे।" महेन्द्र जिज्ञासा करिल, "बाबु बाड़िते आछेन ना कि।" भजु कहिल, "तिनि दुइ दिन मात्र कलिकाताय थाकिया काल बागाने चलिया गेछेन।"

शुनिया महेन्द्रेर मन आशङ्काय पूर्ण हइया गेल। से अनुपस्थित छिल इतिमध्ये विनोदिनी ओ बिहारीते ये देखा हइयाछे, इहाते ताहार मने कोनो संशय रहिल ना। से कल्पनाचक्षे देखिल, विनोदिनीर बासार सम्मुखेओ एतक्षणे गोरुर गाड़ि बोझाइ हइतेछे। ताहार निश्चय बोध हइल, "एइ जन्यइ निर्बोध आमाके विनोदिनी बासा हइते दूरे राखिया छिल।"

मुहूर्तकाल विलम्ब ना करिया महेन्द्र ताहार गाड़िते चड़िया कोचम्यानके हाँकाइते कहिल। घोड़ा यथेष्ट द्रुत चलितेछे ना बलिया महेन्द्र माझे माझे कोचम्यानके गालि दिल। गलिर मध्ये सेइ बासार द्वारेर सम्मुखे पौँछिया देखिल, सेखाने यात्रार कोनो आयोजन नाइ। भय हइल, पाछे से-कार्य पूर्वेइ समाधा हइया थाके। वेगे द्वारे आघात करिल। भितर हइते वृद्ध चाकर दरजा खुलिया दिवामात्र महेन्द्र जिज्ञासा करिल, "सब खबर भालो तो।" से कहिल, "आज्ञा हाँ, भालो बइ कि।"

महेन्द्र उपरे गिया देखिल, विनोदिनी स्नाने गियाछे। ताहार निर्जन शयनघरे प्रवेश करिया महेन्द्र विनोदिनीर गत रात्रे व्यवहृत शय्यार उपर लुटाइया पड़िल—सेइ कोमल आस्तरणके दुइ प्रसारित हस्ते वक्षेर काछे आकर्षण करिल एवं ताहाके घ्राण करिया ताहार उपरे मुख राखिया बलिते लागिल, "निष्ठुर! निष्ठुर!"

एइरूपे हृदयोच्छ्वास उन्मुक्त करिया दिया शय्या हइते उठिया महेन्द्र अधीरभावे विनोदिनीर प्रतीक्षा करिते लागिल। घरेर मध्ये पायचारि करिते करिते देखिल, एकखाना बांला खबरेर कागज नीचेर बिछानाय खोला पड़िया आछे। समय काटाइबार जन्य कतकटा अन्यमनस्कभावे सेखाना तुलिया लइल, येखाने चोख पड़िल, महेन्द्र सेखानेइ बिहारीर नाम देखिते पाइल। एक मुहूर्ते ताहार समस्त मन खबरेर कागजेर सेइ जायगाटातेइ झुंकिया पड़िल। एकजन पत्रप्रेरक लिखितेछे, अल्पवेतनेर दरिद्र केरानिगण रुग्न हइया पड़िले ताहादेर बिनामूल्ये चिकित्सा ओ सेवार जन्य बिहारी बालिते गङ्गार धारे एकटि बागान लइयाछेन—सेखाने एक काले पाँचजनके आश्रय दिबार बन्दोबस्त हइयाछे, इत्यादि।

विनोदिनी एइ खबरटा पड़ियाछे। पड़िया ताहार किरुप भाव हइल। निश्चय ताहार मनटा सेइदिके पालाइ-पालाइ करितेछे। शुधु सेजन्य नहे, महेन्द्रेर मन एइ कारणे आरो छटफट करिते लागिल ये, बिहारीर एइ संकल्पे ताहार प्रति विनोदिनीर भक्ति आरो बाड़िया उठिबे। बिहारीके महेन्द्र मने मने "हाम्बाग" बलिल, बिहारीर एइ काजटाके "हुजुग" बलिया अभिहित करिल—कहिल, "लोकेर हितकारी हइया उठिबार हुजुग बिहारीर छेलेवेला हइतेइ आछे।" महेन्द्र निजेके बिहारीर तुलनाय एकान्त अकपट अकृत्रिम बलिया वाहवा दिबार चेष्टा करिल—कहिल, "औदार्य ओ आत्मत्यागेर भड़ङ मूढ़लोक भुलाइबार चेष्टाके आमि घृणा करि।" किन्तु हाय, एइ परम निश्चेष्ट अकृत्रिमतार माहात्म्य लोके अर्थात् विशेष कोनो-एकटि लोक हयतो बुझिबे ना। महेन्द्रेर मने हइते लागिल, बिहारी येन ताहार उपरे एओ एकटा चाल चालियाछे।

विनोदिनीर पदशब्द शुनिया महेन्द्र ताड़ाताड़ि कागजखाना मुड़िया ताहार उपरे चापिया बसिल। स्नात विनोदिनी घरे प्रवेश करिले, महेन्द्र ताहार मुखेर दिके चाहिया विस्मित हइया उठिल। ताहार की-एक अपरूप परिवर्तन हइयाछे। से येन एइ कयदिन आगुन ज्वालिया तपस्या करितेछिल। ताहार शरीर कृश हइया गेछे, एवं सेइ कृशता भेद करिया ताहार पाण्डुवर्ण मुखे एकटि दीप्ति बाहिर हइतेछे।

विनोदिनी बिहारीर पत्रेर आशा त्याग करियाछे। निजेर प्रति बिहारीर निरतिशय अवज्ञा कल्पना करिया से अहोरात्रि निःशब्दे दग्ध हइतेछिल। एइ दाह हइते निष्कृति पाइबार कोनो पथ ताहार काछे छिल ना। बिहारी येन ताहाकेइ तिरस्कार करिया पश्चिमे चलिया गेछे—ताहार नागाल पाइबार

कोनो उपाय विनोदिनीर हाते नाइ। कर्मपरायणा निरलसा विनोदिनी कर्मेर अभावे एइ क्षुद्र बासार मध्ये येन रुद्धश्वास हइया उठितेछिल—ताहार समस्त उद्यम ताहार निजेके क्षतविक्षत करिया आघात करितेछिल। ताहार समस्त भावी जीवनके एइ प्रेमहीन कर्महीन आनन्दहीन बासार मध्ये, एइ रुद्ध गलिर मध्ये चिरकालेर जन्य आबद्ध कल्पना करिया ताहार विद्रोही प्रकृति आयत्तातीत अदृष्टेर विरुद्धे येन आकाशे माथा ठुकिबार व्यर्थ चेष्टा करितेछिल। ये मूढ़ महेन्द्र विनोदिनीर समस्त मुक्तिर पथ चारि दिक हइते रुद्ध करिया ताहार जीवनके एमन संकीर्ण करिया तुलियाछे, ताहार प्रति विनोदिनीर घृणा ओ विद्वेषेर सीमा छिल ना। विनोदिनी बुझिते पारियाछिल, सेइ महेन्द्रके से किछुतेइ आर दूरे ठेलिया राखिते पारिबे ना। एइ क्षुद्र बासाय महेन्द्र ताहार काछे घेंषिया सम्मुखे आसिया बसिबे—प्रतिदिन अलक्ष्य आकर्षणे तिले तिले ताहार दिके अधिकतर अग्रसर हइते थाकिबे—एइ अन्धकूपे, एइ समाजभ्रष्ट जीवनेर पङ्कशय्याय घृणा एवं आसक्तिर मध्ये ये प्रात्यहिक लड़ाइ हइते थाकिबे, ताहा अत्यन्त वीभत्स। विनोदिनी स्वहस्ते स्वचेष्टाय माटि खुंड़िया महेन्द्रेर हृदयेर अन्तस्तल हइते एइ ये एकटा लोल-जिह्वा लोलुपतार क्लेदाक्त सरीसृपके बाहिर करियाछे, इहार पुच्छपाश हइते से निजेके केमन करिया रक्षा करिबे। एके विनोदिनीर व्यथित हृदय, ताहाते एइ क्षुद्र अवरुद्ध बासा, ताहाते महेन्द्रेर वासनातरङ्गेर अहरह अभि-घात—इहा कल्पना करियाओ विनोदिनीर समस्त चित्त आतङ्के पीड़ित हइया उठे। जीवने इहार समाप्ति कोथाय। कबे से एइ-समस्त हइते बाहिर हइते पारिबे।

विनोदिनीर सेइ कृशपाण्डुर मुख देखिया महेन्द्रेर मने ईर्षानल ज्वलिया उठिल। ताहार कि एमन कोनो शक्ति नाइ, याहा द्वारा से बिहारीर चिन्ता हइते एइ तपस्विनीके बलपूर्वक उत्पाटित करिया लइते पारे। ईगल येमन मेषशावकके एक निमेषे छों मारिया ताहार सुदुर्गम अभ्रभेदी पर्वतनीड़े उत्तीर्ण करे, तेमनि एमन कि कोनो मेघपरिवृत निखिलविस्मृत स्थान नाइ, येखाने एकाकी महेन्द्र ताहार एइ कोमल-सुन्दर शिकारटिके आपनार बुकेर काछे लुकाइया राखिते पारे। ईर्षार उत्तापे ताहार इच्छार आग्रह चतुर्गुण बाड़िया उठिल। आर कि से एकमुहूर्तओ विनोदिनीके चोखेर आड़ाल करिते पारिबे। बिहारीर विभीषिकाके अहरह ठेकाइया राखिते हइबे, ताहाके सूच्यग्रमात्र अवकाश दिते आर तो महेन्द्रेर साहस हइबे ना।

विरहतापे रमणीर सौन्दर्यके सुकुमार करिया तोले, महेन्द्र ए-कथा संस्कृत

काव्ये पड़ियाछिल, आज विनोदिनीके देखिया से ताहा यतइ अनुभव करिते लागिल, ततइ सुखमिश्रित दुःखेर सुतीव्र आलोड़ने ताहार हृदय एकान्त मथित हइया उठिल।

विनोदिनी क्षणकाल स्थिर थाकिया महेन्द्रके जिज्ञासा करिल, "तुमि कि चा खाइया आसियाछ।"

महेन्द्र कहिल, "ना-हय खाइया आसियाछि, ताइ बलिया स्वहस्ते आर-एक पेयाला दिते कृपणता करियो ना—'प्याला मुझ भर दे रे'।"

विनोदिनी बोध हय इच्छा करिया नितान्त निष्ठुरभावे महेन्द्रेर एइ उच्छ्वासे हठात् आघात दिल—कहिल, "बिहारी-ठाकुरपो एखन कोथाय आछेन खबर जान ?"

महेन्द्र निमेषेर मध्ये विवर्ण हइया कहिल, "से तो एखन कलिकाताय नाइ।"

विनोदिनी। ताहार ठिकाना की।

महेन्द्र। से तो काहाकेओ बलिते चाहे ना।

विनोदिनी। सन्धान करिया कि खबर लओया याय ना।

महेन्द्र। आमार तो तेमन जरुरि दरकार किछु देखि ना।

विनोदिनी। दरकारइ कि सब। आशैशव बन्धुत्व कि किछुइ नय।

महेन्द्र। बिहारी आमार आशैशव बन्धु बटे, किन्तु तोमार सङ्गे ताहार बन्धुत्व दु-दिनेर—तबु तागिदटा तोमारइ येन अत्यन्त बेशि बोध हइतेछे।

विनोदिनी। ताहाइ देखिया तोमार लज्जा पाओया उचित। बन्धुत्व केमन करिया करिते हय, ताहा तोमार अमन बन्धुर काछ हइतेओ शिखिते पारिले ना ?

महेन्द्र। सेजन्य तत दुःखित नहि, किन्तु फाँकि दिया स्त्रीलोकेर मन हरण केमन करिया करिते हय, से विद्या ताहार काछे शिखिले आज काजे लागिते पारित।

विनोदिनी। से विद्या केवल इच्छा थाकिलेइ शेखा याय ना, क्षमता थाका चाइ।

महेन्द्र। गुरुदेवेर ठिकाना यदि तोमार जाना थाके तो बलिया दाओ, ए-वयसे ताँहार काछे एकबार मन्त्र लइया आसि, ताहार परे क्षमतार परीक्षा हइबे।

विनोदिनी। बन्धुर ठिकाना यदि बाहिर करिते ना पार, तबे प्रेमेर कथा आमार काछे उच्चारण करियो ना। बिहारी-ठाकुरपोर सङ्गे तुमि येरूप व्यवहार करियाछ, तोमाके के विश्वास करिते पारे।

महेन्द्र। आमाके यदि सम्पूर्ण विश्वास ना करिते, तबे आमाके एत अपमान करिते ना। आमार भालोबासा सम्बन्धे यदि एत निःसंशय ना हइते, तबे हय तो आमार एत असह्य दुःख घटित ना। बिहारी पोष ना-मानिबार विद्या जाने, सेइ विद्याटा यदि से एइ हतभाग्यके शिखाइत, तबे बन्धुत्वेर काज करित।

"बिहारी ये मानुष, ताइ से पोष मानिते पारे ना," एइ बलिया विनोदिनी खोला चुल पिठे मेलिया येमन जानलार काछे दाँड़ाइया छिल तेमनि दाँड़ाइया रहिल। महेन्द्र हठात् दाँड़ाइया उठिया मुष्टि बद्ध करिया रोषगर्जितस्वरे कहिल, "केन तुमि आमाके बार बार अपमान करिते साहस कर। एत अपमानेर कोनो प्रतिफल पाओ ना, से कि तोमार क्षमताय ना आमार गुणे। आमाके यदि पशु बलियाइ स्थिर करिया थाक, तबे हिंस्र पशु बलियाइ जानियो। आमि एकेबारे आघात करिते जानि ना, एतबड़ो कापुरुष नइ।" बलिया विनोदिनीर मुखेर दिके चाहिया क्षणकाल स्तब्ध हइया रहिल—ताहार पर बलिया उठिल, "विनोद, एखान हइते कोथाओ चलो। आमरा बाहिर हइया पड़ि। पश्चिमे हउक, पाहाड़े हउक, येखाने तोमार इच्छा, चलो। एखाने बाँचिबार स्थान नाइ। आमि मरिया याइतेछि।"

विनोदिनी कहिल, "चलो, एखनइ चलो—पश्चिमे याइ।"

महेन्द्र। पश्चिमे कोथाय याइबे।

विनोदिनी। कोथाओ नहे। एक जायगाय दु-दिन थाकिब ना—घुरिया बेड़ाइब।

महेन्द्र कहिल, "सेइ भालो, आज रात्रेइ चलो।"

विनोदिनी सम्मत हइया महेन्द्रेर जन्य रन्धनेर उद्योग करिते गेल।

महेन्द्र बुझिते पारिल, बिहारीर खबर विनोदिनीर चोखे पड़े नाइ। खबरेर कागजे मन दिबार मतो अवधानशक्ति विनोदिनीर एखन आर नाइ। पाछे दैवात् से-खबर विनोदिनी जानिते पारे, सेइ उद्वेगे महेन्द्र समस्त दिन सतर्क हइया रहिल।

४६

बिहारीर खबर लइया महेन्द्र फिरिया आसिबे, एइ स्थिर करिया बाड़िते ताहार जन्य आहार प्रस्तुत हइयाछिल। अनेक देरि देखिया पीड़ित राजलक्ष्मी उद्विग्न हइते लागिलेन। सारारात घुम ना हओयाते तिनि अत्यन्त

क्लान्त छिलेन, ताहार उपरे महेन्द्रेर जन्य उत्कण्ठाय ताँहाके क्लिष्ट करितेछे देखिया आशा खबर लइया जानिल, महेन्द्रेर गाड़ि फिरिया आसियाछे। कोचम्यानेर काछे संवाद पाओया गेल, महेन्द्र बिहारीर बाड़ि हइया पटलडाङार बासाय गियाछे। शुनिया राजलक्ष्मी देयालेर दिके पाश फिरिया स्तब्ध हइया शुइलेन। आशा ताँहार शियरेर काछे चित्रार्पितेर मतो स्थिर हइया बसिया वातास करिते लागिल। अन्यदिन यथासमये आशाके खाइते याइबार जन्य राजलक्ष्मी आदेश करितेन--आज आर किछु बलिलेन ना। काल रात्रे ताँहार कठिन पीड़ा देखियाओ महेन्द्र यखन विनोदिनीर मोहे छुटिया गेल, तखन राजलक्ष्मीर पक्षे ए-संसारे प्रश्न करिबार, चेष्टा करिबार, इच्छा करिबार आर किछुइ रहिल ना। तिनि बुझियाछिलेन बटे ये, महेन्द्र ताँहार पीड़ाके सामान्य ज्ञान करियाछे; अन्यान्यबार येमन माझे माझे रोग देखा दिया सारिया गेछे, एबारओ सेइरूप एकटा क्षणिक उपसर्ग घटियाछे मने करिया महेन्द्र निश्चिन्त आछे; किन्तु एइ आशङ्काशून्य अनुद्वेगइ राजलक्ष्मीर काछे बड़ो कठिन बलिया मने हइल। महेन्द्र प्रेमोन्मत्तताय कोनो आशङ्काके, कोनो कर्तव्यके मने स्थान दिते चाय ना, ताइ से मातार कष्टके पीड़ाके एतइ लघु करिया देखियाछे--पाछे जननीर रोगशय्याय ताहाके आबद्ध हइया पड़िते हय, ताइ से एमन निर्लज्जेर मतो एकटु अवकाश पाइतेइ विनोदिनीर काछे पलायन करियाछे। रोग-आरोग्येर प्रति राजलक्ष्मीर आर लेशमात्र उत्साह रहिल ना—महेन्द्रेर अनुद्वेग ये अमूलक, दारुण अभिमाने इहाइ तिनि प्रमाण करिते चाहिलेन।

वेला दुटार समय आशा कहिल, "मा, तोमार ओषुध खाइबार समय हइयाछे।" राजलक्ष्मी उत्तर ना दिया चुप करिया रहिलेन। आशा ओषुध आनिबार जन्य उठिले तिनि बलिलेन, "ओषुध दिते हइबे ना बउमा, तुमि याओ।"

आशा मातार अभिमान बुझिते पारिल—से अभिमान संक्रामक हइया ताहार हृदयेर आन्दोलने द्विगुण दोला दितेइ आशा आर थाकिते पारिल ना—कान्ना चापिते चापिते गुमरिया काँदिया उठिल। राजलक्ष्मी धीरे धीरे आशार दिके पाश फिरिया ताहार हातेर उपरे सकरुण स्नेहे आस्ते आस्ते हात बुलाइते लागिलेन, कहिलेन, "बउमा, तोमार वयस अल्प, एखनो तोमार सुखेर मुख देखिबार समय आछे। आमार जन्य तुमि आर चेष्टा करियो ना, बाछा—आमि तो अनेक दिन बाँचियाछि—आर की हइबे।"

शुनिया आशार रोदन आरो उच्छ्वसित हइया उठिल—से मुखेर उपर आँचल चापिया धरिल।

एइरूपे रोगीर गृहे निरानन्द दिन मन्दगतिते काटिया गेल। अभिमानेर मध्येओ एइ दुइ नारीर भितरे भितरे आशा छिल, एखनइ महेन्द्र आसिबे। शब्दमात्रेइ उभयेर देहे ये एकटि चमक-सञ्चार हइतेछिल, ताहा उभयेइ बुझिते पारितेछिलेन। क्रमे दिवावसानेर आलोक अस्पष्ट हइया आसिल, कलिकातार अन्तःपुरेर मध्ये सेइ गोधुलिर ये आभा, ताहाते आलोकेर प्रफुल्लताओ नाइ, अन्धकारेर आवरणओ नाइ—ताहा विषादके गुरुभाव एवं नैराश्यके अश्रुहीन करिया तोले, ताहा कर्म ओ आश्वासेर बल हरण करे अथच विश्राम ओ वैराग्येर शान्ति आनयन करे ना। रुग्णगृहेर सेइ शुष्क श्रीहीन सन्ध्याय आशा निःशब्दपदे उठिया एकटि प्रदीप ज्वालिया घरे आनिया दिल। राजलक्ष्मी कहिलेन, "बउमा, आलो भालो लागितेछे ना; प्रदीप बाहिरे राखिया दाओ।"

आशा प्रदीप बाहिरे राखिया आसिया बसिल। अन्धकार यखन घनतर हइया एइ क्षुद्र कक्षेर मध्ये बाहिरेर अनन्त रात्रिके आनिया दिल, तखन आशा राजलक्ष्मीके मृदुस्वरे जिज्ञासा करिल, "मा, ताँहाके कि एकबार खबर दिव।"

राजलक्ष्मी दृढ़स्वरे कहिलेन, "ना, बउमा, तोमार प्रति आमार शपथ रहिल, महेन्द्रके खबर दियो ना।"

शुनिया आशा स्तब्ध हइया रहिल; ताहार आर काँदिबार बल छिल ना।

बाहिरे दाँड़ाइया बेहारा कहिल, "बाबुर काछ हइते चिट्ठि आसियाछे।"

शुनिया मुहूर्तेर मध्ये राजलक्ष्मीर मने हइल, महेन्द्रेर हयतो हठात् एकटा किछु व्यामो हइयाछे, ताइ से कोनोमतेइ आसिते ना पारिया चिठि पाठाइयाछे। अनुतप्त ओ व्यस्त हइया कहिलेन, "देखो तो बउमा, महिन की लिखियाछे।"

आशा बाहिरेर प्रदीपेर आलोके कम्पितहस्ते महेन्द्रेर चिठि पड़िल। महेन्द्र लिखियाछे, किछुदिन हइते से भालो बोध करितेछिल ना, ताइ से पश्चिमे बेड़ाइते याइतेछे। मातार असुखेरजन्य विशेष चिन्तार कारण किछुइ नाइ। ताँहाके नियमित देखिबार जन्य से नवीन डाक्तारके बलिया दियाछे। रात्रे घुम ना हइले वा माथा धरिले कखन की करिते हइबे ताहाओ चिठिर मध्ये लेखा आछे—एवं दुइ टिन लघु ओ पुष्टिकर पथ्य महेन्द्र डाक्तारखाना हइते आनाइया चिठिर सङ्गे पाठाइयाछे। आपातत गिरिधिर ठिकानाय मातार संवाद अवश्य-अवश्य जानाइवार जन्य चिठिते पुनश्चेर मध्ये अनुरोध आछे।

एइ चिठि पड़िया आशा स्तम्भित हइया गेल—प्रबल धिक्कार ताहार दु:खके अतिक्रम करिया उठिल। एइ निष्ठुर वार्ता माके केमन करिया शुनाइबे।

आशार विलम्बे राजलक्ष्मी अधिकतर उद्विग्न हइया उठिलेन। कहिलेन, "बउमा, महिन की लिखियाछे शीघ्र आमाके शुनाइया दाओ।" बलिते बलिते तिनि आग्रहे बिछानाय उठिया बसिलेन।

आशा तखन घरे आसिया धीरे धीरे समस्त चिठि पड़िया शुनाइल। राजलक्ष्मी जिज्ञासा करिलेन, "शरीरेर कथा महिन की लिखियाछे, ओइखानटा आर एकबार पड़ो तो।"

आशा पुनराय पड़िल, किछुदिन हइतेइ आमि तेमन भालो बोध करितेछिलाम ना, ताइ आमि—"

राजलक्ष्मी। थाक् थाक्, आर पड़िते हइबे ना। भालो बोध हइबे की करिया। बुड़ो मा मरेओ ना, अथच केवल व्यामो लइया ताहाके ज्वालाय। केन तुमि महिनके आमार असुखेर कथा खबर दिते गेले। बाड़िते छिल, घरेर कोणे बसिया पड़ाशुना करितेछिल, काहारओ कोनो एलाकाय छिल ना—माझे हइते मार व्यामोर कथा पाड़िया ताहाके घरछाड़ा करिया तोमार की सुख हइल। आमि एखाने मरिया थाकिले ताहाते काहार की क्षति हइत। एत दु:खेओ तोमार घटे एइटुकु बुद्धि आसिल ना।

बलिया बिछानार उपर शुइया पड़िलेन।

बाहिरे मस्मस् शब्द शुना गेल। बेहारा कहिल, "डाक्तारबाबु आया।"

डाक्तार कासिया घरेर मध्ये प्रवेश करिल। आशा ताड़াताड़ि घोमटा टानिया खाटेर अन्तराले गिया दाँड़ाइल. डाक्तार जिज्ञासा करिल, "आपनार की हइयाछे बलुन तो।"

राजलक्ष्मी क्रोधेर स्वरे कहिलेन, "हइबे आर की। मानुषके कि मरिते दिबे ना। तोमार ओषुध खाइलेइ कि अमर हइया थाकिब।"

डाक्तार सान्त्वना स्वरे कहिल, "अमर करिते ना पारि, कष्ट याहाते कमे से चेष्टा—"

राजलक्ष्मी बलिया उठिलेन, "कष्टेर भालो चिकित्सा छिल यखन विधवारा पुड़िया मरित—एखन ए तो केवल बाँधिया मारा। याओ डाक्तारबाबु, तुमि याओ—आमाके आर विरक्त करियो ना, आमि एकला थाकिते चाइ।"

डाक्तार भये भये कहिल, "आपनार नाड़िटा एकबार—"

राजलक्ष्मी अत्यन्त विरक्तिर स्वरे कहिलेन, "आमि बलितेछि, तुमि याओ। आमार नाड़ि बेश आछे—ए नाड़ि शीघ्र छाड़िबे एमन भरसा नाइ।"

डाक्तार अगत्या घरेर बाहिरे गिया आशाके डाकिया पाठाइल। आशाके नवीन-डाक्तार रोगेर समस्त विवरण जिज्ञासा करिल। उत्तरे समस्त शुनिया गम्भीरभावे घरेर मध्ये पुनराय प्रवेश करिल। कहिल, "देखुन, महेन्द्र आमार उपर विशेष करिया भार दिया गेछे। आमाके यदि आपनार चिकित्सा करिते ना देन, तबे से मने कष्ट पाइबे।"

महेन्द्र कष्ट पाइबे, एकथाटा राजलक्ष्मीर काछे उपहासेर मतो शुनाइल। तिनि कहिलेन, "महिनेर जन्य बेशि भाबियो ना। कष्ट संसारे सकलकेइ पाइते हय। ए-कष्टे महेन्द्रके अत्यन्त बेशि कातर करिबे ना। तुमि एखन याओ डाक्तार। आमाके एकटु घुमाइते दाओ।"

नवीन-डाक्तार बुझिल, रोगीके उत्त्यक्त करिले भालो हइबे ना। धीरे धीरे बाहिरे आसिया याहा याहा कर्त्तव्य आशाके उपदेश दिया गेल।

आशा घरे ढुकिते राजलक्ष्मी कहिलेन, "याओ बाछा, तुमि एकटु विश्राम करो गे। समस्त दिन रोगीर काछे बसिया आछ। हारुर माके पाठाइया दाओ—पाशेर घरे बसिया थाक्।"

आशा राजलक्ष्मीके बुझित। इहा ताँहार स्नेहेर अनुरोध नहे, इहा ताँहार आदेश—पालन करा छाड़ा आर उपाय नाइ। हारुर माके पाठाइया दिया अन्धकारे से निजेर घरे गिया शीतल भूमिशय्याय शुइया पड़िल।

समस्त दिनेर उपवासे कष्टे ताहार शरीर-मन श्रान्त ओ अवसन्न। पाड़ार बाड़ िते सेदिन थाकिया थाकिया विवाहेर वाद्य बाजितेछिल। एइ समये सानाइये आबार सुर धरिल। सेइ रागिणीर आघाते रात्रिर समस्त अन्धकार येन स्पन्दित हइया आशाके बारंबार येन अभिघात करिते लागिल। ताहार विवाहरात्रिर प्रत्येक क्षुद्र घटनाटिओ सजीव हइया रात्रिर आकाशके स्वप्नच्छविते पूर्ण करिया तुलिल; सेदिनकार आलोक, कोलाहल, जनता; सेदिनकार माल्यचन्दन, नववस्त्र ओ होमधूमेर गन्ध; नववधूर शङ्कित लज्जित आनन्दित हृदयेर निगूढ़ कम्पन—समस्तइ स्मृतिर आकारे यतइ ताहाके चारि दिके आविष्ट करिया धरिल, ततइ ताहार हृदयेर व्यथा प्राण पाइया बल करिते लागिल। दारुण दुर्भिक्षे क्षुधित बालक येमन खाद्येर जन्य माताके आघात करिते थाके; तेमनि जाग्रत सुखेर स्मृति आपनार खाद्य चाहिया आशार वक्षे बारंबार सरोदन कराघात करिते लागिल। अव-

सन्न आशाके आर पड़िया थाकिते दिल ना। दुइ हात जोड़ करिया देवतार काछे प्रार्थना करिते गिया संसारे ताहार एकमात्र प्रत्यक्ष देवता मासिमार पवित्र स्निग्ध मूर्ति आशार अश्रुवाष्पाच्छन्न हृदयेर मध्ये आविर्भूत हइल। पुनराय संसारेर दुःख-झंझाटे सेइ तापसीके आह्वान करिया आनिबे ना, एत दिन इहाइ ताहार प्रतिज्ञा छिल। किन्तु आज से आर कोथाओ कोनो उपाय देखिते पाइल ना--आज ताहार चतुर्दिके घनायित निविड़ दुःखेर मध्ये आर रन्ध्रमात्र छिल ना। ताइ आज से घरेर मध्ये आलो ज्वालिया कोलेर उपर एकखाना खाताय चिठिर कागज राखिया घनघन चोखेर जल मुछिते मुछिते चिठि लिखिते लागिल--

'श्रीचरणकमलेषु--

मासिमा, तुमि छाड़ा आज आमार आर केह नाइ; एकबार आसिया तोमार कोलेर मध्ये एइ दुःखिनीके टानिया लओ—नहिले आमि केमन करिया बाँचिब। आर की लिखिब, जानि ना। तोमार चरणे आमार शतसहस्र-कोटि प्रणाम।

तोमार स्नेहेर
चुनि।'

४७

अन्नपूर्णा काशी हइते फिरिया आसिया अति धीरे-धीरे राजलक्ष्मीर घरे प्रवेश करिया प्रणामपूर्वक ताँहार पायेर धुला माथाय तुलिया लइलेन। माझखानेर विरोधविच्छेद सत्त्वेओ अन्नपूर्णाके देखिया राजलक्ष्मी येन हारानो धन फिरिया पाइलेन। भितरे भितरे तिनि ये निजेर अलक्ष्ये अगोचरे अन्नपूर्णाके चाहितेछिलेन, अन्नपूर्णाके पाइया ताहा बुझिते पारिलेन। ताँहार एतदिनेर अनेक श्रान्ति अनेक क्षोभ ये केवल अन्नपूर्णार अभावे, अनेक दिनेर परे आज ताहा ताँहार काछे मुहूर्तेर मध्ये सुस्पष्ट हइल। मुहूर्तेर मध्ये ताँहार समस्त व्यथित हृदय ताहार चिरन्तन स्थानटि अधिकार करिल। महेन्द्रेर जन्मेर पूर्वेओ एइ दुटि जा यखन वधूभावे एइ परिवारेर समस्त सुखदुःखके वरण करिया लइयाछिलेन—पूजाय उत्सवे, शोके मृत्युते, उभये एइ संसार-रथे एकत्रे यात्रा करियाछिलेन—तखनकार सेइ घनिष्ठ सखित्व राजलक्ष्मीर हृदयके आज मुहूर्तेर मध्ये आच्छन्न करिया दिल। याहार सङ्गे सुदूर अतीतकाले एकत्रे जीवन आरम्भ करियाछिलेन, नाना व्याघातेर पर

सेइ बाल्यसहचरीइ परम दुःखेर दिने ताँहार पार्श्ववर्तिनी हइलेन––तखनकार समस्त सुखदुःखेर, समस्त प्रिय घटनार एइ एकटिमात्र स्मरणाश्रय रहियाछे। याहार जन्य राजलक्ष्मी इँहाकेओ निष्ठुरभावे आघात करियाछिलेन, सेइ वा आज कोथाय।

अन्नपूर्णा रोगिणीर पार्श्वे बसिया ताँहार दक्षिण हस्त हस्ते लइया कहिलेन, "दिदि।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "मेजबउ।" बलिया आर ताँहार कथा बाहिर हइल ना। ताँहार दुइ चक्षु दिया जल पड़िते लागिल। आशा एइ दृश्य देखिया आर थाकिते पारिल ना––पाशेर घरे गिया माटिते बसिया काँदिते लागिल।

राजलक्ष्मी वा आशार काछे अन्नपूर्णा महेन्द्रेर सम्बन्धे कोनो प्रश्न पाड़िते साहस करिलेन ना। साधुचरण के डाकिया जिज्ञासा करिलेन, "मामा, महिन कोथाय।"

तखन साधुचरण विनोदिनी ओ महेन्द्रेर समस्त घटना विवृत करिया बलिलेन। अन्नपूर्णा साधुचरणके जिज्ञासा करिलेन, "बिहारीर की खबर।"

साधुचरण कहिलेन, "अनेक दिन तिनि आसेन नाइ—ताँहार खबर ठिक बलिते पारि ना।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "एकबार बिहारीर बाड़िते गिया ताहार संवाद जानिया आइस।"

साधुचरण फिरिया आसिया कहिलेन, "तिनि बाड़िते नाइ, बालिते गङ्गार धारे बागाने गियाछेन।"

अन्नपूर्णा नवीन-डाक्तारके डाकिया रोगीर अवस्था जिज्ञासा करिलेन। डाक्तार कहिल, "हृत्पिण्डेर दुर्बलतार सङ्गे उदरी देखा दियाछे, मृत्यु अकस्मात् कखन आसिबे किछुइ बला याय ना।"

सन्ध्यार समय राजलक्ष्मीर रोगेर कष्ट यखन बाड़िया उठिते लागिल, तखन अन्नपूर्णा जिज्ञासा करिलेन, "दिदि, एकबार नवीन–डाक्तारके डाकाइ।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "ना मेजबउ, नवीन-डाक्तार आमार किछुइ करिते पारिबे ना।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "तबे काहाके तुमि डाकिते चाओ, बलो।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "एकबार बिहारीके यदि खबर दाओ तो भालो हय।"

अन्नपूर्णार वक्षेर मध्ये आघात लागिल। सेदिन दूरप्रवासे सन्ध्यावेलाय तिनि द्वारेर बाहिर हइते अन्धकारेर मध्ये बिहारीके अपमानेर सहित विदाय

करिया दियाछिलेन, सेइ वेदना तिनि आज पर्यन्त भुलिते पारेन नाइ। बिहारी आर कखनोइ ताँहार द्वारे फिरिया आसिबे ना। इहजीवने आर ये कखनो सेइ अनादरेर प्रतिकार करिते अवसर पाइबेन, ए-आशा ताँहार मने छिल ना।

अन्नपूर्णा एकबार छादेर उपर महेन्द्रेर घरे गेलेन। बाड़िर मध्ये एइ घरटिइ छिल आनन्दनिकेतन। आज से-घरेर कोनो श्री नाइ—बिछानापत्र विशृङ्खल, साजसज्जा अनादृत, छादेर टबे केह जल देय ना, गाछगुलि शुकाइया गेछे।

मासिमा छादे गियाछेन बुझिया आशाओ धीरे धीरे ताँहार अनुसरण करिल। अन्नपूर्णा ताहाके वक्षे टानिया लइया ताहार मस्तक-चुम्बन करिलेन। आशा नत हइया दुइ हाते ताँहार दुइ पा धरिया बार बार ताँहार पाये माथा ठेकाइल। कहिल, "मासिमा, आमाके आशीर्वाद करो, आमाके बल दाओ। मानुष ये एत कष्ट सह्य करिते पारे, ताहा आमि कोनो काले भाबितेओ पारिताम ना। मा गो, एमन आर कतदिन सहिबे।"

अन्नपूर्णा सेइखानेइ माटिते बसिलेन, आशा ताँहार पाये माथा दिया लुटाइया पड़िल। अन्नपूर्णा आशार माथा कोलेर उपर तुलिया लइलेन, एवं कोनो कथा ना कहिया निस्तब्धभावे जोड़हात करिया देवताके स्मरण करिलेन।

अन्नपूर्णा स्नेहसिञ्चित निःशब्द आशीर्वाद आशार गभीर हृदयेर मध्ये प्रवेश करिया अनेक दिन परे शान्ति आनयन करिल। ताहार मने हइल, ताहार अभीष्ट येन सिद्धप्राय हइयाछे। देवता ताहार मतो मूढ़के अवहेला करिते पारेन, किन्तु मासिमार प्रार्थना अग्राह्य करिते पारेन ना।

हृदयेर मध्ये आश्वास ओ बल पाइया आशा अनेकक्षण परे दीर्घनिश्वास फेलिया उठिया बसिल। कहिल, "मासिमा, बिहारी-ठाकुरपोके एकबार आसिते चिठि लिखिया दाओ।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "ना, चिठि लेखा हइबे ना।"

आशा। तबे ताँहाके खबर दिबे की करिया।

अन्नपूर्णा कहिलेन, "काल आमि बिहारीर सङ्गे निजे देखा करिते याइब।"

४८

बिहारी यखन पश्चिमे घुरिया बेड़ाइतेछिल, तखन ताहार मने हइल, एकटा कोनो काजे निजेके आबद्ध ना करिले ताहार आर शान्ति नाइ। सेइ

मने करिया कलिकातार दरिद्र केरानिदेर चिकित्सा ओ शुश्रूषार भार से ग्रहण करियाछे। ग्रीष्मकालेर डोबार माछ येमन अल्पजल पाँकेर मध्ये कोनोमते शीर्ण हइया खाबि खाइया थाके, गलि-निवासी अल्पाशी परिवार-भारग्रस्त केरानिर वञ्चित जीवन सेइरूप--सेइ विवर्ण कृश दुश्चिन्ताग्रस्त भद्रमण्डलीर प्रति बिहारीर अनेक दिन हइते करुणादृष्टि छिल---ताहादिगके बिहारी वनेर छायाटुकु ओ गङ्गार खोला हाओया दान करिबार संकल्प करिल।

बालिते बागान लइया चीने मिस्त्रिर साहाय्ये से सुन्दर करिया छोटो छोटो कुटिर तैरि कराइते आरम्भ करिया दिल। किन्तु ताहार मन शान्त हइल ना। काजे प्रवृत्त हइबार दिन ताहार यतइ काछे आसिते लागिल, ततइ ताहार चित्त आपन संकल्प हइते विमुख हइया उठिल। ताहार मन केवलइ बलिते लागिल, "एकाजे कोनो सुख नाइ, कोनो रस नाइ, कोनो सौन्दर्य नाइ--इहा केवल शुष्क भावमात्र।" काजेर कल्पना बिहारीके कखनो इतिपूर्वे एमन करिया क्लिष्ट करे नाइ।

एकदिन छिल यखन बिहारीर विशेष किछुइ दरकार छिल ना; ताहार सम्मुखे याहा-किछु उपस्थित हइत, ताहार प्रतिइ अनायासे से निजेके नियुक्त करिते पारित। एखन ताहार मने एकटा-की क्षुधार उद्रेक हइयाछे, आगे ताहाके निवृत्त ना करिया अन्य किछुइते ताहार आसक्ति हय ना। पूर्वेकार अभ्यासमते से एटा-ओटा नाड़िया देखे, परक्षणेइ से-समस्त परित्याग करिया निष्कृति पाइते चाय।

बिहारीर मध्ये ये यौवन निश्चलभावे सुप्त हइया छिल, याहार कथा से कखनो चिन्ताओ करे नाइ, विनोदिनीर सोनार काठिते से आज जागिया उठियाछे। सद्योजात गरुड़ेर मतो से आपन खोराकेर जन्य समस्त जगत्-टाके घाँटिया बेड़ाइतेछे। एइ क्षुधित प्राणीर सहित बिहारीर पूर्वपरिचय छिल ना, इहाके लइया से व्यस्त हइया उठियाछे; एखन कलिकातार क्षीण-जीर्ण स्वल्पायु केरानिदेर लइया से की करिबे।

आषाढ़ेर गङ्गा सम्मुखे बहिया चलियाछे। थाकिया थाकिया परपारे नीलमेघ घनश्रेणी गाछपालार उपरे भारावनत निबिड़भावे आविष्ट हइया उठे; समस्त नदीतल इस्पातेर तरवारिर मतो कोथाओ वा उज्ज्वल कृष्णवर्ण धारण करे, कोथाओ वा आगुनेर मतो झकझक करिते थाके। नववर्षार एइ समारोहेर मध्ये येमनि बिहारीर दृष्टि पड़े, अमनि ताहार हृदयेर द्वार उद्घाटन करिया आकाशेर एइ नीलस्निग्ध आलोकेर मध्ये के एकाकिनी बाहिर हइया आसे, के ताहार स्नानसिक्त घनतरङ्गायित कृष्णकेश उन्मुक्त

करिया दाँड़ाय, वर्षाकाश हइते विदीर्ण-मेघच्छुरित समस्त विच्छिन्न रश्मिके कुड़ाइया लइया के एकमात्र ताहारइ मुखेर उपरे अनिमेष दृष्टिर दीप्त कातरता प्रसारित करे।

पूर्वेर ये जीवनटा ताहार सुखे-सन्तोषे काटिया गेछे, आज बिहारी सेइ जीवनटाके परम क्षति बलिया मने करितेछे। एमन कत मेघेर सन्ध्या, एमन कत पूर्णिमार रात्रि आसियाछिल, ताहारा बिहारीर शून्य हृदयेर द्वारेर काछे आसिया सुधापात्रहस्ते निःशब्दे फिरिया गेछे--सेइ दुर्लभ शुभक्षणे कत संगीत अनारद्ध, कत उत्सव असम्पन्न हइयाछे, ताहार आर शेष नाइ। बिहारीर मने ये-सकल पूर्वस्मृति छिल, विनोदिनी सेदिनकार उद्यत चुम्बनेर रक्तिम आभार द्वारा सेगुलिके आज एमन विवर्ण अकिञ्चित्कर करिया दिया गेल। महेन्द्रेर छायार मतो हइया जीवनेर अधिकांश दिन केमन करिया काटियाछिल। ताहार मध्ये की चरितार्थता छिल। प्रेमेर वेदनाय समस्त जल-स्थल-आकाशेर केन्द्रकुहर हइते ये एमन रागिणीते एमन बाँशि बाजे, ताहा तो अचेतन बिहारी पूर्वे कखनो अनुमान करितेओ पारे नाइ। ये-विनोदिनी दुइ बाहुते वेष्टन करिया एक मुहूर्ते अकस्मात एइ अपरूप सौन्दर्यालोके बिहारीके उत्तीर्ण करिया दियाछे, ताहाके से आर केमन करिया भुलिबे। ताहार दृष्टि ताहार आकांक्षा आज सर्वत्र व्याप्त हइया पड़ियाछे, ताहार व्याकुल घननिश्वास बिहारीर रक्तस्रोतके अहरह तरङ्गित करिया तुलितेछे एवं ताहार स्पर्शेर सुकोमल उत्ताप बिहारीके वेष्टन करिया पुलकाविष्ट हृदयके फुलेर मतो फुटाइया राखियाछे।

किन्तु तबु सेइ विनोदिनीर काछ हइते बिहारी आज एमन दूरे रहियाछे केन। ताहार कारण एइ, विनोदिनी ये-सौन्दर्यरसे बिहारीके अभिषिक्त करिया दियाछे, संसारेर मध्ये विनोदिनीर सहित सेइ सौन्दर्येर उपयुक्त कोनो सम्बन्ध से कल्पना करिते पारे ना। पद्मके तुलिते गेले पङ्क उठिया पड़े। की बलिया ताहाके एमन-कोथाय स्थापन करिते पारे, येखाने सुन्दर वीभत्स हइया ना उठे। ताहा छाड़ा महेन्द्रेर सहित यदि काड़ाकाड़ि बाधिया याय, तबे समस्त व्यापारटा एतइ कुत्सित आकार धारण करिबे ये, से सम्भावना बिहारी मनेर प्रान्तेओ स्थान दिते पारे ना। ताइ बिहारी निभृत गङ्गातीरे विश्वसङ्गीतेर माझखाने ताहार मानसी प्रतिमाके प्रतिष्ठित करिया आपनार हृदयके धूपेर मतो दग्ध करितेछे। पाछे एमन कोनो संवाद पाय, याहाते ताहार सुखस्वप्नजाल छिन्न-विच्छिन्न हइया याय, ताइ से चिठि लिखिया विनोदिनीर कोनो खबरओ लय ना।

ताहार बागानेर दक्षिण प्रान्ते फलपूर्ण जामगाछेर तलाय मेघाच्छन्न प्रभाते बिहारी चुप करिया पड़िया छिल, सम्मुख दिया कुठिर पानसि याता-यात करितेछिल, ता-इ से अलसभावे देखितेछिल ; क्रमे वेला बाड़िया याइते लागिल। चाकर आसिया, आहारेर आयोजन करिबे कि ना, जिज्ञासा करिल--बिहारी कहिल, "एखन थाक्।" मिस्त्रिर सर्दार आसिया विशेष परामर्शेर जन्य ताहाके काज देखिते आह्वान करिल--बिहारी कहिल, "आर-एकटु परे।"

एमन समय बिहारी हठात् चमकिया उठिया देखिल, सम्मुखे अन्नपूर्णा। शशव्यस्त हइया उठिया पड़िल--दुइ हाते ताँहार पा चापिया धरिया भूतले माथा राखिया प्रणाम करिल। अन्नपूर्णा ताँहार दक्षिण हस्त दिया परमस्नेहे बिहारीर माथा ओ गा स्पर्श करिलेन। अश्रुजड़ितस्वरे कहिलेन, "बिहारी, तुइ एत रोगा हइया गेछिस केन।"

बिहारी कहिल, "काकीमा, तोमार स्नेह फिरिया पाइबार जन्य।"

शुनिया अन्नपूर्णार चोख दिया झरझर करिया जल पड़िते लागिल। बिहारी व्यस्त हइया कहिल, "काकीमा, तोमार एखनो खाओया हय नाइ?"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "ना, एखनो आमार समय हय नाइ।"

बिहारी कहिल, "चलो, आमि राँधिबार जोगाड़ करिया दिइगे। आज अनेक दिन परे तोमार हातेर रान्ना एवं तोमार पातेर प्रसाद खाइया बाँचिब।"

महेन्द्र-आशार सम्बन्धे बिहारी कोनो कथाइ उत्थापन करिल ना। अन्नपूर्णा एकदिन स्वहस्ते बिहारीर निकटे सेदिककार द्वार रुद्ध करिया दियाछेन। अभिमानेर सहित सेइ निष्ठुर निषेध से पालन करिल।

आहारान्ते अन्नपूर्णा कहिलेन, "नौका घाटेइ प्रस्तुत आछे, बिहारी, एखन एकबार कलिकाताय चल्।"

बिहारी कहिल, "कलिकाताय आमार कोन् प्रयोजन।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "दिदिर बड़ो असुख, तिनि तोके देखिते चाहियाछेन।"

शुनिया बिहारी चकित हइया उठिल। जिज्ञासा करिल, "महिनदा कोथाय।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "से कलिकाताय नाइ, पश्चिमे चलिया गेछे।"

शुनिया मुहूर्ते बिहारीर मुख विवर्ण हइया गेल। से चुप करिया रहिल।

अन्नपूर्णा जिज्ञासा करिलेन, "तुइ कि सकल कथा जानिसने।"

बिहारी कहिल, "कतकटा जानि, किन्तु शेष पर्यन्त जानि ना।"

तखन अन्नपूर्णा विनोदिनीके लइया महेन्द्रेर पश्चिमे पलायन-वार्ता

बलिलेन। बिहारीर चक्षे तत्क्षणात् जलस्थल-आकाशेर समस्त रङ बदलाइया गेल, ताहार कल्पनाभाण्डारेर समस्त सञ्चित रस मुहूर्ते तिक्त हइया उठिल। —"मायाविनी बिनोदिनी कि सेदिनकार सन्ध्यावेलाय आमाके लइया खेला करिया गेल। ताहार भालोबासार आत्मसमर्पण समस्तइ छलना! से ताहार ग्राम त्याग करिया निर्लज्जभावे महेन्द्रेर सङ्गे एकाकिनी पश्चिमे चलिया गेल! धिक् ताहाके, एवं धिक् आमाके ये आमि-मूढ़ ताहाके एक मुहूर्तेर जन्यओ विश्वास करियाछिलाम।"

हाय मेघाच्छन्न आषाढ़ेर सन्ध्या, हाय गतवृष्टि पूर्णिमार रात्रि, तोमादेर इन्द्रजाल कोथाय गेल।

४९

बिहारी भाबितेछिल, दु:खिनी आशार मुखेर दिके से चाहिबे की करिया। देउड़िर मध्ये यखन से प्रवेश करिल, तखन नाथहीन समस्त बाड़िटार घनीभूत विषाद ताहाके एक मुहूर्ते आवृत करिया फेलिल। बाड़िर दरोयान ओ चाकरदेर मुखेर दिके चाहिया उन्मत्त निरुद्देश महेन्द्रेर जन्य लज्जाय बिहारी माथा नत करिया दिल। परिचित भृत्यदिगके से स्निग्धभावे पूर्वेर मतो कुशल जिज्ञासा करिते पारिल ना। अन्त:पुरे प्रवेश करिते ताहार पा येन सरिते चाहिल ना। विश्वजनेर सम्मुखे प्रकाश्यभावे महेन्द्र असहाय आशाके ये दारुण अपमानेर मध्ये निक्षेप करिया गेछे, ये-अपमाने स्त्रीलोकेर चरमतम आवरणटुकु हरण करिया ताहाके समस्त संसारेर सकौतूहल कृपा-दृष्टिवर्षणेर माझखाने दाँड़ कराइया देय, सेइ अपमानेर अनावृत प्रकाश्यतार मध्ये बिहारी कुण्ठित व्यथित आशाके देखिबे कोन् प्राणे।

किन्तु ए-सकल चिन्तार ओ संकोचेर आर अवसर रहिल ना। अन्त:-पुरे प्रवेश करितेइ आशा द्रुतपदे आसिया बिहारीके कहिल, "ठाकुरपो, एक बार शीघ्र आसिया माके देखिया याओ, तिनि बड़ो कष्ट पाइतेछेन।"

बिहारीर सङ्गे आशार प्रकाश्यभावे एइ प्रथम आलाप। दु:खेर दुर्दिने एकटिमात्र सामान्य झटकाय समस्त व्यवधान उड़ाइया लइया याय; याहारा दूरे वास करितेछिल ताहादिगके हठात्-वन्याय एकटिमात्र संकीर्ण डाङार उपरे एकत्र करिया देय।

आशार एइ संकोचहीन व्याकुलताय बिहारी आघात पाइल। महेन्द्र ताहार संसारटिके ये की करिया दिया गेछे, एइ क्षुद्र घटना हइतेइ ताहा से

येन अधिक बुझिते पारिल। दुर्दिनेर ताड़नाय गृहेर येमन सज्जा-सौन्दर्य उपेक्षित, गृहलक्ष्मीरओ तेमनि लज्जार श्रीटुकु राखिबारओ अवसर घुचियाछे--छोटोखाटो आवरण-अन्तराल बाछविचार समस्त खसिया पड़िया गेछे--ताहाते आर भ्रूक्षेप करिबार समय नाइ।

बिहारी राजलक्ष्मीर घरे प्रवेश करिल। राजलक्ष्मी एकटा आकस्मिक श्वासकष्ट अनुभव करिया विवर्ण हइया उठियाछिलेन--सेटा बेशिक्षण स्थायी ना हओयाते पुनर्वार कतकटा सुस्थ हइया उठियाछेन।

बिहारी प्रणाम करिया ताँहार पदधूलि लइतेइ राजलक्ष्मी ताहाके पाशे बसिते इङ्गित करिलेन, एवं धीरे धीरे कहिलेन, "केमन आछिस बेहारि। कतदिन तोके देखि नाइ।"

बिहारी कहिल, "मा, तोमार असुख, ए खबर आमाके केन जानाइले ना। ताहा हइले कि आमि एक मुहूर्त विलम्ब करिताम।"

राजलक्ष्मी मृदुस्वरे कहिलेन, "से कि आर आमि जानि ना, बाछा। तोके पेटे धरि नाइ बटे, किन्तु जगते तोर चेये आमार आपनार आर कि केह आछे।" बलिते बलिते ताँहार चोख दिया जल पड़िते लागिल।

विहारी ताड़ाताड़ि उठिया घरेर कुलुङ्गिते ओषुधपत्रेर शिशि-कौटागुलि परीक्षा करिबार छले आत्मसंवरणेर चेष्टा करिल। फिरिया आसिया से यखन राजलक्ष्मीर नाड़ि देखिते उद्यत हइल, राजलक्ष्मी कहिलेन, "आमार नाड़िर खबर थाक्--जिज्ञासा करि, तुइ एमन रोगा हइया गेछिस केन, बेहारि।" बलिया राजलक्ष्मी ताँहार कृश हस्त तुलिया बिहारीर कण्ठाय हात बुलाइया देखिलेन।

बिहारी कहिल, "तोमार हातेर माछेर झोल ना खाइले आमार ए हाड़ किछुतेइ ढाकिबे ना। तुमि शीघ्र-शीघ्र सारिया ओठो मा, आमि ततक्षण रान्नार आयोजन करिया राखि।"

राजलक्ष्मी म्लान हासि हासिया कहिलेन, "सकाल सकाल आयोजन कर् बाछा--किन्तु रान्नार नय।" बलिया बिहारीर हात चापिया धरिया कहिलेन, "बेहारि, तुइ बउ घरे निये आय, तोके देखिबार लोक केह नाइ। ओ मेजबउ, तोमरा एबार बेहारिर एकटि बिये दिये दाओ--देखो-ना, बाछार चेहारा केमन हइया गेछे।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "तुमि सारिया ओठो, दिदि। ए तो तोमारइ काज, तुमि सम्पन्न करिबे, आमरा सकले योग दिया आमोद करिब।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "आमार आर समय हइबे ना, मेजबउ, बेहारिर

भार तोमादेरइ उपर रहिल--उहाके सुखी करियो, आमि उहार ऋण शुधिया याइते पारिलाम ना--किन्तु भगवान उहार भालो करिबेन।" बलिया बिहारीर माथाय ताँहार दक्षिण हस्त बुलाइया दिलेन।

आशा आर घरे थाकिते पारिल ना--काँदिबार जन्य बाहिरे चलिया गेल। अन्नपूर्णा अश्रुजलेर भितर दिया बिहारीर मुखेर प्रति स्नेह दृष्टिपात करिलेन।

राजलक्ष्मीर हठात् की मने पड़िल--तिनि डाकिलेन, "बउमा, ओ बउमा।"

आशा घरे प्रवेश करितेइ कहिलेन, "बेहारिर खावरेर सब व्यवस्था करियाछ तो।"

बिहारी कहिल, "मा, तोमार एइ पेटुक छेलेटिके सकलेइ चिनिया लइयाछे। देउड़िते ढुकितेइ देखि, डिमओयाला बड़ो बड़ो कइमाछ चुपड़िते लइया बामि हनहन करिया अन्दरेर दिके छुटियाछे--बुझिलाम, ए-बाड़िते एखनो आमार ख्याति लुप्त हय नाइ।" बलिया बिहारी हासिया एकबार आशार मुखेर दिके चाहिल।

आशा आज आर लज्जा पाइल ना। से स्नेहेर सहित स्मितहास्ये बिहारीर परिहास ग्रहण करिल। बिहारी ये ए-संसारेर कतखानि, आशा ताहा आगे सम्पूर्ण जानित ना--अनेक समय ताहाके अनावश्यक आगन्तुक मने करिया अवज्ञा करियाछे, अनेक समय बिहारीर प्रति विमुख भाव ताहार आचरणे सुस्पष्ट परिस्फुट हइया उठियाछे; सेइ अनुतापेर धिक्कारे आज बिहारीर प्रति ताहार श्रद्धा एवं करुणा सवेगे धावित हइयाछे।

राजलक्ष्मी कहिलेन, "मेजबउ, बामुनठाकुरेर कर्म नय, रान्नाटा तोमाय निजे देखाइया दिते हइबे--आमादेर एइ बाङाल छेले एकराश झाल नहिले खाइते पारे ना।"

बिहारी। तोमार मा छिलेन विक्रमपुरेर मेये, तुमि नदीया जेलार भद्रसन्तानके बाङाल बल? ए तो आमार सह्य हय ना।

इहा लइया अनेक परिहास हइल, एवं अनेक दिन परे महेन्द्रेर बाड़िर विषाद भाव येन लघु हइया आसिल।

किन्तु एत कथावार्तार मध्ये कोनो पक्ष हइते केह महेन्द्रेर नाम उच्चारण करिल ना। पूर्वे बिहारीर सङ्गे महेन्द्रेर कथा लइयाइ राजलक्ष्मीर एकमात्र कथा छिल। ताहा लइया महेन्द्र निजे ताहार माताके अनेकबार परिहास करियाछे। आज सेइ राजलक्ष्मीर मुखे महेन्द्रेर नाम एकबारओ ना शुनिया बिहारी मने मने स्तम्भित हइल।

राजलक्ष्मीर एकटु निद्रावेश हइतेइ बिहारी बाहिरे आसिया अन्नपूर्णाके कहिल, "मार व्यामो तो सहज नहे।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "से तो स्पष्टइ देखा याइतेछे।" बलिया ताँहार घरेर जानालार काछे बसिया पड़िलेन।

अनेक क्षण चुप करिया थाकिया कहिलेन, "एकबार महिनके डाकिया आनिबि ना बेहारि? आर तो देरि करा उचित हय ना।"

बिहारी किछु क्षण निरुत्तरे थाकिया कहिल, "तुमि येमन आदेश करिबे आमि ताहाइ करिब। ताहार ठिकाना केह कि जाने।"

अन्नपूर्णा। ठिक जाने ना, खुँजिया लइते हइबे। बिहारी, आर-एकटा कथा तोर काछे बलि। आशार मुखेर दिके चास। विनोदिनीर हात हइते महेन्द्रके यदि उद्धार करिते ना पारिस तबे से आर बाँचिबे ना। ताहार मुख देखिलेइ बुझिते पारिबि, तार बुके मृत्युबाण बाजियाछे।

बिहारी मने मने तीव्र हासि हासिया भाबिल, "परके उद्धार आमि करिते याइब--भगवान, आमार उद्धार के करिबे।" कहिल, "विनोदिनीर आकर्षण हइते चिरकालेर जन्य महेन्द्रके ठेकाइया राखिते पारिब, एमन मन्त्र आमि कि जानि, काकीमा? मार व्यामोते से दु-दिन शान्त हइया थाकिते पारे, किन्तु आबार से ये फिरिबे ना, ताहा केमन करिया बलिब।"

एमन समय मलिनवसना आशा माथाय आधखाना घोमटा दिया धीरे-धीरे ताहार मासिमार पायेर काछे आसिया बसिल। से जानित राजलक्ष्मीर पीड़ा सम्बन्धे बिहारीर सङ्गे अन्नपूर्णार आलोचना चलितेछे, ताइ औत्सुक्येर सहित शुनिते आसिल। पतिव्रता आशार मुखे निस्तब्ध दुःखेर नीरव महिमा देखिया बिहारीर मने एक अपूर्व भक्तिर सञ्चार हइल। शोकेर तप्त तीर्थजले अभिषिक्त हइया एइ तरुणी रमणी प्राचीन युगेर देवीदेर न्याय एकटि अचञ्चल मर्यादा लाभ करियाछे--से एखन आर सामान्या नारी नहे, से येन दारुण दुःखे पुराणवर्णिता साध्वीदेर समान वयस प्राप्त हइयाछे।

बिहारी आशार सहित राजलक्ष्मीर पथ्य ओ औषध सम्बन्धे आलोचना करिया यखन आशाके विदाय करिल, तखन एकटि दीर्घनिश्वास फेलिया अन्नपूर्णाके कहिल, "महेन्द्रके आमि उद्धार करिब।"

बिहारी महेन्द्रेर ब्याङ्के गिया खबर पाइल ये, ताहादेर एलाहाबाद-शाखार सहित महेन्द्र अल्पदिन हइते लेनादेना आरम्भ करियाछे।

स्टेशने आसिया विनोदिनी एकेबारे इन्टारमिडियेट क्लासे मेयेदेर गाड़िते चड़िया बसिल। महेन्द्र कहिल, "ओ की कर, आमि तोमार जन्ये सेकेण्ड क्लासेर टिकिट किनितेछि।"

विनोदिनी कहिल, "दरकार की, एखाने आमि बेश थाकिब।"

महेन्द्र आश्चर्य हइल। विनोदिनी स्वभावतइ शौखिन छिल। पूर्वे दारिद्र्येर कोनो लक्षण ताहार काछे प्रीतिकर छिल ना; निजेर सांसारिक दैन्य से निजेर पक्षे अपमानकर बलियाइ मने करित। महेन्द्र एटुकु बुझियाछिल ये, महेन्द्रेर घरेर अजस्र सच्छलता, विलास उपकरण एवं साधारणेर काछे धनी बलिया ताहादेर गौरव, एक काले विनोदिनीर मनके आकर्षण करियाछिल। से अनायासेइ एइ धनसम्पद, एइ-सकल आराम ओ गौरवेर ईश्वरी हइते पारित, सेइ कल्पनाय ताहार मनके एकान्त उत्तेजित करिया तुलियाछिल। आज यखन महेन्द्रेर उपर प्रभुत्वलाभ करिबार समय हइल, ना चाहियाओ से यखन महेन्द्रेर समस्त धनसम्पद निजेर भोगे आनिते पारे, तखन केन से एमन असह्य उपेक्षार सहित एकान्त उद्धतभावे कष्टकर लज्जाकर दीनता स्वीकार करिया लइतेछे। महेन्द्रेर प्रति निजेर निर्भरके से यथासम्भव संकुचित करिया राखिते चाय। ये उन्मत्त महेन्द्र विनोदिनीके ताहार स्वाभाविक आश्रय हइते चिरजीवनेर जन्य च्युत करियाछे, से महेन्द्रेर हात हइते से एमन किछुइ चाहे ना, याहा ताहार एइ सर्वनाशेर मूल्यस्वरूप गण्य हइते पारे। महेन्द्रेर घरे यखन विनोदिनी छिल, तखन ताहार आचरणे वैधव्यव्रतेर काठिन्य बड़ो एकटा छिल ना, किन्तु एतदिन परे से आपनाके सर्वप्रकार भोग हइते वञ्चित करियाछे। एखन से एकवेला खाय, मोटा कापड़ परे, ताहार सेइ अनर्गल उत्सारित हास्यपरिहासइ वा गेल कोथाय। एखन से एमन स्तब्ध, एमन आवृत, एमन सुदूर, एमन भीषण हइया उठियाछे ये, महेन्द्र ताहाके सामान्य एकटा कथाओ जोर करिया बलिते साहस पाय ना। महेन्द्र आश्चर्य हइया, अधीर हइया, क्रुद्ध हइया केवलइ भाविते लागिल, "विनोदिनी आमाके एत चेष्टाय दुर्लभ फलेर मतो एत उच्चशाखा हइते पाड़िया लइल, ताहार परे घ्राणमात्र ना करिया आज माटिते फेलिया दितेछे केन।"

महेन्द्र जिज्ञासा करिल, "कोथाकार टिकिट करिब बलो।"

विनोदिनी कहिल, "पश्चिम दिके येखाने खुशि चलो—काल सकाले येखाने गाड़ि थामिबे, नामिया पड़िब।"

एमनतरो भ्रमण महेन्द्रेर काछे लोभनीय नहे। आरामेर व्याघात ताहार पक्षे कष्टकर। बड़ो शहरे गिया भालोरूप आश्रय ना पाइले महेन्द्रेर बड़ो मुशकिल। से खुँजिया-पातिया करिया-कर्मिया लइबार लोक नहे। ताइ अत्यन्त क्षुब्ध-विरक्त मने महेन्द्र गाड़िते उठिल। एदिके मने केवलइ भय हइते लागिल, पाछे विनोदिनी ताहाके ना जानाइया कोथाओ नामिया पड़े।

विनोदिनी एइरूप शनिग्रहेर मतो घुरिते एवं महेन्द्रके घुराइते लागिल-- कोथाओ ताहाके विश्राम दिल ना। विनोदिनी अति शीघ्रइ लोकके आपन करिया लइते पारे; अति अल्प समयेर मध्येइ से गाड़िर सहयात्रिणीदेर सहित बन्धुत्वस्थापन करिया लइत। येखाने याइबार इच्छा, सेखानकार समस्त खबर लइत, यात्रिशालाय आश्रय लइत एवं येखाने याहा किछु देखिबार आछे, घुरिया-घुरिया बन्धुसहाये देखिया लइत। महेन्द्र विनोदिनीर काछे निजेर अनावश्यकताय प्रतिदिन आपनाके हतमान बोध करिते लागिल। टिकिट किनिया देओया छाड़ा ताहार कोनो काज छिल ना, बाकि समयटा ताहार प्रवृत्ति ताहाके ओ से आपन प्रवृत्तिके दंशन करिते थाकित। प्रथम प्रथम किछुदिन से विनोदिनीर सङ्गे सङ्गे पथे पथे फिरियाछिल--किन्तु क्रमे ताहा असह्य हइया उठिल; तखन महेन्द्र आहारादि करिया घुमाइबार चेष्टा करित, विनोदिनी समस्त दिन घुरिया बेड़ाइत। मातृस्नेहलालित महेन्द्र ये एमन करिया पथे बाहिर हइया पड़िते पारे, ताहा केह कल्पनाओ करिते पारित ना।

एकदिन एलाहाबाद स्टेशने दुइ जने गाड़िर जन्य अपेक्षा करितेछिल। कोनो आकस्मिक कारणे ट्रेन आसिते विलम्ब हइतेछे। इतिमध्ये अन्यान्य गाड़ि यत आसितेछे ओ याइतेछे, विनोदिनी ताहार यात्रीदेर भालो करिया निरीक्षण करिया देखितेछे। पश्चिमे घुरिते घुरिते चारिदिके चाहिया देखिते देखिते से हठात् काहारओ देखा पाइबे, एइ बोध करि ताहार आशा। अन्तत, रुद्ध गलिर मध्ये जनहीन गृहे निश्चल उद्यमे निजेके प्रत्यह चापिया मारार चेये एइ नित्यसन्धानपरतार मध्ये, एइ उन्मुक्त पथेर जनकोलाहलेर मध्ये शान्ति आछे।

हठात् एक समये स्टेशने एकटि काचेर बाक्सेर उपर विनोदिनीर दृष्टि पड़ितेइ से चमकिया उठिल। एइ पोस्ट आपिसेर बाक्सेर मध्ये, ये-सकल लोकेर उद्देश पाओया याय नाइ ताहादेर पत्र प्रदर्शित हइया थाके। सेइ बाक्से सज्जित एकखानि पत्रेर उपरे विनोदिनी बिहारीर नाम देखिते पाइल।

बिहारीलाल नामटि असाधारण नहे--पत्रेर बिहारीइ ये विनोदिनीर अभीष्ट बिहारी, ए-कथा मने करिबार कोनो हेतु छिल ना--तबु बिहारीर पुरा नाम देखिया सेइ एकटिमात्र बिहारी छाड़ा आर-कोनो बिहारीर कथा ताहार मने सन्देह हइल ना। पत्रे लिखित ठिकानाटि से मुखस्थ करिया लइल। अत्यन्त अप्रसन्नमुखे महेन्द्र एकटा बेञ्चेर उपर बसिया छिल, विनोदिनी सेखाने आसिया कहिल, "किछुदिन एलाहाबादेइ थाकिब।"

विनोदिनी निजेर इच्छामत महेन्द्रके चालाइतेछे, अथच ताहार क्षुधित अतृप्त हृदयके खोराकमात्र दितेछे ना, इहाते महेन्द्रेर पौरुषाभिमान प्रतिदिन आहत हइया ताहार हृदय विद्रोही हइया उठितेछिल। एलाहाबादे किछुदिन थाकिया जिराइते पाइले से बाँचिया याय--किन्तु इच्छार अनुकूल हइलेओ विनोदिनीर खेयालमात्रे सम्मति दिते ताहार मन हठात् बाँकिया दाँड़ाइल। से राग करिया कहिल, "यखन बाहिर हइयाछि, तखन याइबइ। फिरिते पारिब ना।"

विनोदिनी कहिल, "आमि याइब ना।"

महेन्द्र कहिल, "तबे तुमि एकला थाको, आमि चलिलाम।"

विनोदिनी कहिल, "सेइ भालो।" बलिया द्विरुक्तिमात्र ना करिया इङ्गिते मुटे डाकिया स्टेशन छाड़िया चलिल।

महेन्द्र पुरुषेर कर्तृत्व-अधिकार लइया अन्धकार-मुखे बेञ्चे बसिया रहिल। यतक्षण विनोदिनीके देखा गेल, ततक्षण से स्थिर हइया थाकिल। यखन विनोदिनी एकबारओ पश्चाते ना फिरिया बाहिर हइया गेल, तखन से ताड़ाताड़ि मुटेर माथाय बाक्स-बिछाना चापाइया ताहार अनुसरण करिल। बाहिरे आसिया देखिल, विनोदिनी एकखानि गाड़ि अधिकार करिया बसियाछे। महेन्द्र कोनो कथा ना बलिया गाड़िर माथाय माल चापाइया कोचबाक्से चड़िया बसिल। निजेर अहंकार खर्व करिया गाड़िर भितरे विनोदिनीर सम्मुखे बसिते ताहार आर मुख रहिल ना।

किन्तु गाड़ि तो चलियाछेइ। एक घण्टा हइया गेल, क्रमे शहरेर बाड़ि छाड़ाइया चषा माठे आसिया पड़िल। गाड़ोयानके प्रश्न करिते महेन्द्रेर लज्जा करिते लागिल, कारण, पाछे गाड़ोयान मने करे भितरकार स्त्रीलोकटिइ कर्तृपक्ष, कोथाय याइते हइबे ताओ से एइ अनावश्यक पुरुषटार सङ्गे परामर्श करे नाइ। महेन्द्र रुष्ट अभिमान मने मने परिपाक करिया स्तब्धभावे कोचबाक्से बसिया रहिल।

गाड़ि निर्जने यमुनार धारे एकटि सयत्नरक्षित बागानेर मध्ये आसिया

थामिल। महेन्द्र आश्चर्य हइया गेल। ए काहार बागान। ए-बागानेर ठिकाना विनोदिनी केमन करिया जानिल।

बाड़ि बन्ध छिल। हाँकाहाँकि करिते वृद्ध रक्षक बाहिर हइया आसिल। से कहिल, "बाड़िओयाला धनी, अधिक दूरे थाकेन ना--ताँहार अनुमति लइया आसिलेइ ए-बाड़िते बास करिते दिते पारि।"

विनोदिनी महेन्द्रेर मुखेर दिके एकबार चाहिल। महेन्द्र एइ मनोरम बाड़िटि देखिया लुब्ध हइयाछिल--दीर्घकाल परे किछुदिन स्थितिर सम्भावनाय से प्रफुल्ल हइल, विनोदिनीके कहिल, "तबे चलो सेइ धनीर ओखाने याइ, तुमि बाहिरे गाड़िते अपेक्षा करिबे, आमि भितरे गिया भाड़ा ठिक करिया आसिब।"

विनोदिनी कहिल, "आमि आर घुरिते पारिब ना--तुमि याओ, आमि ततक्षण एखाने विश्राम करि। भयेर कोनो कारण देखि ना।"

महेन्द्र गाड़ि लइया चलिया गेल। विनोदिनी बुड़ा ब्राह्मणके डाकिया ताहार छेलेपुलेर कथा जिज्ञासा करिल--ताहारा के, कोथाय चाकरि करे, ताहार मेयेदेर कोथाय विवाह हइयाछे। ताहार स्त्रीर मृत्युसंवाद शुनिया करुणस्वरे कहिल, "आहा, तोमार तो बड़ो कष्ट। एइ वयसे तुमि संसारे एकला पड़िया गेछ। तोमाके देखिबार केह नाइ।"

ताहार परे कथाय कथाय विनोदिनी जिज्ञासा करिल, "विहारीबाबु एखाने छिलेन ना ?"

वृद्ध कहिल, "हाँ, किछुदिन छिलेन तो बटे। माजि कि ताँहाके चेनेन।"

विनोदिनी कहिल, "तिनि आमादेर आत्मीय हन।"

विनोदिनी वृद्धेर काछे विहारीर विवरण ओ वर्णना याहा पाइल, ताहाते आर मने कोनो सन्देह रहिल ना। बुड़ाके दिया घर खुलाइया कोन् घरे विहारी शुइत, कोन् घर ताहार बसिबार छिल, ताहा समस्त जानिया लइल। ताहार याओयार पर हइते घरगुलि ये बन्ध छिल, ताहाते मने हइल, येन सेखाने अदृश्य विहारीर सञ्चार समस्त घर भरिया जमा हइया आछे, हाओयाय येन ताहा उड़ाइया लइया याइते पारे नाइ। विनोदिनी ताहा घ्राणेर मध्ये हृदय पूर्ण करिया ग्रहण करिल, स्तब्ध वातासे सर्वाङ्गे स्पर्श करिल; किन्तु विहारी ये कोथाय गेछे, से-सन्धान पाओया गेल ना। हयतो से फिरितेओ पारे--स्पष्ट किछुइ जाना नाइ। वृद्ध ताहार प्रभुके जिज्ञासा करिया आसिया बलिबे, विनोदिनीके एरूप आश्वास दिल।

आगाम भाड़ा दिया बासेर अनुमति लइया महेन्द्र फिरिया आसिल।

हिमालयशिखर ये यमुनाके तुषारस्रुत अक्षय जलधारा दितेछे, कतकालेर कविरा मिलिया सेइ यमुनार मध्ये ये-कवित्वस्रोत ढालियाछेन, ताहाओ अक्षय। इहार कलध्वनिर मध्ये कत विचित्र छन्द ध्वनित एवं इहार तरङ्गलीलाय कतकालेर पुलकोच्छ्वसित भावावेग उद्वेलित हइया उठितेछे।

प्रदोषे सेइ यमुनातीरे महेन्द्र आसिया यखन बसिल, तखन घनीभूत प्रेमेर आवेश ताहार दृष्टिते, ताहार निश्वासे, ताहार शिराय, ताहार अस्थिगुलिर मध्ये प्रगाढ़ मोहरसप्रवाह सञ्चार करिया दिल। आकाशे सूर्यास्तकिरणेर स्वर्णवीणा वेदनार मूर्छनाय आलोकश्रुत संगीते झंकृत हइया उठिल।

विस्तीर्ण निर्जन बालुतटे विचित्र वर्णच्छटाय दिन धीरे धीरे अवसान हइया गेल। महेन्द्र चक्षु अर्धेक मुद्रित करिया काव्यलोक हइते गोखुर-धूलिजालेर मध्ये वृन्दावनेर धेनुदेर गोष्ठे प्रत्यावर्तनेर हाम्बारब शुनिते पाइल।

वर्षार मेघे आकाश आच्छन्न हइया आसिल। अपरिचित स्थानेर अन्धकार केवल कृष्णवर्णेर आवरण मात्र नहे, ताहा विचित्र रहस्ये परिपूर्ण। ताहार मध्य दिया येटुकु आभा येटुकु आकृति देखिते पाओया याय, ताहा अज्ञात अनुच्चारित भाषाय कथा कहे। परपारवर्ती बालुकार अस्फुट पाण्डुरता, निस्तरङ्ग जलेर मसीकृष्ण कालिमा, बागाने घनपल्लव विपुल निम्ब-वृक्षेर पुञ्जीभूत स्तब्धता, तरुहीन म्लान धूसर तटेर बङ्किम रेखा, समस्त सेइ आषाढ़-सन्ध्यार अन्धकारे विविध अनिर्दिष्ट अपरिस्फुट आकारे मिलित हइया महेन्द्रके चारि दिके वेष्टन करिया धरिल।

पदावली वर्षाभिसार महेन्द्रेर मने पड़िल। अभिसारिका बाहिर हइयाछे। यमुनार ओइ तटप्रान्ते से एकाकिनी आसिया दाँड़ाइयाछे। पार हइवे केमन करिया। "ओगो, पार करो गो, पार करो"—महेन्द्रेर बुकेर मध्ये एइ डाक आसिया पौंछितेछे—"ओगो, पार करो।"

नदीर परपारे अन्धकारे सेइ अभिसारिणी बहुदूरे—तबु महेन्द्र ताहाके स्पष्ट देखिते पाइल। ताहार काल नाइ, ताहार वयस नाइ, से चिरन्तन गोपबाला—किन्तु तबु महेन्द्र ताहाके चिनिल—से एइ विनोदिनी। समस्त विरह, समस्त वेदना, समस्त यौवनभार लइया तखनकार काल हइते से अभिसारे यात्रा करिया, कत गान कत छन्देर मध्य दिया एखनकार कालेर तीरे आसिया उत्तीर्ण हइयाछे—आजिकार एइ जनहीन यमुनातटेर उपरकार

आकाशे ताहारइ कण्ठस्वर शुना याइतेछे--"ओगो, पार करो गो"--खेया-नौकार जन्य से एइ अन्धकारे आर कतकाल एमन एकला दाँड़ाइया थाकिबे--"ओगो, पार करो।"

मेघेर एक प्रान्त अपसारित हइया कृष्णपक्षेर तृतीयार चाँद देखा दिल। ज्योत्स्नार मायामन्त्रे सेइ नदी ओ नदीतीर, सेइ आकाश ओ आकाशेर सीमान्त, पृथिवीर अनेक बाहिरे चलिया गेल। मर्त्येर कोनो बन्धन रहिल ना। कालेर समस्त धारावाहिकता छिँड़िया गेल--अतीतकालेर समस्त इतिहास लुप्त, भविष्यत् कालेर समस्त फलाफल अन्तर्हित--शुधु एइ रजतधारा-प्लावित वर्तमानटुकु यमुना ओ यमुनातटेर मध्ये महेन्द्र ओ विनोदिनीके लइया विश्वविधानेर बाहिरे चिरस्थायी।

महेन्द्र माताल हइया उठिल। विनोदिनी ये ताहाके प्रत्याख्यान करिबे, ज्योत्स्नारात्रिर एइ निर्जन स्वर्गखण्डके लक्ष्मीरूपे सम्पूर्ण करिया तुलिबे ना, इहा से कल्पना करिते पारिल ना। तत्क्षणात् उठिया से विनोदिनीके खुँजिते बाड़िर दिके चलिया गेल।

शयनगृहे आसिया देखिल, घर फुलेर गन्धे पूर्ण। उन्मुक्त जानाला-दरजा दिया ज्योत्स्नार आलो शुभ्र बिछानार उपर आसिया पड़ियाछे। विनोदिनी बागान हइते फुल तुलिया माला गाँथिया खोंपाय परियाछे, गलाय परियाछे, कटिते बाँधियाछे--फुले भूषित हइया से वसन्तकालेर पुष्पभार-लुण्ठित लताटिर न्याय ज्योत्स्नाय बिछानार उपरे पड़िया आछे।

महेन्द्रेर मोह द्विगुण हइया उठिल। से अवरुद्धकण्ठे बलिया उठिल, "विनोद, आमि यमुनार धारे अपेक्षा करिया बसिया छिलाम, तुमि ये एखाने अपेक्षा करिया आछ, आकाशेर चाँद आमाके सेइ संवाद दिल, ताइ आमि चलिया आसिलाम।"

एइ कथा बलिया महेन्द्र बिछानाय बसिबार जन्य अग्रसर हइल। विनो-दिनी कहिल, "याओ याओ, तुमि ए-बिछानाय बसियो ना।"

भरापालेर नौका चड़ाय ठेलिया गेल--महेन्द्र स्तम्भित हइया दाँड़ाइल। अनेक क्षण ताहार मुख दिया कथा बाहिर हइल ना। पाछे महेन्द्र निषेध ना माने, एइजन्य विनोदिनी शय्या छाड़िया आसिया दाँड़ाइल।

महेन्द्र कहिल, "तबे तुमि काहार जन्य साजियाछ। काहार जन्य अपेक्षा करितेछ।"

विनोदिनी आपनार बुक चापिया धरिया कहिल, "याहार जन्य साजि-याछि, से आमार अन्तरेर भितरे आछे।"

महेन्द्र कहिल, "से के। से बिहारी ?"

विनोदिनी कहिल, "ताहार नाम तुमि मुखे उच्चारण करियो ना।"

महेन्द्र। ताहारइ जन्य तुमि पश्चिमे घुरिया बेड़ाइतेछ ?

विनोदिनी। ताहारइ जन्य।

महेन्द्र। ताहारइ जन्य तुमि एखाने अपेक्षा करिया आछ ?

विनोदिनी। ताहारइ जन्य।

महेन्द्र। ताहार ठिकाना जानियाछ ?

विनोदिनी। जानि ना, किन्तु येमन करिया हउक, जानिबइ।

महेन्द्र। कोनोमतेइ जानिते दिब ना।

विनोदिनी। ना यदि जानिते दाओ, आमार हृदय हइते ताहाके कोनोमतेइ बाहिर करिते पारिबे ना।

एइ बलिया विनोदिनी चोख बुजिया आपनार हृदयेर मध्ये बिहारीके एकबार अनुभव करिया लइल।

महेन्द्र सेइ पुष्पाभरणा विरहविधुरमूर्ति विनोदिनीर द्वारा एकइ काले प्रबलवेगे आकृष्ट ओ प्रत्याख्यात हइया हठात् भीषण हइया उठिल--मुष्ठिबद्ध करिया कहिल, "छुरि दिया काटिया तोमार बुकेर भितर हइते ताहाके बाहिर करिब।"

विनोदिनी अविचलितमुखे कहिल, "तोमार भालोबासार चेये तोमार छुरि आमार हृदये सहजे प्रवेश करिबे।"

महेन्द्र। तुमि आमाके भय कर ना केन, एखाने तोमार रक्षक के आछे।

विनोदिनी। तुमि आमार रक्षक आछ। तोमार निजेर काछ हइते तुमि आमाके रक्षा करिबे।

महेन्द्र। एइटुकु श्रद्धा, एइटुकु विश्वास, एखनो बाकि आछे।

विनोदिनी। ता ना हइले आमि आत्महत्या करिया मरिताम, तोमार सङ्गे बाहिर हइताम ना।

महेन्द्र। केन मरिले ना--ओइटुकु विश्वासेर फाँसि आमार गलाय जड़ाइया आमाके देशदेशान्तरे टानिया मरितेछ केन। तुमि मरिले कत मङ्गल हइत भाबिया देखो।

विनोदिनी। ताहा जानि, किन्तु यतदिन बिहारीर आशा आछे, ततदिन आमि मरिते पारिब ना।

महेन्द्र। यतदिन तुमि ना मरिबे, ततदिन आमार प्रत्याशाओ मरिबे

ना--आमिओ निष्कृति पाइब ना। आमि आज हइते भगवानेर काछे सर्वान्तःकरणे तोमार मृत्यु कामना करि। तुमि आमारओ हइयो ना, तुमि बिहारीरओ हइयो ना। तुमि याओ। आमाके छुटि दाओ। आमार मा काँदितेछेन, आमार स्त्री काँदितेछे--ताँहादेर अश्रु आमाके दूर हइते दग्ध करितेछे। तुमि ना मरिले, तुमि आमार एवं पृथिवीर सकलेर आशार अतीत ना हइले, आमि ताँहादेर चोखेर जल मुछाइबार अवसर पाइब ना।

एइ बलिया महेन्द्र छुटिया बाहिर हइया गेल। विनोदिनी एकला पड़िया आपनार चारि दिके ये मोहजाल रचना करितेछिल, ताहा समस्त छिँड़िया दिया गेल। चुप करिया दाँड़ाइया विनोदिनी बाहिरेर दिके चाहिया रहिल--आकाशभरा ज्योत्स्ना शून्य करिया दिया ताहार समस्त सुधारस कोथाय उबिया गेछे। सेइ केयारि-करा बागान, ताहार परे बालुकातीर, ताहार परे नदीर कालो जल, ताहार परे ओपारेर अस्फुटता--समस्तइ येन एकखाना बड़ो सादा कागजेर उपरे पेनसिले-आँका एकटि चित्र मात्र--समस्तइ नीरस एवं निरर्थक।

महेन्द्रके विनोदिनी किरूप प्रबलवेगे आकर्षण करियाछे, प्रचण्ड झड़ेर मतो किरूप समस्त शिकड़-शुद्ध ताहाके उत्पाटित करियाछे, आज ताहा अनुभव करिया ताहार हृदय आरो येन अशान्त हइया उठिल। ताहार तो एइ समस्त शक्तिइ रहियाछे, तबे केन बिहारी पूर्णिमार रात्रिर उद्वेलित समुद्रेर न्याय ताहार सम्मुखे आसिया भाङिया पड़े ना। केन एकटा अनावश्यक भालोबासार प्रबल अभिघात प्रत्यह ताहार ध्यानेर मध्ये आसिया काँदिया पड़ितेछे। आर-एकटा आगन्तुक रोदन बारबार आसिया ताहार अन्तरेर रोदनके केन परिपूर्ण अवकाश दितेछे ना। एइ ये एकटा प्रकाण्ड आन्दोलनके से जागाइया तुलियाछे, इहाके लइया समस्त जीवन से की करिबे। एखन इहाके शान्त करिबे की उपाये।

आज ये-समस्त फुलेर मालाय से निजेके भूषित करियाछिल, ताहार उपरे महेन्द्रेर मुग्ध दृष्टि पड़ियाछिल जानिया समस्त टानिया छिँड़िया फेलिल। ताहार समस्त शक्ति वृथा, चेष्टा वृथा, जीवन वृथा--एइ कानन, एइ ज्योत्स्ना, एइ यमुनातट, एइ अपूर्व-सुन्दर पृथिवी, समस्तइ वृथा।

एत व्यर्थता, तबु ये येखाने से सेखानेइ दाँड़ाइया आछे--जगते किछुरइ लेशमात्र व्यत्यय हय नाइ। तबु काल सूर्य उठिबे एवं संसार ताहार क्षुद्रतम काजटुकु पर्यन्त भुलिबे ना--एवं अविचलित बिहारी येमन दूरे छिल, तेमनि दूरे थाकिया ब्राह्मण बालकके ताहार बोधोदयेर नूतन पाठ अभ्यास कराइबे।

विनोदिनीर चक्षु फाटिया अश्रु बाहिर हइया पड़िल। से ताहार समस्त बल ओ आकांक्षा लइया कोन् पाथरके ठेलितेछे। ताहार हृदय रक्ते भासिया गेल, किन्तु ताहार अदृष्ट सूच्यग्रपरिमाण सरिया बसिल ना।

५२

समस्त रात्रि महेन्द्र घुमाय नाइ--क्लान्तशरीरे भोरेर दिके ताहार घुम आसिल। वेला आटटा-नयटार समय जागिया ताड़ाताड़ि उठिया बसिल। गत-रात्रिर एकटा कोनो असमाप्त वेदना घुमेर भितरे भितरे येन प्रवाहित हइतेछिल। सचेतन हइबामात्र महेन्द्र ताहार व्यथा अनुभव करिते आरम्भ करिल। किछुक्षण परेइ रात्रिर समस्त घटनाटा मने स्पष्ट जागिया उठिल। सकालवेलाकार सेइ रौद्रे, अतृप्त निद्रार क्लान्तिते समस्त जगत्टा एवं जीवनटा अत्यन्त विरस बोध हइल। संसारत्यागेर ग्लानि, धर्मत्यागेर गभीर परिताप एवं एइ उद्भ्रान्त जीवनेर समस्त अशान्तिभाव महेन्द्र किसेर जन्य वहन करितेछे। एइ मोहावेशशून्य प्रभातरौद्रे महेन्द्रेर मने हइल, से विनोदिनीके भालोबासे ना। रास्तार दिके से चाहिया देखिल, समस्त जाग्रत पृथिवी व्यस्त हइया काजे छुटियाछे। समस्त आत्मगौरव पङ्केर मध्ये विसर्जन दिया एकटि विमुख स्त्रीलोकेर पदप्रान्ते अकर्मण्य जीवनके प्रतिदिन आबद्ध करिया राखिबार ये मूढ़ता, ताहा महेन्द्रेर काछे सुस्पष्ट हइल। एकटा प्रबल आवेगेर उच्छ्वासेर पर हृदये अवसाद उपस्थित हय--क्लान्त हृदय तखन आपन अनुभूतिर विषयके किछुकालेर जन्य दूरे ठेलिया राखिते चाय। सेइ भावेर भाँटार समय तलेर समस्त प्रच्छन्न पङ्क बाहिर हइया पड़े--याहा मोह आनियाछिल ताहाके वितृष्णा जन्मे। महेन्द्र ये किसेर जन्य निजेके एमन करिया अपमानित करितेछे, ताहा से आज बुझिते पारिल ना। से बलिल, "आमि सर्वांशेइ विनोदिनीर चेये श्रेष्ठ, तबु आज आमि सर्वप्रकार हीनता ओ लाञ्छना स्वीकार करिया घृणित भिक्षुकेर मतो ताहार पश्चाते अहोरात्र छुटिया बेड़ाइतेछि, एमनतरो अद्भुत पागलामि कोन् शयतान आमार माथार मध्ये प्रवेश कराइया दियाछे।" विनोदिनी महेन्द्रेर काछे आज एकटि स्त्रीलोकमात्र, आर किछुइ नहे--ताहार चारि दिके समस्त पृथिवीर सौन्दर्य हइते, समस्त काव्य हइते काहिनी हइते ये एकटि लावण्यज्योति आकृष्ट हइयाछिल, ताहा आज मायामरीचिकार मतो अन्तर्धान करितेइ एकटि सामान्य नारीमात्र अवशिष्ट रहिल--ताहार कोनो अपूर्वत्व रहिल ना।

तखन एइ धिक्कृत मोहचक्र हइते निजेके विच्छिन्न करिया बाड़ि फिरिया याइबार जन्य महेन्द्र व्यग्र हइल। ये शान्ति प्रेम एवं स्नेह ताहार छिल, ताहाइ ताहार काछे दुर्लभतम अमृत बलिया बोध हइल। बिहारीर आशैशव अटलनिर्भर बन्धुत्व ताहार काछे महामूल्य बलिया बोध हइते लागिल। महेन्द्र मने मने कहिल, "याहा यथार्थ गभीर एवं स्थायी, ताहार मध्ये बिना चेष्टाय, बिना बाधाय आपनाके सम्पूर्ण निमग्न करिया राखा याय बलिया ताहार गौरव आमरा बुझिते पारि ना--याहा चन्चल छलनामात्र, याहार परितृप्तितेओ लेशमात्र सुख नाइ, ताहा आमादिगके पश्चाते ऊर्ध्वश्वासे घोड़-दौड़ कराइया बेड़ाय बलियाइ ताहाके चरम कामनार धन मने करि।"

महेन्द्र कहिल, "आजइ बाड़ि फिरिया याइब--विनोदिनी येखानेइ थाकिते चाहे, सेखानेइ ताहाके राखिबार व्यवस्था करिया दिया आमि मुक्त हइब।" "आमि मुक्त हइब" एइ कथा दृढ़स्वरे उच्चारण करितेइ ताहार मने एकटि आनन्देर आविर्भाव हइल—एतदिन ये अविश्राम द्विधार भार से वहन करिया आसितेछिल, ताहा हाल्का हइया आसिल। एतदिन, एइ मुहूर्ते याहा ताहार परम अप्रीतिकर ठेकितेछिल, परमुहूर्तेइ ताहा पालन करिते बाध्य हइतेछिल--जोर करिया "ना" कि "हाँ" से बलिते पारितेछिल ना—ताहार अन्तःकरणेर मध्ये ये-आदेश उत्थित हइतेछिल बराबर जोर करिया ताहार मुख चापा दिया से अन्यपथे चलितेछिल—एखन से येमनि सवेगे बलिल, "आमि मुक्ति-लाभ करिब", अमनि ताहार दोलापीड़ित हृदय आश्रय पाइया ताहाके अभि-नन्दन करिल।

महेन्द्र तखनइ शय्यात्याग करिया उठिया मुख धुइया विनोदिनीर सहित देखा करिते गेल। गिया देखिल, ताहार द्वार बन्ध। द्वारे आघात दिया कहिल, "घुमाइतेछ कि!"

विनोदिनी कहिल, "ना। तुमि एखन याओ।"

महेन्द्र कहिल, "तोमार सङ्गे विशेष कथा आछे—आमि वेशि क्षण थाकिब ना।"

विनोदिनी कहिल, "कथा आर आमि शुनिते पारि ना--तुमि याओ, आमाके आर विरक्त करियो ना, आमाके एकला थाकिते दाओ।"

अन्य कोनो समय हइले एइ प्रत्याखाने महेन्द्रेर आवेग आरो बाड़िया उठित। किन्तु आज ताहार अत्यन्त घृणाबोध हइल। से भाबिल, "एइ सामान्य एक स्त्रीलोकेर काछे आमि निजेके एतइ हीन करियाछि ये, आमाके यखन-तखन एमनतरो अवज्ञाभरे दूर करिया दिबार अधिकार इहार जन्मि-

याछे। से अधिकार इहार स्वाभाविक अधिकार नहे। आमिइ ताहा इहाके दिया इहार गर्व एमन अन्यायरूपे बाड़ाइया दियाछि।" एइ लाञ्छनार परे महेन्द्र निजेर मध्ये निजेर श्रेष्ठत्व अनुभव करिबार चेष्टा करिल। से कहिल, "आमि जयी हइब---इहार बन्धन आमि छेदन करिया दिया चलिया याइब।"

आहारान्ते महेन्द्र टाका उठाइया आनिबार जन्य ब्याङ्के चलिया गेल। टाका उठाइया आशार जन्य ओ मार जन्य किछु भालो जिनिस किनिबे बलिया से एलाहाबादेर दोकाने घुरिते लागिल।

आबार एकबार विनोदिनीर द्वारे आघात पड़िल। प्रथमे से विरक्त हइया कोनो उत्तर करिल ना---ताहार परे आबार बार बार आघात करितेइ विनोदिनी ज्वलन्त रोषे सबले द्वार खुलिया कहिल, "केन तुमि आमाके बार बार विरक्त करिते आसितेछ।" कथा शेष ना हइतेइ विनोदिनी देखिल, बिहारी दाँड़ाइया आछे।

घरेर मध्ये महेन्द्र आछे कि ना, देखिबार जन्य बिहारी एकबार भितरे चाहिया देखिल। देखिल, शयनघरे शुष्क फूल एवं छिन्न माला छड़ानो। ताहार मन निमेषेर मध्येइ प्रबलवेगे विमुख हइया गेल। बिहारी यखन दूरे छिल, तखन विनोदिनीर जीवनयात्रा सम्बन्धे कोनो सन्देहजनक चित्र ये ताहार मने उदय हय नाइ ताहा नहे, किन्तु कल्पनार लीला से-चित्रके ढाकियाओ एकटि उज्ज्वल मोहिनीच्छवि दाँड़ कराइयाछिल। बिहारी यखन बागाने प्रवेश करितेछिल तखन ताहार हृत्कम्प हइतेछिल---पाछे कल्पना-प्रतिमाय अकस्मात् आघात लागे, एइजन्य ताहार चित्त संकुचित हइतेछिल। बिहारी विनोदिनीर शयनगृहेर द्वारेर सम्मुखे दाँड़ाइबामात्र सेइ आघातटाइ लागिल।

दूरे थाकिया बिहारी एकसमय मने करियाछिल, से आपनार प्रेमाभिषेके विनोदिनीर जीवनेर समस्त पङ्किलता अनायासे धौत करिया लइते पारिबे। काछे आसिया देखिल, ताहा सहज नहे—मनेर मध्ये करुणार वेदना आसिल कइ। हठात् घृणार तरङ्ग उठिया ताहाके अभिभूत करिया दिल। विनोदिनीके बिहारी अत्यन्त मलिन देखिल।

एक मुहूर्तेइ बिहारी फिरिया दाँड़ाइया "महेन्द्र" "महेन्द्र" करिया डाकिल।

एइ अपमान पाइया विनोदिनी नम्रमृदुस्वरे कहिल, "महेन्द्र नाइ, महेन्द्र शहरे गेछे।"

बिहारी चलिया याइते उद्यत हइले विनोदिनी कहिल, "बिहारी-ठाकुरपो, तोमार पाये धरि, एकटुखानि तोमाके बसिते हइबे।"

बिहारी कोनो मिनति शुनिबे ना मने करियाछिल, एकेबारे एइ घृणार दृश्य हइते एखनइ निजेके दूरे लइया याइबे स्थिर करियाछिल, किन्तु विनोदिनीर करुण अनुनयस्वर शुनिबामात्र क्षणकालेर जन्य ताहार पा येन आर उठिल ना।

विनोदिनी कहिल, "आज यदि तुमि विमुख हइया एमन करिया चलिया याओ, तबे आमि तोमारइ शपथ करिया बलितेछि, आमि मरिब।"

बिहारी तखन फिरिया दाँड़ाइया कहिल, "विनोदिनी, तोमार जीवनेर सङ्गे आमाके तुमि जड़ाइबार चेष्टा करितेछ केन। आमि तोमार की करियाछि। आमि तो कखनो तोमार पथे दाँड़ाइ नाइ, तोमार सुखदुःखे हस्तक्षेप करि नाइ।" विनोदिनी कहिल, "तुमि आमार कतखानि अधिकार करियाछ, ताहा एकबार तोमाके जानाइयाछि––तुमि विश्वास कर नाइ। तबु आज आबार तोमार विरागेर मुखे सेइ कथाइ जानाइतेछि। तुमि तो आमाके ना बलिया जानाइबार, लज्जा करिया जानाइबार, समय दाओ नाइ। तुमि आमाके ठेलिया फेलियाछ, तबु आमि तोमार पा धरिया बलितेछि, आमि तोमाके––"

बिहारी बाधा दिया कहिल, "से-कथा आर बलियो ना, मुखे आनियो ना। से-कथा विश्वास करिबार जो नाइ।"

विनोदिनी। से-कथा इतर लोके विश्वास करिते पारे ना, किन्तु तुमि करिबे। सेइजन्य एकबार आमि तोमाके बसिते बलितेछि।

बिहारी। आमि विश्वास करि वा ना करि, ताहाते की आसे याय। तोमार जीवन येमन चलितेछे, तेमनि चलिबे तो।

विनोदिनी। आमि जानि तोमार इहाते किछुइ आसिबे-याइबे ना। आमार भाग्य एमन ये, तोमार सम्मानरक्षा करिया तोमार पाशे दाँड़ाइबार आमार कोनो उपाय नाइ। चिरकाल तोमा हइते आमाके दूरेइ थाकिते हइबे। आमार मन तोमार काछे एइ दाबिटुकु केवल छाड़िते पारे ना ये, आमि येखाने थाकि आमाके तुमि एकटुकु माधुर्येर सङ्गे भाबिबे। आमि जानि, आमार उपरे तोमार अल्प एकटु श्रद्धा जन्मियाछिल, सेइ टुकु आमार एकमात्र सम्बल करिया राखिब। सेइजन्य आमार सब कथा तोमाके शुनिते हइबे। आमि हातजोड़ करिया बलितेछि ठाकुरपो, एकटुखानि बसो।

"आच्छा चलो" बलिया बिहारी एखान हइते अन्यत्र कोथाओ याइते उद्यत हइल।

विनोदिनी कहिल, "ठाकुरपो, याहा मने करितेछ, ताहा नहे। ए-घरे

कोनो कलङ्क स्पर्श करे नाइ। तुमि एइ घरे एकदिन शयन करियाछिले-- ए-घर तोमार जन्य उत्सर्ग करिया राखियाछि--ओइ फुलगुला तोमारइ पूजा करिया आज शुकाइया पड़िया आछे। एइ घरेइ तोमाके बसिते हइबे।"

शुनिया बिहारीर चित्ते पुलकेर सञ्चार हइल। घरेर मध्ये से प्रवेश करिल। विनोदिनी दुइ हात दिया ताहाके खाट देखाइया दिल। बिहारी खाटे गिया बसिल--विनोदिनी भूमितले ताहार पायेर काछे उपवेशन करिल। बिहारी व्यस्त हइया उठितेइ विनोदिनी कहिल, "ठाकुरपो, तुमि बसो, आमार माथा खाओ उठियो ना। आमि तोमार पायेर काछे बसिबारओ योग्य नइ, तुमि दया करियाइ सेखाने स्थान दियाछ। दूरे थाकिलेओ एइ अधिकारटुकु आमि राखिब।"

एइ बलिया विनोदिनी किछु क्षण चुप करिया रहिल। ताहार परे हठात् चमकिया उठिया कहिल, "तोमार खाओया हइयाछे, ठाकुरपो?"

बिहारी कहिल, "स्टेशन हइते खाइया आसियाछि।"

विनोदिनी। आमि ग्राम हइते तोमाके ये चिठिखानि लिखियाछिलाम ताहा खुलिया कोनो जवाब ना दिया महेन्द्रेर हात दिया आमाके फिराइया पाठाइले केन।

बिहारी। से चिठि तो आमि पाइ नाइ।

विनोदिनी। एबारे महेन्द्रेर सङ्गे कलिकाताय कि तोमार देखा हइया-छिल।

बिहारी। तोमाके ग्रामे पौंछाइया दिबार परदिन महेन्द्रेर सङ्गे देखा हइयाछिल, ताहार परेइ आमि पश्चिमे बेड़ाइते बाहिर हइयाछिलाम, ताहार सङ्गे आर देखा हय नाइ।

विनोदिनी। ताहार पूर्वे आर-एकदिन आमार चिठि पड़िया उत्तर ना दिया फिराइया पठाइयाछिले?

बिहारी। ना, एमन कखनोइ हय नाइ।

विनोदिनी स्तम्भित हइया बसिया रहिल। ताहार परे दीर्घ निश्वास फेलिया कहिल, "समस्त बुझिलाम। एखन आमार सब कथा तोमाके बलि। यदि विश्वास कर तो भाग्य मानिब, यदि ना कर तो तोमाके दोष दिब ना, आमाके विश्वास करा कठिन।"

बिहारीर हृदय तखन आर्द्र हइया गेछे। एइ भक्तिभारनम्रा विनोदिनीर पूजाके से कोनोमतेइ अपमान करिते पारिल ना। से कहिल, "बोठान, तोमाके कोनो कथाइ बलिते हइबे ना; किछु ना शुनिया आमि तोमाके

विश्वास करितेछि। आमि तोमाय घृणा करिते पारि ना। तुमि आर एकटि कथाओ बलियो ना।"

शुनिया विनोदिनीर चोख दिया जल पड़िते लागिल, से बिहारीर पायेर धूला माथाय तुलिया लइल। कहिल, "सब कथा ना बलिया आमि बाँचिब ना। एकटु धैर्य धरिया शुनिते हइबे--तुमि आमाके ये-आदेश करियाछिले, ताहाइ आमि शिरोधार्य करिया लइलाम। यदिओ तुमि आमाके पत्रटुकुओ लेख नाइ, तबु आमि आमार सेइ ग्रामे लोकेर उपहास ओ निन्दा सह्य करिया जीवन काटाइया दिताम, तोमार स्नेहेर परिवर्ते तोमार शासनइ आमि ग्रहण करिताम--किन्तु विधाता ताहातेओ विमुख हइलेन। आमि ये-पाप जागाइया तुलियाछि, ताहा आमाके निर्वासनेओ टिकिते दिल ना। महेन्द्र ग्रामे आसिया, आमार घरेर द्वारे आसिया, आमाके सकलेर सम्मुखे लाञ्छित करिल। से-ग्रामे आर आमार स्थान हइल ना। द्वितीय बार तोमार आदेशेर जन्य तोमाके अनेक खुँजिलाम, कोनोमतेइ तोमाके पाइलाम ना, महेन्द्र आमार खोला चिठि तोमार घर हइते फिराइया लइया आमाके प्रतारणा करिल। बुझिलाम, तुमि आमाके एकेबारे परित्याग करियाछ। इहार परे आमि एकेबारेइ नष्ट हइते पारिताम--किन्तु तोमार की गुण आछे, तुमि दूरे थाकियाओ रक्षा करिते पार--तोमाके मने स्थान दियाछि बलियाइ आमि पवित्र हइयाछि--एकदिन तुमि आमाके दूर करिया दिया निजेर ये परिचय दियाछ, तोमार सेइ कठिन परिचय, कठिन सोनार मतो, कठिन मानिकेर मतो आमार मनेर मध्ये रहियाछे, आमाके महामूल्य करियाछे। देव, एइ तोमार चरण छुइया बलितेछि, से मूल्य नष्ट हय नाइ।"

बिहारी चुप करिया बसिया रहिल। विनोदिनीओ आर कोनो कथा कहिल ना। अपराह्णेर आलोक प्रतिक्षणे म्लान हइया आसिते लागिल। एमन समय महेन्द्र घरेर द्वारेर काछे आसिया बिहारीके देखिया चमकिया उठिल। विनोदिनीर प्रति ताहार ये एकटा औदासीन्य जन्मितेछिल, ईर्षार ताड़नाय ताहा दूर हइबार उपक्रम हइल। विनोदिनी बिहारीर पायेर काछे स्तब्ध हइया बसिया आछे देखिया, प्रत्याख्यात महेन्द्रेर गर्वे आघात लागिल। विनोदिनीर सहित बिहारीर चिठिपत्र द्वारा एइ मिलन घटियाछे, इहाते ताहार आर सन्देह रहिल ना। एतदिन बिहारी विमुख हइयाछिल, एखन से यदि निजे आसिया धरा देय, तबे विनोदिनीके ठेकाइबे के। महेन्द्र विनोदिनीके त्याग करिते पारे, किन्तु आर-काहारओ हाते त्याग करिते पारे ना, ताहा आज बिहारीके देखिया बुझिते पारिल।

व्यर्थरोषे तीव्र विद्रूपेर स्वरे महेन्द्र विनोदिनीके कहिल, "एखन तबे रङ्ग-भूमिते महेन्द्रेर प्रस्थान, बिहारीर प्रवेश। दृश्यटि सुन्दर--हात तालि दिते इच्छा हइतेछे। किन्तु आशा करि, एइ शेष अङ्क, इहार परे आर किछुइ भालो लागिबे ना।"

विनोदिनीर मुख रक्तिम हइया उठिल। महेन्द्रेर आश्रय लइते यखन ताहाके बाध्य हइते हइयाछे, तखन ए-अपमानेर उत्तर ताहार आर किछुइ नाइ--व्याकुल दृष्टिते से केवल एकबार बिहारीर मुखेर दिके चाहिल।

बिहारी खाट हइते उठिल--अग्रसर हइया कहिल, "महेन्द्र, तुमि विनोदिनीके कापुरुषेर मतो अपमान करियो ना--तोमार भद्रता यदि तोमाके निषेध ना करे, तोमाके निषेध करिबार अधिकार आमार आछे।"

महेन्द्र हासिया कहिल, "इहार मध्ये अधिकार साव्यस्त हइया गेछे? आज तोमार नूतन नाम करा याक--विनोद-बिहारी।"

बिहारी अपमानेर मात्रा चड़िते देखिया महेन्द्रेर हात चापिया धरिल। कहिल, "महेन्द्र, विनोदिनोके आमि विवाह करिब, तोमाके जानाइलाम, अतएव एखन हइते संयत भावे कथा कओ।"

शुनिया महेन्द्र विस्मये निस्तब्ध हइया गेल, एवं विनोदिनी चमकिया उठिल--बुकेर मध्ये ताहार समस्त रक्त तोलपाड़ करिते लागिल।

बिहारी कहिल, "तोमाके आर-एकटि खबर दिबार आछे--तोमार माता मृत्युशय्याय शयान--ताहार बाँचिबार कोनो आशा नाइ। आमि आज रात्रेर गाड़ितेइ याइब--विनोदिनीओ आमार सङ्गे फिरिबे।"

विनोदिनी चमकिया उठिल, कहिल, "पिसिमार असुख?"

बिहारी कहिल, "सारिबार असुख नहे। कखन की हय, बला याय ना।"

महेन्द्र तखन आर-कोनो कथा ना बलिया घर हइते बाहिर हइया गेल।

विनोदिनी तखन बिहारीके बलिल, "ये-कथा तुमि बलिले, ताहा तोमार मुख दिया केमन करिया बाहिर हइल। ए कि ठाट्टा।"

बिहारी कहिल, "ना, आमि सत्यइ बलियाछि, तोमाके आमि विवाह करिब।"

विनोदिनी। एइ पापिष्ठाके उद्धार करिबार जन्य।

बिहारी। ना। आमि तोमाके भालोबासि बलिया, श्रद्धा करि बलिया।

विनोदिनी। एइ आमार शेष पुरस्कार हइयाछे। एइ येटुकु स्वीकार करिले इहार बेशि आर आमि किछुइ चाइ ना। पाइलेओ ताहा थाकिबे ना, धर्म कखनो ताहा सह्य करिबे ना।

बिहारी। केन करिबे ना।

विनोदिनी। छि छि, ए-कथा मने करिते लज्जा हय। आमि विधवा, आमि निन्दिता, समस्त समाजेर काछे आमि तोमाके लाञ्छित करिब, ए कखनो हइतेइ पारे ना। छि छि, ए-कथा तुमि मुखे आनियो ना।

बिहारी। तुमि आमाके त्याग करिबे?

विनोदिनी। त्याग करिबार अधिकार आमार नाइ। तुमि गोपने अनेकेर अनेक भालो कर--तोमार एकटा कोनो व्रतेर एकटा-किछुभार आमार उपर समर्पण करियो, ताहाइ वहन करिया आमि निजेके तोमार सेविका बलिया गण्य करिब। किन्तु छि छि, विधवाके तुमि विवाह करिबे। तोमार औदार्ये सब सम्भव हइते पारे, किन्तु आमि यदि ए-काज करि, तोमाके समाजे नष्ट करि, तबे इहजीवने आमि आर माथा तुलिते पारिब ना।

बिहारी। किन्तु विनोदिनी, आमि तोमाके भालोबासि।

विनोदिनी। सेइ भालोबासार अधिकारे आमि आज एकटिमात्र स्पर्धा प्रकाश करिब। बलिया विनोदिनी भूमिष्ठ हइया बिहारीर पदाङ्गुली चुम्बन करिल। पायेर काछे बसिया कहिल, "परजन्मे तोमाके पाइबार जन्य आमि तपस्या करिब--ए-जन्मे आमार आर किछु आशा नाइ, प्राप्य नाइ। आमि अनेक दुःख दियाछि, अनेक दुःख पाइयाछि, आमार अनेक शिक्षा हइयाछे। से-शिक्षा यदि भुलिताम, तबे आमि तोमाके हीन करिया आरो हीन हइताम। किन्तु तुमि उच्च आछ बलियाइ आज आमि आबार माथा तुलिते पारियाछि--ए आश्रय आमि भूमिसात् करिब ना।"

बिहारी गम्भीरमुखे चुप करिया रहिल।

विनोदिनी हात जोड़ करिया कहिल, "भूल करियो ना--आमाके विवाह करिले तुमि सुखी हइबे ना, तोमार गौरव याइबे--आमिओ समस्त गौरव हाराइब। तुमि चिरदिन निर्लिप्त, प्रसन्न। आजओ तुमि ताइ थाको--आमि दूरे थाकिया तोमार कर्म करि। तुमि प्रसन्न हओ, तुमि सुखी हओ।"

५३

महेन्द्र ताहार मातार घरे प्रवेश करिते याइतेछे, तखन आशा ताड़ाताड़ि बाहिर हइया आसिया कहिल, "एखन ओ-घरे याइयो ना।"

महेन्द्र जिज्ञासा करिल, "केन।"

आशा कहिल, "डाक्तार बलियाछेन हठात् मार मने, सुखेर हउक, दुःखेर हउक, एकटा कोनो आघात लागिले विपद हइते पारे।"

महेन्द्र कहिल, "आमि एकबार आस्ते आस्ते ताँहार माथार शियरेर काछे गिया देखिया आसिगे--तिनि टेर पाइबेन ना।"

आशा कहिल, "तिनि अति अल्प शब्देइ चमकिया उठितेछेन, तुमि घरे ढुकिलेइ तिनि टेर पाइबेन।"

महेन्द्र। तबे, एखन तुमि की करिते चाओ।

आशा। आगे बिहारी-ठाकुरपो आसिया एकबार देखिया यान--तिनि येरूप परामर्श दिबेन, ताहाइ करिब।

बलिते बलिते बिहारी आसिया पड़िल। आशा ताहाके डाकिया पाठाइयाछिल।

बिहारी। बोठान, डाकियाछ? मा भालो आछेन तो?

आशा बिहारीके देखिया येन निर्भर पाइल। कहिल, "तुमि याओयार पर हइते मा येन आरो चञ्चल हइया उठियाछेन। प्रथम दिन तोमाके ना देखिया आमाके जिज्ञासा करिलेन, 'बिहारी कोथाय गेल।' आमि बलिलाम, 'तिनि विशेष काजे गेछेन, बृहस्पतिवारेर मध्ये फिरिबार कथा आछे।' ताहार पर हइते तिनि थाकिया थाकिया चमकिया उठितेछेन। मुखे किछुइ बलेन ना, किन्तु भितरे भितरे येन काहार अपेक्षा करितेछेन। काल तोमार टेलिग्राम पाइया जानाइलाम, आज तुमि आसिबे। शुनिया तिनि आज तोमार जन्य विशेष करिया खाबार आयोजन करिते बलियाछेन। तुमि याहा याहा भालोबास, समस्त आनिते दियाछेन, सम्मुखेर बारान्दाय राँधिबार आयोजन कराइयाछेन, तिनि घरे हइते देखाइया दिबेन। डाक्तारेर निषेध किछुतेइ शुनिलेन ना। आमाके एइ खानिकक्षण हइल डाकिया बलिया दिलेन, 'बउमा, तुमि निजेर हाते समस्त राँधिबे, आमि आज सामने बसाइया बिहारीके खाओयाइब।'"

शुनिया बिहारीर चोख छलछल करिया आसिल। जिज्ञासा करिल, "मा आछेन केमन।"

आशा कहिल, "तुमि एकबार निजे देखिबे एसो—आमार तो बोध हय, व्यामो आरो बाड़ियाछे।"

तखन बिहारी घरे प्रवेश करिल। महेन्द्र बाहिरे दाँड़ाइया आश्चर्य हइया गेल। आशा बाड़िर कर्तृत्व अनायासे ग्रहण करियाछे—से महेन्द्रके केमन सहजे घरे ढुकिते निषेध करिल। ना करिल संकोच, ना करिल

अभिमान। महेन्द्रेर बल आज कतखानि कमिया गेछे। से अपराधी, से बाहिरे चुप करिया दाँड़ाइया रहिल--मार घरेओ ढुकिते पारिल ना।

ताहार परे इहाओ आश्चर्य--बिहारीर सङ्गे आशा केमन अकुण्ठितभावे कथावार्ता कहिल। समस्त परामर्श ताहारइ सङ्गे। सेइ आज संसारेर एकमात्र रक्षक, सकलेर सुहृत्। ताहार गतिविधि सर्वत्र, ताहार उपदेशेइ समस्त चलितेछे। महेन्द्र किछुदिनेर जन्य ये-जायगाटि छाड़िया चलिया गेछे, फिरिया आसिया देखिल, से-जायगा ठिक आर तेमनटि नाइ।

बिहारी घरे ढुकितेइ राजलक्ष्मी ताहार करुण चक्षु ताँहार मुखेर दिके राखिया कहिलेन, "बिहारी, फिरियाछिस?"

बिहारी कहिल, "हाँ, मा, फिरिया आसिलाम।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "तोर काज शेष हइया गेछे?" बलिया ताहार मुखेर दिके एकाग्रदृष्टिते चाहिलेन।

बिहारी प्रफुल्लमुखे "हाँ मा, काज सुसम्पन्न हइयाछे, एखन आमार आर-कोनो भावना नाइ" बलिया एकबार बाहिरेर दिके चाहिल।

राजलक्ष्मी। आज बउमा तोमार जन्य निजेर हाते राँधिबेन, आमि एखान हइते देखाइया दिब। डाक्तार वारण करे--किन्तु आर वारण किसेर जन्य, बाछा। आमि कि एकबार तोदेर खाओया देखिया याइब ना।

बिहारी कहिल, "डाक्तारेर वारण करिबार तो कोनो हेतु देखि ना, मा--तुमि ना देखाइया दिले चलिबे केन। छेलेवेला हइते तोमार हातेर रान्नाइ आमरा भालोबासिते शिखियाछि--महिनदार तो पश्चिमेर डालरुटि खाइया अरुचि धरिया गेछे--आज से तोमार माछेर झोल पाइले बाँचिया याइबे। आज आमरा दुइ भाइ छेलेवेलाकार मतो रेषारेषि करिया खाइब, तोमार बउमा अन्ने कुलाइते पारिले हय।"

यदिच राजलक्ष्मी बुझियाछिलेन, बिहारी महेन्द्रके सङ्गे करिया आनियाछे, तबु ताहार नाम शुनितेइ ताँहार हृदय स्पन्दित हइया निश्वास क्षणकालेर जन्य कठिन हइया उठिल।

से-भावटा काटिया गेले बिहारी कहिल, पश्चिमे गिया महिनदार शरीर अनेकटा भालो हइयाछे। आज पथेर अनियमे से एकटु म्लान आछे, स्नानाहार करिलेइ शुधराइया उठिबे।"

राजलक्ष्मी तबु महेन्द्रेर कथा किछु बलिलेन ना। तखन बिहारी कहिल, "मा, महिनदा बाहिरेइ दाँड़ाइया आछे, तुमि ना डाकिले से तो आसिते पारितेछे ना।"

राजलक्ष्मी किछु ना बलिया दरजार दिके चाहिलेन। चाहितेइ बिहारी डाकिल, "महिनदा, एसो।"

महेन्द्र धीरे धीरे घरे प्रवेश करिल। पाछे हृत्पिण्ड हठात् स्तब्ध हइया याय, एइ भये राजलक्ष्मी महेन्द्रेर मुखेर दिके तखनइ चाहिते पारिलेन ना। चक्षु अर्धनिमीलित करिलेन। महेन्द्र बिछानार दिके दृष्टिपात करिया चमकिया उठिल, ताहाके के येन मारिल। महेन्द्र मातार पायेर काछे माथा राखिया पा धरिया पड़िया रहिल। वक्षेर स्पन्दने राजलक्ष्मीर समस्त शरीर काँपिया काँपिया उठिल।

किछुक्षण परे अन्नपूर्णा धीरे धीरे कहिलेन, "दिदि, महिनके तुमि उठिते बलो, नहिले ओ उठिबे ना।"

राजलक्ष्मी कष्टे वाक्यस्फुरण करिया कहिलेन, "महिन, ओठ्।"

महिनेर नाम उच्चारणमात्र अनेक दिन परे ताँहार चोख दिया झर झर करिया जल पड़िते लागिल। सेइ अश्रु पड़िया ताँहार हृदयेर वेदना लघु हइया आसिल। तखन महेन्द्र उठिया माटिते हाँटु गाड़िया खाटेर उपर बुक दिया ताहार मार पाशे आसिया बसिल। राजलक्ष्मी कष्टे पाश फिरिया दुइ हाते महेन्द्रेर माथा लइया ताहार मस्तक आघ्राण करिलेन, ताहार ललाट चुम्बन करिलेन।

महेन्द्र रुद्धकण्ठे कहिल, "मा, तोमाके अनेक कष्ट दियाछि, आमाके माप करो।"

वक्ष शान्त हइले राजलक्ष्मी कहिलेन, "ओ-कथा बलिसने महिन, आमि तोके माप ना करिया कि बाँचि। बउमा, बउमा कोथाय गेल।"

आशा पाशेर घरे पथ्य तैरि करितेछिल—अन्नपूर्णा ताहाके डाकिया आनिलेन।

तखन राजलक्ष्मी महेन्द्रके भूतल हइते उठिया ताँहार खाटे बसिते इङ्गित करिलेन। महेन्द्र खाटे बसिले राजलक्ष्मी महेन्द्रेर पार्श्वे स्थान-निर्देश करिया आशाके कहिलेन, "बउमा, एइखाने तुमि बसो—आज आमि एकबार तोमादेर दु-जनके एकत्रे बसाइया देखिब, ताहा हइले आमार सकल दुःख घुचिबे। बउमा, आमार काछे आर लज्जा करियो ना—आर महिनेर 'परेओ मनेर मध्ये कोनो अभिमान ना राखिया एकबार एइखाने बसो—आमार चोख जुड़ाओ मा।"

तखन घोमटा-माथाय आशा लज्जाय धीरे धीरे आसिया कम्पितवक्षे महेन्द्रेर पाशे गिया बसिल। राजलक्ष्मी स्वहस्ते आशार डान हात तुलिया

लइया महेन्द्रेर डान हाते राखिया चापिया धरिलेन––कहिलेन, "आमार एइ माके तोर हाते दिया गेलाम, महिन––आमार एइ कथाटि मने राखिस, तुइ एमन लक्ष्मी आर कोथाओ पाबिने। मेजबउ, एसो इहादेर एकबार आशीर्वाद करो––तोमार पुण्ये इहादेर मङ्गल हउक।"

अन्नपूर्णा सम्मुखे आसिया दाँड़ाइतेइ उभये चोखेर जले ताँहार पदधूलि ग्रहण करिल। अन्नपूर्णा उभयेर मस्तक चुम्बन करिया कहिलेन, "भगवान तोमादेर कल्याण करुन।"

राजलक्ष्मी। बिहारी, एसो बाबा, महिनके तुमि एकबार क्षमा करो।

बिहारी तखनइ महेन्द्रेर सम्मुखे आसिया दाँड़ाइतेइ महेन्द्र उठिया दृढ़-बाहु द्वारा बिहारीके वक्षे टानिया लइया कोलाकुलि करिल।

राजलक्ष्मी कहिलेन, "महिन, आमि तोके एइ आशीर्वाद करि––शिशुकाल हइते बिहारी तोर येमन बन्धु छिल, चिरकाल तेमनि बन्धु थाक्––इहार चेये तोर सौभाग्य आर-किछु हइते पारे ना।"

एइ बलिया राजलक्ष्मी अत्यन्त क्लान्त हइया निस्तब्ध हइलेन। बिहारी एकटा उत्तेजक औषध ताँहार मुखेर काछे आनिया धरितेइ राजलक्ष्मी हात सराइया दिया कहिलेन, "आर ओषुध ना, बाबा। एखन आमि भगवानके स्मरण करि––तिनि आमाके आमार समस्त संसारदाहेर शेष ओषुध दिबेन महिन, तोरा एकटुखानि विश्राम कर्गे। बउमा, एइबार रान्ना चड़ाइया दाओ।"

सन्ध्यावेलाय बिहारी एवं महेन्द्र राजलक्ष्मीर बिछानार सम्मुखे नीचे पात पाड़िया खाइते बसिल। आशार उपर राजलक्ष्मी परिवेषणेर भार दियाछिलेन, से परिवेषण करिते लागिल।

महेन्द्रेर वक्षेर मध्ये अश्रु उद्वेलित हइया उठितेछिल, ताहार मुखे अन्न उठितेछिल ना। राजलक्ष्मी ताहाके बार बार बलिते लागिलेन, "महिन, तुइ किछुइ खाइतेछिस ना केन? भालो करिया खा, आमि देखि।"

बिहारी कहिल, "जानइ तो मा, महिनदा चिरकाल ओइरकम, किछुइ खाइते पारे ना। बोठान, ऐ घण्टटा आमाके आर–एकटु दिते हइबे, बड़ो चमत्कार हइयाछे।"

राजलक्ष्मी खुशि हइया ईषत् हासिया कहिलेन, "आमि जानि, बिहारी ओइ घण्टटा भालोबासे। बउमा, ओटुकुते की हइबे, आर-एकटु बेशि करिया दाओ।"

बिहारी कहिल, "तोमार एइ बउटि बड़ो कृपण, हात दिया किछु गले ना।"

राजलक्ष्मी हासिया कहिलेन, "देखो तो बउमा, बिहारी तोमारइ नुन खाइया तोमारइ निन्दा करितेछे।"

आशा बिहारीर पाते एकराश घण्ट दिया गेल।

बिहारी कहिल, "हाय हाय ! घण्ट दियाइ आमार पेट भराइबे देखितेछि, आर भालो भालो जिनिस समस्तइ महिनदार पाते पड़िबे।"

आशा फिसफिस करिया बलिया गेल, "निन्दुकेर मुख किछुतेइ बन्ध हय ना।"

बिहारी मृदुस्वरे कहिल, "मिष्टान्न दिया परीक्षा करिया देखो, बन्ध हय कि ना।"

दुइ बन्धुर आहार हइया गेले, राजलक्ष्मी अत्यन्त तृप्तिबोध करिलेन। कहिलेन, "बउमा, तुमि शीघ्र खाइया एसो।"

राजलक्ष्मीर आदेशे आशा खाइते गेले तिनि महेन्द्रके कहिलेन, "महिन, तुइ शुइते या।"

महेन्द्र कहिल, "एखनइ शुइते याइब केन ?"

महेन्द्र रात्रे मातार सेवा करिबे स्थिर करियाछिल। राजलक्ष्मी कोनोमतेइ ताहा घटिते दिलेन ना। कहिलेन, "तुइ श्रान्त आछिस महिन, तुइ शुइते या।"

आशा आहार करिया पाखा लइया राजलक्ष्मीर शियरेर काछे आसिया बसिबार उपक्रम करिले, तिनि चुपि चुपि ताहाके कहिलेन, "बउमा, महेन्द्रेर बिछाना ठिक हइयाछे कि ना देखो गे, से एकला आछे।"

आशा लज्जाय मरिया गिया कोनोमते घर हइते बाहिर हइया गेल। घरे केवल बिहारी एवं अन्नपूर्णा रहिलेन।

तखन राजलक्ष्मी कहिलेन, "बिहारी, तोके एकटा कथा जिज्ञासा करि। विनोदिनीर की हइल बलिते पारिस ? से एखन कोथाय ?"

बिहारी कहिल, "विनोदिनी कलिकाताय आछे।"

राजलक्ष्मी नीरव दृष्टिते बिहारीके प्रश्न करिलेन। बिहारी ताहा बुझिल। कहिल, "विनोदिनीर जन्य तुमि आर किछुमात्र भय करियो ना, मा।"

राजलक्ष्मी कहिलेन, "से आमाके अनेक दुःख दियाछे, बिहारी, तबु ताहाके आमि मने मने भालोबासि।"

बिहारी कहिल, "से-ओ तोमाके मने मने भालोबासे, मा।"

राजलक्ष्मी। आमारओ ताइ बोध हय बिहारी। दोषगुण सकलेरइ

आछे, किन्तु से आमाके भालोबासित। तेमन सेवा केह छल करिया करिते पारित ना।

बिहारी कहिल, "तोमार सेवा करिबार जन्य से व्याकुल हइया आछे।"

राजलक्ष्मी दीर्घनिश्वास फेलिया कहिलेन, "महिनरा तो एखन शुइते गेछे, रात्रे ताहाके एकबार आनिले कि क्षति आछे?"

बिहारी कहिल, "मा, से तो एइ बाड़िरइ बाहिर-घरे लुकाइया बसिया आछे। ताहाके आज समस्त दिन जलविन्दु पर्यंत मुखे देओयाइते पारि नाइ। से पण करियाछे, यतक्षण तुमि ताहाके डाकिया ना माप करिबे ततक्षण से जलस्पर्श करिबे ना।"

राजलक्ष्मी व्यस्त हइया कहिलेन, "समस्त दिन उपवास करिया आछे! आहा, ताहाके डाक्, डाक्!"

विनोदिनी धीरे धीरे राजलक्ष्मीर घरे प्रवेश करितेइ तिनि बलिया उठिलेन, "छि छि बउ, तुमि करियाछ की? आज समस्त दिन उपोस करिया आछ? याओ याओ आगे खाइया लओ, ताहार परे कथा हइबे।"

विनोदिनी राजलक्ष्मीर पायेर धुला लइया प्रणाम करिया कहिल, "आगे तुमि पापिष्ठा के माप करो, पिसिमा, तबे आमि खाइब।"

राजलक्ष्मी। माप करियाछि बाछा, माप करियाछि, आमार एखन काहारओ उपर आर राग नाइ।—विनोदिनीर डान हात धरिया तिनि कहिलेन, "बउ, तोमा हइते काहारओ मन्द ना हउक, तुमिओ भालो थाको।"

विनोदिनी। तोमार आशीर्वाद मिथ्या हइबे ना पिसिमा। आमि तोमार पा छुँइया बलितेछि आमा हइते ए-संसारेर मन्द हइबे ना।

अन्नपूर्णाके विनोदिनी भूमिष्ठ हइया प्रणाम करिया खाइते गेल। खाइया आसिले पर राजलक्ष्मी ताहार दिके चाहिया कहिलेन, "बउ, एखन तबे तुमि चलिले?"

विनोदिनी। पिसिमा, आमि तोमार सेवा करिब। ईश्वर साक्षी, आमा हइते तुमि कोनो अनिष्ट आशङ्का करियो ना।

राजलक्ष्मी बिहारीर मुखेर दिके चाहिलेन। बिहारी एकटु चिन्ता करिया कहिल, "बोठान थाकुन मा, ताहाते क्षति हइबे ना।"

रात्रे बिहारी, विनोदिनी एवं अन्नपूर्णा तिन जने मिलिया राजलक्ष्मीर शुश्रूषा करिलेन।

एदिके आशा समस्तरात्रि राजलक्ष्मीर घरे आसे नाइ बलिया लज्जाय अत्यन्त प्रत्युषे उठियाछे। महेन्द्रके बिछानाय सुप्त अवस्थाय राखिया

ताड़ाताड़ि मुख धुइया कापड़ छाड़िया प्रस्तुत हइया आसिल। तखनो अन्धकार एकेबारे याय नाइ। राजलक्ष्मीर द्वारेर काछे आसिया याहा देखिल, ताहाते आशा अवाक हइया गेल। भाबिल, "ए कि स्वप्न ?"

विनोदिनी एकटि स्पिरिट ल्याम्प ज्वालिया जल गरम करितेछे। बिहारी रात्रे घुमाइते पाय नाइ ताहार जन्य चा तैरि हइबे।

आशाके देखिया विनोदिनी उठिया दाँड़ाइल। कहिल, "आज आमि आमार समस्त अपराध लइया तोमार आश्रय ग्रहण करिलाम—आर केह आमाके दूर करिते पारिबे ना—किन्तु तुमि यदि बल 'याओ' तो आमाके एखनइ याइते हइबे।"

आशा कोनो उत्तर करिते पारिल ना—ताहार मन की बलितेछे, ताओ से येन भालो करिया बुझिते पारिल ना, अभिभूत हइया रहिल।

विनोदिनी कहिल, "आमाके कोनोदिन तुमि माप करिते पारिबे ना—से-चेष्टाओ करियो ना। किन्तु आमाके आर भय करियो ना। ये-कय-दिन पिसिमार दरकार हइबे, से कटा दिन आमाके एकटुखानि काज करिते दाओ, तार परे आमि चलिया याइब।"

काल राजलक्ष्मी यखन आशार हात लइया महेन्द्रेर हाते दिलेन, तखन आशा ताहार मन हइते समस्त अभिमान मुछिया फेलिया सम्पूर्णभावे महेन्द्रेर काछे आत्मसमर्पण करियाछिल। आज विनोदिनीके सम्मुखे देखिया ताहार खण्डित प्रेमेर दाह शान्ति मानिल ना। इहाके महेन्द्र एकदिन भालोबासिया-छिल, इहाके एखनो हयतो मने मने भालोबासे—ए-कथा ताहार बुकेर भितरे ढेउयेर मतो फुलिया फुलिया उठिते लागिल। किछुक्षण परेइ महेन्द्र जागिया उठिबे, विनोदिनीके देखिबे—की जानि की चक्षे देखिबे। काल रात्रे आशा ताहार समस्त संसारके निष्कण्टक देखियाछिल—आज प्रत्युषे उठियाइ देखिल, काँटागाछ ताहार घरेर प्राङ्गणेइ। संसारे सुखेर स्थानइ सब चेये संकीर्ण—कोथाओ ताहाके सम्पूर्ण निर्विघ्ने राखिबार अवकाश नाइ।

हृदयेर भार लइया आशा राजलक्ष्मीर घरे प्रवेश करिल, एवं अत्यन्त लज्जार सङ्गे कहिल, "मासिमा, तुमि समस्त रात बसिया आछ—याओ, शुते याओ!' अन्नपूर्णा आशार मुखेर दिके एकबार भालो करिया चाहिया देखिलेन। ताहार परे शुइते ना गिया आशाके निजेर घरे लइया गेलेन। कहिलेन, "चुनि, यदि सुखी हइते चास, तबे सब कथा मने राखिसने। अन्यके दोषी करिया येटुकु सुख, दोष मने राखिबार दुःख ताहार चेये ढेर बेशि।"

आशा कहिल, "मासिमा, आमि मने किछु पुषिया राखिते चाइ ना, आमि भुलितेइ चाइ, किन्तु भूलिते देय ना ये।"

अन्नपूर्णा। बाछा, तुइ ठिक बलियाछिस--उपदेश देओया सहज, उपाय बलिया देओयाइ शक्त। तबु आमि तोके एकटा उपाय बलिया दितेछि। येन भुलियाछिस एइ भावटि अन्तत बाहिरे प्राणपणे रक्षा करिते हइबे--आगे बाहिरे भुलिते आरम्भ करिस, ताहा हइले भितरेओ भुलिबि। ए-कथा मने राखिस चुनि, तुइ यदि ना भुलिस, तबे अन्यकेओ स्मरण कराइया राखिबी! तुइ निजेर इच्छाय ना पारिस, आमि तोके आज्ञा करितेछि, तुइ विनोदिनीर सङ्गे एमन व्यवहार कर, येन से कखनो तोर कोनो अनिष्ट करे नाइ एवं ताहार द्वारा तोर अनिष्टेर कोनो आशङ्का नाइ।

आशा नम्रमुखे कहिल, "की करिते हइबे, बलो।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "विनोदिनी एखन बिहारीर जन्य चा तैरि करितेछे। तुइ दुध-चिनि-पेयाला समस्त लइया या--दुइ जने मिलिया काज कर।"

आशा आदेशपालनेर जन्य उठिल। अन्नपूर्णा कहिलेन, "एटा सहज--किन्तु आमार आर-एकटि कथा आछे, सेटा आरो शक्त--सेइटे तोके पालन करितेइ हइबे! माझे माझे महेन्द्रेर सङ्गे विनोदिनीर देखा हइबेइ, तखन तोर मने की हइबे, ताहा आमि जानि--से-समय तुइ गोपन कटाक्षेओ महेन्द्रेर भाव किंवा विनोदिनीर भाव देखिबार चेष्टामात्रओ करिसने। बुक फाटिया गेलेओ तोके अविचलित थाकिते हइबे। महेन्द्र इहा जानिबे ये, तुइ सन्देह करिस ना, शोक करिस ना, तोर मने भय नाइ, चिन्ता नाइ--जोड़ भाङ्गिबार पूर्वे येमन छिल, जोड़ लागिया आबार ठिक तेमनइ हइयाछे--भाङ्गनेर दाग-टुकुओ मिलाइया गेछे। महेन्द्र कि आर-केह तोर मुख देखिया निजेके अपराधी बलिया मने करिबे ना। चुनि, इहा आमार अनुरोध वा उपदेश नहे, इहा तोर मासिमार आदेश। आमि यखन काशी चलिया याइब, आमार एइ कथाटि एकदिनेर जन्यओ भुलिसने!"

आशा चायेर पेयाला प्रभृति लइया विनोदिनीर काछे उपस्थित हइल। कहिल, "जल कि गरम हइयाछे? आमि चायेर दुध आनियाछि।"

विनोदिनी आश्चर्य हइया आशार मुखेर दिके चाहिल। कहिल, "बिहारी ठाकुरपो बारान्दाय बसिया आछेन, चा तुमि ताहार काछे पाठाइया दाओ, आमि ततक्षण पिसिमार जन्य मुख धुइबार बन्दोबस्त करिया राखि। तिनि बोध हय एखनइ उठिबेन।"

विनोदिनी चा लइया बिहारीर काछे गेल ना। बिहारी भालोबासा

स्वीकार करिया ताहाके ये-अधिकार दियाछे, सेइ अधिकार स्वेच्छामते खाटाइते ताहार संकोच बोध हइते लागिल। अधिकारलाभेर ये मर्यादा आछे, सेइ मर्यादा रक्षा करिते हइले अधिकार प्रयोगके संयत करिते हय। यतटा पाओया जाय ततटा लइया टानाटानि करा काङालकेइ शोभा पाय--भोगके खर्व करिलेइ सम्पदेर यथार्थ गौरव। एखन, बिहारी ताहाके निजे ना डाकिले कोनो-एकटा उपलक्ष्य करिया विनोदिनी ताहार काछे आर याइते पारे ना।

बलिते-बलितेइ महेन्द्र आसिया उपस्थित हइल। आशार बुकेर भितरटा यदिओ धड़ास करिया उठिल, तबु से आपनाके संवरण करिया लइया स्वाभाविक स्वरे महेन्द्रके कहिल, "तुमि एत भोरे उठिले ये? पाछे आलो लागिया तोमार घुम भाङे ताइ आमि जानाला-दरजा सब बन्ध करिया आसियाछि।"

विनोदिनीर सम्मुखेइ आशाके एइरूप सहज भावे कथा कहिते शुनिया महेन्द्रेर बुकेर एकटा पाथर येन नामिया गेल। से आनन्दितचित्ते कहिल, "मा केमनि आछेन, ताइ देखिते आसियाछि--मा कि एखनो घुमाइतेछेन।"

आशा कहिल, "हाँ, तिनि घुमाइतेछेन, एखन तुमि याइयो ना। बिहारी-ठाकुरपो बलियाछेन, तिनि आज अनेकटा भालो आछेन। अनेक दिन परे काल तिनि समस्त रात भालो करिया घुमाइयाछेन।"

महेन्द्र निश्चिन्त हइया जिज्ञासा करिल, "काकीमा कोथाय।"

आशा ताँहार घर देखाइया दिल।

आशार एइ दृढ़ता ओ संयम देखिया विनोदिनीओ आश्चर्य हइया गेल।

महेन्द्र डाकिल, "काकीमा।"

अन्नपूर्णा यदिओ भोरे स्नान करिया लइया एखन पूजाय बसिबेन स्थिर करियाछिलेन, तबुओ तिनि कहिलेन, "आय महिन, आय।"

महेन्द्र ताँहाके प्रणाम करिया कहिल, "काकीमा, आमि पापिष्ठ, तोमादेर काछे आसिते आमार लज्जा करे!"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "छि छि, ओ-कथा बलिसने महिन--छेले धुला लइयाओ मार कोले आसिया बसे।"

महेन्द्र। किन्तु आमार ए-धुला किछुतेइ मुछिबे ना काकीमा।

अन्नपूर्णा। दुइ-एकबार झाड़िलेइ झरिया याइबे। महिन, भालोइ हइयाछे। निजेके भालो बलिया तोर अहंकार छिल, निजेर 'परे विश्वास तोर बड़ो बेशि छिल, पापेर झड़े तोर सेइ गर्वटुकुइ भाङिया दियाछे, आर कोनो अनिष्ट करे नाइ।

महेन्द्र। काकीमा एबार तोमाके आर छाड़िया दिब ना, तुमि गियाइ आमार एइ दुर्गति हइयाछे।

अन्नपूर्णा। आमि थाकिया ये-दुर्गति ठेकाइया राखिताम, से-दुर्गति एकबार घटिया याओयाइ भालो। एखन आर तोर आमाके कोनो दरकार हइबे ना।

दरजार काछे आबार डाक पड़िल, "काकीमा आह्लिके बसियाछ नाकि।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "ना, तुइ आय।"

बिहारी घरे प्रवेश करिल। एत सकाले महेन्द्रके जाग्रत देखिया कहिल, "महिनदा, आज तोमार जीवने एइ बोध हय प्रथम सूर्योदय देखिले!"

महेन्द्र कहिल, "हाँ बिहारी, आज आमार जीवने प्रथम सूर्योदय। बिहारीर बोध हय काकीमार सङ्गे कोनो परामर्श आछे—आमि याइ।"

बिहारी हासिया कहिल, "तोमाकेओ ना हय क्याबिनेटेर मिनिस्टार करिया लओया गेल। तोमार काछे आमि तो कखनो किछु गोपन करि नाइ—यदि आपत्ति ना कर, आजओ गोपन करिब ना।"

महेन्द्र। आमि आपत्ति करिब! तबे आर दावि करिते पारि ना बटे। तुमि यदि आमार काछे किछु गोपन ना कर, तबे आमिओ आमार प्रति आबार श्रद्धा करिते पारिब।

आजकाल महेन्द्रेर सम्मुखे सकल कथा असंकोचे बला कठिन। बिहारीर मुख बाधिया आसिल, तबु से जोर करिया बलिल, "विनोदिनीके विवाह करिब, एमन एकटा कथा उठियाछिल, काकीमार सङ्गे सेइ सम्बन्धे आमि कथावार्ता शेष करिते आसियाछि।"

महेन्द्र एकान्त संकुचित हइया उठिल। अन्नपूर्णा चकित हइया बलिया हठिलेन, "ए आबार की कथा, बिहारी।"

महेन्द्र प्रबल शक्ति प्रयोग करिया संकोच दूर करिल। कहिल, "बिहारी, ए विवाहेर कोनो प्रयोजन नाइ।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "ए विवाहेर प्रस्तावे कि विनोदिनीर कोनो योग आछे।"

बिहारी कहिल, "किछुमात्र ना।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "से कि इहाते राजी हइबे।"

महेन्द्र बलिया उठिल, "विनोदिनी केन राजी हइबे ना, काकीमा? आमि जानि, से एकमने बिहारीके भक्ति करे—एमन आश्रय से कि इच्छा करिया छाड़िया दिते पारे।"

बिहारी कहिल, "महिनदा, आमि विनोदिनीके विवाहेर प्रस्ताव करियाछि—से लज्जार सङ्गे ताहा प्रत्याख्यान करियाछे।"

शुनिया महेन्द्र चुप करिया रहिल।

५४

भालोय-मन्दय दुइ-तिनदिन राजलक्ष्मीर काटिया गेल। एकदिन प्राते ताँहार मुख बेश प्रसन्न ओ वेदना समस्त ह्रास हइल। सेइ दिन तिनि महेन्द्रके डाकिया कहिलेन, "आर आमार वेशिक्षण समय नाइ—किन्तु आमि बड़ो सुखे मरिलाम महिन, आमार कोनो दुःख नाइ। तुइ यखन छोटो छिलि, तखन तोके लइया आमार ये आनन्द छिल, आज सेइ आनन्दे आमार बुक भरिया उठियाछे—तुइ आमार कोलेर छेले, आमार बुकेर धन—तोर समस्त बालाइ लइया आमि चलिया याइतेछि, एइ आमार बड़ो सुख।" बलिया राजलक्ष्मी महेन्द्रेर मुखे गाये हात बुलाइते लागिलेन। महेन्द्रेर रोदन बाधा ना मानिया उच्छ्वसित हइते लागिल।

राजलक्ष्मी कहिलेन, "काँदिसने, महिन। लक्ष्मी घरे रहिल। बउमाके आमार चाबिटा दिस। समस्तइ आमि गुछाइया राखियाछि, तोदेर घरकन्नार जिनिसेर कोनो अभाव हइबे ना। आर एकटि कथा आमि बलि महिन, आमार मृत्युर पूर्वे काहाकेओ जानासने—आमार बाक्से दु-हाजार टाकार नोट आछे, ताहा आमि विनोदिनीके दिलाम। से विधवा, एकाकिनी, इहार सुद हइते ताहार बेश चलिया याइबे—किन्तु महिन, ताहाके तोदेर संसारेर भितरे राखिसने, तोर प्रति आमार एइ अनुरोध रहिल!"

बिहारीके डाकिया राजलक्ष्मी कहिलेन, "बाबा बिहारी, काल महिन बलितेछिल, तुइ गरिब भद्रलोकदेर चिकित्सार जन्य एकटि बागान करियाछिस—भगवान तोके दीर्घजीवी करिया गरिबेर हित करुन। आमार विवाहेर समय आमार श्वशुर आमाके एकखानि ग्राम यौतुक करियाछिलेन, सेइ ग्रामखानि आमि तोके दिलाम, तोर गरिबदेर काजे लागास, ताहाते आमार श्वशुरेर पुण्य हइबे।

५५

राजलक्ष्मीर मृत्यु हइले पर श्राद्धशेषे महेन्द्र कहिल, "भाइ बिहारी, आमि डाक्तारि जानि—तुमि ये-काज आरम्भ करियाछ, आमाकेओ ताहार

मध्ये नाओ। चुनि येरूप गृहिणी हइयाछे सेओ तोमार अनेक सहाय्य करिते पारिबे। आमरा सकलेइ सेइखानेइ थाकिब।"

बिहारी कहिल, "महिनदा, भालो करिया भाबिया देखो---ए-काज कि बराबर तोमार भालो लागिबे? वैराग्येर क्षणिक उच्छ्वासेर मुखे एकटा स्थायी भार ग्रहण करिया बसियो ना।"

महेन्द्र कहिल, "बिहारी, तुमिओ भाबिया देखो, ये-जीवन आमि गठन करियाछि, ताहाके लइया आलस्यभरे आर उपभोग करिबार जो नाइ---कर्मेर द्वारा ताहाके यदि टानिया लइया ना चलि, तबे कोन दिन से आमाके टानिया अवसादेर मध्ये फेलिबे। तोमार कर्मेर मध्ये आमाके स्थान दितेइ हइबे।"

सेइ कथाइ स्थिर हइया गेल।

अन्नपूर्णा ओ बिहारी बसिया शान्त विषादेर सहित सेकालेर कथा आलोचना करितेछिलेन। ताँहादेर परस्परेर विदायेर समय काछे आसियाछे। विनोदिनी द्वारेर काछे आसिया कहिल, "काकीमा, आमि कि एखाने एकटु बसिते पारि?"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "एसो एसो बाछा, बसो।"

विनोदिनी आसिया बसिले ताहार सहित दुइ-चारिटा कथा कहिया बिछाना तुलिबार उपलक्ष्य करिया अन्नपूर्णा बारान्दाय गेलेन।

विनोदिनी बिहारीके कहिल, "एखन आमार प्रति तोमार याहा आदेश, ताहा बलो।"

बिहारी कहिल, "बोठान, तुमिइ बलो, तुमि की करिते चाओ।"

विनोदिनी कहिल, "शुनिलाम, गरिबदेर चिकित्सार जन्य गङ्गार धारे तुमि एकखानि बागान लइयाछ---आमि सेखाने तोमार कोनो एकटा काज करिब। किछु ना हय तो आमि राँधिया दिते पारि।"

बिहारी कहिल, "बोठान, आमि अनेक भाबियाछि। नानान हाङ्गामे आमादेर जीवनेर जाले अनेक जट पड़िया गेछे। एखन निभृते बसिया बसिया ताहारइ एकटि एकटि ग्रन्थि मोचन करिबार दिन आसियाछे। पूर्वे समस्त परिष्कार करिया लइते हइबे। एखन हृदय याहा चाय, ताहाके आर प्रश्रय दिते साहस हय ना। ए पर्यन्त याहा किछु घटियाछे, याहा किछु सह्य करियाछि, ताहार समस्त आवर्तन, समस्त आन्दोलन शान्त करिते ना पारिले, जीवनेर समाप्तिर जन्य प्रस्तुत हइते पारिब ना। यदि समस्त अतीत काल अनुकूल हइत, तबे संसारे एकमात्र तोमार द्वाराइ आमार जीवन सम्पूर्ण हइते

पारित। एखन तोमा हइते आमाके वञ्चित हइतेइ हइबे। एखन आर सुखेर जन्य चेष्टा वृथा, एखन केवल आस्ते आस्ते समस्त भाङ्चुर सारिया लइते हइबे।"

एइ समय अन्नपूर्णा घरे ढुकितेइ विनोदिनी कहिल, "मा, आमाके तोमार पाये स्थान दिते हइबे। पापिष्ठा बलिया आमाके तुमि ठेलियो ना।"

अन्नपूर्णा कहिलेन, "मा चलो, आमार सङ्गेइ चलो।"

अन्नपूर्णा ओ विनोदिनी काशीते याइबार दिन कोनो सुयोगे बिहारी बिरले विनोदिनीर सहित देखा करिल। कहिल, "बोठान, तोमार एकटा-किछु चिह्न आमि काछे राखिते चाइ।"

विनोदिनी कहिल, "आमार एमन की आछे, याहा चिह्नेर मतो काछे राखिते पार?"

बिहारी लज्जा ओ संकोचेर सहित कहिल, "इंरेजेर एकटा प्रथा आछे, प्रियजनेर एक गुच्छ चुल स्मरणेर जन्य राखिया देय—यदि तुमि——।"

विनोदिनी। छि छि, की घृणा! आमार चुल लइया की करिबे! सेइ अशुचि मृतवस्तु आमार एमन किछुइ नहे, याहा आमि तोमाके दिते पारि। आमि हतभागिनी तोमार काजे थाकिते पारिब ना—आमि एमन एकटा-किछु दिते चाइ, याहा आमार हइया तोमार काज करिबे—बलो, तुमि लइबे?

बिहारी कहिल, "लइब।"

तखन विनोदिनी ताहार अञ्चलेर प्रान्त खुलिया हाजार टाकार दुइ-खानि नोट बिहारीर हाते दिल।

बिहारी सुगभीर आवेगेर सहित स्थिरदृष्टिते विनोदिनीर मुखेर दिके चाहिया रहिल। खानिक बादे बिहारी कहिल, "आमि कि तोमाके किछु दिते पारिब ना।"

विनोदिनी कहिल, "तोमार चिह्न आमार काछे आछे, ताहा आमार अङ्गेर भूषण—ताहा केह काड़िते पारिबे ना। आमार आर किछु दरकार नाइ।" बलिया से निजेर हातेर सेइ काटा दाग देखाइल।

बिहारी आश्चर्य हइया रहिल। विनोदिनी कहिल, "तुमि जान ना ए तोमारइ आघात—एवं ए आघात तोमारइ उपयुक्त। इहा एखन तुमिओ फिराइते पार ना।"

मासिमार उपदेश सत्वेओ आशा विनोदिनी सम्बन्धे मनके निष्कण्टक करिते पारे नाइ। राजलक्ष्मीर सेवाय दुइ जने एकत्रे काज करियाछे, किन्तु

आशा यखनइ विनोदिनीके देखियाछे तखनइ ताँहार बुकेर मध्ये व्यथा लागियाछे--मुख दिया सहजे कथा बाहिर हय नाइ, एवं हासिबार चेष्टा ताहा के पीड़न करियाछे। विनोदिनी निकट हइते सामान्य कोनो सेवा ग्रहण करितेओ ताहार समस्त चित्त विमुख हइयाछे। विनोदिनीर साजा पान अनेक समये शिष्टतार खातिरे ताहाके ग्रहण करिते हइयाछे, किन्तु आड़ाले ताहा फेलिया दियाछे। किन्तु आज यखन विदायकाल उपस्थित हइल-- मासिमा संसार हइते द्वितीय बार चलिया याइतेछेन बलिया आशार हृदय यखन अश्रुजले आर्द्र हइया गेल, तखन सेइ सङ्गे विनोदिनीर प्रति ताहार करुणा उदय हइल। ये एकेबारे चलिया याइतेछे ताहाके माप करिते पारे ना, एमन कठिन मन अल्पइ आछे। आशा जानित, विनोदिनी महेन्द्रके भालोबासे ; महेन्द्रके भालो ना बासिबेइ वा केन। महेन्द्रके भालोबासा ये कि रूप अनिवार्य, आशा ताहा निजेर हृदयेर भितर हइतेइ जाने। निजेर भालोबासार सेइ वेदनाय विनोदिनीर प्रति आज ताहार बड़ो दया हइल। विनोदिनी महेन्द्रके चिरदिनेर जन्य छाड़िया याइतेछे, ताहार ये दुर्विषह दुःख, ताहा आशा अति बड़ो शत्रुर जन्यओ कामना करिते पारे ना--मने करिया ताहार चक्षे जल आसिल ; एककाले से विनोदिनीके भालोबासियाछिल-- सेइ भालोबासा ताहाके स्पष्ट करिल। से धीरे धीरे विनोदिनीर काछे आसिया अत्यन्त करुणार सङ्गे, स्नेहेर सङ्गे, विषादेर सङ्गे मृदुस्वरे कहिल, "दिदि, तुमि चलिले ?"

विनोदिनी आशार चिबुक धरिया कहिल, "हाँ बोन, आमार याइबार समय आसियाछे। एक समय तुमि आमाके भालोबासियाछिले एखन सुखेर दिने सेइ भालोबासार एकटुखानि आमार जन्ये राखियो, भाइ--आर सब भुलिया येयो !"

महेन्द्र आसिया प्रणाम करिया कहिल, "बोठान, माप करियो।" ताहार चोखेर प्रान्ते दुइ फोंटा अश्रु गड़ाइया पड़िल।

विनोदिनी कहिल, "तुमिओ माप करियो ठाकुरपो, भगवान तोमादेर चिरसुखी करुन।"

बँगला शब्दों के उच्चारण की कुछ विशेषताएँ

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ का यह उपन्यास 'चोखेर बालि' नागराक्षरों में प्रकाशित हो रहा है। मूल बँगला ग्रंथ पूरा का पूरा हिन्दी में लिखा गया है। लेकिन बँगला उच्चारण की अपनी विशेषताएँ हैं। हिन्दी उच्चारण से उसमें अन्तर है। बँगला शब्दों के ठीक-ठीक उच्चारण के लिए उन विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है। पाठकों के सुभीते के लिए बँगला उच्चारण की कुछ विशेषताओं पर नीचे प्रकाश डालने की चेष्टा की जा रही है।

(१) बँगला में 'अ' का उच्चारण हिन्दी के 'अ' जैसा नहीं होता। वह 'अ' और 'ओ' के बीच में होता है, जैसे अंग्रेजी के 'not' में 'o'। बँगला में लिखते हैं 'खाब', लेकिन पढ़ते हैं 'खाबो' जैसा।

(२) ह्रस्व और दीर्घ इ, उ के उच्चारण में बँगला में काफ़ी स्वतन्त्रता है। यह लचीलापन हिन्दी में नहीं है। दीर्घ ई और ऊ अगर पद के आदि में हों तो उनका उच्चारण प्रायः ह्रस्व जैसा होता है। जैसे 'ईश्वर' का उच्चारण 'इश्वर' और 'पूजा' का 'पुजा' होगा।

(३) एकार का उच्चारण 'ए' और 'ऐ' के बीच जैसा होता है। जैसे बँगला 'एक' में 'ए' का उच्चारण हिन्दी के 'ऐसा' में 'ऐ' के समान होता है।

(४) ऐकार का उच्चारण 'ओइ' जैसा होता है। जैसे, 'ऐकतान'—ओइकतान।

(५) अनुस्वार के उच्चारण में 'ग' का अंश निहित रहता है। जैसे, हिमांशु—हिमांग्शु, बांला-बांग्ला।

(६) हिन्दी के समान, पद का अन्त्य वर्ण प्रायः हलन्त उच्चरित होता है, जैसे, आमार—आमार्, आँधार—आँधार्। लेकिन कविता में छन्दानुरोध से 'अ' के उच्चारण का भी अनुसरण होता है। जैसे 'बकुल-बागान' में 'बकुल' का उच्चारण बकुल (ो) जैसा भी हो सकता है।

(७) बँगला में 'क्ष' का उच्चारण पद के आदि में बराबर 'ख' होगा। जैसे, क्षिति—खिति; क्षमा—खमा। लेकिन अन्यत्र 'क्ष' का उच्चारण 'क्ख' होगा। जैसे लक्षण—लक्खण।

(८) बँगला में 'ण' और 'न' दोनों का उच्चारण सदा 'न' ही होता है।

(९) बँगला में 'ब' और 'व' का अन्तर नहीं है। ये दोनों ही 'ब' पढ़े जाते हैं। तत्सम शब्दों के लिखने में भले ही 'व' को 'व' ही लिखा

जाय लेकिन उसका उच्चारण 'ब' होता है। जैसे लिखा तो 'विवश' जाता है लेकिन पढ़ा जाएगा 'बिबश'।

(१०) अगर किसी दूसरी भाषा का कोई शब्द अपनाना पड़े और उसमें 'व' का उच्चारण रहे तो उसके लिए बँगला में 'ओय' लिखते हैं। जैसे, 'तिवारी' का 'तेओयारी'; 'हवा' का 'हाओया'। यहाँ 'ओया' का उच्चारण 'वा' ही होगा।

(११) 'य' के उच्चारण में एक विशेषता है। जब 'य' पद के आदि में हो तो उसका उच्चारण 'ज' होता है। जैसे, यात्रा--जात्रा; योग--जोग। लेकिन 'य' अगर पद के मध्य या अन्त में हो तो उसे 'य' ही पढ़ेंगे। जैसे, नियम--नियम; नयन--नयन; समय--समय।

(१२) बँगला में तीनों सकारों का उच्चारण तालव्य 'श' की तरह होता है। लेकिन दन्त्य 'स' के साथ अगर किसी व्यञ्जन वर्ण का योग हो तो उसका उच्चारण 'स' ही होता है। जैसे, स्तब्ध--स्तब्ध; स्निग्ध--स्निग्ध।

(१३) अगर मकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह वर्ण सानुनासिक द्वित्व हो कर मकार का लोप कर देता है। जैसे, छद्म--छद्दँ; पद्म--पद्दँ। लेकिन पद के आदि में ऐसा होने पर द्वित्व नहीं होता। जैसे, स्मरण--सँरण; स्मृति--सृँति।

(१४) अगर यकार अथवा वकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह द्वित्व हो कर यकार-वकार का लोप कर देगा। जैसे, भृत्य--भृत्त; नित्य--नित्त; वाद्य--बाद्द। लेकिन पद के आदि में केवल वकार का लोप हो जाता है। जैसे, द्वार--दार; ज्वाला--जाला।

(१५) अगर यकार में रेफ हो तो पद के मध्य अथवा अन्त में रहने पर भी जकार हो जाता है। जैसे, सूर्य्य--सूर्ज्ज; धैर्य्य--धैर्ज्ज।

(१६) प्रस्तुत ग्रंथ में 'व' के बदले 'ओय' ही लिखा हुआ है, अतएव जहाँ पर 'ओय' हो वहाँ 'व' ही पढ़ना चाहिए। जैसे, पाओया--पावा; खाओया--खावा; याओया--जावा।

बँगला व्याकरण संबंधी कुछ ज्ञातव्य बातें

ऊपर बँगला शब्दों की उच्चारण-सम्बन्धी मुख्य विशेषताओं पर हम प्रकाश डाल चुके। अब बँगला व्याकरण की चर्चा करने जा रहे हैं। व्याकरण की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त कर लेना पाठकों के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

(क) क्रियारूप

बँगला में क्रिया के विभिन्न रूप हैं। क्रिया के इन विविध रूपों में जो अपरिवर्तित अंश है वही धातु है। धातु निर्णय का सहज उपाय यह है कि उत्तम पुरुष के वर्तमान काल के धातुरूप के अन्तिम 'इ' को हटा देने से जो रूप रह जाता है वही धातु है। जैसे, आमि याइ (मैं जाता हूँ)। इसमें 'याइ' का 'इ' हटाने पर 'या' रह जाता है। 'या' धातु है। इसी प्रकार 'आमि कराइ' में 'करा' धातु है।

बँगला भाषा के दो रूप हैं : (१) साधु, और (२) चलित। 'लिखा', 'शुना' साधु रूप है और 'लेखा', 'शोना' चलित रूप। क्रियापद 'कहियाछे' साधु रूप है और 'कयेछे' चलित रूप है। सर्वनामों के विषय में भी यही बात है। अर्थ की दृष्टि से इन दोनों में कोई भेद नहीं है। बोलने में चलित रूप का प्रयोग होता है और लिखने में साधु रूप का। वैसे आजकल के लेखक लिखने में भी चलित रूप का ही प्रयोग करते हैं।

सकर्मक और अकर्मक के अलावा बँगला में क्रिया के दो भेद और हैं : समापिका और असमापिका।

धातु में जिस विभक्ति के योग से समापिका क्रियापद बनता है उसे 'तिङ' कहते हैं और उस क्रियापद को 'तिङन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से तिङन्त पद करे, करेन, करिस, करि आदि। इसी प्रकार जिस प्रत्यय के योग से असमापिका क्रियापद अथवा विशेष्य-विशेषण बने, उसे 'कृत' कहते हैं और उस पद को 'कृदन्त' पद कहते हैं। जैसे कर् धातु से कृदन्त पद (असमापिका क्रिया) करिते (करते), करिया (करके), करते, क'रे आदि।

प्रेरणार्थक धातु (णिजन्त धातु) बनाने के लिए बँगला के धातुरूप में 'आ' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे कर् से णिजन्त धातु 'करा' होगा।

बँगला में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार क्रिया नहीं बदलती। जैसे, मेयेरा याच्छे (लड़कियाँ जा रही हैं); छेलेरा याच्छे (लड़के जा रहे हैं)।

क्रिया के तीन काल हैं : भूत, भविष्यत् और वर्तमान। लेकिन बँगला की क्रिया का काल-विभाग हिन्दी की तरह नहीं होता।

बँगला के क्रियापद में वचन-भेद नहीं होता। जैसे, से याइतेछे (वह जा रहा है), ताहारा याइतेछे (वे लोग जा रहे हैं)।

पुरुष तीन प्रकार के हैं : प्रथम, मध्यम और उत्तम। प्रथम पुरुष के गौरवार्थक और सामान्य दो रूप हैं। जैसे, तिनि करेन (वे करते हैं),

से करे (वह करता है)। मध्यम पुरुष के गौरवार्थक, सामान्य और तुच्छ तीन रूप हैं। जैसे, आपनि करेन (आप करते हैं), तुमि कर (तुम करते हो) तथा तुइ करिस (तू करता है)। उत्तम पुरुष का केवल एक रूप है। जैसे आमि करि (मैं करता हूँ)।

बँगला के काल-भेद तथा उनके नामों की जानकारी भी उपयोगी होगी। बँगला व्याकरणों में दो प्रकार से उनके नाम दिए हुए हैं। नित्यप्रवृत्त, विशुद्ध, अद्यतन, अनद्यतन, परोक्ष, भूत-सामीप्य, वर्तमान-समीप्य आदि नाम संस्कृत व्याकरण के अनुकरण पर रखे गए हैं। सहज तरीक़े से समझने के लिए उनका नामकरण निम्नलिखित ढंग से किया जाता है :

नाम		उदाहरण (साधु)
नित्यवृत्त वर्तमान		करे (करता है)।
घटमान	,,	करितेछे (कर रहा है)।
पुराघटित	,,	करियाछे (किया है)।
अनुज्ञा	,,	कर (करो)।
साधारण अतीत		करिल (किया)।
नित्यवृत्त	,,	करित (करता)।
घटमान	,,	करितेछिल (कर रहा था)।
पुराघटित	,,	करियाछिल (किया था)।
साधारण भविष्यत्		करिबे (करेगा)।
अनुज्ञा	,,	करिओ (करना)।

क्रिया की विभक्तियाँ

(चलित)

काल का नाम		प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान		ए	एन	अ	इस	इ
घटमान	,,	छे	छेन	छ	छिस	छि
पुराघटित	,,	एछे	एछेन	एछ	एछिस	एछि
अनुज्ञा	,,	उक	उन	अ	——	——
साधारण अतीत		ले	लेन	ले	लि	लाम
नित्यवृत्त	,,	त	तेन	ते	तिस	ताम
घटमान	,,	छिल	छिलेन	छिले	छिलि	छिलाम
पुराघटित	,,	एछिल	एछिलेन	एछिले	एछिलि	एछिलाम
साधारण भविष्यत्		बे	बेन	बे	बि	ब (बो)
अनुज्ञा	,,	बे	बेन	ओ	इस	——

(साधु)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	इतेछे	इतेछेन	इतेछ	इतेछिस	इतेछि
पुराघटित ,,	इयाछे	इयाछेन	इयाछ	इयाछिस	इयाछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	इल	इलेन	इले	इलि	इलाम
नित्यवृत्त ,,	इत	इतेन	इते	इतिस	इताम
घटमान ,,	इतेछिल	इतेछिलेन	इतेछिले	इतेछिलि	इतेछिलाम
पुराघटित ,,	इयाछिल	इयाछिलेन	इयाछिले	इयाछिलि	इयाछिलाम
साधारण भविष्यत्	इबे	इबेन	इबे	इबि	इब
अनुज्ञा ,,	इबे	इबेन	इओ (इयो)	इस	—

क्रिया की इन विभक्तियों के प्रयोग को निम्नलिखित उदाहरण से समझा जा सकता है।

'काट्' (काटना) धातु के नित्यवृत्त वर्तमान का चलित और साधु रूप निम्नलिखित होगा :

चलित	साधु
काटे, काटेन, काट, काटिस, काटि	चलित जैसा ही होगा

घटमान अतीत का रूप निम्नलिखित होगा :

चलित रूप—काटछिल, काटछिलेन, किटछिले, काटछिलि, तथा काटछिलाम
साधु रूप—काटितेछिल, काटितेछिलेन, काटितेछिले, काटितेछिलि, तथा काटितेछिलाम।

साधारण भविष्यत् का रूप निम्नलिखित होगा :

चलित रूप—काटबे, काटबेन, काटबे, काटबि, काटबो।
साधु रूप—काटिबे, काटिबेन, काटिबे, काटिबि, काटिबो। इसी प्रकार से अन्य रूप भी समझे जा सकते हैं।

बहुत लोग 'लाम' के स्थान पर 'लुम' अथवा 'लेम' का प्रयोग करते हैं।

जैसे, 'काटलाम' (काटा) के बदले 'काटलुम' अथवा 'काटलेम' लिखते हैं।

इसी प्रकार से 'ताम' के बदले 'तुम' अथवा 'तेम' का प्रयोग करते हैं। जैसे, 'काटताम' (काटता) के स्थान पर 'काटतुम' अथवा 'काटतेम' लिखते हैं।

साधारण अतीत में सकर्मक क्रिया में 'ले' तथा अकर्मक क्रिया में 'ल' लगाते हैं। यह चलित रूप में होता है। जैसे, करले (किया), खेले (खाया), दिले (दिया), तथा गेल (गया), शुल (सोया), दौड़ल (दौड़ा)। वैसे इसका व्यतिक्रम भी देखा जाता है। बहुत लोग 'करल' (किया), 'बलल' (बोला) आदि लिखते हैं।

(ख) कारक

बँगला में कारक सात हैं : कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध तथा अधिकरण।

कारक की कई विभक्तियों को मूल विभक्ति कहा जा सकता है। वैसे प्रयोग में आने वाली कई विभक्तियाँ मुख्यतः कर्ता, कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण सूचक हैं। जैसे के, र, ते क्रमशः कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं। प्रत्येक कारक की अलग विभक्तियाँ नहीं हैं। निम्नलिखित कई विभक्तियाँ भिन्न भिन्न कारकों में प्रयुक्त होती हैं :

विभक्ति	कारकों के नाम
ए, य, ते, ये	कर्ता, करण, सम्प्रदान, अधिकरण
रा, एरा	कर्ता (बहुवचन)
दिगके, दिके, देर	कर्म, सम्प्रदान (बहुवचन)
के, रे	कर्म, सम्प्रदान (एकवचन)
एर (येर), र, कार	सम्बन्ध (एकवचन)
दिगेर, देर	सम्बन्ध (बहुवचन)
देर	कर्म (बहुवचन)
एते	अधिकरण (एकवचन)

बहुत स्थानों पर पद योग करने से कारक निष्पन्न होता है। जैसे, बाड़ी थेके (घर से), पेन्सिल दिये (पेन्सिल से), मानुषेर द्वारा (मनुष्य से) आदि। द्वारा, दिये आदि करणकारक-सूचक हैं तथा थेके, अपादानकारक-सूचक। लेकिन द्वारा, दिया आदि को अव्यय मानना उचित है। इनका प्रयोग विभक्ति के बाद भी मिलता है। जैसे, मन्त्रेर द्वारा (मन्त्र से)। इसमें 'एर' सम्बन्धकारक की विभक्ति है और उसके बाद 'द्वारा' का प्रयोग हुआ है।

टा और टि का प्रयोग, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। जैसे, छेलेटा (लड़का), कविताटि (कविता)। इसमें अर्थ ज्यों का त्यों है। टा का प्रयोग प्रायः अनादरसूचक है और 'टि' का प्रयोग बहुत-कुछ आदरसूचक।

गुला, गुलो, गुलि का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। इनसे बहुवचन सूचित होता है। 'गुला' 'गुलो' अनादर-सूचक हैं और 'गुलि' आदरसूचक। लोकगुला (लोग), जिनिसगुलो (वस्तुएँ), मेयेगुलि (लड़कियाँ)।

'खाना', 'खानि' का प्रयोग केवल पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। 'खाना' अनादरसूचक है और 'खानि' आदरसूचक। जैसे, मुखखानि (मुख), कागजखाना (काग़ज़)।

'गण', 'रा', 'एरा' (येरा) का प्रयोग साधारणतः व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तुओं के लिये होता है। जैसे देवगण, छेलेरा (लड़के)।

'ए', 'ये', 'ते', 'ये' के प्रयोग की विधि इस प्रकार है : अकारान्त अथवा व्यञ्जनान्त शब्द हो तो 'ए' का प्रयोग होता है। जैसे मानुषे, विद्युते। आकारान्त अथवा एकारान्त शब्द हो तो 'य' और 'ते' का व्यवहार होता है। जैसे छेलेय, सेवाय। अगर इनसे भिन्न स्वरान्त शब्द हो तो 'ते' का व्यवहार होता है। जैसे, छूरिते। एकाक्षर शब्द अथवा अन्त में दो स्वर आएँ तो 'ये' का प्रयोग होता है। जैसे, गाये (शरीर में), दइये (दही में)।

विभिन्न कारकों में विभक्ति के प्रयोग

कर्ता कारक :

साधारणतः कर्ता, एकवचन में कोई विभक्ति नहीं होती। जैसे, राम खाच्छे (राम खा रहा है)।

कर्तृवाच्य के प्रयोग से कभी-कभी कर्ता में 'ए' विभक्ति लगती है। जैसे, लोके वले (लोग कहते हैं)।

कर्ता अनिर्दिष्ट होने पर अथवा कर्ता में करण या अधिकरण का भाव रहने पर ए, य, ते, ये, योग करते हैं। जैसे, पोकाय केटेछे (कीड़े ने काटा है), वेदे वले (वेद में कहा गया है), वृष्टिते भासिये दिले (वर्षा से बहा दिया)।

एकजातीय कर्ता का भाव बताते समय 'ए' का प्रयोग होता है। जैसे, पण्डिते पण्डिते तर्क चलेछे (पण्डितों में तर्क हो रहा है)।

बहुवचन में गण, रा, एरा (येरा) का प्रयोग होता है। जैसे, पण्डितेरा बलेन (पण्डित लोग कहते हैं)। आदरसूचक या समूहबोधक कर्ता होने पर रा के बदले एरा का प्रयोग होता है। जैसे, बउएरा (बहुएँ)। गुलो, गुला, गुलि का प्रयोग बहुवचन में होता है, जिसपर पहले ही प्रकाश डाला जा चुका है।

कर्म कारक :

एकवचन में साधारणतः कोई विभक्ति नहीं होती। जैसे, डाक्तार डाक (डाक्टर को बुलाओ)। वैसे इसका कोई निर्दिष्ट नियम नहीं है; कभी विभक्ति का लोप होता है, कभी नहीं होता। जैसे, भगवानके डाक (भगवान को पुकारो)।

कर्मपद प्राणिवाचक अथवा व्यक्ति का नाम हो तो 'के' विभक्ति का प्रयोग होता है और अप्राणिवाचक या क्षुद्र प्राणिवाचक शब्दों में 'के' का प्रयोग नहीं होता। पद्य में रे, ए, य का प्रयोग होता है। जैसे, गुरुरे डाकिया (गुरु को पुकार कर), गुरुजने कर नति (गुरुजन को प्रणाम करो)। बहुवचन होने पर गणके, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है। जैसे देवगणके, ताहादिगके आदि।

द्विकर्मक क्रिया के गौण कर्म में के, दिगके, दिके, देर का प्रयोग होता है। मुख्य कर्म में विभक्ति नहीं लगाते। जैसे, छेलेके दुध दाओ (लड़के को दूध दो)।

कर्मवाच्य के प्रयोग में कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति लगती है। जैसे, रामके बला हय नाइ (राम से कहा नहीं गया है)।

कर्म-कर्तृवाच्य के प्रयोग में भी कर्म में कभी-कभी 'के' विभक्ति होती है। जैसे, तोमाके कृश देखाइतेछे (तुम दुबले दीखते हो)।

करण कारक :

करण कारक में साधारणतः द्वारा, दिया विभक्ति होती है और कभी-कभी इन दोनों के बदले 'हइते' विभक्ति प्रयुक्त होती है। कभी-कभी 'ए' विभक्ति भी होती है।

'द्वारा' और 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थ-वाचक शब्दों में होता है। सम्बन्ध-विभक्ति के बाद भी 'द्वारा' का प्रयोग होता है। व्यक्तिवाचक शब्दों के बहुवचन में 'दिया' अथवा 'दिये' का प्रयोग नहीं होता। जैसे, भृत्येर द्वारा, अश्वेर द्वारा, साबान दिया (साबुन से)।

केवल व्यक्तिवाचक शब्दों में कर्म-विभक्ति के बाद 'दिया' अथवा 'दिये'

का व्यवहार होता है। जैसे, चाकरदिगके दिये (नौकरों से), चाकरके दिये (नौकर से)।

केवल जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के बाद ए, य, ते, ये, जोड़ा जाता है। जैसे, सेवाय तुष्ट (सेवा से तुष्ट), एइ गाड़ि गरुते चले (यह गाड़ी बैल से चलती है)।

सम्प्रदान कारक :

सम्प्रदान कारक की विभक्ति प्रायः कर्म कारक के समान है। जैसे, दरिद्रके धन दाओ (दरिद्र को 'के लिये' धन दो)।

कभी-कभी ए, य, ते, का भी व्यवहार होता है। जैसे सत्पात्रे, देव-सेवाय आदि।

अपादान कारक :

इस कारक की विभक्तियाँ हइते, (ह'ते), थेके, अपेक्षा आदि हैं। जैसे, गृह हइते (गृह से), तिन दिन थेके (तीन दिनों से)।

कभी-कभी 'दिया' का भी व्यवहार होता है। जैसे, ताहार मुख दिया एमन कथा बाहिर हइबे ना (उसके मुँह से ऐसी बात नहीं निकलेगी)।

'निकट' आदि शब्दों में अपादान कारक की विभक्ति विकल्प से लोप होती है। जैसे, आमि ताहार निकट ए कथा शुनियाछि (मैंने उससे ऐसी बात सुनी है)।

तुलना करते समय सम्बन्ध कारक की विभक्ति के बाद अपेक्षा, चेये, चाइते आदि लगाते हैं। जैसे, तोमार चेये वृद्ध (तुमसे अधिक वृद्ध)।

कभी-कभी सप्तमी की 'ए' विभक्ति भी अपादान में प्रयुक्त होती है। जैसे, मेघे वृष्टि हय (मेघ से वृष्टि होती है)।

सम्बन्ध कारक :

र, एर, इस कारक की विभक्तियाँ हैं। साधारणतः शब्दों के अन्त में 'र' योग करने से सम्बन्ध कारक सूचित होता है। 'एर' का योग शब्दों में उस समय होता है जब उनका रूप एकवचन का हो तथा वे अकारान्त, व्यञ्जनान्त, एकाक्षर शब्द हों अथवा उनके अन्त में दो स्वर हों। जैसे, मायेर (माँ का), जामाइयेर (दामाद का)। 'र' विभक्ति का उदाहरण—दयार (दया का), चुरिर (चोरी का)।

'र' विभक्ति का प्रयोग उस हालत में भी होता है जब मनुष्य के नाम का उच्चारण अकारान्त हो। जैसे, अमूल्यर (अमूल्य का)। लेकिन

शिव का शिवेर होगा क्योंकि शिव के उच्चारण में व हलन्त की तरह उच्चरित होता है।

विशेषण-पदों में केवल 'र' योग करते हैं। जैसे, भालर जन्य (अच्छे के लिये)।

समय अथवा अवस्थान-वाचक शब्दों में 'कार' योग करते हैं। जैसे, आजिकार (आज का), उपरकार (ऊपर का)।

व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तु के सूचक बहुवचन शब्दों में देर, दिगेर, गणेर का योग करते हैं। जैसे, छेलेदेर (लड़कों का), जन्तुदिगेर (जन्तुओं का)। व्यक्ति, जन्तु तथा पदार्थवाचक बहुवचन में गुलार, गुलोर, गुलिर, सकलेर, समूहेर आदि का प्रयोग होता है। जैसे, मेयेगुलिर (लड़कियों का)। जिनिसगुलोर (वस्तुओं का), प्राणि सकलेर (प्राणियों का), इत्यादि।

अधिकरण कारक :

ए, य, ते ये, अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं।

अधिकरण दो प्रकार के हैं : कालबोधक और आधारसूचक। क्रिया जब किसी काल में समाप्त होती है तब उसे कालवाचक अधिकरण कहते हैं और जब किसी स्थान पर समाप्त होती है तब वहाँ आधार-अधिकरण का भाव आ जाता है। 'प्रभाते आमरा बेड़ाइया थाकि' (भोर में हमलोग टहला करते हैं)। यह कालवाचक अधिकरण का उदाहरण है।

आधार अधिकरण तीन तरह के हैं—ऐकदेशिक, वैषयिक और अभिव्यापक। उदाहरणार्थ :

ऐकदेशिक—ऋषि वने थाकितेन (ऋषि वन में रहते थे)।

वैषयिक—आमि विद्याय आपनार निकट बालक (विद्या में मैं आपके निकट बालक हूँ)।

अभिव्यापक—तिले तैल आछे (तिल में तेल है)।

कालवाचक शब्द के बाद कभी-कभी विभक्ति योग नहीं करते। जैसे, एक समय आमि बिश क्रोश हाँटिते पारिताम (एक समय था जब मैं बीस कोस पैदल चल सकता था); ए समय से कोथाय (इस समय वह कहाँ है)। लेकिन अगर विशेषण पद कालवाचक शब्द के पहले न हो तो विभक्ति अवश्य प्रयुक्त होती है। जैसे, दिने घुमाइओ ना (दिन में न सोना)।

क्रिया गमनार्थक होने पर कभी-कभी अधिकरण की विभक्ति नहीं लगती। जैसे, काशी पाठाओ (काशी भेजो); कलिकाता याइब (कलकत्ता जाऊँगा)।

बहुवचन में गण, गुला, गुलो, गुलि, सकल आदि के बाद विभक्ति का योग होता है। जैसे, कथागुलिते (बातों में); जीवगणे (जीवों में)।

(ग) सर्वनाम

बँगला में सर्वनाम के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं :

पुरुषवाचक सर्वनाम--आमि (मैं), तुमि (तुम); से (वह) इत्यादि।

निर्देशक वा निर्णयसूचक सर्वनाम--ताहा (तद्); इहा (यह); उहा (वह) इत्यादि।

प्रश्नवाचक सर्वनाम--कि (क्या), के (कौन) आदि।

सापेक्ष वा समुच्चयी सर्वनाम--ये

अनिर्देश वा अनिश्चयसूचक सर्वनाम--केह, केउ (कोई) आदि।

आत्मवाचक सर्वनाम--निजे, आपनि, स्वयं आदि।

साकल्यवाचक सर्वनाम--उभय, सकल, सब आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के हैं :--उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रथम पुरुष, जिसे हिन्दी में अन्य-पुरुष कहते हैं।

कर्ताकारक के एकवचन में इन पुरुषों के निम्नलिखित रूप हैं :

	सामान्य	तुच्छ	गौरवार्थ
उत्तम पुरुष	आमि (मैं)		
मध्यम पुरुष	तुमि (तुम)	तुइ (तू)	आपनि (आप)
प्रथम पुरुष	से, ताहा, ता (वह)		तिनि (वे)
	ये, याहा, या (जो)		यिनि (जो)
	के (कौन), कि (क्या)		के, किनि (कौन)
	ए, इहा (यह)		इनि (ये)
	ओ, उहा (वह)		उनि (वे)

व्यक्तिबोधक--तिनि, यिनि, के (किनि), इनि, आपनि, तुमि, तुइ, आमि।

व्यक्ति अथवा जन्तुवाचक--से, ये, के।

व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक--ए, ओ।

पदार्थ अथवा क्षुद्र जन्तुवाचक--ताहा (ता), याहा (या), कि, इहा, उहा।

वचन और कारक-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन होता है, लेकिन स्त्रीलिंग और पुंलिग-भेद से सर्वनाम रूप में परिवर्तन नहीं होता। याहाते, ताहाते आदि का प्रयोग क्रिया-विशेषण की तरह होता है।

से, ये, कि, ए, ओ का प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है। जैसे, से दिन (उस दिन)।

कारकों की विभक्ति सहित सर्वनामों के रूप

उत्तम पुरुष

आमि (मैं)

(पुंलिंग और स्त्रीलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आमि, मुइ	आमरा, मोरा
कर्म	आमाके, आमारे. आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरके, मोदिगके, मोदिगेरे, मोदेर
करण	आमाद्वारा, आमार द्वारा, आमाके दिया, आमा-हइते (ह'ते), आमा-कर्तृक	आमादिग (-दिगेर) द्वारा, दिया, कर्तृक; आमादेर दिया, द्वारा
सम्प्रदान	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरे मोदेर, मोदेरे, मोदिगके
अपादान	आमा हइते, आमा ह'ते	आमादेर (आमादिग) हइते
सम्बन्ध	आमार, मोर (मझु), मम	आमादिगेर, आमादेर मोदेर
अधिकरण	आमाय, आमाते, मोते	आमादिगेते, आमादिगेर, सकले, मोदिगे

मध्यम पुरुष

तुमि (तुम)

(स्त्रीलिंग और पुंलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तुमि, तुइ	तोमरा, तोरा
कर्म	तोमाके, तोमार, तोके, तोरे तोर	तोमादिगके, तोदेर, तोदिगके
करण	तोमाद्वारा, तोमाकर्तृक, तोर द्वारा	तोमादिगेर द्वारा, तोदेर द्वारा
सम्प्रदान	(कर्म कारक के समान रूप होता है)	
अपादान	तोमा हइते, तोर हइते	तोमादेर हइते, तोदेर हइते
सम्बन्ध	तोमार, तोर, तव	तोमादिगेर, तोमादेर, तोदेर
अधिकरण	तोमाते, तोमाय, तोके, तोय	तोमादिगते, तोमादेर सकले, तोमादिगते

तुइ (तू) शब्द का व्यवहार तीन अर्थों में होता है :

(१) तुच्छार्थ में--निर्लज्ज तुइ क्षत्रिय समाजे (क्षत्रिय समाज में तू निर्लज्ज है)।

(२) स्नेह-वात्सल्य में--तुइ आमार नयनमणि (तू मेरे नयनों की मणि है)।

(३) देवतादि के संबोधन में--तुइ कि बुझिबि श्यामा मरमेर वेदना (श्यामा 'माँ काली', तू मर्म-वेदना को क्या समझेगी)।

करण और अपादान का अलग रूप नहीं है। कर्म अथवा सम्बन्ध कारक के रूपों में दिया, द्वारा, हइते योग करने से इन दोनों कारकों का रूप प्राप्त हो जाता है।

आपनि (आप)

चलित रूप		साधु रूप	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आपनि	आपनारा	आपनि	आपनारा
आपनाके	आपनादिके,-देर	आपनाके	आपनादिगके
आपनार	आपनादेर	आपनार	आपनादिगेर,-देर
आपनाते	--	आपनाते	--

प्रथम पुरुष

तिनि (वे)

	चलित		साधु	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तिनि	ताँरा	तिनि	ताँहारा
कर्म, सम्प्रदान	ताँके	ताँदिके, ताँदेर	ताँहाके	ताँहादिगके
सम्बन्ध	ताँर	ताँदेर	ताँहार	ताँहादिगेर ताँहादेर
अधिकरण	ताँते	--	ताँहाते	--

यिनि (जो) का रूप तिनि की तरह ही होता है।

उपर्युक्त क्रम से अर्थात् पहली पंक्ति में कर्ता, द्वितीय में कर्म-सम्प्रदान, तृतीय में सम्बन्ध और चतुर्थ में अधिकरण कारक के अन्य सर्वनामों के रूप नीचे दिए जा रहे हैं।

इनि (ये)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
इनि	एँरा	इनि	इँहारा
एंके	एँदिके, एँदेर	इँहाके	इँहादिगके
एँर	एँदेर	इँहार	इँहादिगेर, इँहादेर
एँते	—	इँहाते	—

उनि (वे)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उनि	ओँर	उनि	उँहारा
ओँके	ओँदिके, ओँदेर	उँहाके	उँहादिगके
ओँर	ओँदेर	उँहार	उँहादिगेर, उँहादेर
ओँते	—	उँहाते	—

से (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
से, ता	तारा	से, ताहा	ताहारा
ताके	तादिके, तादेर	ताहाके	ताहादिगके
तार	तादेर	ताहार	ताहादिगेर, ताहादेर
ताते (ताय)	—	ताहाते (ताय)	—

ये, याहा (जो) का रूप से, (ताहा)–जैसा होगा।

के (कौन)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
के, किनि	काँरा	के, किनि	काँहारा
काके	कादिके, कादेर	काहाके	काहादिगके
कार	कादेर	काहार	काहादिगेर, काहादेर
काते, किसे	—	काहाते	—

ए, इहा (यह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ए	एरा	ए, इहा	इहारा
एके	एदिके, एदेर	इहाके	इहादिगके
एर	एदेर	इहार	इहादिगेर, इहादेर
एते	——	इहाते	——

ओ, उहा (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ओ	ओरा	ओ, उहा	उहारा
ओके	ओदिके, ओदेर	उहाके	उहादिगके
ओर	ओदेर	उहार	उहादिगेर, उहादेर
ओते	——	उहाते	——

ए, इहा, इनि से निकटस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है और ओ, उहा, उनि से दूरस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है।

'ताय' (उसको, उसमें) का प्रयोग प्रायः पद्य में होता है।

'किसे' केवल पदार्थवाचक है।

'किनि' का प्रयोग साधु और चलित दोनों रूपों में प्रायः अप्रचलित हो गया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रवीन्द्र-शताब्दी-समारोह के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की समस्त कृतियों में से विशिष्ट रचनाओं का संकलन देवनागरी लिपि में निम्न प्रकार से प्रकाशित करने का आयोजन किया है :

१. एक सौ एक कविताएं; २. पाँच सौ गीत; ३. इक्कीस कहानियां; ४. सात नाटक: 'विसर्जन', 'चित्रांगदा', 'चिर कुमार सभा', 'डाकघर', 'राजा', 'मुक्तधारा', तथा 'रक्तकरबी'; ५. तीन उपन्यास: 'गोरा', 'चोखेर बालि', तथा 'योगा-योग'; ६. 'साहित्यिक निबन्ध'; ७. साहित्येतर निबन्ध; ८. पत्र, प्रवास-डायरी, आदि; ९. बाल-साहित्य।

यह संकलन कई खण्डों में प्रकाशित होगा। प्रथम और द्वितीय खण्ड 'एकोत्तरशती' और 'गीत-पञ्चशती' के नाम से प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें गुरुदेव की एक सौ एक कविताएं तथा पाँच सौ गीत संग्रहीत हैं।

गुरुदेव का उपन्यास 'चोखेर बालि' का देवनागरी लिप्यन्तर प्रस्तुत है। चोखेर बालि का प्रकाशन सर्वप्रथम १९०२ में हुआ था। वास्तव में यही भारत का सर्वप्रथम आधुनिक उपन्यास है। गुरुदेव ने और भी उपन्यास लिखे हैं, किन्तु मानविक भावनाओं के चित्रण में जो पैनापन और सूक्ष्म दृष्टि इस उपन्यास में परिलक्षित है वह अन्यत्र दुर्लभ है। और किसी भी उपन्यास में वासना और प्रेम का ऐसा स्पष्ट और सहानुभूतिपूर्ण चित्रण नहीं है। यह है वासना के पंक में प्रेम-कमल के विकास की कहानी। गुरुदेव के नारी चरित्र सृष्टियों में 'विनोदिनी' का चरित्र ही सबसे यथार्थधर्मी और मानविक बन पड़ा है।

पुस्तक का लिप्यन्तर श्रीमती मनोरमा वाजपेयी ने किया है। साथ ही बँगला-व्याकरण तथा उच्चारण-वशिष्ट्य पर एक टिप्पणी भी परिशिष्ट रूप में दी गई है, जिसका सम्पादन डॉ० सुनीति कुमार चट्टोपाध्याय तथा डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी दोनों ने मिल कर किया है।

इस शृंखला के अन्य खण्ड अभी तैयार हो रहे हैं, जो शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। प्रमुख भारतीय भाषाओं में भी इन सब खण्डों का अनुवाद हो रहा है।